CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अफ्रीका
उसके देश और देशवासी

जगन्मोहन लाल माथुर

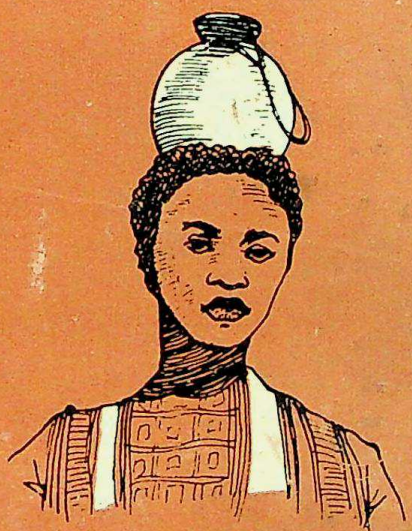

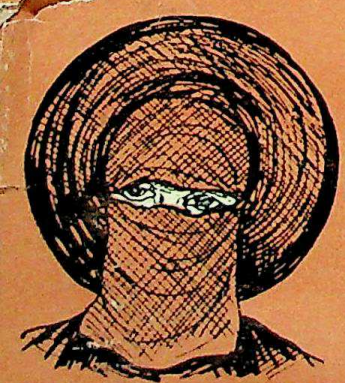

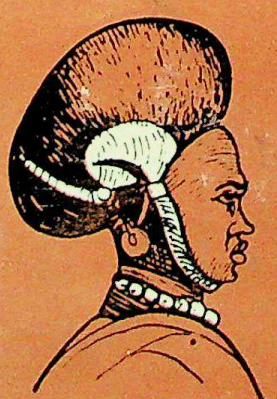

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अफ्रीका
उसके देश और देशवासी

जगमोहन लाल माथुर

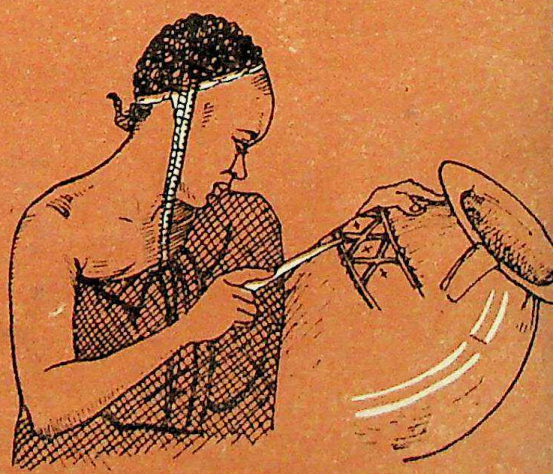

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अफ्रीका

उसके देश और देशवासी

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

इतिहास तथा यात्रा की अन्य श्रेष्ठ पुस्तकें

			रु० पै०
प्राचीन भारतीय परम्परा और इतिहास	डॉ० रांगेय राघव	(पुरस्कृत)	12.00
मनोरम कश्मीर	मोहनकृष्ण दर	(पुरस्कृत, सचित्र)	5.00
सिंधु सभ्यता का आदि केन्द्र : हड़प्पा	केदारनाथ शास्त्री	(पुरस्कृत, सचित्र)	8.00
सिंधु सभ्यता समीक्षा	केदारनाथ शास्त्री	(पुरस्कृत, सचित्र)	5·00
भारत की सांस्कृतिक परम्परा	केदारनाथ शास्त्री	(सचित्र)	3·00
नेपाल की कहानी	काशीप्रसाद श्रीवास्तव	(पुरस्कृत, सचित्र)	8·00
भारत का सांस्कृतिक इतिहास	हरिदत्त वेदालंकार	(सचित्र)	8·00
भारतीय संस्कृति का संक्षिप्त इतिहास	हरिदत्त वेदालंकार		3·50
मेरा देश : मेरे देशवासी	परम पावन श्री दलाई लामा	(सचित्र)	7·50
भारत में ब्रिटिश साम्राज्य का उदय और अस्त	इन्द्र विद्यावाचस्पति	(सचित्र)	7·50
भारत में ब्रिटिश राज्य के अन्तिम दिन	लिओनार्ड मोसले	(सचित्र)	7·50
मुगल साम्राज्य की जीवन संध्या	राजेश्वरप्रसाद नारायण सिंह	(सचित्र)	6·00
बिहार का गौरव	राजेश्वरप्रसाद नारायण सिंह	(पुरस्कृत, सचित्र)	4·00
चम्पारन में महात्मा गाँधी	डॉ० राजेन्द्र प्रसाद	(सचित्र)	5·00
राष्ट्रपति और राष्ट्रपति भवन	वाल्मीकि चौधरी	(सचित्र)	6·00
दिल्ली में दस वर्ष	राजेन्द्रलाल हाँडा		3·50
भारतीय क्रान्तिकारी आन्दोलन का इतिहास	मन्मथनाथ गुप्त	(सचित्र)	15·00
गदर पार्टी का इतिहास	प्रीतम सिंह पंछी		3·50
बन्दी जीवन	शचीन्द्रनाथ सान्याल		10·00
हमारी आजादी की लड़ाई	उर्मिल सब्बरवाल	(सचित्र)	3·00
अमरीकी समाज	कैनेथ एस० लिन		7·50
अमरीकी सभ्यता	मैक्स लर्नर		10·00
हिमालय दर्शन	कृष्ण नारायण गोसामी	(सचित्र)	4·00
अरबों के देश में	गोपालप्रसाद व्यास	(सचित्र)	3·50
पृथ्वी परिक्रमा	गोविन्द दास	(सचित्र)	12·00
यूरोपा	देवेश दास	(सचित्र)	3·00
रजवाड़ा	देवेश दास		6·00
रूस की साहित्यिक यात्रा	बनारसीदास चतुर्वेदी	(पुरस्कृत, सचित्र)	4·00
यूरोप के स्केच	रामकुमार	(सचित्र)	6·00
आँखों देखा रूस	सत्येन्द्रनाथ मजूमदार		2·50

आत्माराम एण्ड संस, दिल्ली-6

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अफ्रीकी जागरण का प्रतीक : घाना का एक ढोलवादक

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अफ्रीका

उसके देश और देशवासी

लेखक

जगमोहनलाल माथुर

एम० ए० (हिन्दी व अर्थशास्त्र), जे० डी०, त्यरत्नसाहि

प्रस्तावना

डा० ज़ाकिर हुसैन

उपराष्ट्रपति, भारत

1967

आत्माराम एण्ड संस

दिल्ली. नई दिल्ली. चण्डीगढ़. जयपुर. लखनऊ

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

AFRICA : USKE DESH AUR DESHWASI

[Africa : Its Countries and People]

by

Jagmohan Lal Mathur

Rs. 12.50

प्रकाशक

रामलाल पुरी

संचालक, आत्माराम एण्ड संस

काश्मीरी गेट, दिल्ली-6

शाखाएँ

हौज़ खास, नई दिल्ली

विश्वविद्यालय क्षेत्र, चण्डीगढ़

चौड़ा रास्ता, जयपुर

17, अशोक मार्ग, लखनऊ

960
म अ

राज्य संग्रहालय लखनऊ
क्रम 3560
प्राप्ति तिथि 7/2/68
State Museum, Library, Lko.

3560
7/2/68

© 1967 आत्माराम एण्ड संस, दिल्ली–6

प्रथम संस्करण : 1967

मूल्य : 12·50 रुपए

द्रक : युगान्तर प्रेस, दिल्ली-६

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

प्रस्तावना

(डा० जाकिर हुसैन, उपराष्ट्रपति, भारत)

आज की दुनिया में अफ्रीका एक नई हस्ती के रूप में उभर रहा है। यह महाद्वीप सदियों से विदेशी ताकतों की गुलामी में रहा है और अब यहाँ आज़ादी की नई लहर फैल रही है। अब से 9-10 साल पहले यहाँ केवल 4-5 मुल्क आज़ाद थे, अब कोई तीन चौथाई अफ्रीका आज़ादी की हवा में साँस ले रहा है। जो चंद मुल्क अभी आज़ाद नहीं हो पाये हैं, उम्मीद है कि वे भी जल्दी ही अपनी मंज़िल पर पहुँच जाएँगे।

इसलिए यह ज़रूरी हो गया है कि अफ्रीकी मुल्कों के साथ हमारे रिश्ते करीब के हों और मज़बूत हों। वैसे पुराने ज़माने से मिस्र और कुछ पूर्वी अफ्रीकी देशों के साथ हमारा सम्पर्क रहा है, पर आज के समय में यह बहुत ज़रूरी हो गया है कि सभी मुल्कों के साथ हमारी दोस्ती बढ़े और हम एक-दूसरे को समझने की कोशिश करें। मुझे खुशी है कि पिछले कुछ वर्षों में भारत और अफ्रीका के बीच सहयोग बढ़ा है। अफ्रीका के नेता, शिक्षा-शास्त्री, वैज्ञानिक, कलाकार भारत आते रहे हैं। उन्होंने हमारी योजनाओं में दिलचस्पी दिखाई है। वहाँ के नौजवान हमारी यूनिवर्सिटियों में पढ़ने आते हैं और कारखानों वगैराहों में ट्रेनिंग लेते हैं। पिछले कुछ वर्षों में दोनों तरफ व्यापार भी बढ़ा है। हमारे मुल्क के नेता भी अफ्रीका जाते रहे हैं। 1962 में जवाहरलालजी नाइजीरिया गये थे। 1965 में हमारे राष्ट्रपति डा० राधाकृष्णन् इथियोपिया गये थे। हमारी प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी भी कई बार अफ्रीकी देशों की यात्रा कर चुकी हैं और उन्हें अफ्रीका में काफी दिलचस्पी है।

1963 में मुझे इथियोपिया, सूडान और मिस्र जाने का मौका मिला और 1964 में मैं ट्यूनीसिया, अल्जीरिया और मोराको गया था। मैंने महसूस किया कि इन मुल्कों में भारत के प्रति सच्ची दोस्ती का ज़ज्बा है। वे हमारे साथ तिज़ारती और अन्य सम्बन्ध बढ़ाने को उत्सुक हैं। भारत तथा इन देशों को लगभग एक सी समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है। दोनों ही देशों में जनता का जीवन खुशहाल बनाने की जीतोड़ कोशिश हो रही है। हम लोग 19 साल पहले आज़ाद हुए थे, इसलिए हमने कई क्षेत्रों में कामयाबियां हासिल की हैं। इसलिए हम जो थोड़ी-बहुत मदद अफ्रीकी देशों की कर सकते हैं, वह खुशी से कर रहे हैं और करते रहेंगे।

आपसी सहयोग और दोस्ती बढ़ाने के लिए यह ज़रूरी है कि हम अफ्रीकी मुल्कों के बारे में अधिक जानकारी हासिल करें। वहाँ के लोगों का रहन-सहन, उनके रीति-रिवाज, कला, संस्कृति आदि के बारे में पुस्तकों की बड़ी कमी है, खासतौर से भारतीय ज़बानों में ऐसी किताबें अभी नहीं हैं जो अफ्रीका की सही तस्वीर पेश कर सकें और वहाँ के बारे में हमारा ज्ञान बढ़ा सकें।

मुझे बहुत खुशी है कि श्री जगमोहनलाल माथुर ने अफ्रीका के बारे में यह किताब लिख कर इस कमी को दूर करने की कोशिश की है। मैंने सरसरी तौर पर यह किताब देखी है। इसमें अफ्रीकी मुल्कों, वहाँ के भूगोल, इतिहास, वाशिन्दे, रहन-सहन, रीति-रिवाज, गीत और नृत्य, आर्थिक हालात आदि के बारे में काफी कुछ दिया गया है।

मुझे यकीन है कि यह किताब विद्यार्थियों और आम लोगों के लिए मुफ़ीद साबित होगी। मैं चाहता हूँ कि इस तरह की अफ्रीका के बारे में किताबें हिन्दी में और अन्य भारतीय भाषाओं में लिखी जाएँ। मुझे उम्मीद है इस किताब को पाठक पसंद करेंगे।

जाकिर हुसैन

(जाकिर हुसैन)

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

दो शब्द

कई वर्षों के परिश्रम के बाद अफ्रीका सम्बन्धी यह पुस्तक पाठकों के सामने प्रस्तुत है। लगभग 1955 से अफ्रीका मेरा प्रिय विषय रहा है। तब से यहाँ परिवर्तनों का जो सिलसिला शुरू हुआ उन पर मेरा लगातार अध्ययन चलता रहा और प्रमुख पत्र-पत्रिकाओं में मेरे लेख प्रकाशित होते रहे हैं। कुछ वर्ष पहले 'साप्ताहिक हिन्दुस्तान' में भी अफ्रीकी देशों के बारे में मेरी एक लेखमाला प्रकाशित हुई थी। तब से कई पाठकों का यह आग्रह बढ़ता रहा कि अफ्रीका संबधी जानकारी पुस्तक के रूप में प्रकाशित की जाए।

मैंने स्वयं भी महसूस किया कि अफ्रीका के बारे में हमारे स्कूल और कालेजों की पुस्तकों में जो जानकारी है वह पुरानी, अपूर्ण और पश्चिमी देशों के लेखकों द्वारा उनके दृष्टिकोण से लिखी हुई है। वैसे कुल मिलाकर अफ्रीका के बारे में हिन्दी में पुस्तकें न के बराबर हैं। भारतीय लेखकों द्वारा लिखी तो अंग्रेजी में भी बहुत ही कम पुस्तकें हैं। अफ्रीका में पिछले एक दशक में हुए परिवर्तनों को ध्यान में रखकर मैंने यह अनुभव किया कि अब समय आ गया है जबकि हम लोग इस महाद्वीप को विदेशियों के चश्मे से देखने का बजाए अपनी नज़र से देखें। इसी दृष्टि से यह पुस्तक मैंने लिखने का प्रयत्न किया है। मेरा मुख्य ध्येय भारतीय पाठकों को अफ्रीका सम्बन्धी जानकारी देना है।

अफ्रीका एक विराट महाद्वीप है। उसके बारे में ज्ञान का क्षेत्र असीम है। वहाँ के इतिहास, निवासियों, संस्कृति, कला के बारे में अलग-अलग विषयों पर कई ग्रंथ लिखे जा सकते हैं और इसी प्रकार सभी देशों पर भी अलग-अलग पुस्तकें। पर इस पुस्तक में मैंने अफ्रीका के बारे में संक्षेप में सभी पहलुओं पर जानकारी देने का प्रयत्न किया है।

इस पुस्तक को मैंने सात खंडों में बांटा है। प्रथम अध्याय 'ज्योतिर्मय अफ्रीका' में सम्पूर्ण अफ्रीका के भूगोल, इतिहास, निवासी, कला, संस्कृति आदि की समग्र झांकी है तथा बताया है कि वहाँ हाल के वर्षों में स्वतन्त्रता की ओर किस तेजी से प्रगति हुई है। इसके बाद विभिन्न देशों का परिचय है। इसके लिए सम्पूर्ण अफ्रीका को पांच खंडों में बाँटा गया है। (1) पश्चिमी अफ्रीका, (2) मध्य अफ्रीका, (3) दक्षिणी अफ्रीका, (4) पूर्वी अफ्रीका और (5) उत्तरी अफ्रीका। पश्चिमी अफ्रीका के सेनेगाल देश से अफ्रीकी देशों की झाँकी शुरू होती है। मारीटेनिया को जिसे अक्सर पश्चिमी अफ्रीका में गिना जाता है मैंने उत्तरी अफ्रीका में शामिल किया है। कैमरून के बाद चाद से मध्य अफ्रीका शुरू होता है, जो रोडेशिया तक है। दक्षिणी अफ्रीका में बेचुआना से लेकर सभी दक्षिणवर्ती देश तथा मेडागास्कर, मारीशस तथा अन्य टापू लिये गए हैं। टांज़ानिया से पूर्वी अफ्रीका शुरू होता है। इसमें सूडान तक के देश सम्मिलित हैं। कई लेखकों ने सूडान को उत्तरी अफ्रीकी देश माना है। पर मैंने उसे पूर्वी अफ्रीका में शामिल किया है। उत्तरी अफ्रीका में मिस्र से लेकर मोराको व मारिटेनिया तक के देश हैं। भारत और अफ्रीका के सम्बन्धों की चर्चा एक पृथक् अध्याय में की गई है। वैसे इस पुस्तक में अधिक ज़ोर ऐसे विषयों पर दिया गया है जिनमें परिवर्तन कम होते हैं या उतनी तेज़ी से नहीं होते जितने कि राजनीतिक होते हैं, जैसे कि भूगोल, इतिहास, जन-जीवन, कला व संस्कृति पर फिर भी पुस्तक के प्रेस में जाने से लेकर छपाई खत्म होने तक कई देशों की शासन व्यवस्था में ऐसे परिवर्तन हो गए जिनसे कि पुस्तक में छपी बातें पुरानी हो गईं।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

इसकी पूर्ति के लिए अंत में एक परिशिष्ट जोड़ा गया है। इस परिशिष्ट में अगस्त 1966 तक हुए परिवर्तन सम्मिलित कर लिये गए हैं।

पुस्तक की सामग्री के संकलन में मुझे 'इंडियन कौंसिल फॉर अफ्रीका' के पुस्तकालय से बहुत सहयोग मिला है। वहाँ के पुस्तकाध्यक्ष श्री मौहम्मद अहमद नकबी ने बड़े उत्साह से अफ्रीका के बारे में विविध विषयों की जानकारी प्राप्त करने में मेरी बहुत मदद की इसके लिए उनके प्रति मेरा कृतज्ञ होना स्वाभाविक ही है। इसके अलावा अंग्रेजी व हिन्दी की पुस्तकों तथा पत्र-पत्रिकाओं में छपी रचनाओं के अनेक लेखकों के प्रति भी मैं आभारी हूँ जिनसे मुझे अपना कार्य पूरा करने में मदद मिली है। उपराष्ट्रपति डा० ज़ाकिर हुसैन का बहुत ही शुक्रगुज़ार हूँ जिन्होंने अपना अमूल्य समय निकाल कर इस पुस्तक के लिए प्रस्तावना लिखी है। विदेश मंत्रालय में राज्य मंत्री श्री दिनेशसिंह के प्रति भी, जिन्हें अफ्रीका में गहरी दिलचस्पी रही है, बहुत आभारी हूँ जिन्होंने प्रेस में जाने से पहले इस पुस्तक की पांडुलिपि देखी थी और कुछ सुझाव दिये थे। वे सुझाव इसमें सम्मिलित कर लिये गए हैं।

पुस्तक को पूरी करने में मेरे मित्र श्री गणेशदत्त पाण्डेय ने मुझे सहयोग दिया है उसे भी मैं कदापि भूल नहीं सकूँगा।

अंत में अपने प्रकाशक श्री रामलाल पुरी का भी आभारी हूँ जिन्होंने अफ्रीका के बारे में गहरी दिलचस्पी दिखाई और इस पुस्तक को अनेक फोटोचित्रों व रेखाचित्रों से सुसज्जित करके इतने आकर्षक रूप में प्रस्तुत किया है।

पाठकों के विचार और सुझाव पाकर मुझे अत्यन्त प्रसन्नता होगी।

—जगमोहनलाल माथुर

इस पुस्तक में प्रकाशित चित्रों के लिए लेखक निम्नलिखित देशों की सरकारों का आभारी है :

ब्रिटेन, फ्रांस, बेलजियम, आइवरीकोस्ट, गिनी, सिएरा लिओन, लाइबेरिया, नीजेर, घाना, डहोमे, नाइजीरिया, चाद, केन्द्रीय अफ्रीका, भूतपूर्व फ्रांसीसी कांगो, रोडेशिया व नयासालैंड संघ, दक्षिण अफ्रीका,। मालागाशी, टांगानिका, उगाण्डा, कीनिया, इथियोपिआ, सूडान, संयुक्त अरब गणराज्य, ट्यूनीसिया, मोराको

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

क्रम

	पृष्ठ संख्या
प्रस्तावना	V
दो शब्द	VII
मानचित्र	XII
ज्योतिर्मय अफ्रीका	1-6
पश्चिमी अफ्रीका	
1. सेनेगाल (Senegal)	8-11
2. गैम्बिया (Gambia)*	12-13
3. पुर्तगाली गिनी (Port. Guinea)	14-15
4. गिनी गणराज्य (Guinea Republic)	16-17
5. सिएरा लिओन (Sierra Leone)	18-20
6. लाइबेरिया (Liberia)	21-22
7. आइवरी कोस्ट (Ivory Coast)	23-25
8. माली गणराज्य (Mali)	26-28
9. नीजेर (Niger)	29-31
10. वोल्टा (Volta)*	32-34
11. घाना (Ghana)*	35-38
12. टोगो (Togo)	39-41
13. डहोमे (Dahomey)*	42-44
14. नाइजीरिया (Nigeria)*	45-50
15. कैमरून (Cameroon)	51-53
मध्य अफ्रीका	
16. चाद (Tchad)	56-58
17. केन्द्रीय अफ्रीका गणराज्य (Central African Republic)*	59-60
18. काँगो-ब्राजविल (Congo-Brazzaville)*	61-63

*कृपया परिशिष्ट देखें।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

19. गैबॉन (Gabon)* 64-65
20. रिओ मुनि और फेरनदीपो (Rio Muni and Fernando po) 66
21. कांगो (लिओपोल्डविल) (Congo-Leopoldville)* 67-71
22. रुआण्डा (Rwanda) 72-74
23. बुरुण्डी (Burundi)* 75-76
24. अंगोला (Angola) 77-79
25. जैम्बिया (Zambia) 80-82
26. मलावी (Malawi)* 83-84
27. रोडेशिया (Rhodesia)* 85-87

दक्षिणी अफ्रीका

28. बेचुआना (Bechuana) अथवा बोत्सवाना* 90-92
29. दक्षिणी-पश्चिमी अफ्रीका (South-West Africa) 93-94
30. दक्षिण अफ्रीका (South Africa) 95-102
31. बसूतोलैण्ड (Basutoland) अथवा लेसोथो* 103-104
32. स्वाजीलैण्ड (Swaziland)* 105-106
33. मोजाम्बीक (Mozambique) 107-108
34. मालागाशी (Malagasi) 109-111
35. रीयूनियन द्वीप (Reunion) 112
36. कोमोरो द्वीप समूह (Comoro) 113
37. मारीशस (Mauritius) 114-115

पूर्वी अफ्रीका

38. टांजानिया (Tanzania) 118-123
39. उगाण्डा (Uganda)* 124-128
40. कीनिया (Kenya)* 129-134
41. सोमालिया (Somalia) 135-137
42. फ्रांसीसी सोमालीलैंड (French Somaliland) 138
43. इथियोपिया (Ethiopia)* 139-142
44. सूडान (Sudan) 143-146

*कृपया परिशिष्ट देखें।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

उत्तरी अफ्रीका

45. संयुक्त अरब गणराज्य (मिस्र) (U. A. R.) 148-152
46. लीबिया (Libya) 153-154
47. ट्यूनीसिया (Tunisia) 155-157
48. अल्जीरिया (Algeria)* 158-161
49. मोराको (Morocco)* 162-164
50. स्पेनिश अफ्रीका (Spanish Africa) 165
51. मारिटेनिया (Mauritania) 166-168

भारत-अफ्रीका सम्बन्ध 169-174

परिशिष्ट 175-178

ग्रन्थ-सूची 179-182

अनुक्रमणिका 183-189

चित्रावली (16 पृष्ठ) 112 के सामने

*कृपया परिशिष्ट देखें।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अफ्रीका : मानचित्र

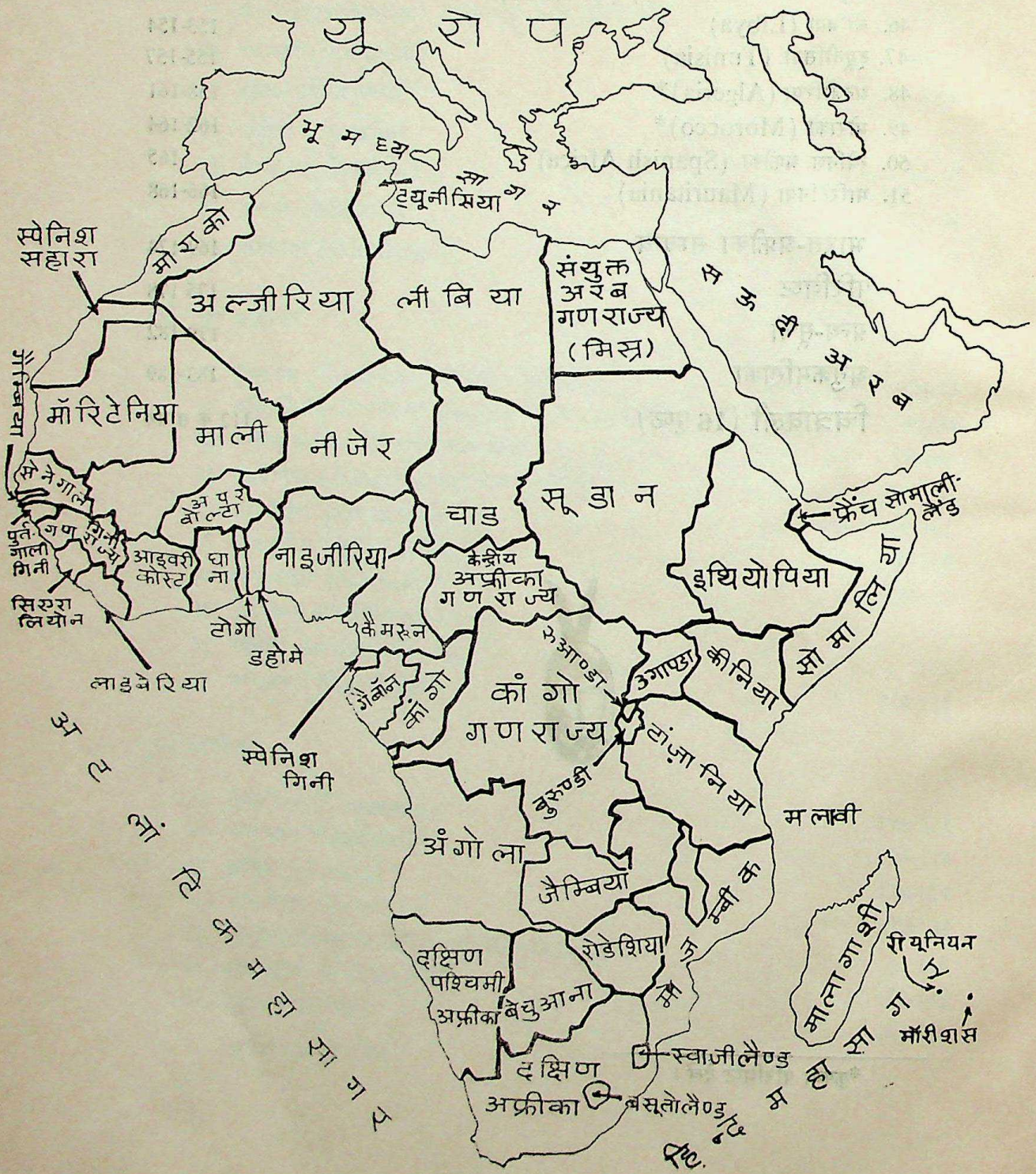

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

ज्योतिर्मय अफ्रीका

शताब्दियों की गहरी नींद के बाद अब अफ्रीका जाग उठा है। कल तक 'अन्ध' महाद्वीप कहे जाने वाले इस भूखण्ड के कोने-कोने में आज स्वतन्त्रता की दीपशिखाएँ प्रज्ज्वलित हो उठी हैं। एक के बाद एक नवोदित राष्ट्रों की रंग-बिरंगी ध्वजाएँ गगन में शान से फहराने लगी हैं। कभी वेस्ट इंडीज़ और अमेरिका के बाज़ारों में पशुओं की तरह बेचे जाने वाले गुलामों के वंशधर, आज नगाड़ों की चोट पर स्वाधीनता और एकता का संदेश फैला रहे हैं। इस सम्पूर्ण महाद्वीप में परिवर्तनों की आँधी बड़ी तीव्र गति से बह रही है। एक के बाद एक उपनिवेशवादी दुर्ग धराशायी होते जा रहे हैं और प्राचीन खंडहरों पर एक नये अफ्रीका का, ज्योतिर्मय अफ्रीका का, निर्माण हो रहा है।

संसार के इस द्वितीय विशालतम महाद्वीप का क्षेत्रफल 1,17,00,000 वर्गमील है जिसमें भारत, चीन, पश्चिम यूरोप, संयुक्त राज्य अमेरिका एक साथ समा सकते हैं। यह महाद्वीप संसार के समस्त भूतल का पाँचवाँ भाग है। इसकी उत्तर से दक्षिण की लम्बाई 5,000 मील है तथा पश्चिम से पूर्व की चौड़ाई 4,600 मील। इसके उत्तर में भूमध्यसागर की लहरें हैं, पूर्व में हिन्द महासागर, पश्चिम में अतलांतक महासागर तथा दक्षिण में अण्टार्कटिक का पानी इसके चरण पखारता है। अफ्रीका महाद्वीप की आकृति एक ऐसे चपटे शंख की तरह है जिसकी नोक आशा अन्तरीप की ओर हो।

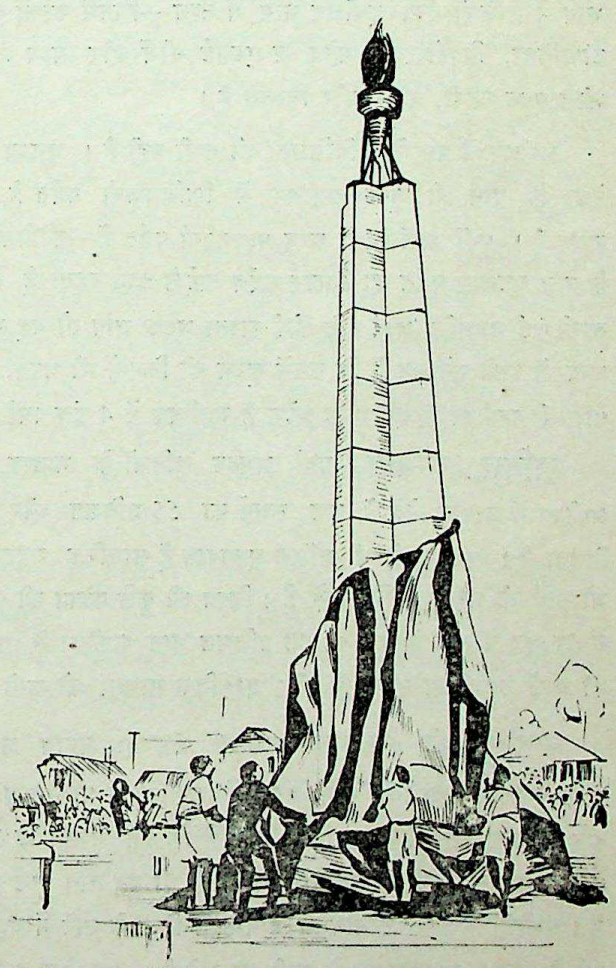

टांगानिका में स्वाधीनता स्तम्भ का अनावरण —1961

भौगोलिक स्वरूप—उत्तर में भूमध्यसागर से लगने वाले इलाके में मोराको, अल्जीरिया व ट्यूनीशिया के सकड़े तटवर्ती मैदान दिखाई पड़ते हैं। उनके पीछे हैं लगभग समानान्तर चली गई अटलास

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

की दो पर्वत मालाएँ। इन पर्वत मालाओं के नीचे से संसार की सबसे बड़ी मरुभूमि सहारा शुरू हो जाती है। जहाँ-जहाँ देखें वहाँ अनन्त बालू ही बालू दिखाई पड़ती है। बीच में कहीं-कहीं नखलिस्तान भी हैं। पूर्वोत्तर भाग में नील नदी के दोनों ओर उर्वर मैदान हैं। तटवर्ती पश्चिमी अफ्रीका व मध्य अफ्रीका में घने वन हैं। पूर्वी अफ्रीका मुख्यतः पठारी है। दक्षिणी कांगो के बाद अंगोला से नीचे सवाना घास के मैदान हैं। दक्षिणी अफ्रीका के पूर्वी हिस्से मैदानी हैं। आशा अन्तरीप (केप ऑफ गुड होप) के पास उत्तर की भांति ही सकड़े मैदान हैं।

अफ्रीका की सबसे बड़ी चार नदियाँ हैं—पश्चिमी भाग में नाइजर, मध्य भाग में कांगो, दक्षिणी भाग में जम्बेज़ी तथा पूर्वोत्तर भाग में नील—जिनमें काफी दूर तक नौ-परिवहन होता है। पूर्वी अफ्रीका में टांगानिका, विक्टोरिया, कीवू व एडवर्ड झीलें और मध्य अफ्रीका में चाड झील उल्लेखनीय हैं। टांगानिका झील बहुत गहरी, चौड़ी और विस्तृत है।

अफ्रीका में प्राकृतिक विविधता की कमी नहीं है। भूमध्य रेखा इसके मध्य से गुज़रती है और भूमध्य रेखा के पास ही पूर्वी अफ्रीका में किलिमंजरो पर्वत है, जिसका 19,400 फुट ऊँचा शिखर बर्फ़ से ढका रहता है। पूर्वी अफ्रीका में अन्य महत्त्वपूर्ण पर्वत हैं—कीनिया, चन्द्रगिरि और एल्गन। एक ओर मोराको के पास अटलास पर्वत का शिखर सदैव बर्फ़ से ढका रहता है तो दूसरी ओर दक्षिणी भाग में है सहारा की तपती हुई मरुभूमि, जहाँ यदि कोई रास्ता भटक जाय तो वह प्यासा ही दम तोड़ दे। एक ओर कांगो के उत्तरी भाग में इतने घने वन हैं कि उनमें सूरज की किरणें भी धरती तक नहीं पहुँच पातीं, तो दूसरी ओर दक्षिण-पश्चिमी अफ्रीका के ऐसे शुष्क प्रदेश हैं जहाँ वर्ष में 4 इंच वर्षा भी नहीं होती।

खनिज सम्पदा—यहाँ अमूल्य खनिजों के भण्डार हैं। विश्व के कुल हीरों में से 98 प्रतिशत अफ्रीका में उत्पन्न होते हैं, कुल स्वर्ण का 55 प्रतिशत और कुल तांबे का 22 प्रतिशत इसी महाद्वीप से मिलता है। पर इनसे भी अधिक मूल्यवान हैं सामरिक महत्त्व के खनिज—यूरेनियम, क्रोमियम तथा अभ्रक जो यहाँ की धरती में छिपे पड़े हैं। विश्व की कुल कोका की पूर्ति का 2/3 भाग अफ्रीका ही प्रदान करता है। संसार भर में ताड़ के तेल का 60 प्रतिशत भाग अफ्रीका से प्राप्त होता है। यहाँ की धरती पर दुनिया भर की चीज़ें उगाई जा सकती हैं और प्राकृतिक साधनों की कमी नहीं है।

अतीत की झलक—अफ्रीका संभवतः मानव जाति का उद्गम स्थल रहा होगा। ख्याति प्राप्त पुरातत्व वेत्ता मि० लीके को पूर्वी अफ्रीका में प्राचीन मानव का जो अस्थि पंजर प्राप्त हुआ, उससे कुछ पुरातत्व वेत्ताओं ने यह सिद्ध किया है कि इस भूभाग में 6 लाख वर्ष पूर्व भी मानव रहता था। यहाँ प्राप्त पत्थर की कुल्हाड़ियों और अन्य औज़ारों से भी यह बात पुष्ट होती है कि यहाँ मनुष्य बहुत पहले से रहते रहे हैं। अफ्रीका के पूर्वोत्तर भाग में अवस्थित मिस्र के बारे में यह एक जानी-मानी बात है कि वहाँ 6,000 वर्ष पूर्व से सभ्यता अक्षुण्ण रूप से चली आ रही है। पर ऐसा प्रतीत होता है कि मिस्र की सभ्यता एकाकी रही होगी। उसने अफ्रीका के अन्य देशों को प्रभावित नहीं किया। दक्षिण अफ्रीका में जो शैल चित्र (राक पेण्टिंग्ज) हैं, उनसे हज़ारों वर्ष पहले इस क्षेत्र के बुशमैन जीवन पर प्रकाश पड़ता है। दक्षिणी रोडेशिया में जिम्बाबवे स्थित खण्डहर और नाइजीरिया में बेनिन से प्राप्त प्राचीन मूर्तियों से भी यह पुष्ट होता है कि यहाँ

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

हज़ारों वर्ष पहले भी सभ्यता फल-फूल रही थी। 13वीं से 15वीं सदी के बीच पश्चिमी अफ्रीका में घाना, माली और कई अन्य साम्राज्यों का उदय हुआ था पर वे स्वतः ही अस्त भी हो गए। इन सब से स्पष्ट है कि अफ्रीका यूरोपियों के आगमन से पूर्व निरा शून्य नहीं था।

भारतीयों को अफ्रीका के बारे में हज़ारों वर्ष पहले से जानकारी थी और यूरोपियों के आने के बहुत पहले से ही पूर्वी अफ्रीका और पश्चिमी भारत के बीच, परस्पर व्यापार होता था। उत्तरी अफ्रीका का दक्षिणी यूरोप से काफी पुराना सम्पर्क था। यूरोपियों में, सर्वप्रथम फीनिशियनों ने इसकी खोज शुरू की थी और वे कार्थेज़ साम्राज्य की स्थापना में सफल हो गए। वे 520 ई० पूर्व तक सिएरा लिओन के तट तक पहुँच गए थे, पर अफ्रीका के अन्दर जाने का साहस नहीं हुआ। उत्तरी अफ्रीका कुछ समय रोमन साम्राज्य के अन्तर्गत भी रहा और उन दिनों की याद दिलाने वाले स्मारक अब भी शेष हैं। पुर्तगालियों ने अफ्रीका की खोज के लिए साहसिक प्रयत्न किए। राजकुमार हेनरी के समय (1394—1460) में एक पुर्तगाली नाविक डिआज़ 1489 तक आशा अन्तरीप तक पहुँच गया। भारत खोज के लिए आते समय वास्कोडीगामा 1498 में पूर्वी अफ्रीका के तट तक पहुँचा था। पुर्तगालियों के बाद डच, डेनिश, स्पेनिश, फ्रेंच और ब्रिटिश यात्री और व्यापारी इधर आये। पहले तो ये लोग सोना, हाथी दांत व गोंद का व्यापार करते रहे पर बाद में इन्हें गुलामों के व्यापार का चस्का पड़ गया। लगभग ढाई सौ वर्षों तक यूरोपियों ने इस घिनौने व्यापार से खूब कमाया। पूर्वी अफ्रीका में अरबों ने भी गुलामों का व्यापार किया। बाद में इस व्यापार पर प्रतिबन्ध लगा दिया गया। 19वीं शताब्दी के आखिरी दशकों में अफ्रीका पर कब्ज़ा करने के लिए यूरोपीय शक्तियों में होड़ लगी रही और 1911 तक ब्रिटेन, फ्रांस, स्पेन, इटली, जर्मनी, बेल्जियम पुर्तगाल समस्त अफ्रीका पर, केवल लाइबेरिया (पश्चिमी अफ्रीका) और इथीयोपिया (पूर्वी अफ्रीका) को छोड़, अधिपत्य जमाने में सफल हो गए। इस तरह की स्थिति द्वितीय विश्वयुद्ध तक चलती रही।

उपनिवेशवाद की ढलती सांझ—द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद में एशिया व अफ्रीका में राष्ट्रीयता की लहरें उमड़ीं और उपनिवेशों का क्षरण शुरू हुआ।

1955 में **फ्रांस**, अफ्रीका में सबसे बड़े उपनिवेशी साम्राज्य का स्वामी था, पर 1956 में ट्यूनीशिया व मोराको के, 1958 में फ्रेंच गिनी के, 1960 में माली, सेनेगाल, मेडागास्कर, आइवरी कोस्ट, नीजेर, वोल्टा, डहोमे, चाड, केन्द्रीय अफ्रीका (पुराना नाम—उबंगीसारी), कांगो (ब्राजविल) गैबॉन और मारीटेनिया के तथा 1962 में अल्जीरिया के स्वतन्त्र हो जाने के बाद फ्रांसीसी साम्राज्य समाप्तप्राय है। हाँ! इथियोपिआ और सोमालिया के पास एक छोटा-सा प्रदेश फ्रेंच सोमालीलैण्ड तथा मैडगास्कर के पास एक द्वीप रीयूनियन तथा एक द्वीपसमूह कोमोरे बच रहे हैं। क्षेत्रफल और आबादी दोनों की दृष्टि से ये महत्त्वपूर्ण नहीं हैं। राष्ट्रसंघ की धरोहर के रूप में फ्रांस को सौंपे गए क्षेत्र कैमरून व टोगोलैंड भी 1960 में स्वतन्त्र किए जा चुके हैं।

फ्रांस के बाद दूसरा साम्राज्य **ब्रिटेन** का था। ब्रिटेन ने अपने अधीनस्थ उपनिवेशों को अपने पैरों पर खड़ा करने में काफी योग दिया है। पश्चिमी अफ्रीका में स्वाधीनता का क्रम 1957 में घाना (पुराना नाम गोल्ड कोस्ट) की आज़ादी से शुरू हुआ। 1960 में नाइजीरिया व 1961 में सिएरा लिओन के आज़ाद हो जाने के बाद ब्रिटेन का एक छोटा-सा उपनिवेश बच रहा है—गैम्बिया। यह भी 1965 की फरवरी में स्वतन्त्र

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

हो चुका है। पूर्वी अफ्रीका में, राष्ट्रसंघ की धरोहर के रूप में सौंपा गया टांगानिका 1961 में स्वतन्त्र किया जा चुका है। 1962 में उगाण्डा तथा 1963 में कीनिया व जंजीबार भी स्वाधीन हो चुके हैं। 1964 में उत्तरी रोडेशिया व नयासालैण्ड स्वतन्त्र हो गए हैं। दक्षिणी अफ्रीका में बेचुआनालैण्ड, स्वाजीलैण्ड व बसूतोलैण्ड पराधीन हैं। पर इनमें भी वैधानिक प्रगति का क्रम शुरू हो गया है और आशा है कि ये भी शीघ्र ही स्वतन्त्र हो जाएँगे।

बेल्जियम का एकमात्र विशाल उपनिवेश कांगो 1960 में आज़ाद हो गया तथा राष्ट्रसंघ के ट्रस्ट क्षेत्र, रुआण्डा व बुरुण्डी के 1962 में स्वतन्त्र हो जाने पर यहाँ से बेल्जियम साम्राज्य का अब नामोनिशान मिट गया।

इटली ने भी 1960 में ही अपने ट्रस्ट क्षेत्र, सोमालिया को 10 वर्ष के शासन से मुक्त कर दिया तथा अब यह भूतपूर्व ब्रिटिश सोमालीलैण्ड के साथ मिलकर एक स्वतन्त्र गणराज्य बन चुका है।

देर-अबेर फ्रांस, ब्रिटेन और बेल्जियम ने तो समय की पुकार सुन ली और समस्त महाद्वीप में बहती हुई राष्ट्रवाद की तेज़ आँधी के सामने घुटने टेक दिये किन्तु दो उपनिवेशवादी ताकतें ऐसी हैं जो राष्ट्रीयता की लहर की उपेक्षा कर रही हैं। ये हैं—स्पेन और पुर्तगाल।

वैसे क्षेत्रफल और जनसंख्या दोनों की ही दृष्टि से **स्पेन**-अधीन इलाके खास महत्त्व के नहीं हैं। इसका एक इलाका है मोराको के पास, स्पेनिश सहारा तथा दूसरा अंगोला के पास है—स्पेनिश गिनी। दोनों का क्षेत्रफल 1,34,700 वर्गमील से अधिक नहीं है। अब स्पेन ने इन्हें स्वतन्त्रता तो नहीं पर स्वायज्ञता देना स्वीकार कर लिया है।

पर **पुर्तगाल** एक बड़े इलाके को दबाये बैठा है और वह उपनिवेशवादी शक्तियों में सबसे क्रूर और ढीठ है। इसके पास है—पश्चिमी तट पर स्थित अंगोला, पूर्वी तट पर स्थिति मोज़ाम्बीक तथा पश्चिमी अफ्रीका में सेनेगाल के पास स्थित पुर्तगाली गिनी। यह कुल मिलाकर कोई 7,78,000 वर्गमील क्षेत्रफल है तथा इनमें एक करोड़ से अधिक लोग रहते हैं।

ये देश तो पराधीन हैं और इनके लिए हम उपनिवेशी शक्तियों को दोषी ठहरा सकते हैं पर दक्षिण अफ्रीका और दक्षिण रोडेशिया पराधीन राष्ट्र नहीं हैं, फिर भी वहाँ के मूल निवासी अफ्रीकी लोग पराधीनता का जीवन बिता रहे हैं। क्योंकि इनमें राजसत्ता अल्पसंख्यक प्रवासी गोरों के हाथ में है। दक्षिण अफ्रीका की गोरी सरकार न केवल अपने यहाँ के अफ्रीकियों को पूर्ण अधिकार नहीं देती बल्कि 'लीग ऑफ नेशन्स' से धरोहर में प्राप्त दक्षिण-पश्चिमी अफ्रीका को भी हड़प लेना चाहती है और वह गैर-यूरोपियों के साथ जातीय भेद-भाव बरतती है। दक्षिण रोडेशिया में भी अल्पसंख्यक गोरों ने अफ्रीकियों को दबा रखा है।

जातियों का गुलदस्ता—इस विशाल महाद्वीप में कोई 24 करोड़ व्यक्ति रहते हैं। इनमें सभी काले नहीं हैं। उत्तरी अफ्रीका, इथियोपिया, सोमालिया में सामी और हामी वर्ग के लोग रहते हैं जो नीग्रो लोगों से रंग-रूप में ही नहीं, नाक-नक्श में भी भिन्न हैं। हामी वर्ग में बर्बर, काबेल, सियाना, तिबू, तुआरेग, गाला व सोमाली जातियाँ हैं और सामी वर्ग इथियोपिया, मिश्री, अरब आदि लोग हैं पर ये दोनों वर्ग अब घुलमिल गए हैं। उत्तरी अफ्रीका में रहने वाले अरब उतने ही गोरे हैं जितने कि दक्षिणी यूरोप के लोग।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

सहारा के दक्षिण में काले रंग के लोग हैं जो कुल जनसंख्या का 5/6 भाग हैं । गिनी तट के ऊपर पश्चिमी अफ्रीका तथा मध्य अफ्रीका में नीग्रो लोग हैं । इनकी अनेकों जातियाँ है । बांतू वर्ग के लोग भूमध्य रेखा के दक्षिणी भाग से लेकर ठेठ दक्षिण में अन्तरीप तक फैले हुए हैं । अफ्रीका के दक्षिणी भाग में ही बुशमैन वर्ग के लोग हैं पर इनकी संख्या कम है ।

अफ्रीका में कांगों के उत्तरी भाग के जंगलों में बौनों का वर्ग भी है जिनकी औसत ऊँचाई 4 फुट है और जो संसार में सबसे ठिगने लोग हैं । कांगों की पूर्वी सीमा पर ही आपको 7 फुटे वुत्सी लोग भी मिल जाएँगे जो संसार के लोगों में सबसे लम्बे कहे जाते हैं । अफ्रीका में जहाँ कुछ ऐसे लोग हैं जो पशु पक्षियों के शिकार पर गुज़र-बसर करते हैं तो जंगल में रहने वाली ऐसी जातियाँ भी हैं, जो मांस को छूती तक नहीं ।

कुल मिलाकर इस महाद्वीप में 700 भाषाएँ बोली जाती हैं । उनमें से 10 सामी वर्ग की, 47 हामी वर्ग की, 182 बांतू वर्ग की और 284 सूडानी वर्ग की भाषाएँ हैं । इनमें कोई 200-300 भाषाएँ अब लिखी जा सकती हैं । शेष केवल बोली जाती हैं । पूर्वी अफ्रीका में स्वाहिली तथा पश्चिमी अफ्रीका में हॉसा प्रमुख भाषाएँ हैं ।

धर्मों की दृष्टि से देखा जाय तो मोटे तौर पर उत्तरी अफ्रीका में इस्लाम धर्म के अनुयायी हैं । इस्लाम यहाँ अरबों द्वारा 600 ई० में फैलाया गया था । सहारा से दक्षिण के लोग जड़ात्मवादी (एनिमिस्ट) तथा मूर्तिपूजक हैं । यह इनका प्राचीन धर्म है । ईसाई मिशनरियों ने अपने धर्म का भी काफी प्रचार किया है । अतः काफी ईसाई भी यहाँ हैं । इथियोपिआ देश के लोग भी ईसाई हैं पर वे भी देशी ईसाई हैं, मिशनरियों द्वारा बनाए गए नहीं । पूर्वी अफ्रीका में हिन्दू भी उल्लेखनीय संख्या में हैं ।

समाज-व्यवस्था—अफ्रीकी लोग चाहे किसी नस्ल के हों, सब अनेकों कबीलों में बंटे होते हैं, और कबीले का मुखिया सरदार होता है । अभी तक ज्यादातर लोग कबीलों के रीति-रिवाजों में जकड़े हुए हैं । सामाजिक व्यवस्था के बारे में दो बातें उल्लेखनीय हैं । एक तो यह कि अधिकाँश कबीलों में बधू के लिए क़ीमत चुकाने की प्रथा है । यह क़ीमत वर द्वारा नकद रुपया, पशु देकर अथवा श्वसुर के खेत पर कुछ समय मज़दूरी करने के रूप में चुकाई जाती है । लगभग 88 प्रतिशत कबीलों में बहुपत्नित्व की प्रथा प्रचलित है । पर पत्नियों में परस्पर लड़ाई-झगड़ा नहीं होता क्योंकि प्रथम पत्नी जीवन पर्यन्त श्रेष्ठतम मानी जाती है और पति हर पत्नी को मकान देता है तथा कुछ समय बारी-बारी से हरेक के पास बिताता है । अफ्रीकी जातियों के मातृवंशीय और पितृवंशीय दोनों प्रकार के समाज हैं ।

अभी तो अफ्रीकियों का एक बड़ा प्रतिशत निरक्षर है पर शिक्षा का प्रकाश तेज़ी से फैल रहा है और अफ्रीकियों की जो नई पीढ़ी तैयार हो रही है वह आधुनिक वातावरण के अधिक निकट है । उसका दृष्टिकोण व्यापक है तथा प्राचीन रीति-रिवाजों और रूढ़ियों के प्रति उनकी निष्ठा कम है । अफ्रीकी अब हर क्षेत्र में तरक्की कर रहे हैं, चाहे वह इंजीनियरी हो या टेक्नोलाजी विज्ञान हो, या शिक्षा, कला हो या शिल्प । आज अफ्रीकियों में अच्छे कलाकार, साहित्यकार, पत्रकार, शिक्षाविद् और राजनेता मौजूद हैं । वैज्ञानिकों की कमी भी तेज़ी से पूरी हो रही है ।

कला व शिल्प—अफ्रीकियों का कला व शिल्प से परम्परागत प्रेम रहा है । ढोल वादन और नृत्य यहाँ के जन-जीवन का अभिन्न अंग है । नाइजीरिया से प्राप्त बेनिन की मूर्तियाँ और घाना से प्राप्त मिट्टी के पुराने पात्र तथा अन्य वस्तुयें यहाँ के कारीगरों और शिल्पियों का कौशल दर्शाती हैं । आज मूर्तिकला, चित्रकला

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

तथा दस्तकारियों के क्षेत्र में काफ़ी काम हो रहा है। पत्रकारिता और साहित्यिक क्षेत्र भी अछूता नहीं है। पश्चिमी व पूर्वी अफ्रीकी देशों में कई पत्र-पत्रिकाएँ निकलती हैं। साहित्यिक क्षेत्र में, नाइजीरिया, घाना तथा दक्षिण अफ्रीका में काम हो रहा है और नई-नई साहित्यिक कृतियाँ तैयार हो रही हैं।

अफ्रीका वन्य जीवों का भी आगार है। विशेष कर पूर्वी अफ्रीका में पाये जाने वाला 18-19 फुट ऊँचा जिर्राफ अपनी लम्बी गर्दन के लिये प्रसिद्ध है। काली और सफेद धारियों वाला ज़ेबरा तथा दरियाई घोड़ा अफ्रीका के विशेष चौपाये हैं। यहाँ के अन्य उल्लेखनीय जानवरों में ओकापी, नू-हिरण, दो सींग का गेण्डा, शेर, हाथी, गोरिल्ला व वनमानुष हैं। पक्षियों में मधु छत्ता बनाने वाली मधु चिड़िया—लाल, हरे व सुनहरी रंग वाली सूरज चिड़िया तथा गुलाब रंग का फ्लेमिंगो तथा शुतुर्गमुर्ग प्रमुख हैं।

प्राकृतिक वैविध्य और घटना पूर्ण अतीत वाले अफ्रीका में, साम्राज्यवादियों द्वारा पद-दलित किये गए और राष्ट्रीयता की आग से धधकते अफ्रीका में, विभिन्न जातियों और अनेक भाषाओं के अफ्रीका में, विभिन्न जीव-जन्तुओं के आगार अफ्रीका में, परिवर्तन का चक्र बड़ी तेजी से घूम रहा है। अब से कोई 12-13 वर्ष पहले यहाँ केवल 4 देश स्वतन्त्र थे—अब यह संख्या 36 तक पहुँच गई है और तीन चौथाई अफ्रीका के लोग अब स्वतन्त्र आकाश में साँस ले रहे हैं। पराधीन देशों में भी आज़ादी की आग सुलग चुकी है। 1963 में हुए अदिस-अबाबा सम्मेलन में भी सभी स्वतन्त्र अफ्रीकी देशों ने अपने 'अफ्रीकी एकता संगठन' का निर्माण किया है। और पराधीन देशों के मुक्ति संग्राम में मदद करने का संकल्प किया है। वह दिन दूर नहीं जबकि समस्त अफ्रीका, अंध महाद्वीप कहा जाने वाला अफ्रीका, स्वातन्त्र्य-ज्योति से जगमगा उठेगा।

'अफ्रीका का जागरण बीसवीं सदी की
सबसे उत्साहवर्द्धक घटना है—'

—जवाहरलाल नेहरू

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पश्चिमी अफ्रीका

1. सेनेगाल (SENEGAL)
2. गैम्बिया (GAMBIA)
3. पुर्तगाली गिनी (PORT. GUINEA)
4. गिनी गणराज्य (GUINEA REPUBLIC)
5. सिएरा लिओन (SIERRA LEONE)
6. लाइबेरिया (LIBERIA)
7. आइवरी कोस्ट (IYORY COAST)
8. माली (MALI)
9. नीजेर (NIGER)
10. वोल्टा (VOLTA)
11. घाना (GHANA)
12. टोगो (TOGO)
13. डहोमे (DAHOMEY)
14. नाइजीरिया (NIGERIA)
15. कैमरून (CAMEROON)

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

I. सेनेगाल

(SENEGAL)

क्षेत्रफल : 76,084 वर्ग मील **जनसंख्या** : 29,80,000

सबसे पहले हम आपको पश्चिमी अफ्रीका लिए चलते हैं। अफ्रीका के पश्चिमी तट पर एक नुकीला-सा भूखण्ड अटलांटिक महासागर की ओर निकला हुआ है। यह वर्दे प्रायद्वीप है और इस पर बसा है अफ्रीका का एक आधुनिक, आकर्षक और अनूठा नगर—डकार। डकार की चौड़ी-चौड़ी सड़कें, नये ढंग की गगनचुम्बी इमारतें, मनोहर उद्यान, और बने-ठने युवक-युवतियों को देखकर कुछ क्षण के लिए आप भूल जाएँगे कि यह यूरोप है या अफ्रीका, पर जिस तरह आप नई दिल्ली या बम्बई को देखकर वास्तविक भारत का अनुमान नहीं लगा सकते, उसी प्रकार डकार की सजधज से समस्त अफ्रीका का अनुमान न लगाइये।

डकार जिस देश की राजधानी है वह है—सेनेगाल। यह एक तटवर्ती देश है। इसका क्षेत्रफल 7,60,84 वर्गमील है जो हमारे वर्तमान मैसूर राज्य से कुछ ही अधिक है। सेनेगाल के उत्तर में मारीटेनिया है और सेनेगाल नदी उत्तर में इसकी प्राकृतिक सीमा बनाती है। इसके पूर्व में माली गणराज्य, दक्षिण में पुर्तगाली गिनी और गिनी गणराज्य हैं। सेनेगाल का मानचित्र मानव की खोपड़ी से मिलता-जुलता है। वर्दे प्रायद्वीप नाक का सा और गैम्बिया का लम्बा प्रदेश जबड़े का सा रूप देते हैं। इसके अन्दर बहने वाले नदी-नाले नस नाड़ियों की तरह लगते हैं। सेनेगाल की भूमि अधिकतर मैदानी और समतल है। दक्षिण पूर्व में कुछ पठार है जिनकी अधिकतम ऊँचाई 1,640 फुट है। वर्दे प्रायद्वीप के उत्तर का तट सपाट है पर दक्षिण की तरफ कटा-फटा है। सेनेगाल की प्रमुख नदियाँ चार हैं—सेनेगाल नदी उत्तर में है; मध्य भाग में सलोन और साइन नदियाँ बहती हैं; गिनी गणराज्य की सीमा में से आने वाली गैम्बिया नदी इसके दक्षिण भाग की सिंचाई करती है और फिर वह गैम्बिया देश की सीमा में चली जाती है; कैसेमेंस और इसकी सहायक नदी, गैम्बिया देश और पुर्तगाली गिनी के बीच के भाग का सिंचन करती है। नदी घाटियाँ काफी उर्वरा हैं पर मध्य और पूर्वी भाग में रेगिस्तान की सी हालत है। नवम्बर से जुलाई के बीच यहाँ मौसम शुष्क रहता है। वर्ष के शेष भाग में नम।

अतीत की झलक—सेनेगाल की घाटी से मिली पूर्व-पाषाणकाल की कुल्हाड़ियों, डकार के पास उत्तर पाषाण युग के तीरों तथा साइन व सोलन नदियों की घाटियों से प्राप्त लोहे, ताम्बे तथा पत्थर की वस्तुओं के आधार पर अनुमान लगाया जाता है कि इस भूभाग में बहुत प्राचीन काल से मनुष्य रहते आये हैं। ऐतिहासिक तथ्यों से पता चलता है कि यहाँ सर्व प्रथम तुकुलर जाति के लोग रहते थे। यह कोई नवीं सदी की बात है। 14वीं सदी के आस-पास यहाँ पियोल जाति ने अपना राज्य बनाया और तुकुलरों को अपनी अधीनता में कर लिया। कुछ समय बाद तुकुलरों ने भी अपनी स्वतन्त्र रियासत क़ायम कर ली। 14वीं सदी में वोलोफ जाति का भी यहाँ एक राज्य बना। सेरार जाति के लोगों ने भी अपनी एक रियासत बनाई। इस प्रकार 15वीं सदी में जब यूरोपियों ने इधर आना शुरू किया था, उस समय यहाँ कई देशी रियासतें विद्यमान थीं।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

यूरोपियों में सर्व प्रथम पुर्तगाली यहाँ आये। 1444 में एक पुर्तगाली नाविक सेनेगाल नदी के मुहाने तक जा पहुँचा और उसने वहाँ एक कारखाना भी खड़ा कर दिया। पुर्तगालियों का इधर आने का उद्देश्य गुलाम खरीदना तथा सोना प्राप्त करना था। उनका ख्याल था कि पश्चिमी अफ्रीका तट के आस-पास ही कहीं सोने के भण्डार हैं। 16वीं शताब्दी तक ब्रिटेन और फ्रांस के लोग भी इधर आ पहुँचे और फिर तीनों यूरोपीय शक्तियों में प्रतिस्पर्धा होने लगी। 1659 में फ्रांस सेनेगाल के मुहाने पर स्थित छोटे-से द्वीप में अपनी बस्ती बनाने में सफल हो गया। 14वें लुइस के नाम पर इस स्थान का नाम सेन्ट लुइस रख दिया गया। इसके बाद सेनेगाल नदी के किनारे-किनारे फ्रांसीसियों ने आंतरिक भाग में बढ़ना शुरू किया। 1840 तक यह उत्तरी भाग फ्रांस के अधीन हो गया। 1857 में फ्रांसीसी डकार में पहुँच गए और 19वीं सदी के ढलते-ढलते सेनेगाल उनके प्रभाव में आ गया।

द्वितीय विश्वयुद्ध तक अन्य फ्रांसीसी उपनिवेशों की तरह यहाँ भी फ्रांस का पंजा कठोरता से जमा रहा। 1944 में ब्राजविल में एक सम्मेलन हुआ था इसमें यह फैसला किया गया कि फ्रांस की उपनिवेश-नीति में महत्त्वपूर्ण परिवर्तन किया जाय। अधीनस्थ क्षेत्रों को क्रमशः स्वायत्तता प्रदान की जाय तथा नागरिकों को अधिकार दिये जाएँ। इस नीति के प्रतिपालन स्वरूप फ्रांस के 1946 के संविधान के अनुसार अधीनस्थ क्षेत्रों को 'उपनिवेश' के स्थान पर 'सागरपारीय प्रदेश' कहा जाने लगा। इसी क्रम में सागरपारीय प्रदेशों में असेम्बलियाँ बनाई गईं। सेनेगाल में पहली असेम्बली 1947 में क़ायम हुई थी। सेनेगाल ने फ्रांसीसी संसद् में भी अपने प्रतिनिधि भेजे।

पर सभी फ्रांसीसी अधीनस्थ क्षेत्रों के जीवन में एक ऐतिहासिक मोड़ 1958 में फ्रांस के राजनैतिक क्षितिज पर जनरल डिगाल के आविर्भाव से आया। जनरल डिगाल ने फ्रांस के पंचम गणराज्य का संविधान तैयार किया। इसमें ब्रिटिश राष्ट्रमण्डल की तरह के ही एक फ्रांसीसी राष्ट्रमण्डल (फ्रेंच कम्यूनिटी) की व्यवस्था रखी गई। डिगाल ने संविधान पर मत-संग्रह का आयोजन किया और सब अफ्रीकी देशों को (अल्जीरिया के अलावा) छूट दी कि वे चाहें तो संविधान के विरुद्ध मत देकर पूर्ण स्वतन्त्र हो सकते हैं अथवा पक्ष में मत देकर एक स्वायत्त राष्ट्र बनकर फ्रांसीसी राष्ट्रमण्डल के सदस्य बन सकते हैं। अधिकाँश फ्रांसीसी क्षेत्रों ने संविधान स्वीकार कर लिया। सेनेगाल के 97 प्रतिशत लोगों ने संविधान के पक्ष में मत दिया।

शासन-व्यवस्था—वयस्क मताधिकार पर चुनी हुई प्रादेशिक असेम्बली ने 25 नवम्बर, 1958 को सेनेगाल को गणराज्य बनाने की घोषणा की। उसी दिन यह फ्रांसीसी राष्ट्रमण्डल का भी सदस्य बन गया। पर तब तक यह पूरी तरह स्वतन्त्र नहीं था।

17 जनवरी, 1959 को इसने अपने पूर्वी पड़ोसी फ्रेंच सूडान के साथ मिलकर माली संघ बनाया। 20 जून, 1959 को माली संघ पूर्ण स्वतन्त्र घोषित कर दिया गया था, पर यह संघ अधिक निभ न सका। छः महीने बाद 20 अगस्त को सेनेगाल और फ्रेंच सूडान के नेताओं में मतभेद होने के कारण यह संघ टूट गया और सेनेगाल ने पृथक् स्वतन्त्रता घोषित कर दी तथा उसने अपना नया संविधान पारित कर लिया।

सेनेगाल एक गणराज्य है। राष्ट्राध्यक्ष और कार्यकारी अध्यक्ष राष्ट्रपति होता है जो सात वर्ष के लिए चुना जाता है। आजकल, कुशल राजनीतिज्ञ और सुप्रसिद्ध कवि लियोपोल्ड सेंघोर राष्ट्रपति हैं। वैधानिक कार्य के लिए एक राष्ट्रीय सभा है जिसमें 80 सदस्य होते हैं। सदस्य वयस्क मताधिकार से 5 वर्ष के लिए

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

चुने जाते हैं। न्यायिक कार्यों के लिए एक न्यायपालिका है जो कार्यपालिका से स्वतन्त्र है। फ्रेंच राजभाषा है। यहाँ के राष्ट्रीय ध्वज में हरे, पीले तथा लाल रंग की खड़ी पट्टियाँ हैं तथा मध्य में हरे रंग का पंचकोना सितारा है।

जन-जीवन—सेनेगाल की जनसंख्या लगभग 29 लाख 70 हज़ार है। तटवर्ती देश होने के कारण यह देश पश्चिम के सम्पर्क में जल्दी आया और इसी कारण यहाँ राजनैतिक चेतना भी काफ़ी पहले से फैल

सजी धजी एक सेनेगाली युवती

गई। यहाँ की सबसे बड़ी जाति वोलोफ है। ये लोग सेन्ट लुइस के दक्षिण की ओर तटवर्ती भाग में रहते हैं। इनका कद लम्बा होता है और रंग बहुत काला। देहातों में ये लोग घास-फूंस की वर्गाकार झोपड़ियों में रहते हैं। काफ़ी लोग अब शहरों में भी रहने लगे हैं और पढ़-लिख गए हैं। शहरों में अक्सर ये दफ्तरों में काम करते हैं। यह जाति ही सबसे पहले पश्चिम के सम्पर्क में आई थी। इसलिए इस जाति के न केवल पुरुष बल्कि महिलाएँ भी राजनीति में दखल रखती हैं। तुकुलर जाति उत्तर की सीमावर्ती नदी सेनेगाल की घाटी में रहती है। ये मुसलमान हैं और शेख-सरदारों की अधीनता में रहते हैं। पिओल

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

भी एक अन्य मुस्लिम जाति है जो दक्षिण की नदी ऊपरी कैसेमेंस के पूर्व में तथा फर्ले के पश्चिम में रहती है। सेरेर जाति साइन और सोलम नदियों की घाटियों के मध्य भाग में रहती है। गाँवों में मुख्य धन्धा खेती व पशुपालन है। वोलोफ व पूलर यहाँ की प्रमुख देशी भाषाएँ हैं।

शहरों की वोलोफ़ महिलाएँ आधुनिक रंग में रंगी रहती हैं। उन्हें सजधज और शृंगार का बड़ा चाव है। सिर पर है एक विशेष प्रकार की टोपी पहनती हैं जो घोड़े के बालों से बनायी जाती हैं। इसकी आकृति सींग से मिलती-जुलती होती है। सिर पर मलमल के हल्के रंग का कलफ़दार दुपट्टा अनोखे ढंग से लपेटती हैं जो बहुत आकर्षक लगता है। सिर पर सोने के गोल सिक्के भी लटकाती हैं और कानों में सोने की बालियाँ पहनती हैं। डकार शहर में संध्या के समय रंग-बिरंगे परिधान पहने ये बनी-ठनी महिलाएँ तितलियों की तरह घूमती देखी जा सकती हैं। डकार में शृंगार सज्जा की कई बड़ी-बड़ी दुकानें भी हैं। उत्सव-त्यौहारों में महिलाएँ बड़े चाव से भाग लेती हैं। ऐसा ही एक उत्सव है—एम्वर।

शहरों के पुरुष अब पाश्चात्य कपड़े पहनने लगे हैं पर गाँवों में आम तौर पर लम्बा चोगा ही पहना जाता है। सिर पर गोल टोपी लगाते हैं। पर कुछ लोग साफा भी बाँधते हैं। उत्तरी सेनेगाल के लोग इस्लाम-धर्म के अनुयायी है। डकार के आस-पास ईसाई और दक्षिण के लोग जड़ात्मवादी हैं।

अर्थ-व्यवस्था—सेनेगाल विश्व भर में मूँगफली का सबसे बड़ा उत्पादक है। यह एक व्यापारिक फसल है तथा इसके निर्यात से यह देश काफ़ी धन अर्जित करता है। हाल ही में चावल तथा अन्य अनाज की उपज बढ़ाने के प्रयत्न किये गए हैं। सेनेगाल नदी की घाटी में (सेंट लुइस के उत्तर पूर्व में) रिचार्ड टोल नामक परियोजना पूरी की गई है जहाँ अब यान्त्रिक ढंग से 14,280 एकड़ धरती से प्रतिवर्ष 15 हज़ार टन चावल उगाया जाता है। कैसेमेंस की घाटी में भी धान उगाया जाता है। सेनेगाल की खानों में फास्फेट खनिज मिला है। अब इसे व्यवस्थित ढंग से निकालने का काम शुरू हो गया है। सेनेगाल में चूना भी होता है जो सीमेंट बनाने के काम आता है। यहाँ तेल की खोज भी हो रही है।

यद्यपि कृषि ही आय का मुख्य साधन है फिर भी भूतपूर्व पश्चिमी फ्रेंच अफ्रीका में सबसे अधिक कारखाने इसी देश में हैं। ज्यादातर कारखाने तेल निकालने और उसका विधायन करने के हैं।

सेनेगाल की उत्तम शिक्षा-व्यवस्था का प्रतीक है—डकार विश्वविद्यालय। 1957 में स्थापित हुई इस संस्था में डाक्टरी और कानून की शिक्षा की भी व्यवस्था है। देश में फैले विभिन्न स्कूलों के अलावा डकार में एक टेक्नीकल कालेज भी है।

सेनेगाल अफ्रीका के भाग्यशाली देशों में से है जहाँ रेल लाइनें बिछी हैं। मुख्य रेलवे लाइन डकार से मध्य भाग में होती हुई पूर्वी भाग में चली गई है। दूसरी लाइन डकार से ही उत्तर सेनेगाल नदी के मुहाने पर स्थित सेंट लुइस चली गई है वहाँ से एक शाखा पूर्व की ओर-लिगुंर तक गई है। सेनेगाल में आठ हवाई अड्डे हैं। यहाँ कोई 7,000 मील लम्बी अच्छी सड़कें हैं जो प्रमुख नगरों को मिलाती हैं।

राजधानी डकार एक रमणीय नगर है। जो कई अन्तर्राष्ट्रीय विमान-सेवाओं से जुड़ा हुआ है। डकार का बन्दरगाह पश्चिमी अफ्रीका के सर्वोत्तम बन्दरगाहों में से एक है। इसकी आबादी तेज़ी से बढ़ती जा रही है। डकार में 2 रेडियो प्रसारण केन्द्र हैं। यहाँ से 14 पत्र-पत्रिकाएँ प्रकाशित होती हैं।

उत्तर में सेनेगाल के मुहाने पर स्थित सेंट लुइस भी एक अच्छा नगर है। यहाँ एक देखने-योग्य संग्रहालय भी है। डकार के पूर्व में थीसनगर है जो कृषि केन्द्र है और यहाँ पीले पुष्पों की अद्भुत छटा दूर से आकृष्ट करती है। दक्षिणवर्ती कैसेमेंस नदी के मुहाने पर स्थिति जिगिनकोर मूँगफली उत्पादन का प्रसिद्ध केन्द्र है। एक बार यहाँ पीत ज्वर की महामारी में सारी की सारी आबादी काल-कवलित हो गई थी, तब से इसे अश्रुनगरी भी कहते हैं।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

2. गैम्बिया

(GAMBIA)

क्षेत्रफल : 4,003 वर्गमील **जनसंख्या :** 2,88,800

सेनेगाल की भौगोलिक सीमा में ही एक लम्बे व टेढ़े-मेढ़े कीड़े की सी आकृति का देश है—गैम्बिया। यह मुख्यतया गैम्बिया नदी के दोनों तरफ का भाग है। इसके पश्चिम की ओर अतलांतक महासागर है और शेष सभी तरफ से सेनेगाल से घिरा है। इसका क्षेत्रफल 4,003 वर्गमील है जो हमारे त्रिपुरा के बराबर भी नहीं है। नदी के दोनों ओर की चौड़ाई 7 से 20 मील की है तथा लम्बाई 180 मील। गैम्बिया देश की सीमा में गैम्बिया नदी की लम्बाई कोई 300 मील है। इसकी भूमि मुख्यतया समतल है। यहाँ की जलवायु गर्म है। नवम्बर से मई तक का मौसम शुष्क होता है और जून से अक्तूबर तक बरसात रहती है।

गैम्बिया की कुल आबादी 2,88,800 के लगभग है। अन्तरिक प्रदेश में मंडिगो, फूला, वोलोफ, जोला, सेराहुली जातियाँ रहती हैं। जोलो यहाँ की संभवत: सब से पुरानी जाति है। मंडिगो लगभग सब तरफ में रहते हैं पर मध्यभाग में ज्यादा हैं। फूला जाति के लोग मैकार्थी द्वीप तथा पूर्वी भाग में रहते हैं। सेराहुली भी पूर्वी भाग में ही हैं। पश्चिमी भाग में जोला जाति है। सेंट मेरी द्वीप में अफ्रीकियों के अलावा सीरियाई लेबनानी तथा कुछ यूरोपीय भी रहते हैं। देशी भाषाओं में, मंडिगो अधिक बोली जाती है। यहाँ के 90 प्रतिशत लोग खेतिहर हैं। धर्म की दृष्टि से 85 प्रतिशत लोग इस्लाम के अनुयायी हैं।

गैम्बिया को सर्वप्रथम 1455 में पुर्तगाली नाविकों ने खोजा था। 1494 में एक संधि के पश्चात् पुर्तगाल को यहाँ व्यापार का एकाधिकार मिल गया था पर 1588 में यह अधिकार इंग्लैण्ड के कुछ व्यापारियों को हस्तान्तरित कर दिया गया। कुछ समय तक फ्रांसीसी भी इधर व्यापार करते थे पर बाद में उन्होंने यह भाग ब्रिटेन के पक्ष में छोड़ दिया।

लगभग 1651 में कूरलैण्ड (ब्रिटेन) के ड्यूक जेम्स ने नदी के अन्दर 16 मील जाकर वहाँ के एक द्वीप पर दुर्ग बनाया था। अंग्रेजों ने जब 1661 में पुन: यहाँ अधिकार किया तो इस दुर्ग का नाम जेम्स फोर्ट रख दिया। कुछ समय तक एक कम्पनी के अन्तर्गत रहने के बाद 1765 से इसका शासन ब्रिटिश सरकार ने सम्हाल लिया। गैम्बिया इतना छोटा देश है कि दो बार इसे सिएरा-लिओन के साथ शासित होना पड़ा। पहली बार इसे 1821 में सिएरा-लिओन के साथ मिलाया गया। पर 1843 में इसे अलग कर दिया और एक पृथक् गवर्नर के अधीन कर दिया गया। 1866 में यह पुन: सिएरा लिओन के साथ मिला दिया गया। पर 1888 में फिर अलग हो गया। तब से अलग ही है। 1902 में इसके आंतरिक भाग को ब्रिटेन का रक्षित प्रदेश घोषित किया गया।

गैम्बिया की स्वाधीनता की ओर प्रगति काफ़ी मन्द रही है। 1947 में यहाँ की विधान परिषद् में पहली बार गैर सरकारी सदस्य बहुमत में रखे गए थे, 1954 में गैरसरकारी प्रतिनिधियों की संख्या

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

बढ़ाई गई। 1960 से इस परिषद् को प्रतिनिधि सदन की संज्ञा दी गई और इसमें 19 सदस्य जनता द्वारा निर्वाचित रखे गए। मार्च, 1961 से यहाँ मुख्य मंत्री का पद बनाया गया। अप्रैल, 1962 से यहाँ नया संविधान लागू हुआ जिसके अनुसार मई, 62 में चुनाव हुए जिसमें पीपुल्स प्रोग्रेसिव पार्टी विजयी हुई और इसके नेता श्री जवारा पहले प्रधान मंत्री बनाये गए। जुलाई, 1963 में ब्रिटेन ने संविधान-सम्मेलन के बाद निश्चय किया है कि यह देश फरवरी, 1965 में स्वतंत्र कर दिया जाएगा।

गैम्बिया स्वतन्त्र होकर भी एक पृथक् इकाई के रूप में क़ायम नहीं रह सकता। भौगोलिक, भाषाई, सामाजिक व अन्य रूप से यह सेनेगाल का ही भाग है। आशा है कि यह स्वतन्त्र होकर सेनेगाल में मिल जाएगा या उसके साथ संघ बना लेगा।

गैम्बिया की मुख्य फसल मूंगफली है। राजधानी बैथुर्स्ट से कोई 150 मील अन्दर की ओर कनतोर नामक जगह मूंगफली का प्रमुख केन्द्र है। जहाँ ज्यादा पानी मिल जाता है, वहाँ चावल की भी खेती होती है। शिक्षा की प्रगति बहुत धीमी है। सड़कें भी बहुत कम हैं। गैम्बिया नदी ही परिवहन का मुख्य साधन है। इस नदी में 300 मील तक नौपरिवहन सम्भव है। कुछ सड़कें भी हैं। सेंट मेरी द्वीप में राजधानी बैथुर्स्ट है। यहाँ से 17 मील दूर एक हवाई अड्डा भी है।

"कदाचित् यह कहना अतिशयोक्ति नहीं होगी कि अफ्रीकी लोग पृथ्वी पर सबसे अधिक संगीत प्रेमी हैं। शायद ही कोई ऐसा अफ्रीकी हो जो अपने समाज के लोक संगीत में योग देने में समर्थ न हो। छोटी आयु के बच्चों से भी यह अपेक्षा की जाती है कि वे नाचना और गाना सीख लें"

—एंथोनी सिलेरी

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

3. पुर्तगाली गिनी
(PORT. GUINEA)

क्षेत्रफल : 13,944 **वर्ग मील** **जनसंख्या** : 5,62,000

गैम्बिया के बाद अब पुर्तगाली गिनी आती है। पुर्तगाली गिनी सेनेगाल के दक्षिण में स्थित एक तटवर्ती देश है। जैसा कि नाम से स्पष्ट है यह पुर्तगाल का उप्रनिवेश है। पुर्तगाल इसे ठीक उसी तरह अपना प्रान्त कहता है जैसे कि मुक्ति के पहले वह हमारे गोआ को अपना प्रान्त बताता था। इसका क्षेत्रफल 13,944 वर्ग मील है जो गैम्बिया का लगभग तिगुना पर सेनेगाल का छठा भाग है। हमारे सबसे छोटे प्रदेश केरल का क्षेत्रफल इससे कहीं अधिक है। यहाँ की भूमि समतल और निचली है। तटवर्ती भाग दलदलीय क्षेत्र है। दक्षिण-पूर्व में पठारी भूमि है। सेनेगाल की सीमा के पास यानी उत्तरी भाग में कचेऊ नदी बहती है और मध्यवर्ती में शेवा और कोरुअल नदियाँ हैं।

पुर्तगाली गिनी को 1446 में खोजा गया था। पुर्तगालियों ने यहाँ से सोना, हाथी दाँत तथा गुलामों का व्यापार करने के लिए तटवर्ती भाग में किले बनाये थे पर वोलोफ और माली रियासतों के सैनिकों के कारण ये अन्दर की तरफ नहीं बढ़ सके। यहाँ से गुलाम एकत्र करके ब्राजील (दक्षिण अमेरिका) तथा केप वर्दे द्वीप समूह जहाँ उनसे बागानों में काम कराया जाता था, ले जाए जाते थे। पहले तटवर्ती भाग तथा अधीनस्थ दुर्गों का प्रशासन केप वर्दे द्वीप से ही होता था पर 1879 में पुर्तगाली गिनी का प्रशासन पृथक् कर दिया गया और गेवा नामक स्थान पर राजधानी बनाई गई। गेवा नदी में इसी स्थान तक नौपरिवहन संभव था। पर यह एक दलदलीय स्थान था और यहाँ मलेरिया का आतंक बना रहता था। अतः फिर बोलाम द्वीप में राजधानी बनाई गई। 1941 में राजधानी पुनः बदली गई और इस बार गेवा नदी के मुहाने पर बिसाऊ स्थान चुना गया। बिसाऊ में उस समय केवल गिनती के मकान और दुर्ग थे, पर अब यहाँ एक अच्छा सुनियोजित शहर बस गया है। यहाँ बन्दरगाह भी है। 1912 तक पुर्तगाली आंतरिक भाग को अपने क़ब्ज़े में करने में सफल हो गए थे। अब भी इसे पुर्तगाल अपने कठोर पंजे में जकड़े है।

स्वतन्त्रता आन्दोलन—पुर्तगाली गिनी पराधीन भले ही हो, पर वह समस्त महाद्वीप में चल रही आज़ादी की लहर से अछूता कैसे रह सकता है। 1961 में नयी दिल्ली में पुर्तगाली उपनिवेशों पर एक गोष्ठी हुई थी। उसमें पुर्तगाली गिनी और केप वर्दे के राष्ट्रवादी नेता भी शामिल हुए थे। उन्होंने बताया था कि पुर्तगाली गिनी में पुर्तगाली साम्राज्यवाद के विरुद्ध-व्यापक असंतोष और गुरिल्ला युद्ध चल रहा है। पुर्तगालियों ने कई विद्रोह नृशंसतापूर्वक कुचल देने में सफलता प्राप्त की है पर जुलाई, 1963 से राष्ट्रीय संग्राम तेज़ी से चल रहा है। यहाँ का प्रमुख राष्ट्रवादी दल गिनी स्वतन्त्रता पार्टी है।

जन-जीवन—पुर्तगाली गिनी की आबादी लगभग 5,62,000 है। तटवर्ती भाग में कुछ यूरोपीय तथा मिश्रित रक्त वाले लोग भी हैं। वे पुतगाली की अपभ्रंश भाषा बोलते हैं। आन्तरिक भाग की मुख्य अफ्रीकी जातियाँ हैं—मंडिगो तथा फुलानी। ये दोनों ही मुस्लिम जातियाँ हैं और पशु पालन का धन्धा अपनाये हैं। फुलानी

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

जाति के लोग तम्बु की आकृति की झोपड़ियों में रहते हैं। कुछ समय एक स्थान पर टिककर फिर अन्यत्र चल देते हैं। इनकी बस्तियाँ आकार में छोटी होती हैं। ये लोग कहीं-कहीं खेती भी करते हैं पर पुराने ढंग से। मंडिगो जाति के लोग व्यापारी व कारीगर होते हैं। हालांकि ये मूंगफली, कपास, सब्जियाँ तथा फल उगाते हैं पर ये कृषि कार्य पसन्द नहीं करते। मंडिगो जाति के गाँव बड़े आकार के होते हैं। तटवर्ती भाग में मूर्तिपूजक तथा साहसी जाति बालांते तथा फोप रहती हैं। उन्होंने बड़े परिश्रम से दलदलीय क्षेत्र को कृषि योग्य बनाया है तथा ये धान उगाते हैं। ये लोग पशु रखते हैं तथा खेती में खाद का लाभ पहचानते हैं। तटवर्ती भाग में कुछ लोग मछलियाँ पकड़कर भी जीविका चलाते हैं।

अर्थ-व्यवस्था—पुर्तगाली गिनी की भी प्रमुख उपज मूंगफली है। तथा इसका निर्यात होता है। यह मुख्यतया पठारी भूमि में उगाई जाती है। तटवर्ती भाग में चावल खूब होता है जो यहाँ के लोगों का मुख्य भोजन है। आंतरिक भाग में मोटा अनाज होता है। तटवर्ती भाग में ही खोपरा भी खूब होता है जो तेल निकालने के काम आता है।

पुर्तगाली गिनी में यातायात का मुख्य साधन वे तीन नदियाँ ही हैं जिनकी चर्चा हम कर चुके हैं। इन तीनों नदियों में लगभग 100 मील तक नौ-परिवहन हो सकता है। यहाँ रेल नहीं है। राजधानी बिसाऊ में हवाई अड्डा व बन्दरगाह है।

केप वर्दे द्वीप-समूह

पुर्तगाली गिनी के साथ ही पुर्तगाल की पराधीनता में जकड़े केप वर्दे द्वीप-समूह पर भी दृष्टिपात कर लिया जाय। यह पश्चिमी अफ्रीका के तट से कोई 280 मील दूर स्थित है। केप वर्दे द्वीप-समूह में 10 बड़े और 5 छोटे द्वीप हैं। बड़े द्वीपों में सांता, आतो और साओ तिआगो प्रमुख हैं। इन द्वीपों में अब पुर्तगालियों के कॉफी के व अन्य बागान हैं। इनमें अफ्रीकी गुलाम काम करते हैं और फायदा उठाते हैं—पुर्तगाली जमींदार। शुरू में, पुर्तगाली लोग गिनी तट से गुलाम लाकर यहीं एकत्र करते थे और फिर ब्राजील भेज देते थे। इन द्वीपों का कुल क्षेत्रफल 1557 वर्ग मील है तथा आबादी है—1,81,300। प्रेआ नगर यहाँ की राजधानी है। कॉफी के अलावा यहाँ गन्ना, सरसों तथा नारंगी भी उगाते हैं।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

4. गिनी गणराज्य

(GUINEA REPUBLIC)

क्षेत्रफल : 96,000 वर्गमील **जनसंख्या :** 26,00,000

पुर्तगाली गिनी के पूर्व में अवस्थित गिनी गणराज्य 29 सितम्बर, 1958 के पहले फ्रेंच गिनी कहलाता था क्योंकि इस पर फ्रांस का अधिकार था। इस तारीख को जनरल डिगाल द्वारा प्रस्तुत फ्रांसीसी संविधान पर मतदान हुआ था। जनरल डिगाल ने सभी अफ्रीकी क्षेत्रों को छूट दे दी थी कि वे चाहें तो संविधान के विरुद्ध 'ना' का मत देकर, फ्रांस से बिलकुल अलग होकर स्वतन्त्र हो सकते हैं अथवा 'हाँ' का मत देकर फ्रांसीसी राष्ट्र-मण्डल के सदस्य बन सकते हैं। समस्त अफ्रीका में गिनी ही एक मात्र ऐसा देश था जिसने साहस का परिचय दिया और संविधान के विरुद्ध 'ना' का मत देकर द्वार पर खड़ी स्वतन्त्रता का वरण कर लिया। 2 अक्तूबर, 1958 को यहाँ गणराज्य की स्थापना की गई।

पर इस तरह अचानक स्वतन्त्रता प्राप्त कर लेने के कारण इस छोटे-से देश को बड़ी यातनाएँ सहनी पड़ीं। फ्रांस तो इससे पूरी तरह कुपित हो ही गया। गिनी के स्वतन्त्र होते ही फ्रांसीसी लोग दफतरों का फर्नीचर, टेलीफोन, कूलर इत्यादि सब लेकर चले गए। उस समय गिनी की आर्थिक हालत भी बहुत खराब थी और इस प्रकार शुरू में व्यवस्था जमाने के लिए भी यहाँ के लोगों को कठोर प्रयत्न करना पड़ा। घाना और अन्य पड़ौसी देशों ने इस की मदद की। आज गिनी गणराज्य पश्चिमी अफ्रीका का एक महत्त्वपूर्ण देश है। यहाँ के राष्ट्रपति हैं—सेकूतूरे। सेकूतूरे के सत्परामर्श के कारण ही गिनी वासियों ने फ्रांसीसी संविधान के विरुद्ध 95 प्रतिशत 'ना' का मत देकर स्वाधीनता प्राप्त की थी।

लगभग चन्द्राकार के इस गिनी देश का कुल क्षेत्रफल 96,000 वर्ग मील है। यह सेनेगाल से कुछ बड़ा है पर हमारे अकेले आन्ध्र प्रदेश से भी छोटा। गिनी की भूमि ऊँची है पर सागरतट हाल में ही जलनिमग्न हुआ है। तट कटा-फटा है। पश्चिमोत्तर सीमा के पहाड़ भी ऊबड़-खाबड़ हैं तथा वे ही गैम्बिया, नाइजर, सेनेगाल, नदियों के जन्मदाता हैं।

जन-जीवन—यहाँ की कुल आबादी कोई 30 लाख है, जितना को अकेले हमारी दिल्ली की है। यहाँ उत्तर में पिग्रोल जाति रहती है, जो अधिकतर चरवाहे हैं। पहाड़ियों पर तथा मध्य भाग में मंडिंगो लोग रहते हैं। तटवर्ती भाग में सूसू, तोवा, बागा, तेमने जातियाँ हैं। सूसू जाति संगीत व नृत्य की बहुत शौकीन है। दक्षिण-पूर्व में 'किसी' और तोमा जातियाँ रहती हैं। नालू जाति व्यापारियों की है। लंदूमा लोग किसान हैं। गिनी की युवतियों को अपने बालों को अनोखे ढंग से संवारने का बड़ा चाव है। लेसदार पदार्थ से अपने केशों को पंखेनुमा बना लेती हैं।

कहते हैं कि गिनी प्राचीन काल में माली साम्राज्य का अंग था। और 14वीं शताब्दी का समय इसके इतिहास में भी स्वर्णयुग माना जाता है। इस देश की खोज भी सर्वप्रथम पुर्तगालियों ने की थी। 14वीं शताब्दी में यहां पुर्तगालियों, फ्रांसीसियों और अंग्रेजों के व्यापारी आते-जाते रहे। उन दिनों यह भाग गुलामों के भण्डार के रूप में कुख्यात था। पश्चिमी व्यापारी यहाँ आते, जहाजों में भर कर असंख्य गुलामों को ले जाते तथा उन्हें

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अमेरिका व वेस्टइंडीज में बेच आते। यह घृणित व्यापार सदियों तक चलता रहा पर बाद में इस पर प्रतिबन्ध लगा दिया गया। 1818 और 1849 के बीच फ्रांसीसियों ने यहाँ के कबीलों के साथ संधियाँ करके अपना अधिपत्य जमाया। 1865 में यहाँ फ्रांसीसियों का पहला दुर्ग बना और फिर वे उत्तरोत्तर दृढ़ होते चले गए। यहाँ प्रथम लेफ्टिनेंट गवर्नर तो डा० बयाल थे पर क्षेत्र का गिनी नाम रखने का श्रेय श्री बैले को है। 1896 में इस प्रदेश में फूता-जोलोन नामक प्रदेश मिला लिया गया जो गिनी का अब सब से उर्वर भाग है। 1899 में इसमें फ्रेंच सूडान के दक्षिणी भाग के कुछ ज़िले मिलाये गए थे। 1904 से जब लोस द्वीप भी इसमें मिल गया तो गिनी का वर्तमान स्वरूप पूर्ण हो गया।

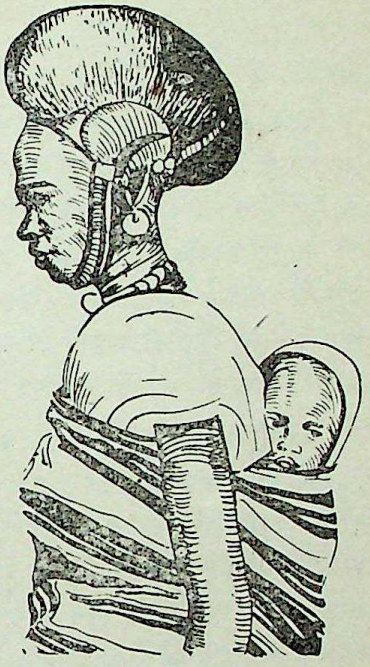

केश-विन्यास किये और शिशु को पीछे बाँधे गिनी की एक युवती

शासन-व्यवस्था—इस देश का संविधान 10 नवम्बर, 1958 को स्वीकृत हुआ था। जिसके अनुसार यह गणराज्य है। यहाँ का आदर्श वाक्य है परिश्रम, न्याय, एकता। यहाँ का राष्ट्रीय ध्वज लाल, पीले व हरे रंग का है। वैधानिक कार्य के लिये एक सदनी संसद् है जिसे राष्ट्रीय असेम्बली कहते हैं। यह व्यस्क मताधिकार पर चुनी जाती है। यहाँ का राजाध्यक्ष और कार्यकारी प्रमुख राष्ट्रपति होता है। उसकी सहायता के लिये मन्त्रि-परिषद् होती है। राष्ट्रपति वयस्क मताधिकार से 7 वर्ष के लिए चुना जाता है। गिनी के संविधान की विशेष बात यह है कि इसमें अफ्रीका की एकता के लिये पूर्ण या आंशिक रूप में सार्वभौमता त्याग सकने की व्यवस्था रखी गई है। फ्रेंच यहाँ की राजभाषा है।

अर्थ-व्यवस्था—गिनी का पिछले वर्षों में काफी विकास हुआ है। तटवर्ती मैदानों में धान व मकई उगायी जाती है। सिएरा लिओन की सीमा के पास केले भी खूब उगाये जाते हैं और उनका निर्यात कर धन कमाया जाता है। कॉफी का उत्पादन भी बढ़ रहा है। इनके अलावा नारियल, अनानास और नारंगी भी खूब उगायें जाते हैं।

खनिज की दृष्टि से भी गिनी समृद्ध है। कोनाक्री के आस-पास खनिज लौह और बाक्साइट का उत्पादन निरन्तर बढ़ता जा रहा है। कोंकूरे नदी की पन-बिजली से बाक्साइट का एल्यूमीनियम बनाने का कारखाना चलाया जा रहा है। दक्षिण-पूर्वी भाग में हीरे तथा नाइजर नदी के तट पर सोना प्राप्त होता है।

एक संकड़े प्रायद्वीप पर बसी कोनाक्री एक अच्छी नगरी है। यहाँ कई उत्तम बन्दरगाह भी हैं। आम-वृक्षों की प्रचुरता यहाँ है। सिर पर नीले रंग का उत्तरीय बांधे और चटकीले रंग के वस्त्र पहने गिनी की आधुनिक महिलाएँ जब कोनाक्री की सड़कों पर से गुज़रती हैं तो लोगों की दृष्टि उधर खिंच आती है। कोनाक्री के अतिरिक्त मध्यगिनी में कनकन नामक स्थान भी अच्छा कस्बा है। कोनाक्री से अन्दर की ओर आने वाली रेल-लाइन का वह आखिरी स्टेशन है।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

5. सिएरा लिओन

(SIERRA LEONE)

क्षेत्रफल : 27,925 **वर्गमील** **जनसंख्या** : 24,50,000

गिनी गणराज्य की पूर्वी सीमा पर एक नदी है—बड़ी स्केरसी। चलिए इसे पार करके उस ओर चलें। यह सिएरा लिओन है, जिसकी पश्चिमी और उत्तरी सीमा गिनी से और पूर्वी सीमा लाइबेरिया से मिलती है। यह देश इन दोनों के बीच आक के पत्ते की तरह फैला है।

सिएरा लिओन का नामकरण एक पुर्तगाली नाविक ने किया था जो इस ओर 1460 में पहुँचा था। यहाँ के छोटे-से प्रायद्वीप में जब उसने विशाल आकृति का पर्वत देखा तो उसके मुख से निकल पड़ा—'सिएरा-लिओन' यानी सिंह की आकृति का पर्वत। पहले यह नाम इस प्रायद्वीप के लिए प्रचलित रहा पर फिर इसके आंतरिक भाग का भी यही नाम पड़ गया।

इतिहास—सिएरा लिओन की स्थापना का इतिहास भी अनोखा है। 18वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में इंगलैण्ड में गुलामों की मुक्ति के सम्बन्ध में एक ज़ोरदार आन्दोलन चला था। इसके पूर्व अफ्रीका से निरीह गुलामों को खरीद कर अमेरिका तथा वेस्ट इण्डीज के बाज़ारों में उन्हें भेड़-बकरियों की तरह बेचा जाता था। गुलामों की मुक्ति का आन्दोलन इसकी तीव्र प्रतिक्रिया थी। ग्राविल शार्प के नेतृत्व में चले इस आन्दोलन को बहुत सराहा गया। इंगलैण्ड के मुख्य न्यायाधीश ने तो यहाँ तक कह दिया कि इंगलैण्ड की धरती पर गुलामी की प्रथा को कभी मान्यता नहीं मिल सकती। कोई भी गुलाम इंगलैण्ड की धरती पर पैर रखते समय से मुक्त हो जाता है। पर गुलामों को मुक्त कराना ही पर्याप्त नहीं था, उन्हें पुनः किस तरह बसाया जाय ताकि वे अपना जीवन अच्छी तरह गुज़ार सकें, एक बड़ी समस्या थी। एक सेंट जार्ज कम्पनी बनायी गई जिसका काम इन गुलामों के लिए जमीन खरीदना तथा उन्हें बसाने के लिए बस्ती बनाना और कारखाने वगैरह खड़े करना था। आखिर मुक्त गुलामों को सिएरा लिओन में बसाने का फैसला किया गया। 1786 में इंगलैण्ड से मुक्त गुलामों का पहला जत्था जहाज़ों से चला और वह 9 मई, 1787 को सिएरा लिओन के तट पर उतरा। उस समय यहाँ तेमने जाति के राजा नैम्बाना का अधिकार था। शुरू में, इस प्रायद्वीप का 20 वर्गमील क्षेत्र 'शराब, बन्दूकों तथा कढ़ी हुई सुन्दर बास्कट के बदले लिया गया।' और पहली बस्ती बसायी गई। 1790 में यह काम सिएरा लिओन कम्पनी के सुपुर्द कर दिया गया और फिर अधिक संख्या में मुक्त गुलाम बसाने के लिए यहाँ लाये गए। बहुत-से गुलाम तो यहाँ की जलवायु को बर्दाश्त न कर सके और इस संसार से ही मुक्त हो गए। जो लोग बच रहे उन्हें आंतरिक भाग में रहने वाले मूल निवासियों से संघर्ष करना पड़ा।

1807 में ब्रिटेन ने संसद् में एक क़ानून पास करके गुलामी-प्रथा का पूर्णतया अंत कर दिया। फिर सिएरा लिओन की व्यवस्था पर अधिक ध्यान दिया जाने लगा। एक वर्ष बाद ही ब्रिटेन ने सिएरा लिओन को अपना उपनिवेश घोषित कर दिया और यहाँ अपना पहला गवर्नर नियुक्त किया। पहले यह उपनिवेश प्रायद्वीप तक ही सीमित था। आंतरिक भाग को अपने संरक्षण में लाने में ब्रिटेन को 88 वर्ष और लगे तथा 1896 तक ब्रिटेन सिएरा लिओन की वर्तमान सीमाओं तक अपना प्रभाव फैलाने मे सफल हो गया। 1924 में उपनिवेश तथा

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

आंतरिक भाग को एक प्रशासन के अन्तर्गत लाया गया। फिर धीरे-धीरे वैधानिक सुधारों का क्रम चलता रहा। 1951 के संविधान के अनुसार यहाँ विधान परिषद् में गैर-सरकारी प्रतिनिधियों का बहुमत हुआ और 2 वर्ष बाद से अफ्रीकियों को मंत्रिपद दिया जाने लगा।

1957 में यहाँ आम चुनाव हुए। सिएरा-लिओन पीपुल्स पार्टी ने प्रतिनिधि सदन के 51 स्थानों में 45 पर क़ब्ज़ा कर लिया। इस विजय का श्रेय था—मिल्टन मारगई के नेतृत्व को। इस पार्टी ने ब्रिटेन से स्वतंत्रता की माँग की। 1960 में लन्दन में आयोजित संविधान सम्मेलन में जाने के पूर्व सिएरा लिओन के सब राजनैतिक दल एक हो गए और उन्होंने एक स्वर में माँग की कि सिएरा लिओन को स्वतंत्र किया जाय।

शासन-व्यवस्था—27 अप्रैल, 1961 को यह देश स्वतंत्र हुआ और हरे, सफेद तथा नीले रंग का राष्ट्रध्वज लहरा उठा। यहाँ का कार्यकारी अध्यक्ष प्रधान मंत्री होता है तथा वैधानिक प्रमुख गवर्नर जनरल जो ब्रिटेन की रानी का प्रतिनिधि होता है। 1961 से मिल्टन मारगई प्रधान मंत्री थे पर 28 अप्रैल, 1964 को उनका देहावसान हो गया और अलबर्ट मारगई प्रधानमंत्री बने। वैधानिक कार्यों के लिए निर्वाचित प्रतिनिधि सभा है। अंग्रेजी यहाँ की सरकारी भाषा है। मेंडे और तेमने प्रमुख देशी भाषाएँ हैं। सिएरा लिओन को गणराज्य बनाने पर विचार-विमर्श चल रहा है।

सिएरा लिओन में तटवर्ती प्रायद्वीप के अतिरिक्त 3 प्रान्त हैं : उत्तरी प्रान्त, दक्षिण-पूर्वी प्रान्त तथा दक्षिण पश्चिमी प्रान्त।

सिएरा लिओन का कुल क्षेत्रफल 27,925 वर्गमील है जो हमारे पश्चिमी बंगाल से भी कम है। यहाँ की जनसंख्या केवल 28 लाख है जो हमारे एक प्रदेश जम्मू-कश्मीर की आबादी का भी आधा है। सिएरा लिओन के तटवर्ती भाग में क़रीब 50 मील तक उर्वर मैदान हैं फिर वन प्रदेश शुरू हो जाता है। आगे चलकर औसतन 1500 फुट ऊँचे पठार आ जाते हैं। पर इस प्रदेश के आंगन में कई नदी-नाले बहते हैं। यहाँ की मुख्य नदियाँ सिएरा लिओन और शेरब्रो हैं। इनमें समुद्री जहाज़ भी चल सकते हैं। बड़ी स्केरसी, छोटी स्केरसी, बागरू, गोंग, सेवा, वानजे और मोआ छोटी नदियाँ हैं। उनमें भी नौकाएँ चलती हैं।

एक नर्तक

जन-जीवन—सिएरा लिओन में दो प्रकार के लोग हैं। प्रथम तो वे जो बाहर से लाकर बसाये गए गुलामों के वंशधर हैं। ये फ्रीटाउन और उसके आस-पास के इलाके में रहते हैं। इन्हें क्रोल कहते हैं। ये अंग्रेजी भाषा का अपभ्रंश रूप बोलते हैं। दूसरे वे लोग हैं जो इस क्षेत्र के मूल निवासी हैं। इन लोगों की कोई 13 जातियाँ हैं। इनमें मेंडे और तेमने प्रमुख हैं और इन दो जातियों के लोग कुल जनसंख्या का 60 प्रतिशत हैं। उत्तर प्रांत में सूसू लिम्बा और लोक्को अन्य जातियाँ हैं। उत्तर प्रांत के पूर्वी हिस्से में कोरंक्रो तथा कोनो जातियाँ हैं तथा दक्षिणी सीमा पर वाई तथा मन्या जातियाँ बसती हैं। हरेक जाति का अपना विशेष नृत्य है, अपनी भाषा है। अफ्रीका में हर अवसर पर नृत्य किया जाता है। मनोरंजन, जातीय पर्व, अभ्यागत का

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

स्वागत ही नहीं सरदार की मृत्यु होने पर भी सामूहिक नृत्य होता है। सिएरा लिओन का एक प्रसिद्ध नृत्य है—वुण्डे। यह अग्नि देवता की आराधना में किया जाता है तथा गाँव के लोग रात-रात भर यह नृत्य करते हैं। उत्तरवर्त्ती सूसी जाति का भी एक नृत्य है जिसमें काला वस्त्र पहनकर व घूँघरु बाँधकर नाच होता है। सिएरा लिओन के भूत पूर्व प्रधान मंत्री मिल्टन मारगई एक कुशल नर्तक और नृत्य प्रशिक्षक भी थे। नृत्य में साथ-साथ गायन भी चलता रहता है।

सिएरा लिओन के पुरुष या तो पश्चिमी ढंग के कपड़े पहनते हैं अन्यथा चोगा पहनते हैं और सिर पर गोल टोपी ओढ़ते हैं। स्त्रियाँ स्कर्ट की तरह का चटकीले रंगों का परिधान पहनती हैं जिसे यहाँ लप्पा कहते हैं। वक्ष पर ढीला ब्लाउज-सा पहनती हैं जो बूका कहलाता है। उत्तरी भाग के लोग तो इस्लाम के अनुयायी हैं, शेष जड़ात्मवादी हैं। बाहर से आकर बसे गुलामों के वंशधर ईसाई हैं।

अर्थ-व्यवस्था—सिएरा लिओन की अर्थ-व्यवस्था कृषि पर आधारित है। मुख्य खाद्यान्न चावल है जो 6 लाख एकड़ धरती पर उगाया जाता है। इसके अलावा कोका, कॉफी, खोपरा, पिआसावा तथा अदरख भी उगायी जाती है। खेती की दृष्टि से यह भले ही समृद्ध नहीं हो, पर खनिज पदार्थ की दृष्टि से यह काफी भाग्यवान है। दक्षिण-पूर्वी प्रांत की सेवा नदी की तलहटी में बहुमूल्य हीरे पाये जाते हैं। काफी लोग इस नदी से हीरे निकालने के काम में लगे हैं। 1945 में यहाँ 700 कैरट का एक हीरा निकला था जो विश्व के सबसे बड़े 3 हीरों में से एक है। सिएरा लिओन के कुल निर्यात में से 61 प्रतिशत भाग हीरों का ही है। अन्य खनिज पदार्थों में लोहा तथा क्रोमाइट प्रमुख हैं।

सिएरा लिओन की राजधानी फ्रीटाउन एक प्राकृतिक तथा आधुनिक बन्दरगाह है जो पश्चिमी अफ्रीका के सर्वोत्तम बन्दरगाहों में से एक है। यहाँ की आबादी 88,000 से अधिक है। क्रोल (गुलामों के वंशधर) जाति के अतिरिक्त यहाँ सीरियाई और लेबनानी लोग भी रहते हैं जो व्यापार-धंधे में लगे हैं। यहाँ के फ्रीटाउन के अलावा बो, मकेनी तथा केनेमा उल्लेखनीय नगर हैं। शिक्षा का प्रमुख केन्द्र फूरा बे यूनिवर्सिटी कालेज है।

सिएरा लिओन में रेलवे भी है। मुख्य लाइन फ्रीटाउन से बो तक है। कुछ अच्छी सड़कें भी हैं।

चलिए अब और पूर्व की ओर आगे बढ़ें।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

6. लाइबेरिया

(LIBERIA)

क्षेत्रफल : 43,000 **वर्गमील** **जनसंख्या** : 26,00,000

सिएरा लिओन के दक्षिण में अवस्थित लाइबेरिया को प्राचीनतम अफ्रीकी गणराज्य होने का गौरव प्राप्त है। भारतीय स्वतंत्रता के 100 वर्ष पूर्व से ही यह देश स्वाधीनता का उपभोग कर रहा है। इसका कुल क्षेत्रफल 43,000 वर्ग मील है जो हमारे असम प्रदेश का क़रीब आधा है। इसकी तट रेखा कोई 350 मील लम्बी है। इसमें कोई 40 मील तक तटवर्ती मैदान हैं और फिर आ जाती हैं—हरे-भरे वनों से आच्छादित पहाड़ियाँ। भूमि के आंतरिक भाग की सागरतट से अधिकतम दूरी 220 मील है। दक्षिण की ओर जहाँ इसकी सीमा आइवेरी से मिलती है, घने वन हैं और कावला नदी है।

इतिहास—लाइबेरिया की स्थापना का इतिहास सिएरा लिओन से बहुत कुछ मिलता-जुलता है, अमेरिका में मुक्त कराये गए गुलामों को बसाने के लिए एक अमेरिकी हितकारी संस्था ने 1816 में यहाँ 130 मील लम्बा और 40 मील चौड़ा जमीन का टुकड़ा खरीदा था। यह भाग पहले यहाँ के मूल निवासियों के क़ब्जे में था। तथा इसे ग्रेन पेपियर कोस्ट कहा जाता था। 1822 में यहाँ पहले 114 गुलाम लाकर बसाये गए जिनमें से एक तिहाई तो कुछ ही दिनों में दम तोड़ गए। शेष जो बच रहे वे भी अमेरिका से आने वाले खाद्य और अन्य चीज़ों के सहारे दिन काटते रहे। धीरे-धीरे मुक्त कराये गए गुलामों की संख्या बढ़ती गई और यहाँ बस्तियाँ बनती गईं।

1822 से ही तटवर्ती भाग में रहने वाले इन मुक्त गुलामों तथा आंतरिक भाग में रहने वाले मूल निवासियों में संघर्ष शुरू हो गया। कई बार खून-खराबी भी हुई। और 1936 में यहाँ पर परस्पर वैमनस्य तो बना ही रहा। आरम्भिक वर्षों में उक्त अमेरिका संस्था की तरफ से नियुक्त गवर्नर शासन करता रहा। 26 जुलाई, 1847 को यहाँ स्वतंत्रता की घोषणा की गई। पर वास्तविक रूप में यह बहुत वर्षों तक अमेरिकी सहायता पर निर्भर रहा। यहाँ हर क्षेत्र में अमेरिकी प्रभाव दृष्टिगोचर होता है।

शासन-व्यवस्था—लाइबेरिया का संविधान भी अमेरिकी संविधान पर आधारित है। राष्ट्राध्यक्ष और कार्यकारी प्रमुख राष्ट्रपति होता है जो 8 वर्ष के लिए चुना जाता है। अमेरिकी राष्ट्रपति की भांति इनके अधिकार भी व्यापक हैं। वैधानिक कार्य के लिए दो सदनी संसद् है। निम्न सदन प्रतिनिधि सभा के 39 सदस्य जनता द्वारा निर्वाचित होते हैं। वे 4 वर्ष के लिए चुने जाते हैं। सीनेट के 10 सदस्य 5 काउंटियों में से दो-दो के हिसाब से चुने जाते हैं। अंग्रेजी यहाँ की राजभाषा है। लाइबेरिया का राष्ट्रध्वज भी अमेरिका ध्वज से मिलता-जुलता है। इसमें 6 लाल तथा 5 सफेद (एकान्तर) पट्टियाँ हैं। ध्वजदण्ड के साथ ऊपरी भाग में नीले रंग की पृष्ठभूमि में एक सफेद पंचकोना सितारा है।

विलियम टयूबमैन यहाँ के राष्ट्रपति हैं जो 1944 से इस पद पर बने हुए हैं। इसका दल हविग पार्टी ही प्रमुख राजनैतिक दल है और इसकी ही प्रधानता है। श्री टयूबमैन आजकल नवोदित अफ्रीकी देशों की गतिविधियों में खूब दिलचस्पी ले रहे हैं। 1961 में मनरोविया में अफ्रीकी देशों का वृहत् सम्मेलन हुआ था इस प्रकार

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

लाइबेरिया भी अफ्रीका की नयी लहर से अछूता नहीं है।

जन-जीवन—लाइबेरिया की कुल आबादी लगभग 26 लाख है। यहाँ दो वर्ग के लोग हैं, एक तो वे जो तटवर्ती मार्ग में रह रहे हैं और जो अमेरिका से आये गुलामों के वंशधर हैं। दूसरे वे जो यहाँ के मूल निवासी हैं और आंतरिक भाग में रहते हैं। अमेरिकी गुलामों के वंशधरों की आर्थिक व राजनैतिक स्थिति अपेक्षाकृत अच्छी है और वे अपने आप को मूल निवासियों से ऊँचा समझते हैं।

मूल निवासियों की मुख्तया 6 जातियाँ हैं। मंडिगो जो मुसलमान हैं, तथा पठारों पर रहते हैं, ये पशु चरा कर अपना गुज़ारा करते हैं। क्रू जाति के लोग मूर्तिपूजक हैं, ये मछलियाँ पकड़ने का और जहाज़ों के अन्य काम करते हैं। कपवेसी जाति के लोग शूरमा हैं और जो अब भी धनुष-बाण से शिकार करते हैं। गिस्ती गोला कपेला, ग्रेबो गवाण्डी, लोरमा, वई अन्य अफ्रीकी जातियाँ हैं। शाम के यक्त यहाँ के लोग गाँव की चौपाल पर या किसी पेड़ के नीचे ही इकट्ठे हो जाते हैं तथा बात-चीत और किस्से कहानियाँ चलती रहती हैं। लोगों को नृत्य का भी बहुत चाव है तथा ढोल और बांसुरी यहाँ के प्रमुख वाद्य हैं। पश्चिमी व मध्य भाग में वस्त्र बुनने का धंधा बहुत प्रचलित है। सोने-चांदी का काम लकड़ी पर खुदाई, हाथीदांत का काम यहाँ अच्छा होता है। लाइबेरिया का मुख्य भोजन चावल है। कैसेवा, आलू, केला और जमीकंद भी चाव से खाये जाते हैं।

अर्थ-व्यवस्था—आर्थिक दृष्टि से लाइबेरिया अभी पिछड़ा देश ही है। रबड़ यहाँ का मुख्य उत्पादहै। फायरस्टोन नामक एक कम्पनी के यहाँ बहुत बड़े बागान हैं जिनसे प्रतिवर्ष 2 लाख टन रबड़ निकाला जाता है तथा इनसे कोई 3 लाख 50 हजार लाईबेरियाइयों को रोज़गार मिला है। फायरस्टोन कम्पनी का सबसे बड़ा बाग हरबेल के पास है वह एक लाख एकड़ क्षेत्र में है तथा वहाँ कोई 1 करोड़ 20 लाख वृक्ष हैं। यहाँ एक अच्छी बस्ती बस गई है। इस कम्पनी की अपनी टेलीफोन व्यवस्था है, अपना बिजली घर है। 2 अस्पताल हैं, 16 स्कूल हैं और क्रीड़ाकेन्द्र हैं। लाइबेरिया के कुल निर्यात मूल्य का कोई 70 प्रतिशत भाग रबड़ ही प्रदान करता है और लाइबेरिया के खज़ाने में रबड़ से काफी राजस्व आता है। पर अब लाइबेरिया में राजस्व के एक और बड़े स्रोतों का पता चला है वह है—खनिज लोहे की खानें। राजधानी मनरोबिया के उत्तर पश्चिम में स्थित बोमी पहाड़ियों में खनिज लोहे के प्रचुर भण्डार हैं। यहाँ लोहा निकालने का पट्टा भी एक कम्पनी को दिया गया है औसतन यहाँ से 25 लाख टन खनिज लोहा निकलता है। गिनी की सीमा के पास निम्बा पहाड़ी में भी लोहे का पता लगा है। रबड़, खनिज, लोहे और धान के अलावा यहाँ कसाबरु, गन्ना वगैरह भी उगाये जाते हैं।

लाइबेरिया की राजधानी मनरोविया है जो अमेरिकी प्रेसीडेंट मनरो के नाम पर बसायी गई है। यहाँ की सड़कों के नाम भी अमेरिकी ढंग के हैं। 35,000 की आबादी का यह नगर एक सामान्य नगर है। मनरोबिया में एक विश्वविद्यालय भी है।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

7. आइवरी कोस्ट

(IVORY COAST)

क्षेत्रफल : 1,27, 520 **वर्गमील** **जनसंख्या :** 34,00,000

लाइबेरिया की सीमा पार करके अब हम आइवरी कोस्ट में प्रवेश करते हैं। इस देश में आते ही आप महसूस करेंगे कि आप एक समृद्ध और प्रगतिशील देश में हैं। लाइबेरिया पिछले 114 वर्ष से आज़ाद है। परन्तु उसने इतनी प्रगति नहीं की, जितनी कि आइवरी कोस्ट ने फ्रांस की अधीनता में रहकर की है। साफ-सुथरी और चौड़ी सड़कें, कॉफी और कोका के फलते-फूलते बागान, ऊँचे-ऊँचे भवन, पुल और नहरें, इस बात की गवाही हैं कि आइवरी कोस्ट पराधीनता काल में भी फला-फूला है।

आइवरी कोस्ट का क्षेत्रफल लगभग 1,27,520 वर्ग मील है जो हमारे राजस्थान से कुछ ही कम है। यह लगभग वर्गाकार है। इसके दक्षिण में गिनी की खाड़ी है और 340 मील लम्बी तट-रेखा है। तटवर्ती भाग पश्चिम की तरफ पथरीला और ऊँचा है। पर पूर्व की ओर इसमें पानी की झीलें हैं। तट के संकड़े मैदान के आगे ही वनाच्छादित क्षेत्र शुरू हो जाता है जिसमें 80-80 फुट लम्बे पेड़ हैं। वनाच्छादित भाग के आगे उत्तर में सवाना क्षेत्र और उसके बाद हैं—घास के मैदान। आइवरी कोस्ट की भूमि वैसे समतल है। परन्तु इधर-उधर कुछ पहाड़ भी हैं जिनकी ऊँचाई 3,000 से 5,000 फुट तक है। यहाँ की चार प्रमुख नदियाँ हैं जो उत्तर से दक्षिण की ओर बहती हैं। ये हैं—ससन्द्रा, बन्दामा, ऐंजी और कोमू।

अतीत की झलक—आइवरी कोस्ट के प्राचीन इतिहास की जानकारी कम मिलती है पर इतना सही है कि यहाँ उत्तर-पाषाण काल में भी लोग रहते थे। कुल्हाड़ी के सिरे और अन्य औज़ार जो यहाँ मिले हैं, इस बात की पुष्टि करते हैं। लगभग 15वीं शताब्दी में फ्रांसीसी नाविक डेपे और रुएन गिनी खाड़ी के तट पर आये थे और वे इस क्षेत्र के लोगों के साथ हाथी दाँत का व्यापार करने लगे। तभी से इसका नाम हाथी दांत का तट अथवा आइवरी कोस्ट पड़ गया। लगभग 1637 में कुछ फ्रांसीसी मिशनरी भी इसके तट पर उतरे थे परन्तु 50 वर्ष बाद ही 1687 में वे यहाँ एक मिशन की स्थापना कर सके। 18वीं शताब्दी में यहाँ आकर प्रमुख अफ्रीकी जातियाँ बसीं। दक्षिण में एब्रोन और बण्डूकू के पास अग्नि लोग बस गए और लगभग 1/50 में बाऊले लोग अपनी रानी के साथ मध्य भाग में जम गए। 19 फरवरी, 1842 को फ्रेंच नरेश लुइस फिलिप ने पीटर नरेश और सरदार वाका के साथ एक संधि की थी जिसके अनुसार बासाम क्षेत्र फ्रेंच संरक्षकता में आ गया। 10 मार्च, 1893 को फ्रांस ने आइवरी कोस्ट के लिए कप्तान विंगर को पहला गवर्नर नियुक्त किया। विंगर के प्रयत्नों के फलस्वरूप लाइबेरिया और ब्रिटेन के साथ इसकी पश्चिमी व पूर्वी सीमाएँ निश्चित हुईं।

1946 में आइवरी कोस्ट फ्रांस के चतुर्थ गणराज्य के अन्तर्गत एक सागर-पारीय प्रदेश बन गया और इसके बाद इसे सागरपारीय प्रदेशों के आर्थिक सामाजिक विकास फण्ड से आर्थिक सहायता मिलने लगी और यह अपने विकास के काम में जुट गया। क़रीबन 10 वर्ष बाद 1957 में यहाँ स्वायत्त शासन शुरू हुआ। पर उस

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

समय केवल स्थानीय मामले ही हाथ में थे। अन्य फ्रांसीसी उपनिवेशों की तरह आइवरी कोस्ट के जीवन में भी सितम्बर, 1958 में ऐतिहासिक मोड़ आया। जब कि फ्रांस में जनरल डिगाल सत्तारूढ़ हुए और उन्होंने फ्रांस के पंचम गणराज्य के संविधान पर सभी फ्रेंच उपनिवेशों की जनता का मत-संग्रह किया। आइवरी कोस्ट के 99 प्रतिशत मतदाताओं ने संविधान के पक्ष में मत दिया।

शासन-व्यवस्था—मार्च, 1957 में चुनी हुई प्रादेशिक असेम्बली, दिसम्बर, 1958 में संविधान परिषद् के रूप में परिवर्तित हो गई और उसने आइवरी कोस्ट गणराज्य की घोषणा की तथा यह देश फ्रांसीसी राष्ट्रमण्डल का सदस्य बन गया। पर उस समय यह पूर्ण स्वतन्त्र देश नहीं था। 7 अगस्त, 1960 को यहाँ पूर्ण स्वाधीनता की घोषणा की गई और अबिदजान स्थित राज भवन पर लाल, सफेद और हरे रंग की खड़ी पट्टियों वाला राष्ट्रीय झण्डा लहरा उठा।

31 अक्तूबर, 1960 को इसका नया संविधान पारित किया गया। इसके अनुसार आइवरी कोस्ट एक अविभाज्य, धर्म-निरपेक्ष, लोकतांत्रिक और सामाजिक गणराज्य है! फ्रेंच यहाँ की राजभाषा है। यहाँ का आदर्श वाक्य है—संगठन, अनुशासन और परिश्रम। स्त्री और पुरुष सभी नागरिकों को मतदान का अधिकार है। कार्यकारी व राज्याध्यक्ष राष्ट्रपति होता है जो प्रत्यक्ष मतदान द्वारा 5 वर्ष के लिए चुना जाता है। वैधानिक कार्य के लिए 70 सदस्यों की एक राष्ट्रीय एसेम्बली है। इसका चुनाव भी हर 5 वर्ष के बाद राष्ट्रपति के चुनाव के साथ होता है। न्यायपालिका स्वतंत्र है। स्थानीय शासन के लिए आइवरी कोस्ट चार भागों में विभाजित है—उत्तर, मध्य, दक्षिण-पश्चिम और दक्षिण-पूर्व। प्रत्येक भाग के लिए 40 सदस्यों की एक परिषद् होती है जो स्थानीय मामलों का प्रबन्ध करती है। आजकल अफुए बोयीं (Houphouet Boigny) यहाँ के राष्ट्रपति हैं। उनकी फ्रांस के साथ सहयोग की नीति के कारण ही आइवरी कोस्ट ने आर्थिक क्षेत्र में बहुत प्रगति की है। फ्रांस की अनुकम्पा का लाभ स्वयं बोयीं ने भी उठाया है। वे कई वर्षों तक फ्रांसीसी मंत्रिमण्डल के सदस्य भी रहते आये हैं। उन्हें फ्रांसीसी अफ्रीकी देशों का नेता माना जाता है। बोयीं के प्रयत्नों के फलस्वरूप ही मई, 1959 में आइवरी कोस्ट, वोल्टा, नाइजर तथा डहोमे गणराज्यों की एक सद्भाव परिषद् गठित की गई थी। यह परस्पर हितों के मामलों पर विचार करती है और यह एक कोष में से ज़रूरतमंद देशों को आर्थिक सहायता देती है।

जन-जीवन—आइवरी कोस्ट की कुल आबादी का अनुमान 34 लाख है। दक्षिण पूर्व में अग्नि, अशान्ति और बाऊले जातियाँ रहती हैं। दक्षिण पश्चिम में कूआ-कूआ तथा कूनेन जातियाँ हैं। मण्डे जाति का निवास उत्तर-पूर्व और उत्तर पश्चिम क्षेत्र है। वोल्टाई जाति उत्तर-पूर्व में रहती है। उत्तरी भाग में सेनूफो जाति रहती है और देश के मध्य में रहते हैं—दान और गूरी कबीले। पर भिन्न-भिन्न जातियों के ये लोग काफी समय से एक साथ रह रहे हैं और राष्ट्रीयता के एक सूत्र में बंधते जा रहे हैं। जनता में जागृति लाने का श्रेय आइवरी कोस्ट की डेमोक्रटिक पार्टी को ही है। द्वितीय विश्वयुद्ध के पश्चात् यहाँ राष्ट्रीय जागरण की लहर आयी और लोग अपने अधिकारों के प्रति सजग हो गए। पर इस देश के नेता बोयीं का विश्वास है कि फ्रांस के विरुद्ध आन्दोलन करने या थोथे नारे लगाने से देश का कोई भला नहीं हो सकता। अतः उन्होंने फ्रांस के साथ सहयोग किया। जिसका नतीजा यह निकला कि देश आर्थिक दृष्टि से तरक्की कर गया है।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

आइवरी कोस्ट में यूरोपीय और अफ्रीकी लोगों में भेदभाव नहीं है। तटवर्ती सुन्दर नगरी अबिदजान को जो इस देश की राजधानी भी है देखिये— यहाँ यूरोपीय और अफ्रीकी किस तरह घुल-मिलकर रहते हैं। अबिदजान की विस्तृत और सुन्दर सड़कों पर आधुनिक रमणियों को पेरिस का-सा शृंगार किये घूमते देख सकते हैं। यहीं आप यूरोपीय और अफ्रीकी युवक-युवतियों को सागर के किनारों की झीलों में जल-विहार का आनन्द लेते देख सकते हैं।

दूध बेचने वाली

अर्थ-व्यवस्था—आइवरी कोस्ट के 90 प्रतिशत लोग कृषि, पशुपालन, मछली पालन पर निर्वाह करते हैं। यहाँ की मुख्य फसलें दो हैं—कॉफी और कोका। कॉफी आइवरी कोस्ट की बहुत मूल्यवान उपज है और निर्यात की वस्तुओं में इसका स्थान सबसे ऊँचा है। दूसरी मुख्य फसल कोका है। इसका उत्पादन पिछले कुछ वर्षों में काफी बढ़ गया है और इसका भी निर्यात खूब होता है। तटवर्ती क्षेत्रों में केले और अनानास भरपूर उगाये जाते हैं। इन दोनों फलों का भी निर्यात हो रहा है। आइवरी कोस्ट के दक्षिण भाग में काफी जंगल हैं जहाँ से इमारती लकड़ी प्राप्त होती है और उसका भी निर्यात होता है। रबड़ और कपास भी यहाँ उगाये जाते हैं। कुल मिलाकर आइवरी कोस्ट निर्यात से काफी धन कमाता है। यहाँ कुछ कारखाने भी खोले गए हैं। परन्तु अधिकांश कारखाने खाद्य वस्तुओं और फल आदि का प्रोसेसिंग करने वाले हैं। वस्त्र निर्माण, रासायनिक उद्योग और इमारती लकड़ी के भी कुछ कारखाने खोले गये हैं। यहाँ हीरे, अभ्रक और सोने की खानें हैं। शिक्षा के क्षेत्र में भी यहाँ काफी प्रगति हुई है और शिक्षित लोगों की संख्या तेजी से बढ़ती जा रही है। अबिदजान में 1964 से एक विश्वविद्यालय बनाया गया है। आइवरी कोस्ट पहले मलेरिया, पीतज्वर और अन्य भयंकर बीमारियों से आक्रान्त था पर अब अच्छी स्वास्थ्य सेवाओं के कारण इन पर क़ाबू पा लिया गया है।

अबिदजान का बन्दरगाह अफ्रीका के श्रेष्ठ बन्दरगाहों में से एक है। विरदी नहर के बन जाने से इसकी उपयोगिता और भी बढ़ गई है। यहाँ से एक रेल लाइन बूके होती हुई वोल्टा में चली गई है। सड़कें भी यहाँ बहुत अच्छी हैं। अबिदजान एक अन्तर्राष्ट्रीय हवाई अड्डा और रेडियो स्टेशन भी है।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

8. माली गणराज्य

(MALI REPUBLIC)

क्षेत्रफल : 4,63,500 **वर्गमील** **जनसंख्या :** 45 **लाख**

कुछ तटवर्ती क्षेत्रों के बाद अब आपको अफ्रीका के आंतरिक भाग में लिए चलते हैं। आइवरी कोस्ट की उत्तरी सीमा पार करके अब हम माली गणराज्य में प्रवेश करते हैं। इस देश को पहले फ्रेंच सूडान कहते थे। यह देश कई कारणों से अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। प्रथम बात तो यही है कि यह क्षेत्रफल में पश्चिमी अफ्रीकी देशों में सबसे बड़ा है। क्षेत्रफल 4,63,500 वर्ग मील है जो हमारे देश के क्षेत्रफल के एक तिहाई से कुछ अधिक है। दूसरी बात यह है कि यह मुस्लिम व नीग्रो संस्कृति का संगम स्थल और संघर्ष स्थल दोनों ही रहा है। तीसरी बात है इसका गौरवपूर्ण अतीत।

जहाँ आजकल माली गणराज्य है वहाँ की धरती ने अनेक साम्राज्यों का उत्थान और पतन देखा है। 13वीं शताब्दी के दौरान लगभग इसी क्षेत्र में घाना साम्राज्य था (जिसके नाम पर गोल्ड कोस्ट ने 1957 में अपना नाम घाना रखा है)। अरब इतिहासकार अल बक्री के अनुसार 'घाना नरेश बड़े ठाट-बाट से रहते थे। कुम्बी में (आजकल जो छोटा-सा गाँव मात्र है) घाना नरेश का दरबार लगता था और रत्नजटित आभूषण तथा स्वर्णमंडित राजमुकुट पहने घाना नरेश सिंहासन पर आसीन होते थे। उनके पीछे स्वर्णमूठ वाली तलवार तथा ढाल लिए उनके 10 अनुचर अनुशासनबद्ध खड़े रहते थे और उसके मुसलमान वज़ीर सामने लेटकर सलाम करते थे। घाना सम्राट् के पास लगभग 2 लाख सैनिक थे।'

14वीं शताब्दी के आरम्भ में यहाँ का माली साम्राज्य काफी प्रसिद्ध हो चुका था। 1050 सन् के लगभग शुरू होने वाले इस राज्य में पहले तो बोमाको के आस-पास का ही इलाका था पर 1307 तक इनकी सीमाएँ बढ़ गईं। कंकनमूसा नामक शासक के समय में तो यह अपनी उन्नति के चरमोत्कर्ष पर पहुँच गया था। उस समय इस साम्राज्य की सीमाएँ पश्चिम में अटलांटिक महासागर से लेकर नाइजर के तट पर स्थित निआमे तक और उत्तर में मारी टेनिया के अद्रार पहाड़ पर से लेकर दक्षिण में गिनी व गोल्ड कोस्ट (अब घाना) के उत्तरी भाग तक फैली थीं। यह राज्य कोई 1500 मील लम्बा और 800 मील चौड़ा था। 13वीं, 14वीं शताब्दी में इस माली राज्य के मिस्र व मोराको से ही नहीं, कई यूरोपीय देशों से भी कूटनीतिक सम्बन्ध थे। 1934 में माली सम्राट् कंकन मूसा जब मिस्र की यात्रा पर गये थे तो वहाँ के लोग इनके ठाट-बाट को देखकर चकित रह गये। सम्राट मूसा की सवारी के आगे 5000 दास चल रहे थे और प्रत्येक दास के पास 2 सेर ठोस सोने की छड़ी थी मूसा के पीछे 500 ऊँट थे और हरेक ऊँट पर 7 मन सोना लदा था। ऊँटों ही ऊँटों पर 3,500 मन सोना था। इसके अलावा सम्राट् के साथ अनेक रानियाँ, नौकर-चाकर और घुड़सवार भी थे। इन्होंने खरीददारी करके मिस्र की दुकानें खाली कर दीं। सम्राट् कंकन मूसा क़ानून की एक समूची लाइब्रेरी और एक शिल्पी व कवि भी खरीदकर अपने साथ ले आये थे। पर माली के सभी दिन एक समान न रहे। 17वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में अन्य पड़ौसी देशों के साथ संघर्ष होने के कारण यह समाप्त हो गया। माली के बारे में प्रसिद्ध यात्री इब्न बतूता ने जो माली साम्राज्य की राजधानी में कोई 8 महीने तक रहा था, लिखा है कि नीग्रो अन्याय से घृणा करते थे। उन दिनों साम्राज्य में

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पूर्ण सुरक्षा थी। परदेशी या मूल निवासी किसी को भी लुटेरों का भय नहीं था। किसी यात्री या परदेशी की उस देश में मृत्यु हो जाती तो उसकी सम्पत्ति जब्त नहीं की जाती थी भले ही वह लाखों रुपये की क्यों न हो। सही वारिस के मिलने तक विश्वसनीय व्यक्ति के पास धरोहर के रूप में रखी रहती थी। उसी प्राचीन साम्राज्य के नाम पर फ्रेंच सूडान ने अपना नाम अब माली रखा है। माली के बाद इस क्षेत्र में सोंघाई साम्राज्य का झंडा लहराया। इसके सबसे प्रसिद्ध सम्राट् हुए मोहम्मद आस्किया। इन्होंने टिम्बकटू को इस्लामी संस्कृति और शिक्षा का केन्द्र बनाया। ये विद्वानों का बड़ा आदर करते थे। 1528 में इसकी मृत्यु के बाद सोंघाई साम्राज्य छिन्न-भिन्न होगया।

फ्रांस की अधीनता—1880 के लगभग पश्चिमी तटवर्ती भाग सेनेगाल पर फ्रांस का अधिपत्य हो चुका था। फ्रांस में बढ़ते हुए कारखानों की बनी वस्तुओं के लिए बाज़ार खोजने वालों का यह स्वप्न था कि फ्रांस का साम्राज्य समूचे पश्चिमी अफ्रीका पर छा जाय। हुआ भी ऐसा ही। बिना किसी खास प्रतिरोध के फ्रांस का साम्राज्य बढ़ता चला गया। फ्रांसीसी सेना को विशेष युद्ध करने की ज़रूरत भी न पड़ी। लगभग 1904 तक फ्रांस का यहाँ पूरी तरह क़ब्जा हो चुका था। मुकाबला करता भी कौन ? संगठन जनता में नहीं था। उत्तर में खानाबदोश मुस्लिम जातियाँ थी, जो एक जगह टिक कर नहीं रहतीं। दक्षिणी भाग में नीग्रो जातियाँ भी कई कबीलों में बटी थीं। वे दुश्मन से लड़ने की अपेक्षा आपस में लड़कर और एक-दूसरे पर अपना प्रभुत्व जमा कर ही अपनी हविश पूरी कर लेती थीं।

यहाँ सरदारों का पद है, इससे आम जनता को उभरने का मौका ही नहीं मिलता। सरदार ही कबीले का मुखिया होता है और उसकी इच्छा के बिना पत्ता तक नहीं हिल पाता। फ्रांसीसियों ने पहले तो इन सरदारों को मज़बूत बनाया पर फिर प्रत्यक्ष शासन करना ही उचित समझा। दूसरे विश्वयुद्ध के पूर्व तक फ्रांस ने सरदारों के उत्तराधिकारियों को ट्रेनिंग देने की कोशिश की। कई ऐसे स्कूल चलाये गए जिनमें सरदारों के बच्चे पढ़ने जाते थे। पर द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद सूडान में राष्ट्रीय आन्दोलन ने जडें पकड़ लीं। राष्ट्रीय आन्दोलन का आरम्भ शहरों से हुआ, पर गाँवों में फैलते भी देर न लगी। इस आन्दोलन से सरदारों का प्रभाव भी घटने लगा। यहाँ का सर्वप्रथम दल पी० एस पी० (प्रोग्रेसिव सूडानी पार्टी) था। बाद में यूनियन सूडानी या सूडान संघ नामक दल भी बन गया। दोनों ही दलों के संस्थापक स्कूल के अध्यापक थे। दोनों ही दल 1864 से ही चुनाव लड़ते चले आ रहे हैं। डिगाल संविधान स्वीकार कर लेने के बाद सूडान ने 24 नवम्बर, 1958 को फ्रांसीसी राष्ट्रमण्डल की सदस्यता स्वीकार की थी।

10 फरवरी, 1959 को सूडान व सेनेगाल ने मिलकर माली संघ की स्थापना की थी। 20 जून, 1960 को इस माली संघ ने पूर्ण स्वतंत्रता की घोषणा की थी पर दो महीने बाद ही सेनेगाल और सूडान के मतभेद चर्म सीमा पर पहुँच गए। 20 अगस्त को सेनेगाल ने पृथक् होने की घोषणा कर दी। 22 सितम्बर, 1960 से ही इस प्रदेश ने अपना नाम माली गणराज्य रख लिया।

माली का उत्तरी भाग शुष्क है। वही सहारा रेगिस्तान का छोर है। कहीं-कहीं नखलिस्तान भी है दक्षिण में दो नदियाँ हैं। पश्चिमी भाग के केवल थोड़े-से हिस्से में सेनेगाल नदी बहती है और फिर वह सेनेगाल देश में चली जाती है, हाँ नाइजर नदी इसके दक्षिणी भाग को उर्वर बनाने में बहुत मदद करती है। इस नदी के मोड़ का कोई तिहाई भाग माली में है।

जन-जीवन—इस प्रदेश की आबादी कोई 45 लाख के लगभग है। पश्चिमोत्तर भाग में मूर लोग हैं जो गौर वर्ण के हैं। अधिकतर मूर मारीटेनिया में रहते हैं जिनकी चर्चा हम बाद में करेंगे। माली के पूर्वोत्तर हिस्से

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

में तुआरेग जाति के मुसलमान हैं। ये दोनों ही खानाबदोश हैं। नाइजर नदी के दक्षिणवर्ती भाग में नीग्रो जातियाँ हैं। ये खेती व पशुपालन का काम करते हैं। नदी के आस-पास शिकार के पूर्व हिरन का नृत्य करने वाली बम्बारा, जाति रहती है और दक्षिण में धर्मनिष्ठ सेनोफो और कलाप्रेमी बोबो, मध्य भाग में सोंघाई जाति है। उत्तर पश्चिम में तुकलर व खराकोले हैं। पिग्रोल जाति थोड़ी बहुत हर क्षेत्र में है। कुल मिलाकर 55 प्रतिशत लोग इस्लाम धर्म के अनुयायी हैं और 44 प्रतिशत जड़ात्मवाद को मानते हैं।

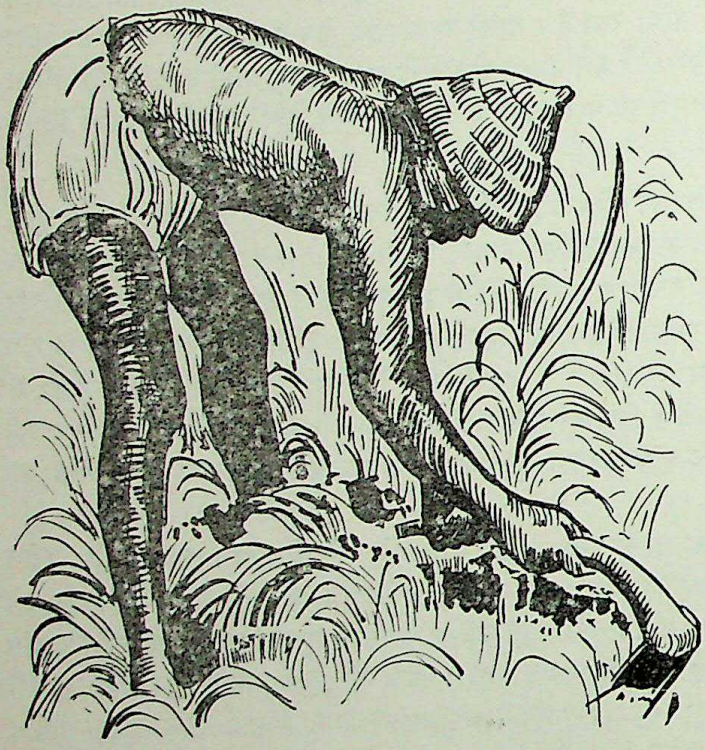

खेती करता हुआ एक किसान

शासन-व्यवस्था—माली एक गणराज्य है। यहाँ का राष्ट्राध्यक्ष राष्ट्रपति होता है। वह कार्यकारी प्रधान भी होता है। मोडीबो कीता आजकल राष्ट्रपति हैं। वैधानिक कार्य के लिए वयस्कों द्वारा निर्वाचित राष्ट्रीय असेम्बली है जो 5 वर्ष के लिए चुनी जाती है तथा उसमें 80 सदस्य होते हैं। न्यायपालिका कार्यपालिका से स्वतन्त्र है। माली के राष्ट्रध्वज में हरे, पीले तथा नारंगी रंग की खड़ी पट्टियाँ हैं। मध्य भाग में काले रंग की मानवाकृति बनी है।

अर्थ-व्यवस्था—उत्तर में गोंद व नारियल उगाया जाता है। दक्षिण में नाइजर नदी के आसपास मकई, कपास, व मूंगफली की खेती होती है। जहाँ सिंचाई उपलब्ध है वहाँ धान भी उगाया जाता है। मूंगफली यहाँ खूब उगायी जाती है। दक्षिण-पश्चिमी भाग में स्थित फुलेगी घाटी में स्वर्ण धूलि पाई जाती है। यहाँ नमक भी काफी निकाला जाता है।

माली की राजधानी बोमाको दक्षिणवर्ती सीमा की तरफ नाइजर के तट पर स्थित है। इसे फ्रांसीसियों ने बसाया था। प्राचीन आख्यानों में वर्णित टिम्बकटू भी नाइजर के उत्तर की तरफ है। चौरस छत वाले कच्चे मकानों की इस नगरी का महत्त्व ऐतिहासिक है। पहले यह प्रसिद्ध व्यापारिक केन्द्र भी था। सोंघाई साम्राज्य की पूर्व राजधानी गाओ नाइजर के दक्षिणवर्ती मोड़ पर बसी है।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

9. नीजेर

(NIGER)

क्षेत्रफल 4,90,000 **वर्गमील** **जन-संख्या** : 36,00,000

माली के पूर्व में—नाइजर। नीजेर का केवल नाम ही नीजेर है अन्यथा नाइजर नदी की अनुकम्पा इस पर अधिक नहीं है। क्योंकि वह तो इसके दक्षिण-पश्चिमी सिरे के छोटे-से भाग में होकर नाइजीरिया में चली जाती है। नाइजर नदी का अधिक लाभ माली ही उठाता है। नाइजर के अलावा यहाँ कोई और बारहमासी नदी नहीं है। यहाँ सामान्य ऊँचाई 1000 फुट से अधिक की नहीं है पर उत्तर पश्चिम में एयर नामक पहाड़ हैं। ये पहाड़ दक्षिणी भाग को उत्तर से पृथक् कर देते हैं। उत्तर में रेगिस्तान है और वहाँ लम्बे-लम्बे कारवाँ आते-जाते देखे जा सकते हैं। दक्षिणी भाग में सवाना घास के मैदान हैं।

माली और वोल्टा के पूर्व में अवस्थित इस नीजेर देश का कुल क्षेत्रफल 4,90,000 वर्ग मील है जो माली के लगभग बराबर ही है। नीजेर देश की सीमा सात देशों में मिलती है। उत्तर में अल्जीरिया और लीबिया से, पूर्व में चाड़ से, दक्षिण में, नाइजीरिया और डहोमे से, और पश्चिम में वोल्टा माली से। इस क्षेत्र में सातवीं सदी के शुरु में सोंघाई और तोबस जातियों के साम्राज्य भी रहे थे। सोंघाई साम्राज्य की स्थापना नाइजर नदी पर बसे एक गाँव गाओ में हुई थी। इसके बाद कोई हज़ार वर्ष तक यहाँ की रियासतों में परस्पर झगड़े ही चलते रहे। लगभग 17वीं शताब्दी में यहाँ उत्तर से जेरमा जाति के लोग आये थे। उन्हीं दिनों में, यहाँ दक्षिणी भाग में हाँसा रियासतों का निर्माण हुआ था। उधर आरेग जाति ने भी अपना संघ राज्य बनाया और वे दक्षिण की ओर बढ़ने का प्रयत्न करने लगे। 19वीं शताब्दी में पिउल लोगों ने भी अपना राज्य बना लिया था। इन्हीं दिनों प्रसिद्ध यूरोपीय यात्री मंगो पार्क यहाँ आया था। उसने अपने विवरण में यहाँ की खराब स्थिति दर्शाई थी। छोटे-छोटे रजवाड़े आपस में झगड़ते रहते थे और स्थिति शान्तिप्रद नहीं थी। 19वीं सदी के अन्तिम दशक में फ्रांसीसी सेना भी यहाँ पहुँच गई। नीग्रो लोगों ने तो फ्रांस की अधीनता आसानी से स्वीकार कर ली पर तुआरेग व तेबुअत नामक खानाबदोश जातियों को अधीन बनाने में उन्हें मेहनत करनी पड़ी। 1904 तक जाकर कहीं पूर्वी नाइजर को काबू में किया जा सका। प्रथम विश्वयुद्ध के दिनों में यहाँ इक्के-दुक्के विद्रोह हुए पर फ्रांसीसी सेना ने सबको सख्ती से दबा दिया। 1920 तक फ्रांस का सैनिक शासन ही चलता रहा। द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद फ्रांस ने अपने उपनिवेशों के प्रति अपनी नीति बदली। 1946 के अन्य फ्रांसीसी अफ्रीकी क्षेत्रों की तरह यहाँ पहली प्रादेशिक असेम्बली चुनी गई थी पर उसे केवल सलाह देने का अधिकार था। 1958 में डिगाल संविधान स्वीकार करके यह फ्रांसीसी राष्ट्रमण्डल का सदस्य बन गया। फरवरी, 1959 में इसने अपना नया संविधान बनाया। 3 अगस्त, 1960 को नीजेर में पूर्ण स्वतन्त्रता की घोषणा की—इस अवसर पर राजधानी और गाँव-गाँव में नया ध्वज लहराया गया और खुशियाँ मनाई गईं। आइवरी कोस्ट, वोल्टा व डहोमे के साथ ही 'सद्भाव परिषद्' का सदस्य है जिसका अगुवा आइवरी कोस्ट है।

शासन-व्यवस्था—नीजेर एक गणराज्य है। वैधानिक कार्य के लिए यहाँ 60 सदस्यों की एक सदनी संसद् है। ये सदस्य वयस्क मताधिकार द्वारा 5 वर्ष के लिए चुने जाते है। कार्यकारी अधिकार राष्ट्रपति के हाथों में हैं, जो असेम्बली के बहुमत से चुना जाता है। यहाँ मुख्यतया दो दल हैं। एक है—अफ्रीकन डेमोक्रेटिक

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

रैली जिसका शासन है और दूसरी है अफ्रीकन रियुपमेंट पार्टी जिसने 1958 में डिगाल संविधान के विरुद्ध 'ना' का मत देकर तुरंत स्वतन्त्र होने का आन्दोलन किया था। नीजेर के राष्ट्र ध्वज के रंग भारतीय तिरंगे के समान ही हैं पर मध्य में अशोक चक्र के स्थान पर नारंगी रंग का गोला है। फ्रेंच यहाँ की सरकारी भाषा है।

मिट्टी के पात्र पर सुन्दर चित्रकारी

जन-जीवन—नीजर के इतने विस्तृत श्रेत्र में यानी भारत के लगभग एक तिहाई भाग में केवल 26 लाख लोग रहते हैं। जबकि हमारे दिल्ली की आबादी इससे कहीं अधिक है। अधिकतर लोग चाड झील और निआमे के उत्तरी भाग में रहते हैं खानाबदोश तुआरेग जाति के लोग कहीं-कहीं नखलिस्तानों में खजूर उगाते हैं। दक्षिणी भाग में हौसा और फुलानी जाति के लोग रहते हैं जो इस्लाम धर्म के अनुयायी हैं, ये दो जातियाँ नाइजीरिया के उत्तरी भाग में भी हैं। नाइजर नदी के किनारे-किनारे चेरमा, सोंघाई, पिग्रोल तथा अन्य जड़ात्मवादी जातियाँ रहती हैं। विभिन्न जातियों के कारण इनके रीति-रिवाज, धर्म-आचरण आदि में बहुत अन्तर है। इसे एक राष्ट्र के रूप में गठित करने में बड़ी कठिनाइयों का सामना करना पड़ा है। पर अब राष्ट्रीय स्वाधीनता के बाद स्वभावतः ही यहाँ एक देश के निवासी की सी भावना पनप रही है।

अर्थ-व्यवस्था—नीजेर के 94 प्रतिशत लोग कृषि और पशु-पालन पर निर्भर करते हैं। वर्षा की कमी के कारण यहाँ पैदावार भी बहुत कम होती है। मोटे अनाज की फसलें उगाई जाती हैं। अब कसावा भी उगाया जाने लगा है। नाइजर नदी के आस-पास चावल की खेती भी होती है। पर यहाँ के

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

सबसे उपयुक्त नकदी फसल है—मूंगफली। इसकी उपज पिछले वर्षों में काफी बढ़ गई है। क्योंकि पूर्वी नाइजर की अधिकाधिक जमीन में यह फसल उगायी जाने लगी है। कपास भी यहाँ पैदा की जाती है। पर आर्थिक दृष्टि से अधिक महत्त्वपूर्ण काम पशुपालन है और देश के राजस्व का मुख्य साधन भी वही है। यहाँ पशुओं और भेड़-बकरियों की संख्या— 35 लाख पशु और 68 लाख भेड़-बकरियाँ लगभग साढ़े तीन लाख ऊँट हैं। नीजेर का चमड़ा बहुत बढ़िया किस्म का होता है। चमड़े की वस्तुएँ बनाने के अलावा यहाँ की दस्तकारियों में चाँदी के आभूषण, मिट्टी के पात्रों पर चित्रकारी, मूर्तिकला आदि प्रमुख हैं।

इस देश की राजधानी निआमे है। जो दक्षिणी भाग में नाइजर के तट पर बसा हुआ है। नाइजर नदी की गति बहुत मन्द है। यहाँ एक अस्पताल, एक हाई स्कूल भी है। नीजेर में शिक्षा की गति बहुत धीमी है। 1958 में स्कूल जाने योग्य 100 बच्चों में से केवल 4 स्कूल जाते थे। नीजेर नदी के दक्षिणी भाग में एक नेशनल पार्क है जहाँ हाथी, भालू और अन्य-अन्य जीव सुरक्षित हैं। मुख्यतया नीजेर देहाती इलाका ही है। गिनाने भर के लिए दो शहर हैं—जिंडर और मराडी। जिंडर 1929 तक नीजेर की राजधानी रहा था। मूंगफली का प्रमुख व्यापारिक केन्द्र है, यहाँ एक तेल मिल भी है। यहाँ चमड़े का काम भी काफी होता है। मराडी इससे भी छोटा नगर है जो डहोमे की सीमा पर बसा है। यहाँ पर रुई ओटने का संयंत्र भी लगाया गया है।

नीजेर उन अभागे देशों में से है, जिन्होंने अब भी रेलों का मुँह नहीं देखा। पक्की सड़कें भी यहाँ बहुत कम हैं। भू घिरा होने के कारण परिवहन की दिक्कतें हैं।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

10. अपर वोल्टा गणराज्य

(REPUBLIC OF UPPER VOLTA)

क्षेत्रफल : 1,06,011 **वर्गमील** **जनसंख्या** : 35,00,000

माली के दक्षिण पूर्व में और घाना के उत्तर में स्थित है वोल्टा गणराज्य। इसे पहले अपर वोल्टा कहते थे। इसका कुल क्षेत्रफल 1,06,011 वर्ग मील है जो हमारे आन्ध्र प्रदेश के लगभग बराबर है। यह चारों ओर भूमि से घिरा है। यहाँ विषम मैदान हैं। पूर्वोत्तर भाग की नदियाँ पूर्व की ओर बहती हैं और वे नाइजर नदी में मिल जाती हैं। शेष भाग का ढलान उत्तर से दक्षिण की ओर है। ओटी, लाल वोल्टा, सफेद वोल्टा और काली वोल्टा उत्तर से दक्षिण की ओर ही बहती हैं। वोल्टा नदी इस देश के बाद घाना को भी उर्वर बनाती है।

सेनेगाल और सूडान के बाद फ्रांसीसी लोग यहाँ 19वीं सदी के अन्त में पहुँचे थे। उस समय पश्चिमी भाग में तो कम सभ्य जातियाँ रहती थीं पर पूर्व में माँसी लोगों का एक संगठित और घना आबाद राज्य था। माँसी लोगों के कई छोटे राज्य थे जो परिसंघ के रूप में जुड़े हुए थे। इस परिसंघ का सर्वोच्च व्यक्ति मोरो नाबा (मोरो माँसी का एक वचन है तथा नाबा का अर्थ है—नरेश। यानी माँसी नरेश) कहलाता था। बहुत-से लोगों का यह ख्याल है कि यूरोपियनों के पहुँचने से पूर्व सभी अफ्रीकी जंगली व असभ्य थे। प्राचीन माली साम्राज्य जिसकी चर्चा हम कर चुके हैं और यह माँसी राज्य अफ्रीका के सुव्यवस्थित और सुसंचालित राज्यों में से थे। मोरो नाबा का पद तो अब भी है पर उतने व्यापक अधिकार नहीं हैं। आश्चर्य की बात यह है कि यह पद राजा के समान होते हुए भी निर्वाचन योग्य था। यद्यपि मोरो नाबा के पद पर केवल एक ही वंश के लोग चुने जाते थे पर फिर भी चुनाव की पद्धति उसे जनतांत्रिक रूप दे देती थी। कई सदियों तक माँसी राज्य के किसान केवल किसान ही नहीं होते थे अपितु वे सदैव रणबांकुरे सैनिक की तरह अपने देश की रक्षार्थ लड़ने को भी तैयार रहते थे। वैसे ये शांतिप्रिय लोग ही हैं। दक्षिण व पूर्व के पड़ौसियों के साथ इनके सम्बन्ध अच्छे रहे पर उत्तर के मुस्लिम आक्रांताओं से पराजित हो गए। पराजित होकर भी वे मुसलमान नहीं बने। अपने प्राचीन धर्म का पालन करते रहे। उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में इन पर फ्रांसीसियों का अधिकार हो गया। 1916 में यहाँ एक विद्रोह हुआ था पर फ्रेंच सैनिकों ने उसे कुचल दिया।

1919 में प्रथम विश्वयुद्ध के बाद अपर वोल्टा को आइवरी कोस्ट से अलग करके पृथक् उपनिवेश बनाया गया। कई लोगों ने इसका विरोध किया। कुछ ने तो कहा कि यह क्षेत्र आर्थिक रूप में स्वतन्त्र नहीं रह सकता। पर असल बात तो यह थी कि आइवरी कोस्ट के तटवर्ती भाग में रहने वाले व्यापारियों और बागानों के मालिकों को मज़दूरों की तंगी होने लगी थी। वोल्टा क्षेत्र से काफी लोग वहाँ मज़दूरी करने जाते थे। अतः 1930 के आस-पास आयी मन्दी की लहर के कारण 1932 में इसका पृथक् अस्तित्व समाप्त कर दिया गया। 1937 में जब मन्दी समाप्त हो गई तो इसे पृथक् प्रशासन का डिवीजन बना दिया गया। पर शासन आइवरी कोस्ट से ही होता रहा। द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद यहाँ के लोग पृथक् प्रदेश बनाने की माँग और ज़ोर से करने लगे। 1945 में जब अन्य क्षेत्रों की तरह यहाँ भी संविधान सभा के लिए चुनाव हुए तो यहाँ के लोगों ने आइवरी कोस्ट के साथ सहयोग नहीं किया। पृथक् वोल्टा प्रदेश बनाने के सवाल पर इन्होंने अपना अलग उम्मीदवार खड़ा

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

किया। यद्यपि आइवरी कोस्ट के उम्मीदवार के मुकाबले इसे कम वोट मिले, फिर भी जितने अधिक वोट मिले इससे यह स्पष्ट हो गया कि वोल्टा के लोग पृथक् प्रदेश बनाने के तीव्र इच्छुक हैं। मोरो नाबा भी इसी के लिए खूब प्रयत्न करते रहे और आखिर 4 सितम्बर, 1947 को वोल्टा एक पृथक् प्रदेश बन गया। उसी वर्ष इसकी पृथक् असेम्बली के चुनाव हुए।

11 दिसम्बर, 1958 को यह फ्रांस के नये संविधान के अन्तर्गत फ्रांसीसी राष्ट्रमण्डल का सदस्य बना। मार्च, 1959 में इसने अपना नया संविधान स्वीकार किया था जिसके अनुसार यहाँ लोकतांत्रिक शासन की व्यवस्था की गई।

शासन-व्यवस्था—अब यह एक गणराज्य है। वैधानिक कार्य के लिए वयस्क मताधिकार पर निर्वाचित 75 सदस्यों की एक विधान-सभा है। राष्ट्राध्यक्ष और कार्यकारी प्रमुख राष्ट्रपति' होता है। 5 अगस्त, 1960 को धूम-धाम से यहाँ पूर्ण स्वतन्त्रता की घोषणा की गई और काले, सफेद और लाल रंग की पट्टियों वाला तिरंगा शान से लहराया गया।

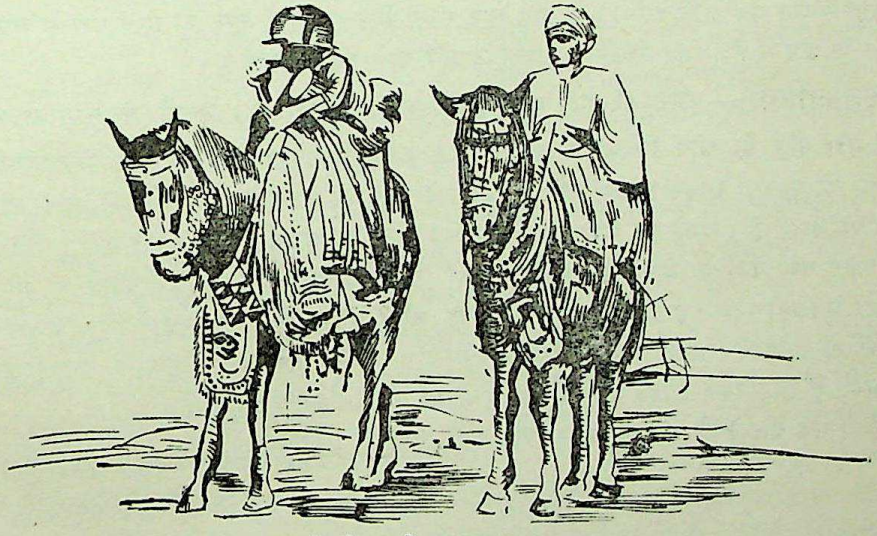

उत्तरी वोल्टा के कुछ घुड़सवार

जन-जीवन—वोल्टा गणराज्य की कुल जनसंख्या 35 लाख है। उत्तर, पश्चिम और पूर्वी भाग में आबादी छितरी है, पर मध्य और दक्षिण भाग में घनी। वोल्टा की मुख्य जाति माँसी है। कुल जनसंख्या में करीब 50 प्रतिशत लोग माँसी जाति के ही हैं। इस जाति की व्यवस्था सामन्ती रही है। इनका राजा 'मोरो नाबा' न केवल राजा होता है, बल्कि धार्मिक और नैतिक गुरू भी। मोरो नाबा के पद के कारण माँसी जाति में अनुशासनात्मक एकता आ गई है। माँसी परिवार झोपड़ियों के छोटे से समूह में रहता है। अक्सर ये झोपड़ियाँ अपने खेतों के मध्य बनी होती हैं। इस प्रकार एक परिवार की झोपड़ियों और दूसरी झोपड़ियों के बीच काफी फासला होता है। ये लोग पूर्वी भाग में रहते हैं। पश्चिमी भाग में बोबो जाति के तीन कबीले रहते हैं। यह जाति मण्डे जाति से मिलती-जुलती है। इनके गाँव काफी बड़े-बड़े होते हैं तथा मकान पास-पास बने होते हैं। ये लोग धार्मिक कृत्यों के अवसर पर सहस्रों देवी-देवताओं की अर्चना करते हैं। प्रमुख देवता—वुरू होता है तथा प्रमुख और

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

सामाजिक अवसरों पर उसकी पूजा की जाती है। गूरोंसी जाति कूड्गू व लिग्रो जिलों में रहती है। ये लोग माँसी लोगों से काफी भिन्न हैं। सरदार या राजा के अधीन रहना इन्हें नहीं भाता। बौद्धिक रूप से ये काफी उन्नत हैं। कारीगरी और तकनीकी काम ये जल्दी सीख लेते हैं। लोबी जाति का जीवन काफी दिलचस्प है। इनके थोड़े-थोड़े परिवार मिलकर एक स्थान पर रहते हैं तथा ये अपने मकान आम सतह से काफी ऊँचे स्थान पर बनाते हैं ताकि कभी शत्रु आ जाय तो आसानी से उस पर तीरों की वर्षा कर सकें। ये लोग चतुर शिकारी भी हैं और अच्छे किसान भी। 2 लाख के करीब पिग्रोल जाति के लोग हैं जिनकी महिलाएँ बालों में चिकना पदार्थ लगाकर किलंगी-सी बनाती हैं तथा पीठ पर अपने बच्चों को कपड़े से बाँधे रखती हैं। कोई 2 लाख 30 हज़ार मण्डे जाति के लोग हैं जो उत्तरी आइवरी कोस्ट, माली तथा गिनी में भी रहते हैं।

वोल्टा के 90 प्रतिशत लोगों की जीविका कृषि और पशुपालन पर निर्भर है। यहाँ लोग अच्छे किसान हैं पर भूमि की अनुर्वरता उनका उत्साह ठण्डा कर देती है। अब कृषि सम्बन्धी समस्याएँ हल करने के अनुसंधान चल रहे हैं। यहाँ की मुख्य उपज कपास, मूंगफली और चावल हैं। कुछ मोटा अनाज भी उगाया जाता है। नाइजर की तरह ही वोल्टा की भी बड़ी सम्पदा पशुधन ही है। वोल्टा में सोने का खनन काफी पहले से हो रहा है। अनुमानतया यहाँ प्रति वर्ष 11-12 मन साफ सोना निकलता है। सोने की खानें पूरा के आस-पास करीबन 60 मील के क्षेत्र में हैं। यहाँ मैंगेनीज, बाक्साइट और तांबे की भी खानें हैं।

दस्तकारियाँ—वोल्टा की कई दस्तकारियाँ काफी विकसित हैं। बुनाई का काम लगभग देश भर में होता है और गाँव के लोग विदेशों से आए मिल के कपड़े की अपेक्षा हथकरघा बुनकरों द्वारा पट्टियों के रूप में बुने वस्त्रों को पहनना अधिक पसन्द करते हैं। ऊपरी वोल्टा में कालीन तथा कांसे की छोटी-छोटी आकृतियाँ बहुत सुन्दर बनती हैं। चमड़े का काम तथा टोकरियाँ बनाने का काम भी काफी प्रसिद्ध है।

लगभग मध्य केन्द्र में स्थित ऊगाड्गू यहाँ की राजधानी है। यह आइवरी कोस्ट से जोड़ने वाली रेलवे लाइन का आखिरी स्टेशन है। यहाँ एक हवाई अड्डा भी है। यहाँ ज्यादातर मकान मिट्टी के बने हैं। इसे पहले क्रेकोविल भी कहते थे जिसका अर्थ था मिट्टी का नगर। दक्षिण-पश्चिमवर्ती भाग में बसा डिऊलासो भी एक प्रसिद्ध नगर है और रेलवे लाइन पर ही बसा है। यहाँ भी एक हवाई अड्डा है।

चलिए अब वोल्टा की दक्षिणी सीमा पार करके घाना में प्रवेश करें।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

11. घाना

(GHANA)

क्षेत्रफल : 91,843 वर्ग मील **जनसंख्या : 50,00,000**

डबल रोटी के स्लाइस की सी आकृति वाला घाना पश्चिमी अफ्रीका के सर्वाधिक जागृत और परिपक्व देशों में से है। इसका कुल क्षेत्रफल 91,843 वर्ग मील है। आइवरी कोस्ट के पूर्व में और वोल्टा के दक्षिण में अवस्थित यह देश हमारे आन्ध्र प्रदेश से कुछ छोटा है। इसके दक्षिणी तट पर अतलांतिक महासागर की लहरें उमड़ती रहती हैं। इस की तटरेखा 330 मील लम्बी है। उत्तर से दक्षिण का फासला अधिक है पर पूर्व से पश्चिम का कम। बालुई तट के पीछे तटवर्ती मैदान हैं और उनके पीछे अशान्ति के घने वन हैं। उत्तरी भाग शुष्क और सवाना घास की भूमि है। यहाँ की सब से बड़ी नदी वोल्टा है जो वोल्टा गणराज्य से इसके पश्चिमोत्तर भाग में प्रवेश करती है और दक्षिण-पूर्वी कोने पर पहुँच कर सागर में विलीन हो जाती है। अन्य तीन नदियाँ दंसु, प्रा और अंकोब्रा भी बारहमासी नदियाँ हैं। जलवायु उष्ण है।

अतीत—घाना के वर्तमान निवासियों का उद्गम वह प्राचीन घाना साम्राज्य कहा जाता है जो 9वीं से 10वीं सदी के बीच नाइजर व सेनेगाल नदियों के मध्य में था। ये लोग अब से कोई 700 वर्ष पहले मुस्लिम आक्रांताओं के कारण यहाँ आ गए थे और फिर यहीं बस गए।

यूरोपियों में सर्वप्रथम इनका पुर्तगालियों से सम्पर्क हुआ। पुर्तगालियों ने 1482 में यहाँ अपना प्रथम दुर्ग एलमिना पर बनाया था। पुर्तगालियों के बाद, अंग्रेज, स्वीडिश, जर्मन और डेन लोग आये। और तुरत बाद ही सागर तट पर विदेशी दुर्गों की एक पंक्ति-रेखा बन गई। ये विदेशी आरम्भ में तो स्वर्ण के लालच से आये पर ज्यों ही उन्हें लगा कि अफ्रीकी गुलामों का बेचना तो अधिक लाभदायक है, वे उसमें लग गए। कहते हैं कि गुलामों के व्यापार पर प्रतिबन्ध लगाने के पूर्व कोई 2 करोड़ लोग पश्चिमी अफ्रीका से गुलामों के रूप में निर्यात किये जा चुके थे। 1821 में ब्रिटेन का शासन हो गया शुरू में तटवर्ती इलाकों के फांती कबीलों ने अंग्रेजों की अधीनता स्वीकार कर ली, पर अशांति के क्षेत्र राज्य ने जो मध्य भाग में है, आसानी से हथियार नहीं डाले। इस अशांति क्षेत्र में एक शक्तिशाली परिसंघ था जिसकी स्थापना 17वीं सदी में ओसे तूतू ने की थी। 1876 के बाद 1900 तक अंग्रेजों के साथ 7 लड़ाइयाँ लड़ीं पर अंत में अशान्ति के लोगों को पराजय ही मिल। अशांति के योद्धाओं ने एक अंग्रेज गवर्नर को युद्ध में घेर लिया था जिसने बंदी बनने की अपेक्षा अपने आपको गोली मार लेना अच्छा समझा था। अशांति लोगों ने उस अंग्रेज गवर्नर की खोपड़ी को शाही पेय-पात्र बनाया था। अशांति लोगों का रण-कौशल और व्यूह-रचना भी अनोखी थी। अशांति के पराजित होने के बाद उत्तरी क्षेत्र भी जल्दी ही अंग्रेजों के क़ब्जे में आ गया।

1900 में जब अंग्रेजों ने अशांति पर विजय प्राप्त कर ली थी तो वहाँ के नरेश, प्रेमपेह प्रथम को निर्वासित कर दिया गया था। बाद में 1924 में उन्हें कुमासी राज्य का शासक मान लिया गया।

द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद घाना में आज़ादी का आन्दोलन तेज़ी से चलने लगा। स्वतंत्रता की माँग करने के लिए यहाँ सर्वप्रथम यूनाइटेड गोल्डकोस्ट कन्वेशन बनाया गया। 1947 में क्वामे एक्रूमा ने इसके सचिव का

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पद सम्हाला और काम तेज़ी से चलने लगा। बाद में कुछ मत-भेद हो जाने के कारण डा० एंक्रूमा ने एक नयी पार्टी-कन्वेशन पीपुल्स पार्टी बना ली। 1950 से इस दल ने सविनय अवज्ञा आन्दोलन शुरू किया। एंक्रूमा और उनके साथियों को गिरफ्तार कर लिया गया। बाद में जब चुनाव हुए तो एंक्रूमा की पार्टी को बहुमत मिला। फिर गवर्नर ने इन्हें मुक्त करके विधान-सभा का नेतृत्व सम्हालने के लिए बुलाया। 1954 और 1956 में भी जो आम चुनाव हुए उनमें भी एंक्रूमा की पार्टी-कन्वेशन पीपुल्स पार्टी-को बहुमत मिला। 1956 के चुनाव तो स्वतंत्रता की कसौटी थे। आखिर यह देश विश्व क्षितिज पर 6 मार्च, 1957 को स्वतंत्र राष्ट्र के रूप में चमक उठा।

1 जुलाई, 1960 से घाना गणराज्य है। राष्ट्रपति को व्यापक अधिकार हैं वह सर्वोच्च न्यायालय के जजों को भी बर्खास्त कर सकता है। वयस्क मताधिकार पर निर्वाचित 160 सदस्यों की संसद् है। देश के चार भाग हैं : पश्चिमी खण्ड, पूर्वी खण्ड, अशांति और उत्तरी खण्ड। पर शासन एकात्मक है। यानी प्रदेशों को वैधानिक अधिकार नहीं है। घाना का राष्ट्र ध्वज लाल, सफेद व हरे रंग की आड़ी पट्टियों वाला है; उसके बीच काले रंग का सितारा है।

जन-जीवन—घाना की जन-संख्या करीबन 50 लाख है। तटवर्ती क्षेत्रों में मुख्यतया अकान, मध्य में अशांति, उत्तर में प्रूसी तथा डगार्ती और दक्षिण-पूर्व में ईव जातियाँ रहती हैं। लगभग सभी जातियों की अपनी-अपनी बोलियाँ हैं पर ईव भाषा ज्यादा व्यापक है। भारतीयों की भांति घानाई लोग भी अपने कुटुम्बियों से बहुत स्नेह रखते हैं। उन्हें अपने अतीत पर श्रद्धा और गर्व है फिर भी आधुनिक विचारों को अपनाने में उन्हें संकोच नहीं। घाना के दक्षिणवर्ती भाग में लोग एक बिना कालर के कुर्ते पर बड़ी-सी चादर डाले रहते हैं जो चटकीले रंग की होती है। यह चादर कमर से नीचे के भाग को भी ढकती है तथा उसका एक छोर कन्धे पर पड़ा रहता है। उत्तर में चोगा पहनते हैं और सिर पर देशी टोप रखते हैं। नगाड़े और नृत्य घानाई जीवन का अभिन्न अंग है। घाना का कोई भी समारोह या उत्सव नगाड़ों की ध्वनि और नृत्य के बिना पूरा नही होता। नगाड़े, वाद्य के रूप में ही नहीं संदेश प्रसारण में भी बड़े काम करते हैं। अतीत में राष्ट्रीय संकट या विशेष अवसर पर, नगाड़ों की ध्वनि से एक गाँव से दूसरे गाँव में संदेश भेजा जाता था और कुछ ही घण्टों में ख़बर सारे देश में फैल जाती थी। भारत की कई देशी रियासतों में भी पहले नगाड़ों से सूचनाएँ प्रसारित की जाती थीं। घाना रेडियो का प्रसारण का आरम्भ नगाड़ों की ध्वनि से होता है। नगाड़े कई किस्म के होते हैं। कुछ तो आदमकद के होते हैं जिन्हें खड़े होकर बजाया जाता है और कुछ छोटे। घाना के कई मनमोहक नृत्य हैं। अदुनकुम नृत्य में युवतियाँ बारी-बारी से रूमाल हिलाती हुई गाती हैं, नृत्य करती हैं। ऐस्सिमिने नृत्य में युवक और युवतियाँ दोनों होते हैं तथा कभी-कभी 400-500 व्यक्ति समवेत गान व नृत्य करते हैं। अशांति क्षेत्र में नृत्य करते समय युवतियाँ पैरों में घास-फूंस से गूँथकर बनाये गए विशेष आभूषण पहनती हैं। उन आभूषणों में अन्दर कंकड़ रखे जाते हैं और नृत्य के समय वे विशिष्ट ध्वनि पैदा करते हैं। बाजुओं पर भी घास के आभूषण पहनते हैं। उत्तर में लोग सिर पर पशुओं के सींग लगाकर तथा शरीर पर कौड़ियों की मालाएँ पहनकर नृत्य करते हैं। कोई-कोई नृत्य तो रात भर चलता रहता है। नृत्य के प्रति लोगों में एक परम्परागत अनुराग है।

करीबन सितम्बर के महीने में अशांति प्रदेश में ओडिवरा समारोह मनाया जाता है। हालांकि यह समारोह स्वर्गीय राजाओं की स्मृति में मनाया जाता है और इस प्रकार सामन्ती है, फिर भी यह आजकल राष्ट्रीय

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पर्व की तरह बन गया है। इस अवसर पर यहाँ के परम्परागत 'स्वर्ण सिंहासन' का जुलूस निकाला जाता है। स्वर्ण सिंहासन के प्रति लोगों की परम्परागत श्रद्धा है और मान्यता है कि यह सिंहासन विशेष प्रार्थना पर स्वर्ग से अवतरित हुआ था।

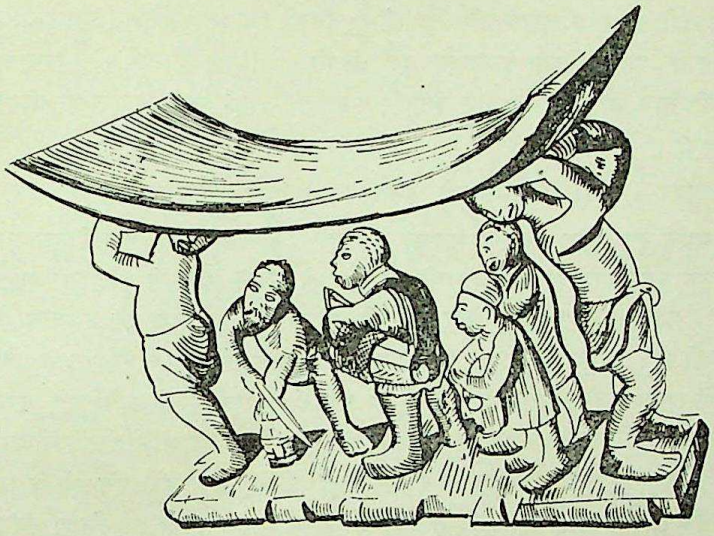

लकड़ी में तराशी गई स्वर्ण-सिंहासन की एक प्रतिकृति

हालांकि घाना में अब लोकतांत्रिक व्यवस्था है पर यहाँ के सामाजिक जीवन में सरदारों का महत्त्व अब भी विद्यमान है। ये सरदार एक तरह से सामान्त होते हैं। पहले इन्हें प्रशासनिक, सैनिक, न्यायिक आदि सभी अधिकार होते थे, पर लोकतंत्र में वैसे अधिकार तो नहीं रहे, पर मान्यता अब भी है। विशेष अवसरों पर जब प्रमुख सरदार के यहाँ दरबार का आयोजन होता है तो दृश्य देखते ही बनता है। दरबार विशेष अतिथियों के स्वागत-सत्कार के रूप में भी होते हैं। दरबारों के अवसर पर सरदार आभूषणों से सुसज्जित परम्परागत परिधान पहन कर राजसी ठाट से निकलते हैं। बहुधा सरदार पालकियों में आते हैं जिन्हें उनके अनुचर उठाते हैं। जब भी सरदार कहीं जाते हैं तो पीछे-पीछे एक अनुचर उनके सिर पर रंग-बिरंगा छत्र उठाये चलता है।

दस्तकारियाँ—घाना में कई दस्तकारियाँ अब भी खूब फल-फूल रही हैं। लकड़ी अथवा हाथी-दांत पर खुदाई बहुत सुन्दर होती है। केंटी वस्त्र बुनने की कला बहुत प्राचीन है। यह वस्त्र लम्बी पर सकड़ी पट्टियों में बुना जाता है। बाद में सिलाई करके इसे बड़ा कर लेते हैं। घाना की कुम्हारिनें बिना चाक की सहायता के भी सुन्दर, सुघड़ और बिलकुल गोल पात्र बनाने में माहिर हैं। अशांति में कांस्य-मूर्तियाँ बनाने तथा सोने-चांदी के तारों का काम भी बहुत प्रचिलित है। उत्तर में टोकरियाँ भी बड़ी खूबसूरत बनायी जाती हैं।

घाना की अर्थ-व्यवस्था काफी उन्नतिशील है। कोका यहाँ की प्रमुख उपज है। घाना विश्व भर में कोका का सबसे बड़ा उत्पादक है। घाना की आर्थिक उन्नति का एक कारण कोका है। इससे न केवल राज्य को बल्कि यहाँ के किसानों को भी बहुत आमदनी होती है। हालांकि किसानों का झुकाव ज्यादातर कोका की तरफ है, पर मकई, ज्वार, बाजरा, चावल जैसी खाद्य-फसलों की उपज बढ़ाने पर अब पर्याप्त ध्यान दिया जा रहा है। खनिजों की दृष्टि से भी यह देश काफी भाग्यवान है। सोना यहाँ खूब निकाला जाता है। स्वतंत्रता के पूर्व

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

इस देश का नाम भी गोल्ड कोस्ट (स्वर्ण तट) ही था। कोका के बाद घाना की सबसे प्रमुख निर्यात सोना ही है। मैंगनीज और बाक्साइट भी यहाँ खूब निकलता है। ब्रिटिश राष्ट्रमण्डलीय देशों में सबसे ज्यादा मैंगनीज का निर्यात घाना ही करता है। बाक्साइट का खनन बढ़ाने के लिए और उसका एल्युमीनियम बनाने के लिए प्रयत्न चल रहे हैं। वोल्टा नदी पर बांध बनाने और बिजलीघर स्थापित करने की एक विशाल योजना चल रही है। इस बिजली का इस्तेमाल एल्यूमीनियम कारखाने को चलाने में किया जाएगा। और तब प्रतिवर्ष लगभग 2,10,000 टन अल्यूमीनियम का उत्पादन होने लगेगा। इमारती लकड़ी का उत्पादन भी घाना की अर्थ-व्यवस्था में बहुत महत्त्व रखता है।

राजधानी अकरा—घाना की राजधानी अकरा अतलांतक महासागर के तट पर बसा हुआ नगर है। इसमें एक ओर चट्टान पर ताड़ वृक्षों के झुरमुट में खड़ा क्रिश्चियन बर्ग पराधीनता काल की यादगार है तो उसके पूर्व में ही एक संगमरमर का बना स्वाधीनता-द्वार जो 1957 में मिली स्वतंत्रता का प्रतीक है। अकरा नवजागृत अफ्रीका की रंगभूमि बना हुआ है और अफ्रीकी एकता और जागरण के सम्बन्ध में यहाँ सम्मेलन-गोष्ठियाँ होती ही रहती हैं। 1 जुलाई, 1961 को गणराज्य स्थापना की प्रथम वर्षगांठ के अवसर पर एक स्तंभ बनाया गया था जिसमें अखण्ड लौ जलती रहती है। यह अफ्रीकी जागरण की ज्योति है अफ्रीका में एक तरफ मामूली मकान बने हैं तो दूसरी तरफ पंचमंज़िला तथा 100 कमरे वाला आलीशान एम्बेसेडर होटल भी है। यहाँ जेम्स दुर्ग भी है जहाँ एंक्रूमा स्वाधीनता संग्राम काल में बंदी बना कर रखे गये थे। अकरा से कुछ ही मील दूर घाना का प्रथम विश्वविद्यालय अंक्रूमा यूनिवर्सिटी है जो यहाँ बढ़ती हुई शिक्षा का प्रतीक है। कहाँ प्राइमरी शिक्षा निश्शुल्क और अनिवार्य है। स्कूल जाने योग्य बच्चों में 50 प्रतिशत पढ़ने लगे हैं। माध्यमिक शिक्षा का भी विस्तार हो रहा है।

अकरा ने पश्चिमी तट पर स्थित केप कोस्ट तथा सेकोंडी-तकोराडी प्रमुख बन्दरगाह तथा नगर है। तेमा के पास अब नया बन्दरगाह बन रहा है। दक्षिण-पूर्व में हो तथा उत्तर में वमेले मुख्य नगर हैं। मध्य भाग में हरे-भरे वनों से आच्छादित पहाड़ी पर स्थित है—कुमासी, जो पहले अशांति परिसंघ की राजधानी था। यह प्रमुख व्यापारिक केन्द्र भी है। केंटे वस्तु बुनने तथा परम्परागत 'सिंहासन' की काष्ट में प्रतिकृतियाँ बनाने का काम भी यहाँ खूब होता है। यहाँ एक नवनिर्मित सुन्दर इमारत में टैक्नीकल कालेज है।

घाना में रेल और सड़कों की अच्छी व्यवस्था है। अकरा में एक हवाई अड्डा है। तेमा के पास नया बन्दरगाह बनाया जा रहा है। घाना की अपनी विमान सेवा तथा जहाजरानी सेवा भी चालू हो चुकी है।

जय घोष करके कहो, ओ ! घाना,
नगाड़े की चोट पर कहो—घाना,
ताड़ वृक्षों से सजे सागर तट से आओ,
उत्तर के चौड़े मैदानों से आओ,
खेतों और जंगलों से आओ,
पहाड़ों और खानों से आओ,
तुम्हारी सन्तान परम्परागत लय में गाती है,
सदा के लिए अमर स्वतन्त्रता—उससे भी आगे स्वतंत्रता।"

[घाना के राष्ट्रगीत की कुछ पंक्तियों का हिन्दी रूपान्तर]

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

12. टोगो

(TOGO)

क्षेत्रफल : 21,893 वर्ग मील **जनसंख्या : 21,00,000**

टोगो गणराज्य घाना के पूर्व में स्थित है। यह टोगोलैण्ड का केवल वह भाग है जो पहले फ्रांस के अधीन था। ब्रिटिश टोगोलैण्ड तो अब घाना का ही भाग बन चुका है। यह एक संकड़ा देश है। इसका वर्तमान स्वरूप ब्रिटेन और फ्रांस द्वारा टोगोलैण्ड का मनमाना ढंग से विभाजन करने के फलस्वरूप हुआ है। इसका कुल क्षेत्रफल 21,893 वर्ग मील है जो हमारे सबसे छोटे प्रदेश केरल का ड्योढ़ा मात्र है।

टोगो के दक्षिण में सागर है और तट पर हैं—ताड़ के वृक्षों से सुशोभित धरती। तटवर्ती भाग में ही समुद्री पानी से बनी झीलें हैं। इनमें से एक झील का नाम है—टोगो। इन झीलों के पीछे की धरती पर नारियल के पेड़ हैं तथा अनाज की खेती होती है और इन सब के पीछे हैं—घने वन। आखिर में हैं गर्म और शुष्क मैदान। यहीं मोनो नदी बहती है जिसकी घाटी में कपास उगायी जाती है। दक्षिण पश्चिम से पूर्वोत्तर की ओर एक पर्वत श्रेणी भी चली गई है। दक्षिणी भाग में इसका नाम अगोम्बे है।

टोगो पर विदेशी आधिपत्य की कहानी यूरोपीय उपनिवेशवादियों की साम्राज्य लिप्सा की कहानी है। 19वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में पश्चिमी अफ्रीका के इस भू-भाग में साम्राज्यवादी शक्तियों में साम्राज्य बढ़ाने की होड़ लग रही थी। गोल्ड-कोस्ट (अब घाना) में ब्रिटेन ने अपने पैर जमा लिये और वोल्टा, नीजर, डहोमे पर जब फ्रांस का क़ब्जा हो गया तो गोल्ड कोस्ट और डहोपे के बीच इस तट पर कोई 35 मील चौड़ा टुकड़ा बच रहा था। जर्मन लोग इस पर अधिकार जमाने के लिए भाग-दौड़ करने लगे। वैसे जर्मन व्यापारी यहाँ 1865 में ही आ गए थे पर जर्मन को इस भाग पर राजनैतिक प्रभुत्व जमाने में 19 वर्ष और लग गए। 1884 में स्थानीय सरदारों से संधि करके जर्मनी ने इसे अपने संरक्षण में ले लिया और एक तटवर्ती गाँव टोगो के नाम पर इस पूरे देश का नाम टोगोलैण्ड रख दिया। टोगो का स्थानीय भाषा में अर्थ है—सागर के पीछे।

जर्मनी के भाग में इसका अधिपत्य थोड़े से समय के लिए बदा था। प्रथम विश्वयुद्ध छिड़ते ही, जिसमें एक तरफ ब्रिटेन और फ्रांस आदि लड़ रहे थे और दूसरी तरफ थे---जर्मनी, इटली आदि, ब्रिटिश और फ्रांसीसी फौजों ने अगस्त, 1914 में टोगोलैण्ड पर क़ब्जा कर लिया। युद्ध के बाद जब 'लूट के माल' का बंटवारा हुआ तो इसका गोल्ड कोस्ट से सटा एक तिहाई भाग ब्रिटेन ने ले लिया और डहोमे के पश्चिम में स्थित दो तिहाई भाग फ्रांस ने हड़प लिया। लीग ऑफ नेशन्स ने भी भौगोलिक स्थिति अथवा निवासियों की भावना की पर्वाह किये बिना इस बंटवारे पर अपनी मुहर लगा दी। ब्रिटेन के अधीनस्थ भाग ब्रिटेन को 'मैनडेट' क्षेत्र के रूप में मिल गया और फ्रांस अधीन भाग फ्रांस को। यह बटवारा ही टोगो के लिए बड़ा दुर्भाग्य था। ब्रिटेन और फ्रांसीसी सत्ता के कारण दक्षिण में रहने वाली ईव जाति पहले ही विभक्त हो चुकी थी। कुछ लोग गोल्ड कोस्ट के दक्षिण-पूर्वी भाग में थे और कुछ डहोमे के दक्षिण-पश्चिम में बची हुई ईव जाति फिर दो टुकड़ों में बंट गई। यह बंटवारा बिलकुल कृत्रिम था। इससे कई लोगों के खेतों तक के टुकड़े हो गए। कई परिवार विभक्त हो गए। कुछ लोगों के गाँव एक तरफ रह गए और खेत दूसरी तरफ। पर लोगों की कठिनाई पर कौन विचार करता—बंटवारा तो साम्राज्यवादियों की मर्जी के अनुसार हुआ था।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

इस प्रकार दो टोगोलैण्ड बने—ब्रिटिश टोगोलैण्ड जिसका कुल क्षेत्रफल 13,049 वर्गमील था, और फ्रांसीसी टोगोलैण्ड जिसका कुल क्षेत्रफल 21,893 वर्ग मील था। ब्रिटिश अधिकारियों ने अपने टोगोलैण्ड का शासन गोल्डकोस्ट के साथ चलाया। अतः दोनों प्रदेशों के लोग घुल-मिल गए। गोल्डकोस्ट जब 1957 में स्वतंत्र होने लगा था तो ब्रिटिश टोगोलैण्ड के लोगों से पूछा गया था कि वे गोल्डकोस्ट (घाना) के साथ मिलना चाहते हैं या पृथक् रहना चाहते हैं ? बहुमत का फैसला था कि वे गोल्डकोस्ट में मिलना चाहते हैं। अतः मार्च, 1957 में गोल्ड कोस्ट स्वतंत्र होकर जब घाना बना तो ब्रिटिश टोगोलैण्ड भी उसका अंग हो गया।

फ्रांस ने अपने टोगोलैण्ड का शासन पृथक् रूप से चलाया। उसे पास के डहोमे या वोल्टा के साथ नहीं मिलाया। 1945 में लीग ऑफ़ नेशन्स का यह क्षेत्र टोगोलैण्ड की तरह ही संयुक्त राष्ट्र संघ का 'ट्रस्ट' क्षेत्र बन गया। 1945 में सानफ्रांसिस्को में हुए सम्मेलन में यह स्पष्ट कर दिया गया था कि संयुक्त राष्ट्रसंघ की ट्रस्टीशिप का उद्देश्य अधीनस्थ क्षेत्रों को कम से कम समय में स्वशासन के योग्य बनाना है।

द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद फ्रांसीसी टोगोलैण्ड को अपनी प्रादेशिक असेम्बली चुनने का तथा फ्रांसीसी संसद् में अपने प्रतिनिधि भेजने का अधिकार मिल गया। पर इससे लोग संतुष्ट नहीं हुए। वे स्वतंत्रता चाहते थे। शुरू में ईव जाति के लोगों ने यह माँग की कि ईव जाति क्षेत्रों को मिलाकर एक किया जाय। पर बाद में यह माँग रखी गई कि दोनों टोगोलैण्डों को मिलाकर एक कर दिया जाय। इस प्रकार की माँग करने वाली राष्ट्रवादी पार्टी थी—तोगो एकता कमेटी (सी० यू० टी०) और इसका नेतृत्व सम्भाला था सिलवैनस ओलम्पियो ने जो जर्मनी, अंग्रेजी फ्रांस व ईव के अच्छे वक्ता थे।

1955 में यहाँ फ्रांस द्वारा चुनाव कराये गए। ओलम्पियो के दल ने इनका बहिष्कार किया और फ्रांस समर्थक दल उसमें जीत गया। फ्रांस ने 1956 में टोगो को एक स्वायत्त गणराज्य बना दिया। उस समय के सत्तारूढ़ दल का उद्देश्य टोगो को फ्रांस के साथ रखना था। पर ओलम्पियो का उद्देश्य टोगोलैण्ड को स्वतन्त्र कराना था। इसलिए ओलम्पियो के दल ने माँग की कि फ्रांस की अधीनता में चुनाव निष्पक्ष नहीं हुए हैं। अतः राष्ट्रसंघ की देख-रेख में चुनाव होने चाहिएँ और टोगोलैण्ड पर फ्रांसीसी ट्रस्टीशिप समाप्त करके इसे आज़ाद किया जाना चाहिए। इसके लिए ओलम्पियो कई बार राष्ट्रसंघ गए और वहाँ अपने विचारों से राष्ट्रसंघ के प्रतिनिधियों को अवगत कराया और आन्दोलन चलता रहा। आखिर अप्रैल, 1958 में यहाँ चुनाव हुए। दक्षिण में ओलम्पियो के दल ने 23 में से 14 स्थान और उत्तर में 23 में से 10 स्थान जीत लिए। यह तब हुआ जब स्वयं ओलम्पियो को चुनाव में भाग नहीं लेने दिया गया। उस वक्त उन पर विदेशी मुद्रा नियम भंग करने का मुकदमा चलाया जा रहा था। इस प्रकार टोगो एकता समिति की शानदार जीत के बाद फ्रांस के सामने इसे स्वतन्त्र करने के अलावा कोई चारा ही न रहा। 1 जनवरी, 1959 को यह देश स्वशासित कर दिया गया तथा 27 अप्रैल, 1960 को इसे स्वाधीन घोषित कर दिया गया।

शासन-व्यवस्था—टोगो एक गणराज्य है। राष्ट्राध्यक्ष राष्ट्रपति होता है। वैधानिक कार्य के लिए निर्वाचित राष्ट्रीय असेम्बली होती है। जनवरी, 1963 में यहाँ के प्रथम राष्ट्रपति श्री ओलम्पियो की हत्या कर दी गई थी। उसके बाद कुछ महीनों यहाँ सैनिक शासन रहा। मई, 1963 में यहाँ राष्ट्रपति और असेम्बली के चुनाव हुए। राष्ट्रपति के पद पर निकोलस ग्रुन्त्ज़की चुने गए। टोगो के राष्ट्रध्वज में तीन हरी और दो पीली आड़ी एकान्तर पट्टियाँ हैं। तटवर्ती नगर लोमे यहाँ की राजधानी है।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

टोगो की कुल आबादी 21 लाख के आस-पास है। दक्षिणी भाग में नीग्रो वंश की ईवे जाति रहती है तथा उत्तर में माम्प्रूसी, डगोम्ब, कोटोकाली और बसारी कबीले हैं जो मुसलमान हैं। तटवर्ती भाग के लोगों का मुख्य धन्धा कृषि और व्यापार है। उत्तर के लोग पशु-पालन का काम करते हैं।

टोगोलैण्ड की मुख्य पैदावार, कोको, मूंगफली, खोपरा, आदि हैं। इनका यह देश निर्यात भी करता है। आंतरिक खपत के लिए मोटा अनाज भी उगाया जाता है। लोमे के पास फास्फेट की खानें हैं।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

13. डहोमे

(DAHOMEY)

क्षेत्रफल 44,290 **वर्गमील** **जनसंख्या** : 17,20,000

टोगो के पूर्व में डहोमे है। उत्तर में इसकी सीमा वोल्टा और नीजेर दोनों ही देशों से मिलती है। प्रथम अगस्त, 1960 को यह फ्रांसीसी अधीनता से स्वतन्त्र हो गया था। डहोमे फ्रेंच भाषी पश्चिमी अफ्रीकी प्रदेशों में सबसे छोटा है। इसका कुल क्षेत्रफल 44,290 वर्ग मील है जो हमारे पंजाब प्रदेश से भी कम है।

डहोमे पश्चिमी अफ्रीका के सबसे छोटे देशों में से एक है पर है घना आबाद। यह अपने पश्चिमी पड़ौसी टोगो से आकार में कुछ बड़ा है। यह पश्चिम से पूर्व में तो केवल 77 मील है। पर उत्तर से दक्षिण 415 मील के लगभग। डहोमे के तटवर्ती भाग बालुई हैं। इसके पीछे समुद्री झीलें हैं जो आपस में जुड़ी हैं। ऊडा झील 25 मील लम्बी है। पश्चिमवर्ती ग्राण्ड पोपी झील टोगो देश की झीलों से जुड़ी है। इसके पीछे साधारण पठार है। कहीं-कहीं पहाड़ भी हैं। उत्तर में भी पठारी भूमि है। दक्षिण में मोनो नदी है जो टोगो देश से इसमें प्रविष्ट होती है और ग्राण्ड पोपो के पास सागर में मिल जाती है। सबसे लम्बी नदी ऊमे मध्यभाग में बहती हुई तट के पास नोकोए झील में गिर जाती है। उत्तर की नदियाँ नाइजर की सहायक हैं।

अतीत की झलक—जो देश आजकल डहोमे कहलाता है, वहाँ 12वीं-13वीं शताब्दी में अल्लादा अरद्रा नामक राज्य था। राजा की मृत्यु के बाद यह तीन राजकुमारों में बँट गया। एक राजकुमार तो पूर्व में चला गया और उसने अपने राज्य का नाम पोर्टोनोवो रख लिया। दूसरा भाई उत्तर की ओर चला गया और वहाँ उसने डहोमे राज्य की स्थापना की। तीसरा भाई वहीं रहा और उसने अपने राज्य का पुराना ही नाम 'अल्लादा' रहने दिया।

1625 में डहोमे के प्रथम नरेश डाको सत्तारूढ़ हुए थे और इन्होंने 25 वर्ष शासन किया। इनके बाद डहोमे की शक्ति बढ़ती चली गई। 1724-28 के बीच उत्तर के डहोमे ने अल्लादा और आस-पास के अन्य राज्यों को जीत कर अपने में मिला लिया।

1818 में यहाँ गेजो नामक प्रसिद्ध राजा शासनारूढ़ हुए। उनके 40 वर्ष के शासन काल में डहोमे चरमोत्कर्ष पर पहुँच गया था। गेजो के समय डहोमे की समाज-व्यवस्था काफी संगठित थी। उस जमाने में लोग यह जानते थे कि विभिन्न फसलों को अदल-बदल कर कैसे बोना चाहिए। उस समय चार दिनों का एक हफ्ता होता था। सामूहिक काम के लिये 100 आदमियों की सहकारी सभा होती थी। तोल के लिए वज़न होते थे। अगोमे के कस्बे का बाज़ार गेजो ने ही बनवाया था।

गेजो के राज्यकाल में ही अमेजान नामक नारी सैन्य दल संगठित किया गया था। वैसे नारी-सैनिकों का प्रयोग काफी पहले से ही होता था, पर व्यवस्थित रूप गेजो ने ही दिया था। बल्कि सच तो यह है कि इन महिला योद्धाओं ने गेजो की जीत में काफी मदद की थी।

1858 में, गेलेले डहोमे का राजा बना। इसके शासनकाल में भी काफी प्रगति हुई। इसने आस-पास के

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

क्षेत्रों को जीतकर अपने राज्य में मिला लिया। गेलेगे के बाद 1889 में बेहानजिन राजा बना। 1893 में फ्रांसीसियों ने अबोमे पर आक्रमण कर दिया। डहोमे की सेना ने उनके दाँत खट्टे कर दिये। अमेजन नारी सैन्य दल ने भी फ्रांसीसियों को बुरी तरह से हराया पर आखिर जीत फ्रांसीसियों की ही हुई। क्रमशः उनका अधिपत्य बढ़ता गया। पर फ्रांसीसियों को डहोमे के राजाओं से खतरा सदैव बना रहा। अतः 1911 में उन्होंने राजवंश ही समाप्त कर दिया और डहोमे को अच्छी तरह उपनिवेशी पंजे में जकड़ लिया। 1892 में यहाँ प्रथम गवर्नर नियुक्त किया गया था।

डहोमे की आबादी 17 लाख 20 हजार है। औसतन 1 वर्गमील में 38 लोग रहते है, पश्चिमी भाग में डहोमे कबीले के लोग हैं जो ईव भाषी हैं। इन्हें भोन भी कहते हैं। ये मृदुभाषी और लम्बे कद के होते हैं। पोर्टोनोवा के आस-पास नावो लोग रहते हैं। मोनो और कूफो नदियों के इधर-उधर अद्जा कबीले रहते हैं और मुख्यतया खेती करते हैं। उत्तरी भाग में बरीबा, माही, गुरुमई लोग हैं। बरीबा लोगों को घुड़सवारी का बड़ा चाव है। झील के किनारों पर बल्लियाँ गाढ़कर उनके ऊपर झोंपड़ियाँ बनायी जाती हैं।

अनोखे रीति-रिवाज—जहाँ डहोमे फ्रांसीसियों के प्रवेश के समय एक संगठित राज्य था, इसके धार्मिक रिवाज बड़े क्रूर और भयंकर थे। 19वीं शती में भी राजा की मृत्यु पर रानियों और हजारों नौकरों की बलि चढ़ाई जाती थी। डहोमे लोगों का विश्वास है कि राजा जब इस लोक से मरकर परलोक में जाता है तो वहाँ भी उसे सब ठाट-बाट मिलने चाहिएँ। अतः रानियों की बलि चढ़ाकर उन्हें राजा के साथ परलोक भेजा जाता था ताकि राजा को कोई कष्ट न हो। नौकर-चाकरों में हर तरह के लोग जैसे कि सिपाही, संगीतज्ञ, कुम्हार, मूर्तिकार, दर्जी लुहार, सुनार और किसान वर्ग के कुछेक को पकड़कर जबरन कत्ल कर दिया जाता था ताकि परलोक जाकर वे राजा की सेवा कर सकें। राजा की मृत्यु के बाद रनवास में कुहराम मच जाता था, बहुत-सी रानियाँ तो आपस में ही इस तरह लड़ मरती थीं। गेजो राजा ने अपनी मृत्यु के समय यह आदेश दिया था कि उसकी मृत्यु के बाद महल की रानियों या अन्य स्त्रियों का कत्ले-आम न किया जाय।

उत्तरी डहोमे का एक सरदार

स्वाधीनता का सूर्योदय—1947 में यहाँ पहली प्रादेशिक असेम्बली बनी थी। 10 वर्ष बाद 1957 में इसे आन्तरिक स्वशासन मिल गया था। सितम्बर, 1958 में नया फ्रांसीसी संविधान स्वीकार करके डहोमे दिसम्बर, 1958 में फ्रांसीसी राष्ट्रमण्डल का सदस्य बन गया था। अगस्त, 1960 को इसने पूर्ण स्वतन्त्र होने की घोषणा की थी। 29 अक्तूबर, 1963 को यहाँ एक सैनिक क्रान्ति हुई और राष्ट्रपति हयूबर्ट मागा को पद से हटा दिया गया। जनवरी, 1964 में एपिथी राष्ट्रपति चुने गए। तटवर्ती नगर पोर्टोनावो राजधानी है। यहाँ के राष्ट्रीय ध्वज में तीन रंग हैं। दाहिनी ओर पीले और लाल रंग की दो समान आड़ी पट्टियाँ हैं और बाईं ओर एक खड़ी हरी पट्टी है।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अर्थ-व्यवस्था—डहोमे की मुख्य पैदावार नारियल की गिरी और कॉफी है। घाना की तरह यहाँ कोको नहीं होता। आइवरी कोस्ट इसके आर्थिक विकास के लिए वित्तीय सहायता भी देता है। पुराने डहोमे में जहाँ भयंकर रीति-रिवाज प्रचलित थे, वहाँ नये डहोमे के लोग शिक्षा में बहुत रुचि ले रहे हैं। पश्चिमी अफ्रीका में शिक्षा का सबसे ऊँचा स्तर डहोमे में ही है। डहोमे के लोग ही अधिकांशतया फ्रेंच भाषी पश्चिमी अफ्रीका में अच्छे पदों पर हैं। एक व्यक्ति ने डहोमे के एक आगन्तुक से जब यह पूछा कि आपके यहाँ का सबसे बड़ा निर्यात क्या है तो उसने छोटा-सा उत्तर दिया गया—दिमाग़ यानी पढ़े-लिखे लोग।

राजधानी पोर्टोनोवो के अलावा जरा पश्चिम में स्थित कोटोनू भी एक प्रसिद्ध नगर है। यहाँ एक रेल लाइन भी है जो लगभग मध्य भाग में पराकू तक चली गई है।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

14. नाइजीरिया

(NIGERIA)

क्षेत्रफल : 3,73,250 वर्ग मील **जनसंख्या : 5,56,53,821**

प्रथम अक्तूबर, 1960 को जब दुलहन सी सजी तटवर्ती नगरी लागोस में यूनियन जैक उतार कर हरे-सफेद व हरे रंग का नया ध्वज लहराया गया तो अफ्रीका के क्षितिज पर सबसे अधिक आबादी वाले महादेश नाइजीरिया का जन्म हुआ था। नाइजीरिया का प्रादुर्भाव अफ्रीका के इतिहास में वही महत्त्व रखता है जो एशिया में भारतीय स्वतंत्रता का था। अन्तर यह है कि भारत को स्वतंत्रता तो उसके लाखों बेटे-बेटियों का उत्सर्ग करने के बाद मिली और नाइजीरिया को स्वतंत्रता एक बार बन्दूक चलाये बिना ही प्राप्त हो गई।

डहोमे के पूर्व में अवस्थित नाइजीरिया की 580 मील लम्बी तट-रेखा गिनी की खाड़ी की लहरों का स्पर्श करती है। इस तट-रेखा के पीछे कोई 10 से 60 मील चौड़ी दलदली भूमि है। जिसके विषाक्त मच्छरों के उत्पात के कारण अतीत में यूरोपीय लोग आन्तरिक भाग में प्रविष्ट होने से घबराते थे। इस भाग के पीछे उष्ण कटिबन्ध के सघन और हरे वन हैं। फिर है—40 से 100 मील तक सवाना घास की भूमि। नाइजीरिया का उत्तरी भाग खुला और शुष्क है, उत्तरी सीमा पर रेगिस्तान जैसी स्थिति है।

नाइजीरिया का नामकरण इसकी मुख्य नदी नाइजर पर हुआ है जो सिएरा लिओन के पहाड़ों से निकल कर माली व नाइजर देशों में होती हुई नाइजीरिया में पश्चिमोत्तर भाग से प्रविष्ट होती है और 2,600 मील की थल-यात्रा पूरी करके गिनी की खाड़ी में गिरती है। नाइजर का स्थान अफ्रीका की सबसे लम्बी सदियों में तीसरा है और संसार की सबसे लम्बी नदियों में नवाँ है। (अफ्रीका की कांगों और नील इससे बड़ी हैं)। नाइजीरिया का प्रयाग है— लोकोआ, जो देश के मध्य में स्थित है और जहाँ पूर्व की ओर से आने वाली बेन्यू नदी और नाइजर का संगम है। नाइजर और बैन्यू ने इस देश को प्राकृतिक रूप से तीन भागों में बांट दिया है। सम्पूर्ण देश का क्षेत्रफल 3,73 250 वर्गमील है जो भारत का कोई एक चौथाई है। इसकी जनसंख्या लगभग साढ़े पाँच करोड़ है और वह अफ्रीकी देशों में सबसे अधिक है।

यूरोपियों का आगमन—यूरोपियों के अगमन के पूर्व भी नाईजीरिया के कई भागों में अच्छी शासन-व्यवस्था चल रही थी। पश्चिमवर्ती भाग के यरूबा लोग राज संचालन अच्छी तरह कर रहे थे। बेनिन नामक स्थान से कई ऐसी कांस्य मूर्तियाँ प्राप्त हुई हैं, जिनके आधार पर कहा जा सकता है कि 14वीं-15वीं शताब्दी में भी वहाँ की कला काफी उन्नति कर चुकी थी। अतः यूरोपीयों का यह कहना निराधार है कि उनके पहुँचने के पहले सारे अफ्रीकी जाहिल थे। 1485 में एक पुर्तगाली नाविक एविरो नाइजीरिया के तट पर उतरने के बाद जंगलों को चीरता हुआ आंतरिक भाग में प्रविष्ट हुआ तो फलती-फूलती बेनिन नगरी को देखकर वह चकित रह गया। बेनिन के ओबा (नरेश) ने पुर्तगाली-नाविक की खूब आवभगत की थी और नरेश ने पुर्तगाली भाषा सीखने में रुचि दिखायी थी। कुछ समय के लिए यहाँ ईसाई मिशन भी स्थापित हो गए पर प्रभाव टिक न सका। 1553

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

में विण्डम नामक एक अंग्रेज कुछ साथियों सहित इसके तट हर उतरा। वह भी बेनिन गया था पर लौटते-लौटते उसके अधिकांश साथी प्राण घातक ज्वर के कारण मर गए। फिर 1554 में एक और अंग्रेज आया तथा 5 वर्ष बाद ये लोग हाथी दांत व काली मिर्च का व्यापार करने लगे। पर इन्हें शीघ्र ही मालूम हुआ कि सबसे लाभदायक व्यापार तो गुलामों का है। अमेरिका और वेस्टइंडीज के बागानों में मज़दूरों की कमी थी और इन निरीह भोले-भाले अफ्रीकियों से बढ़कर अधिक सस्ता माल उन्हें कहाँ मिल सकता था, अतः वे इस घिनोने व्यापार में जुट गए क्योंकि इसमें बहुत आमदनी थी। लगभग 2 पौण्ड में खरीदा हुआ एक गुलाम अमेरिका या वेस्ट इंडीज में 65 पौण्ड में बिकता था और औसतन यहाँ से 1 लाख गुलाम बाहर ले जाये जाते थे। उन्हें जहाजों में बोरियों की तरह ठूंस कर इस तरह ले जाया जाता कि एक तिहाई तो रास्ते में ही दम तोड़ देते और जो बच रहते वे मरने वालों से भी अभागे सिद्ध होते। वेस्ट इण्डीज और अमेरिका के बाज़ारों में भेड़-बकरियों की तरह बिकते और मालिक द्वारा खरीदे जाने पर आजन्म उसकी चाकरी करते रहते। इस घृणित कार्य से कई यूरोपीय व्यापारी चन्द ही दिनों में धनाढ्य हो गए और गुलामों के करुण-क्रन्दन की नींव पर बनी उच्च अट्टालिकाओं के स्वामी बन गये। 1807 में ब्रिटेन ने गुलामों के व्यापार पर क़ानूनी प्रतिबन्ध लगा दिया पर बाद में कई वर्षों तक लुके-छिपे यह चलता रहा।

जैसे नाइजर नदी की खोज का श्रेय मंगोपार्क तथा वैसे ही अन्य खोजकर्ताओं को है पर उत्तरी नाइजीरिया में शुरू में शासन रायल नाइजर कम्पनी का था। दक्षिण में अंग्रेजी के दो रक्षित प्रदेश थे—नाइजर कोस्ट तथा आयल रिवर। पर 1900 तक यह झमेला खत्म हो गया और शासन ब्रिटेन ने सम्भाल लिया। 1914 में लुगाई ने वर्तमान नाइजीरिया की सीमा-रेखाएँ निर्धारित कर इसे एक शासन के अंतर्गत किया था। उत्तर भाग—19वीं सदी के आरंभिक दिनों में यहाँ फुलानी सेनापति उसमान का आक्रमण हुआ। उसने इस भाग को जीतकर इस्लाम का प्रचार किया तथा अपने सेनापतियों में राज्य बांट कर सामन्ती व्यवस्था क़ायम करदी। ये सामन्त ही यहाँ अमीर कहलाते हैं और इन अमीरों का आज भी उत्तरी भाग में राजनैतिक और सामाजिक प्रभाव है।

द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद यहाँ वैधानिक प्रगति का शुभारंभ हुआ था। 1946 में पहली केन्द्रीय विधान सभा बनी थी पर राष्ट्रीय आन्दोलन चलता रहा। 1952 में एक नया संविधान बना इससे प्रादेशिक असेम्बलियों को अधिक अधिकार मिल गए। कुछ केन्द्रीय असेम्बली के अधिकार भी बढ़े। पश्चिमी और पूर्वी प्रदेश 1957 में ही स्वशासित हो गए। पर उत्तरी प्रदेश को यह जिम्मेदारी सम्भालने में दो वर्ष का समय और लगा और 1 अक्तूबर, 1960 को यह देश स्वतंत्र राष्ट्रों की पंक्ति में आ बिराजा। 1 अक्तूबर, 1962 से यह एक संघीय गण-राज्य बन गया।

अब आइये चारों प्रदेशों पर क्रम से विचार करें।

यरुबा प्रदेश—डहोमे की पूर्वी सीमा से सटा तथा नाइजर के बाएँ किनारे पर स्थित पश्चिम प्रदेश यरुबा जाति का घर है। यरुबा लोगों की संस्कृति काफी प्राचीन है। इनकी अपनी दंत-कथाओं में तो यहाँ तक कहा गया है कि इस प्रदेश में ईफे नगरी ही वह स्थान है जहाँ विधाता ने प्रथम मनुष्य की रचना की थी। पहले यहाँ अथाह जल था पर विधाता द्वारा भेजे गये प्रथम मनुष्य के पास एक दिव्य पक्षी था जिसने मिट्टी के कण ला-ला कर इस धरती का निर्माण किया। इसे दंतकथा मानकर छोड़ भी दे तो भी इतना तो ठीक है कि इनका उद्गम काफी प्राचीन है। कुछ लोगों का ख्याल है कि ये मिस्र की तरफ से आये थे। ईफे नगरी न केवल अब भी धार्मिक दृष्टि से पूज्य है, बल्कि वह ऐतिहासिक और पुरातत्व स्थल भी रखती है जहाँ से कई पीतल के बने

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

चेहरे, पकाई हुई मिट्टी के शीर्ष तथा अन्य कलात्मक वस्तुएँ प्राप्त हुई हैं। ईफे का ओनी यरुबा जाति का धर्म गुरु और पूज्यनीय महात्मा माना जाता है। यरुबा जाति के लोग कोई 400 देवी-देवताओं की पूजा-आराधना करते हैं। भारत के राजा-महाराजाओं की तरह यरुबा प्रदेश में पहले कई राजा थे। यहाँ के उत्तरवर्ती नगर ओयो 18वीं शताब्दी के मध्य में सबसे शक्तिशाली राज्य था। पर धीरे-धीरे सब की शक्ति क्षीण हो गई। वैसे अब भी यहाँ कुछ राजा हैं पर अब वे नाम मात्र के हैं। क्योंकि प्रशासनिक अधिकार तो लोक तांत्रिक तरीके से चुनी हुई सरकार को है। पश्चिम प्रदेश में निर्वाचित प्रादेशिक असेम्बली है और एक्शन ग्रुप यहाँ का प्रमुख राजनैतिक दल है। यरुबा एक जागृत, सुशिक्षित और प्रबुद्ध जाति है। अतीत में इधर बलि प्रथा भी प्रचलित रही थी। पर आधुनिक यरुबा एक प्रगतिशील प्रदेश है तथा नये नाइजीरिया के निर्माण में पूर्ण योग दे रहा है।

यरूबा जाति की आधुनिक महिला

इस प्रदेश की एक विशेषता यह है कि ज्यादातर लोग शहरों में रहना पसन्द करते हैं जबकि शेष अफ्रीका में स्थिति इसके विपरीत है। यरुबा प्रदेश में 1 लाख से अधिक आबादी के कोई 6 शहर हैं। इस प्रदेश की कुल आबादी लगभग 71 लाख है।

इस प्रदेश का मुख्य नगर पुरातन नगरी ईबादान है, जिसमें अब साइकिल सवारों की इतनी प्रचुरता है कि इसे साइकिलों की नगरी भी कहा जाता है। ईबादान में ही प्रादेशिक असेम्बली की सभा होती है। 1600 एकड़ धरती पर स्थित विश्वविद्यालय निःसंदेह नाइजीरिया का गौरव है। 30 लाख पौण्ड सेभी अधिक की लागत से निर्मित इसके आधुनिक और प्रभावशाली भवन एक भारतीय पत्रकार के शब्दों में अशोक होटल, विज्ञान भवन और राष्ट्रीय भौतिक प्रयोगशाला का सम्मिलित रूप प्रदर्शित करते हैं। इसमें कोई 1200 छात्र पढ़ रहे हैं। विभिन्न विषयों में 22 विभाग हैं। ईबादान का सप्तमंजिला आधुनिक अस्पताल भी नाइजीरिया के सर्वोत्तम अस्पतालों में से है पर इससे भी अधिक गर्व की बात है—टेलीविजन व्यवस्था। भारत में जब टेलीविजन अब भी परीक्षणात्मकों दौर से गुज़र रहा है तब भी यरुबा के दर्शक पिछले कई वर्षों से टेलीविजन का आनन्द उठा रहे हैं। पश्चिम प्रदेश काफी समृद्ध है और समृद्धि का कारण है—कोका। इस क्षेत्र की 85 प्रतिशत आय कोका के कारण है। नाइजीरिया कुल मिलाकर 1 लाख 5 हजार टन कोका का प्रतिवर्ष निर्यात करता है और 90 प्रतिशत कोका इसी पश्चिमी प्रदेश से प्राप्त होता है। कोका की वजह से यहाँ के मज़दूरों की आमदनी भी काफी बढ़ गई है। इस प्रकार बलि-प्रथा तथा प्राचीन रीति-रिवाजों के इस यरुबा प्रदेश में टेलीविजन व्यवस्था तथा ईबादान विश्वविद्यालय बिलकुल विरोधाभास प्रस्तुत करते हैं।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

मध्य पश्चिमी प्रदेश—यह प्रदेश यरूबा में से बेनिन और डेल्टा क्षेत्रों को मिलाकर अगस्त 63 में बनाया गया है। इसका क्षेत्रफल 15,000 वर्गमील है तथा इसमें गैर-यरूबी जातियाँ हैं। इन प्रमुख जातियों के नाम हैं ईडो, उरहोबो और उत्साको। यहाँ 65 सदस्यों की एक प्रादेशिक असेम्बली है जो जनता द्वारा निर्वाचित होती है। यहाँ की मुख्य सम्पदा तेल व लिगनाइट है।

ईबो प्रदेश—नाइजर नदी के पूर्वी और बेन्यू नदी के दक्षिणी भाग में ईबो प्रदेश है जिसे पूर्वी क्षेत्र भी कहते हैं। इस क्षेत्र ने नाइजीरिया को अज़ीकेवे जैसा राष्ट्रवादी नेता दिया है जिसका नाम स्वतंत्रता संग्राम के दिनों में घर-घर पूजा जाता था और माता-पिता अपने नवजात शिशुओं का नाम 'जिक' रखने में (अजीकेवे का प्यार का नाम जिक है) गर्व का अनुभव करते थे। अजीकेवे न केवल अफ्रीका विषयक 4 पुस्तकों के रचयिता है, अपितु पश्चिमी अफ्रीका के कई अखबारों के जन्मदाता भी हैं। जैसा प्रदेश के नाम से स्पष्ट है यहाँ की प्रमुख जाति है 'ईबो' जो अत्यन्त परिश्रमी, बुद्धिमान और साहसी लोग हैं। ईबो समुदाय में परिवार को सामाजिक इकाई ही नहीं राजनैतिक इकाई भी माना जाता है। ईबो समाज की महिलाएँ घर से बाहर का काम भी करती हैं। फुटकर बाज़ार तो लगभग महिलाओं के ही हाथ में है। ईबो के अलावा यहाँ की अन्य जातियाँ हैं—ईबोबिओ, ईजो और एफिक।

ईबो प्रदेश में कई विचित्र रीति-रिवाज हैं। मृत व्यक्ति मकान के एक कमरे में दफनाया जाता है और जिन-जिन कमरों में मृत व्यक्ति दफना दिये जाते हैं, उनमें एक निश्चित समय बाद बलि चढ़ाई जाती है। ईओ लोगों में एक पर्व भी मनाया जाता है, जिसे अश्वबध उत्सव कहते हैं और उस अवसर पर घोड़ों की बलि चढ़ाई जाती है। ईबो लोग संगीत-नृत्य में बड़ी रुचि रखते हैं। ईबो समाज के वीर नृत्य हैं—आती लागबू। ईजा महिलाएँ रूमाल नृत्य में दक्ष हैं। यहाँ कई नृत्य ऐसे भी हैं जो स्त्री-पुरुष दोनों के लिए हैं। ईम्बोबिओ जाति के पुरुष नर्तक स्त्रियों की सी आकृति के नकली चेहरे लगाकर क्यों नाचते हैं, इसका रहस्य समझ में नहीं आता। यहाँ के वाद्य यंत्रों में ओजा (बीन की तरह का यंत्र) और उबोम (शंकु आकार के नगाड़े) प्रमुख हैं।

1960 की खुदाई में मिट्टी के पात्र, लोहे की चीजें, अनूठी कारीगरी वाले आभूषण, कांसे के बर्तन वगैरह मिले हैं। उनसे पता चलता है कि यरूबा प्रदेश की तरह यहाँ की संस्कृति भी काफी प्राचीन और उन्नत थी। वर्तमान समय की आर्थिक उन्नति के स्रोत—तेल का पता लग गया है जिससे इसकी खुशहाली निश्चित है। यहाँ कुछ कोयला भी निकलता है पर यह कोक बनाने के काम में नहीं आ सकता। पूर्वी प्रदेश के लोग ज्यादातर व्यापार में अधिक रुचि रखते हैं।

इस प्रदेश का मुख्य नगर है—एनुगु जो हरी-भरी पहाड़ियों में अवस्थित है। यहाँ प्रादेशिक असेम्बली का सभा भवन है। इस प्रदेश का मुख्य दल है—अजीकेवे का दल, एन० सी० एन० सी० (नाइजीरिया व कैमरुन की नेशनल कांग्रेस) यहाँ यही सत्तारूढ़ दल है।

उत्तरी खंड—नाइजर व बेन्यू के उस पार है—विशाल उत्तरी खण्ड। जिसमें समूचे नाइजीरिया का 75 प्रतिशत क्षेत्र आ जाता है और जहाँ 55 प्रतिशत आबादी रहती है। संघीय शासन व्यवस्था में, आबादी के कारण उत्तरी खण्ड का हमेशा प्राधान्य बना रहेगा हालांकि शिक्षा की दृष्टि से अन्य प्रदेशों से यह भाग बहुत पीछे है। इस भाग में रहने वाली प्रमुख जातियाँ हैं—हासा, फुलानी और कनौरी। इतिहासकारों का कथन है कि 1952 के लगभग यहाँ 7 रियासतों में हासा जाति के शासक थे। ये रियासतें थीं—बिरम, जारिया, कत्साना, कानो, रानो गोबिर और दौरा। इसके अलावा 7 और रियासतें थीं—आमफरी, केब्बी, न्यूपे, ग्वारी

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

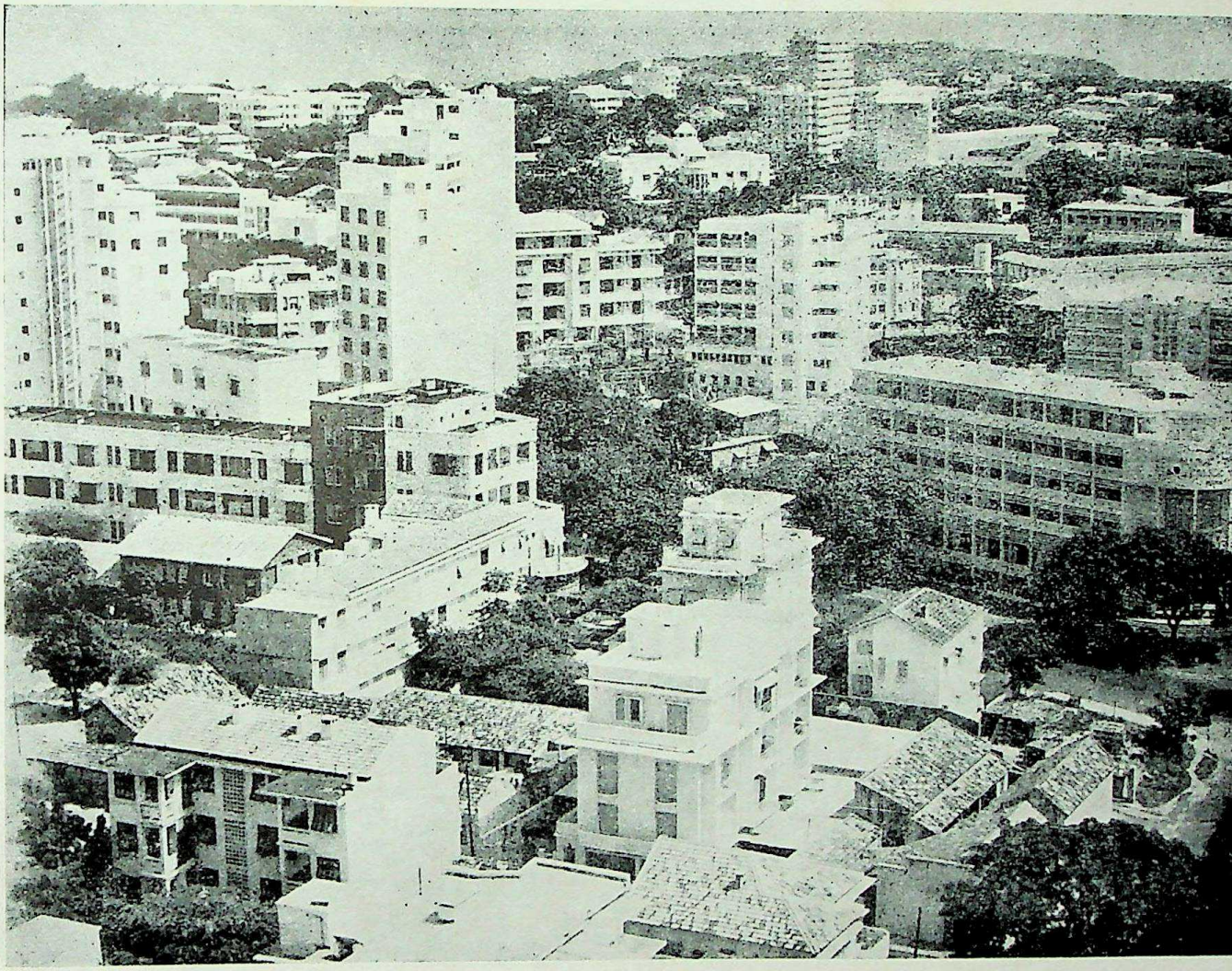

सेनेगाल की राजधानी, डकार

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

गैम्बिया की एक ग्रामीण युवती

डहोमे का एक बाजार

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

सिएरा लिओन के लोकनर्तक

CC-0. Agam Dass Collection, Panjab University, Chandigarh.

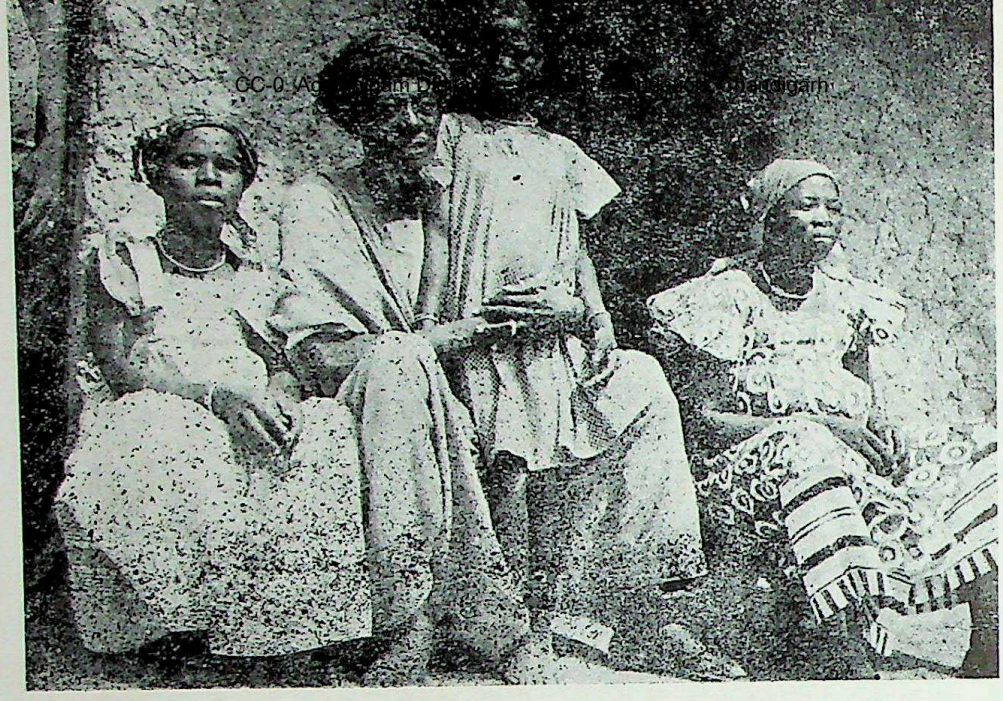

आइवरी कोस्ट का एक परिवार

आइवरी कोस्ट का एक गाँव

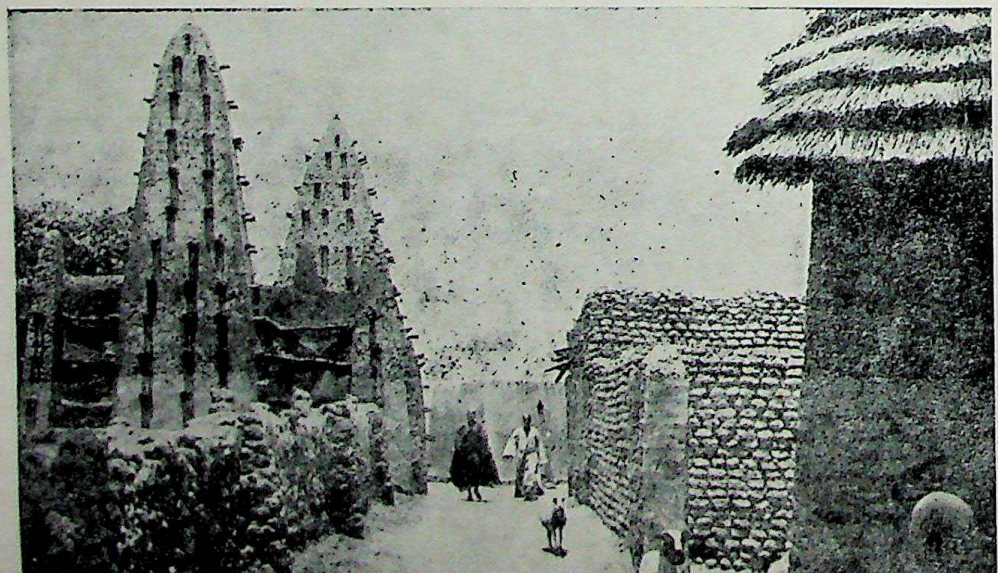

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

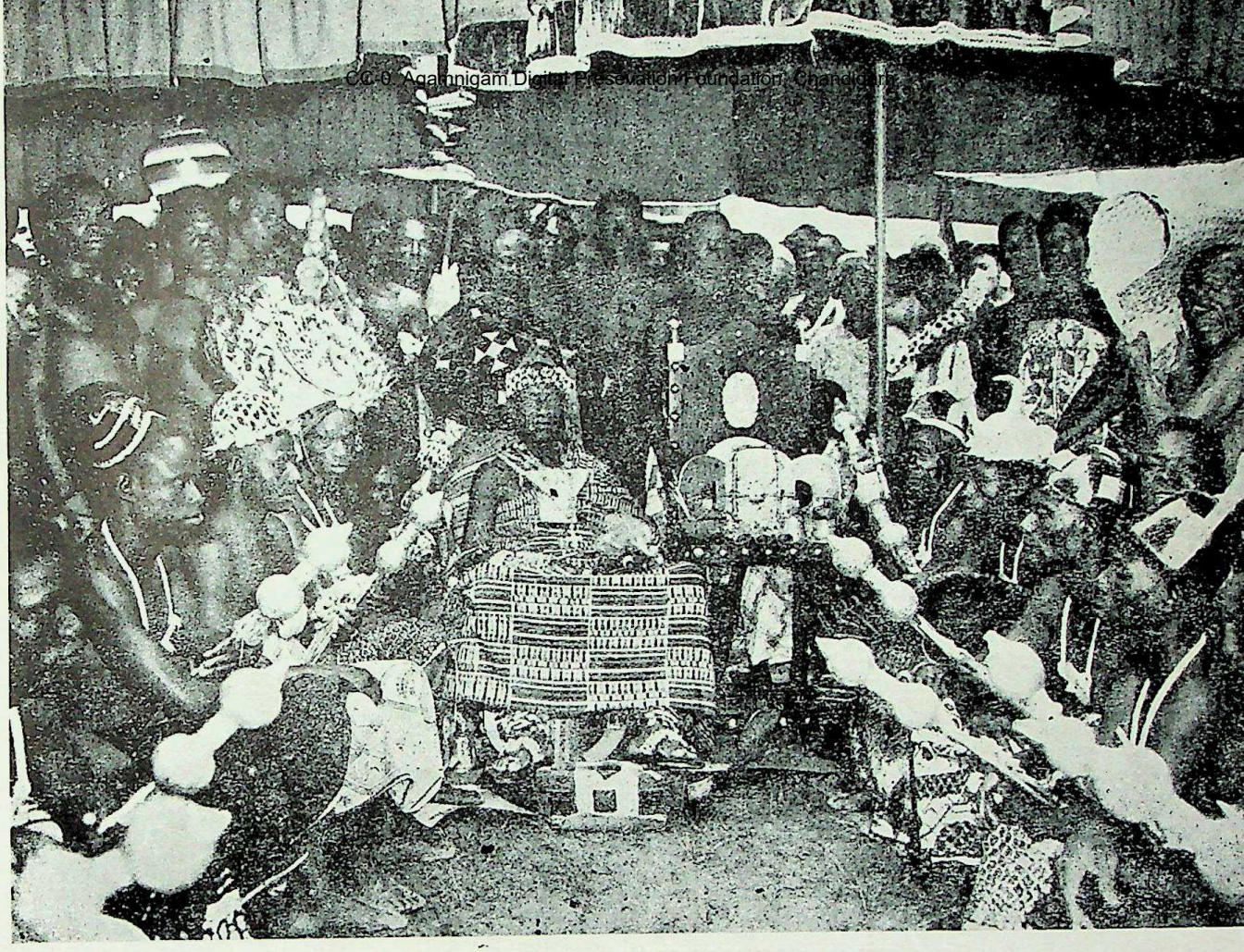

घाना में अशान्ति नरेश का दरबार

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

मलावी का एक वृद्ध

जैम्बिया का एक गाँव

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

जादू टोने के लिये एक सयाने की
सलाह लेता हुआ एक व्यक्ति

रुआण्डा में तुत्सी जाति की
महिलाएँ

CC-0. Agam Prasad Mittal Foundation Collection, Chandigarh

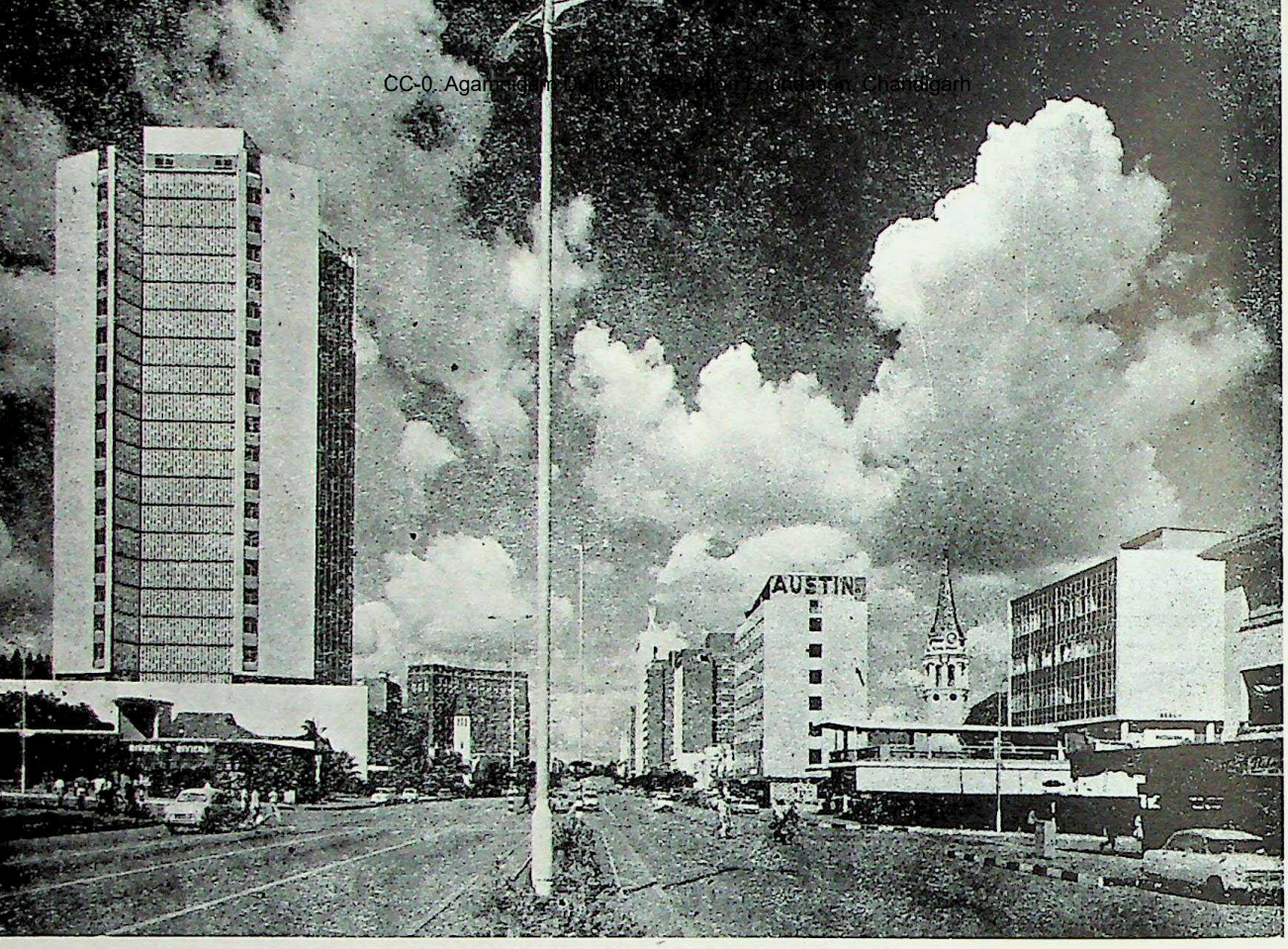

रोडेशिया की राजधानी सॉल्सबरी

जैम्बिया और रोडेशिया की सीमा पर स्थित विक्टोरिया प्रपात का एक सुन्दर दृश्य

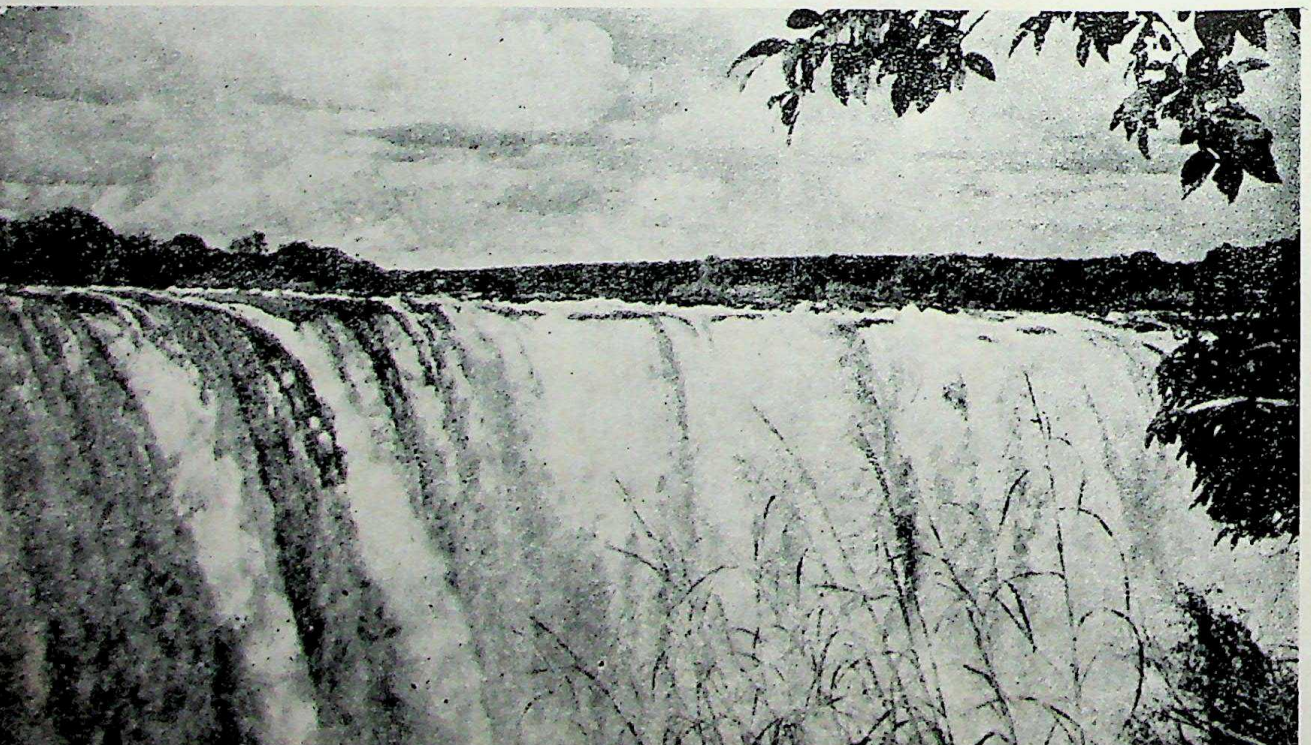

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

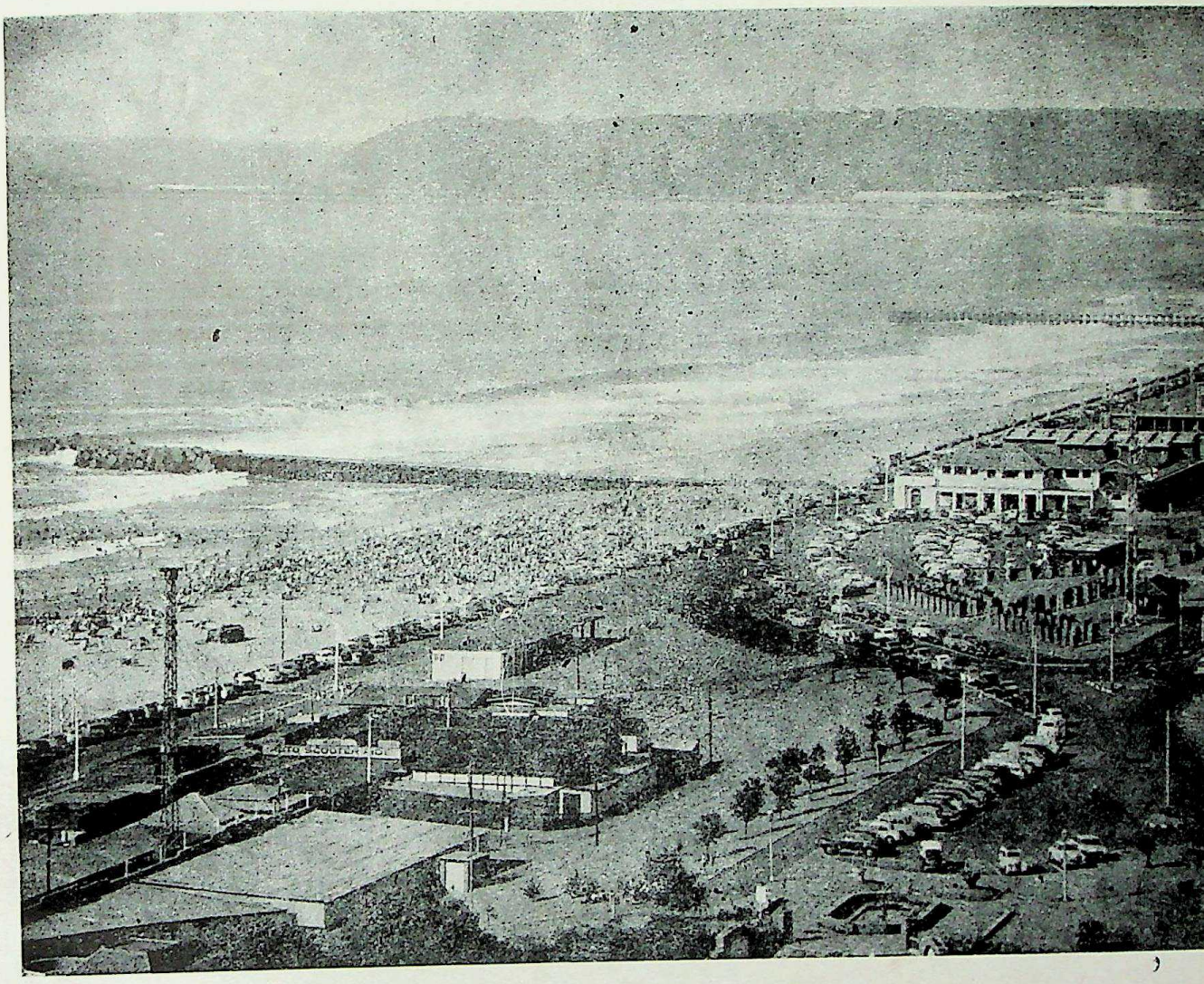

नैटाल (दक्षिण अफ्रीका) के प्रमुख बन्दरगाह डरबन का एक दृश्य

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

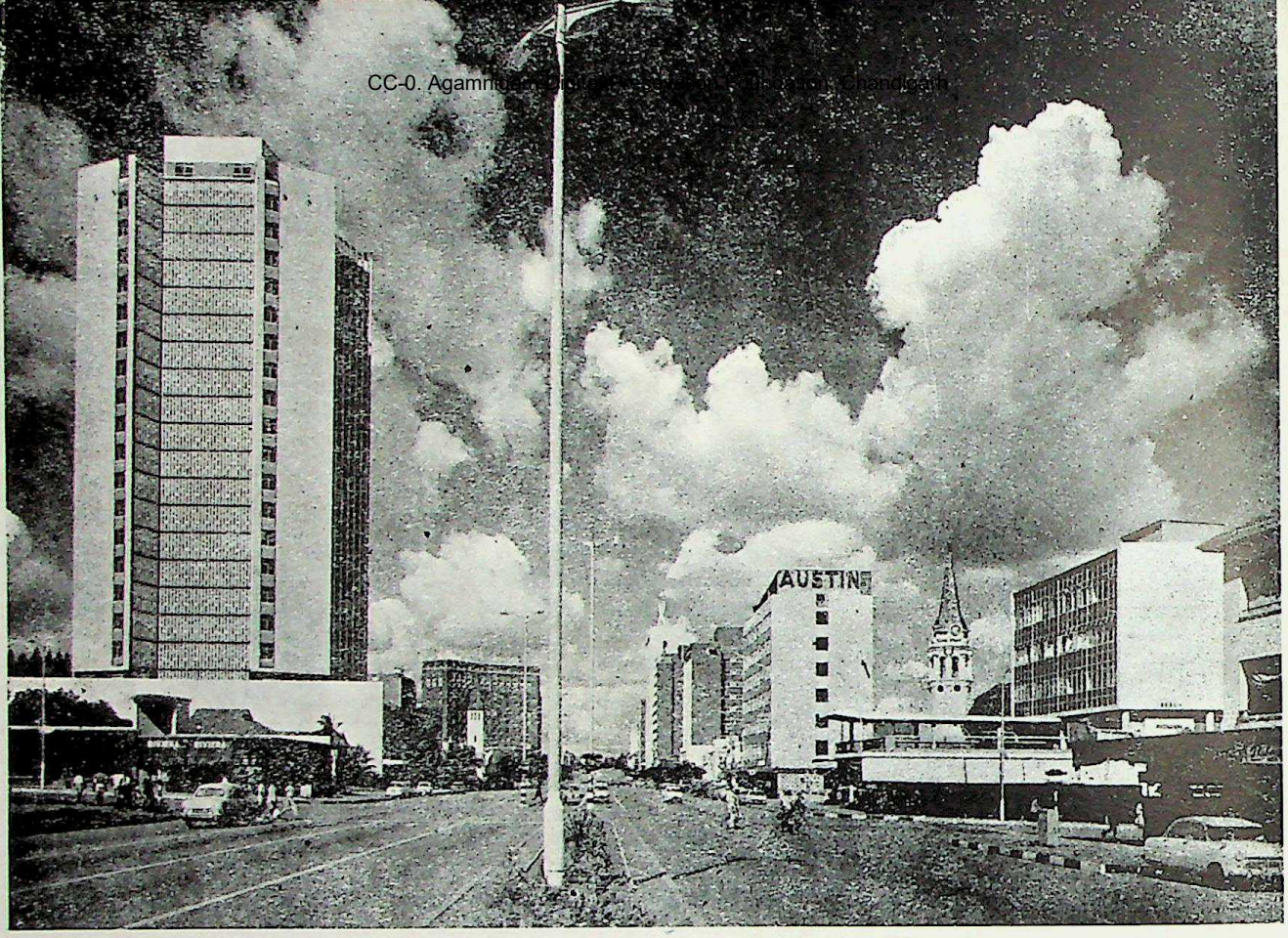

रोडेशिया की राजधानी सॉल्सबरी

जैम्बिया और रोडेशिया की सीमा पर स्थित विक्टोरिया प्रपात का एक सुन्दर दृश्य

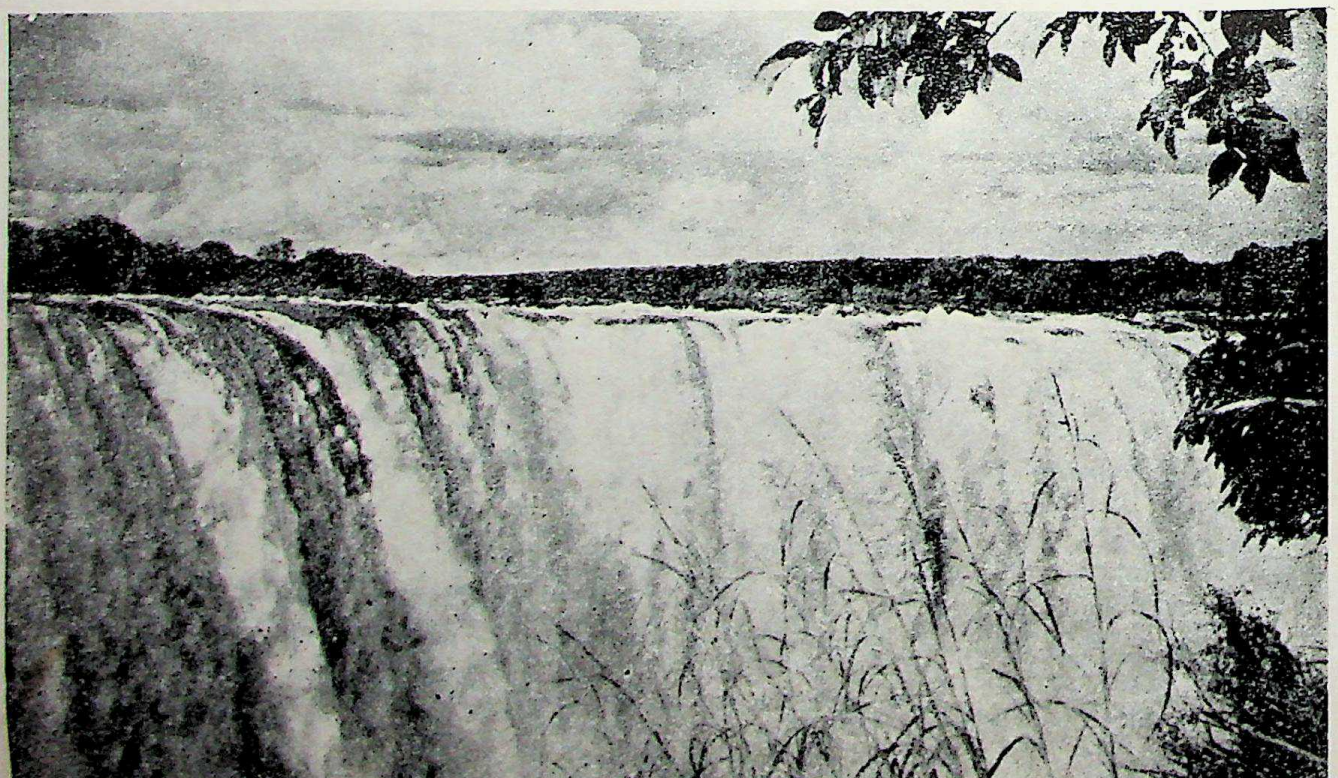

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

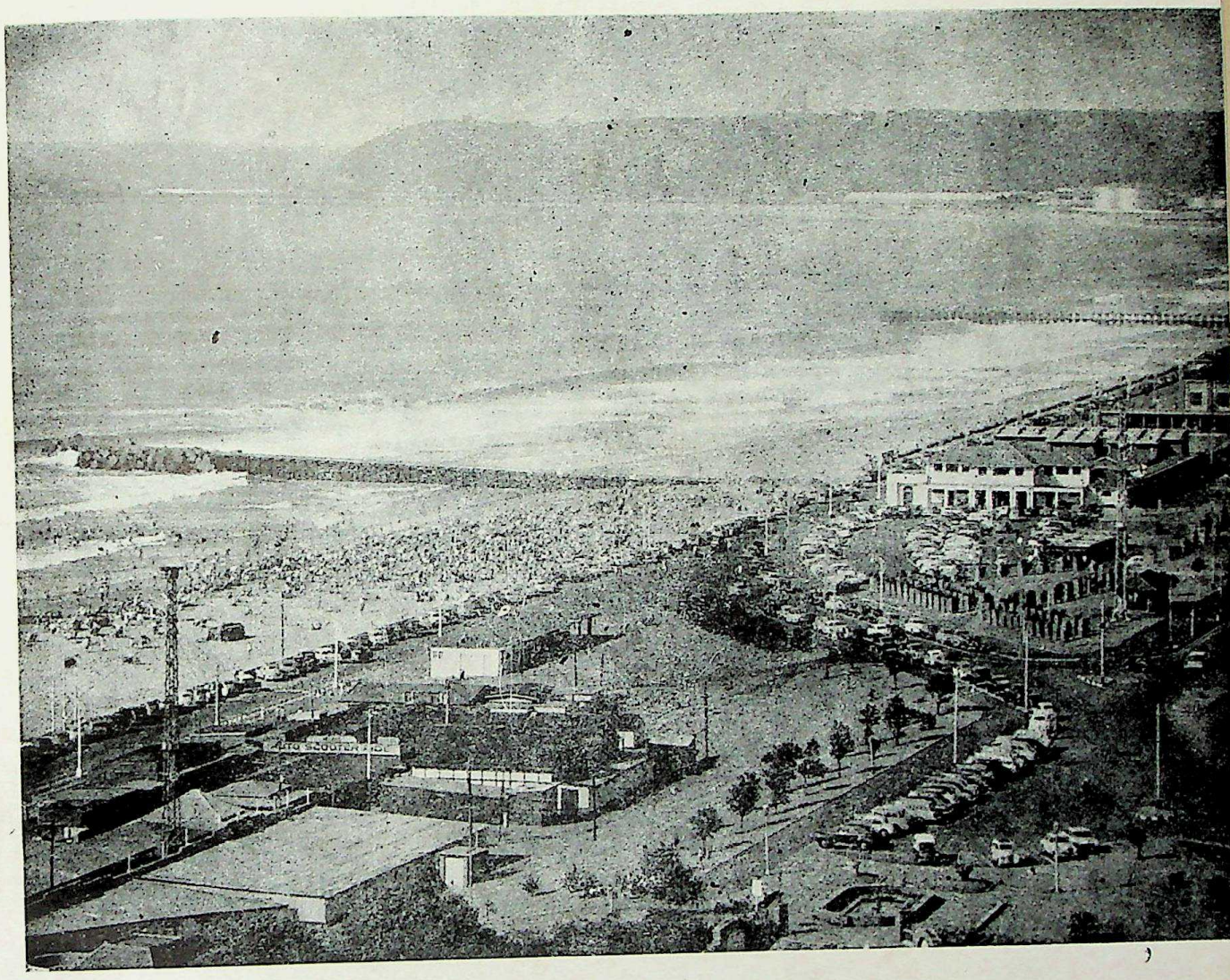

नैटाल (दक्षिण अफ्रीका) के प्रमुख बन्दरगाह डरबन का एक दृश्य

CC-0. Agamgam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

स्वाजीलैण्ड की राजधानी एम्बाबेन का बाजार

पूर्वी अफ्रीका का प्रवेशद्वार : नैरोबी

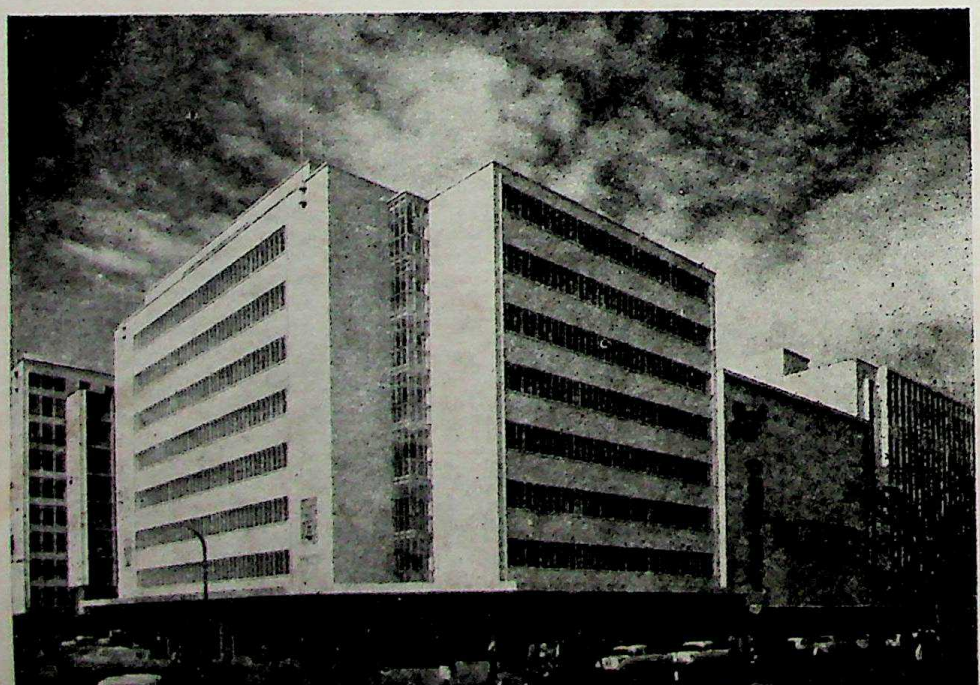

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

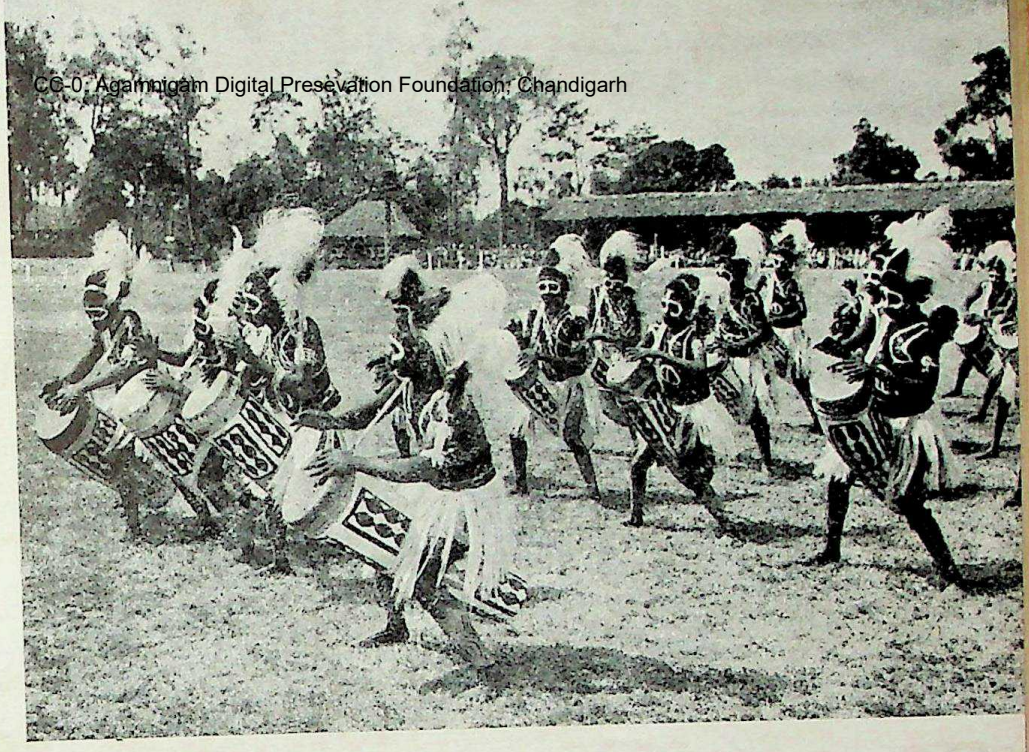

कीनिया का एक लोकनृत्य

टांजानिया का एक कलाकार और उसकी कृतियां

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

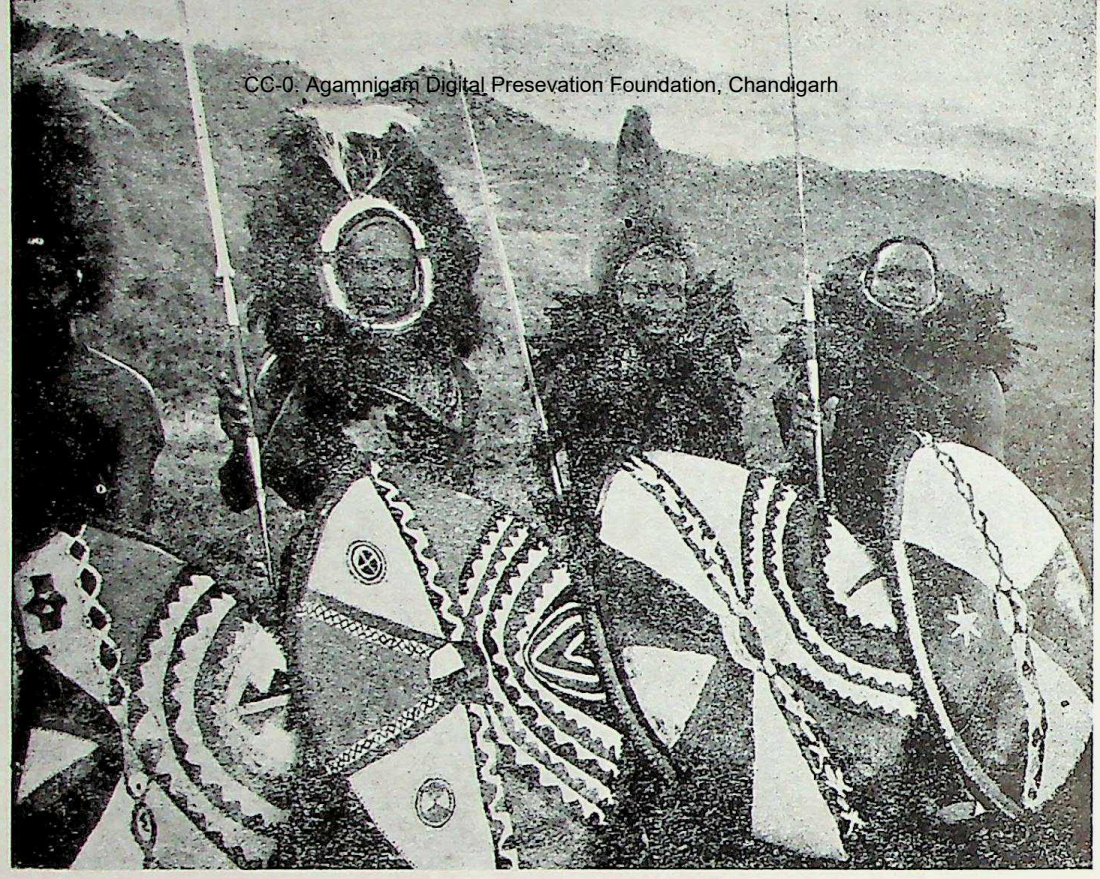

कीनिया के आदिवासी भालों और सुचित्रित ढालों के साथ

बगाण्डा जाति की एक महिला और शिशु (उगाण्डा)

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अफ्रीका के उच्चतम हिमाच्छादित पर्वत-शिखर कलिमंजरों को निहारती हुई टांजानिया की छागा जाति की स्त्रियाँ

इथियोपिया का ऐतिहासिक दुर्ग : गोंडार

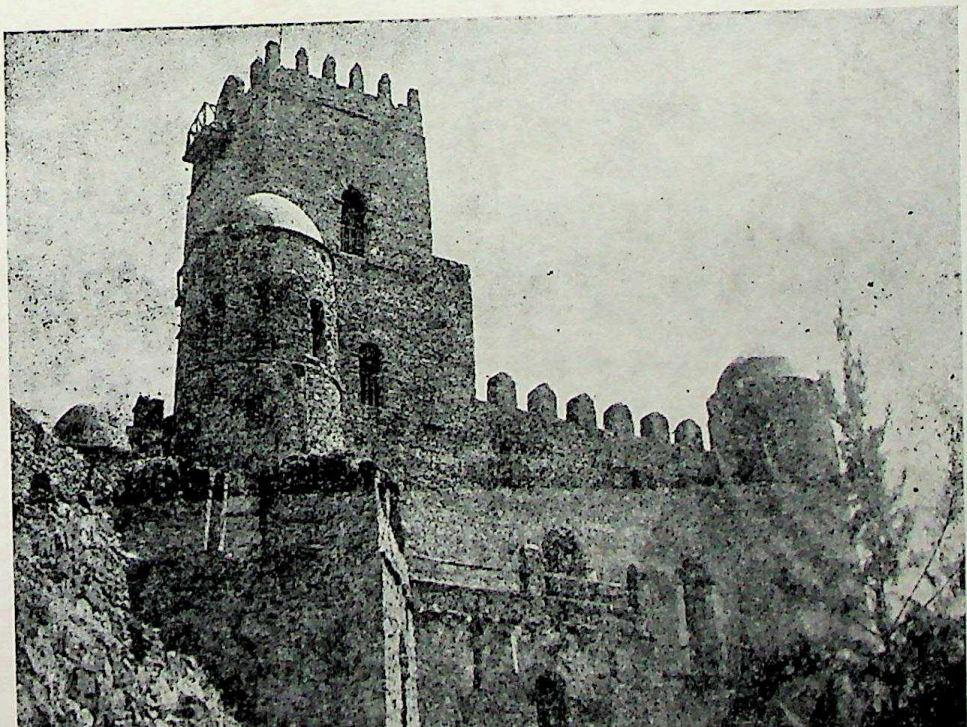

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

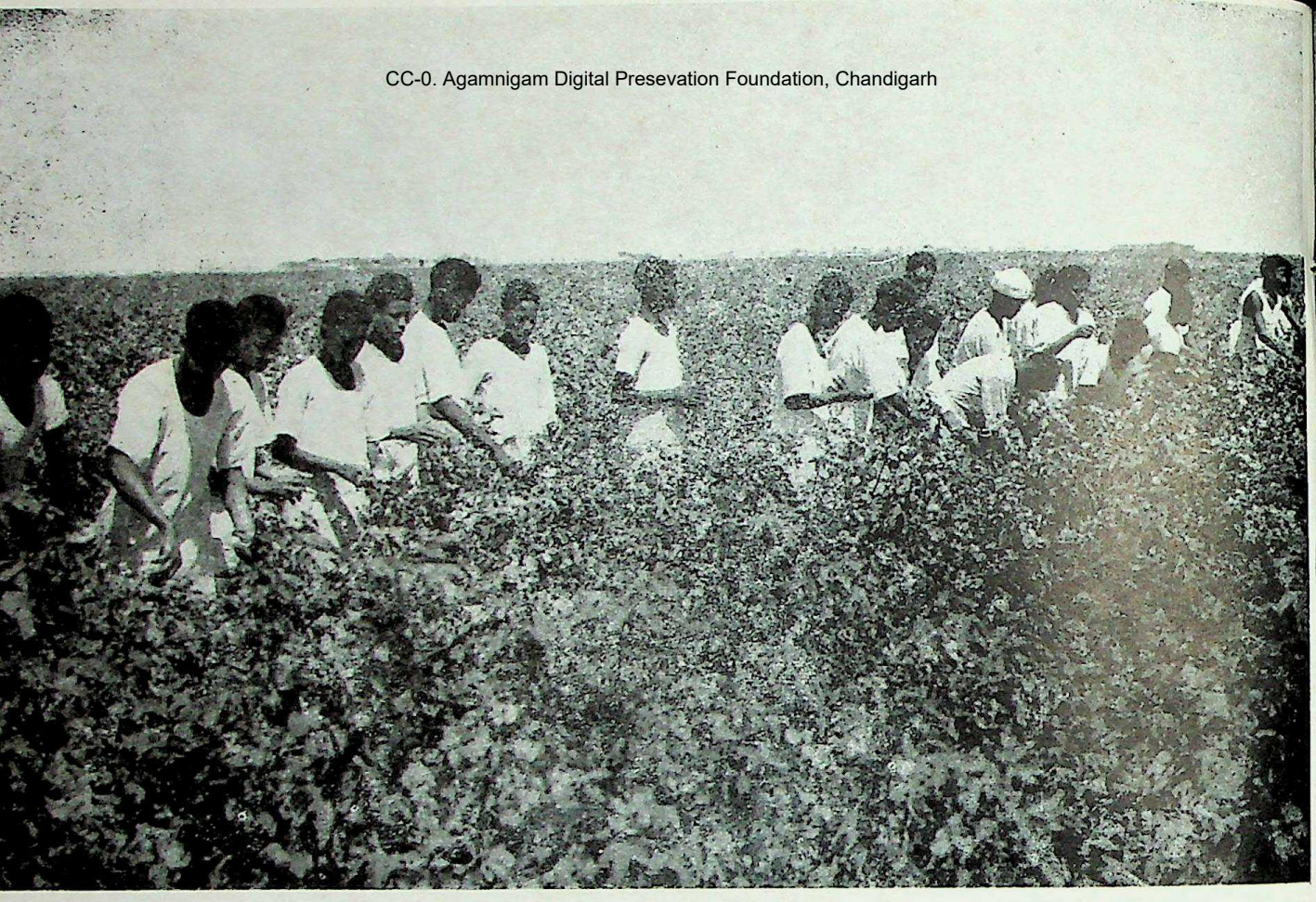

सूडान में जजीरा योजना के अन्तर्गत कपास की खेती

ट्यूनीसिया का मिट्टी के पात्र बनानेवाला कलाकार

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

काहिरा का एक दृश्य

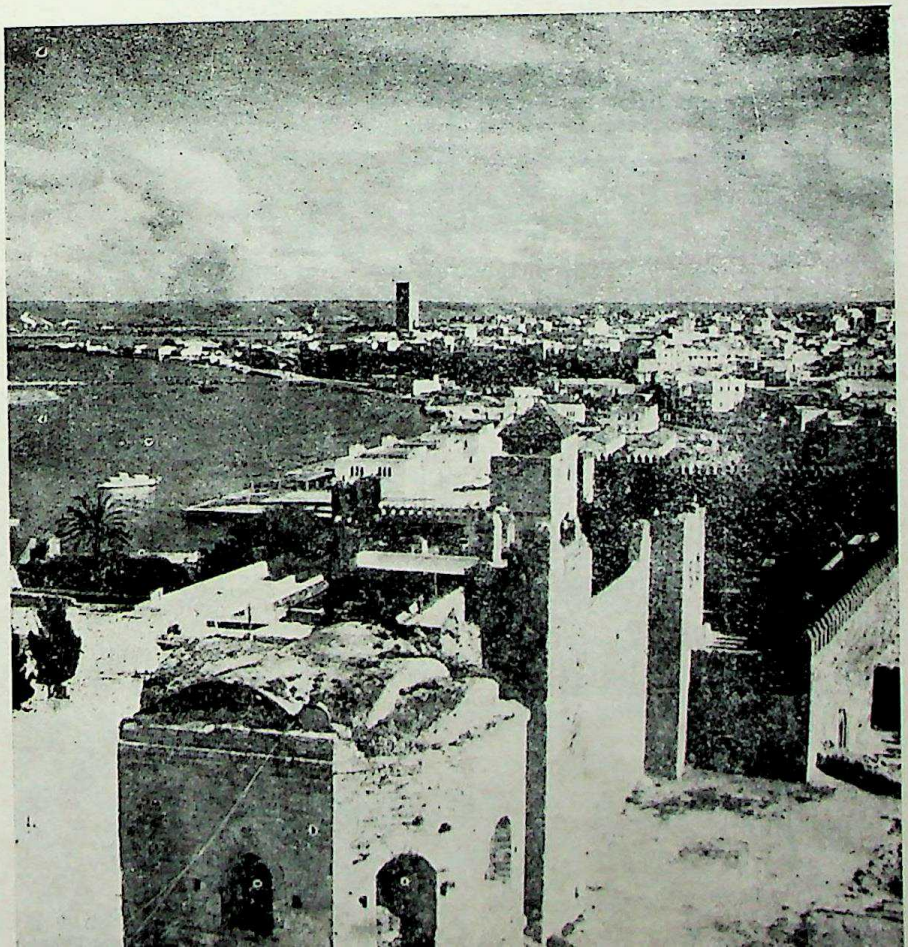

मोराको की राजधानी रबात

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

सर अबुबकर तफावा बलेवा और श्री नेहरू

डा० एंक्रूमा और श्री नेहरू

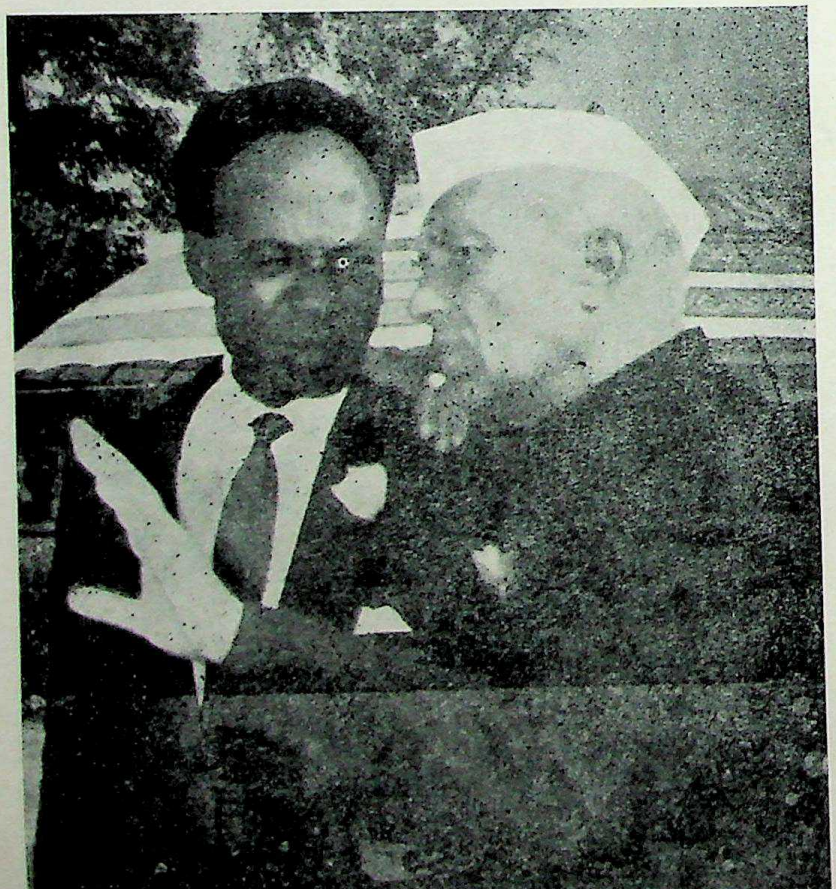

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

इलोरिन, बोरगू और घूरमा जिनमें हॉसा लोगों का प्रभुत्व था। विशेष बात यह थी कि इन राज्यों का काम अलग-अलग नियत था और ये परस्पर सहयोग से काम करते थे। प्रथम सात राज्यों में बिरम सबसे वरिष्ठ था और राजनैतिक केन्द्र था। कानो में रंगाई के और रानो में बुनाई के उद्योग थे। दौरा व्यापारिक राज्य था तथा गोबिर का काम सैनिक जुटाना था। हॉसा जाति की भाषा हॉसा अफ्रीका की प्रमुख भाषाओं में से है और यूरोपियों के आने के पूर्व भी इसकी लिपि निर्धारित थी। हॉसा राज्यों में डाक-व्यवस्था, न्याय-व्यवस्था और शासन-व्यवस्था भी सुसंचालित थी। पर ये राज्य आन्तरिक लड़ाई-झगड़े एवं उत्तर व पूर्व दिशा के आक्रमणों

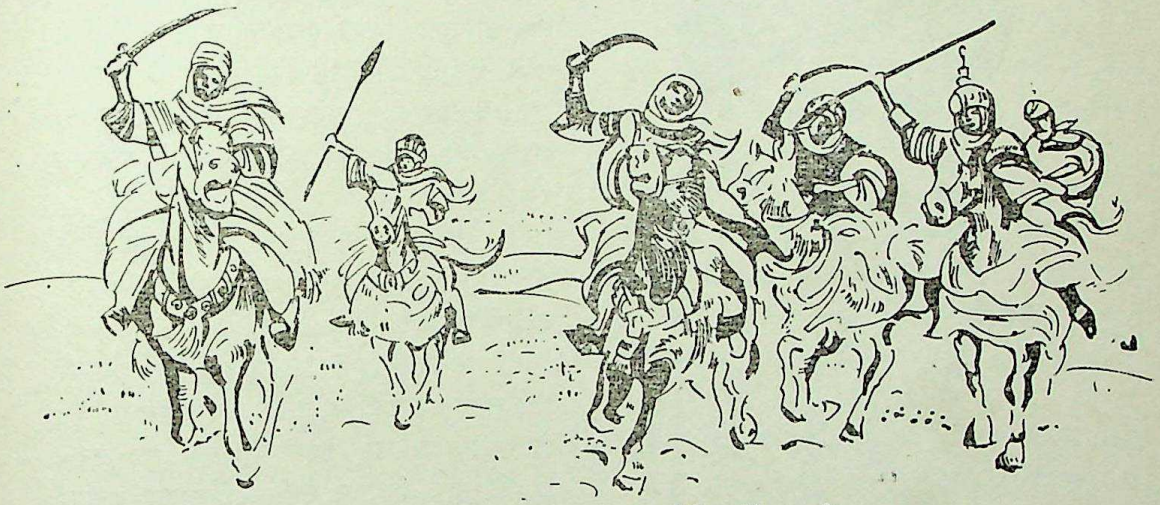

समारोह के अवसर पर उत्तरी नाइजीरिया में घुड़-दौड़

के कारण कमज़ोर होते चले गए। फिर आये फुलानी। पश्चिम सीमा से आने वाली यह जाति 16वीं शती के ढलते-ढलते इस क्षेत्र में फैल गई। काफी समय तक परस्पर सम्बन्ध अच्छे रहे पर 1802 में फुलानी सरदारों ने विद्रोह खड़ा कर दिया। लड़ाई हुई और हॉसा रियासतों के खण्डहरों पर फुलानी साम्राज्य का महल खड़ा हुआ। क्षेत्र कई सामन्तों में बंट गया और छोटे-राजाओं को 'अमीर' कहा जाने लगा। इनमें सोकोतो का सुल्तान सबसे प्रमुख है। हॉसा और फुलानी के अलावा कनूरी जाति भी इनमें उल्लेखनीय है।

उत्तर की सीमान्त व्यवस्था जीर्ण-शीर्ण हो गई और बीसवीं सदी के आरम्भ में, जब अंग्रेजों का आक्रमण हुआ तो उन्होंने इस भाग को जल्दी ही अधीन कर लिया था। 15 मार्च, 1903 को सोकोतो पर विजय होते ही यहाँ पूरी तरह अंग्रेजों का अधिपत्य छा गया और 56 वर्षों बाद उसे कहीं पुनः स्वशासन मिल पाया।

हॉसा और फुलानी लोग इस्लाम धर्म के अनुयायी हैं और बड़े सरल ढंग से रहते हैं। इन्हें सफेद चोगा और सिर पर साफा बाँधना पसन्द है। साफा इस तरह बाँधते हैं कि वह कानों और ठोड़ी को भी ढके रहता है। स्त्रियाँ मुस्लिम प्रथा के अनुसार पर्दे में रहती हैं।

उत्तरी खण्ड की राजधानी है कदूना। तृणभूमि में अवस्थित यह नगर नाइजीरिया की औद्योगिक नगरी बनने की क्षमता रखता है। यहाँ कपास और मूंगफली के चन्द कारखाने हैं। कदूना के उत्तर में स्थित प्राचीन नगर जारिया अर्वाचीन शिक्षा का केन्द्र है। कानो एक और बहुत प्राचीन नगर है जिसकी स्थापना

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

लगभग 999 ई० में हुई थी। 11 मील की परिधि वाला, 15वीं शती में बने। इसके परकोटे के स्थान पर अब मिट्टी के टीले बच रहें हैं पर इसके 13 दरवाज़े अब भी खड़े हैं। यह नगर रंगाई के गड्ढों के लिए प्रसिद्ध है। कोई-कोई गड्ढे तो 20 फुट तक गहरे हैं और उनमें सदैव रंग भरा रहता है। ये गड्ढे हथकरघा-वस्त्र रंगने के काम में आते हैं।

उत्तरी नाइजीरिया का एक अमीर

उत्तरी खण्ड से विदा लेते समय हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि इसके दक्षिण-पूर्वी भाग बेन्यू की घाटी में जो पुरातत्त्व अवशेष मिले हैं, उनसे पता चलता है कि इस घाटी की सभ्यता 2500 वर्ष पुरानी थी। अतः बेन्यू घाटी की सभ्यता भी अफ्रीका की प्राचीनतम सभ्यताओं में स्थान रखती है।

उत्तरी क्षेत्र में भी प्रादेशिक असेम्बली है और इसमें उत्तरी जन कांग्रेस (नार्दन पीपुल्स कांग्रेस) का शासन है।

संघीय संसद् के 316 सदस्यों के सदन में 144 स्थान इस पार्टी के, उत्तरी जन कांग्रेस के, हैं। इस पार्टी ने डा० अज़ीकेवे के दल एन० सी० एन० सी० के साथ मिलकर संयुक्त मंत्रिमण्डल बनाया है। भूतपूर्व शिक्षक और सरलता की मूर्ति श्री अबूबेकर जो उत्तरी जन कांग्रेस के हैं, आजकल प्रधान-मंत्री हैं। नाइजीरिया के सुविख्यात राष्ट्रवादी नेता और लेखक व पत्रकार डा० अज़ीकेवे राष्ट्रपति हैं।

नाइजीरिया की आर्थिक दशा काफी संतोषजनक है। इस प्रकार यह अन्य नवोदित अफ्रीकी देशों से काफी भिन्न है। यह देश केवल एक फसल पर ही निर्भर नहीं करता। यहाँ कोई खाद्य समस्या नहीं है और न ही भूमि की समस्या है। समस्या केवल यह है कि किस तरह उपज और अधिक बढ़ायी जाय। इतना अनाज तो यहाँ अब भी उग ही जाता है जिससे यहाँ के निवासी पेट भर भोजन कर सकें। यहाँ के 80 प्रतिशत लोग खेती के काम में ही लगे हुए हैं। यहाँ के मुख्य निर्यात में कोका, नारियल की गिरी, खोपरे का तेल, मूंगफली, कपास, केले, इमारती लकड़ी व रबड़ है। उत्तरी क्षेत्र से जानवरों की हड्डियाँ और खाल भी बाहर भेजी जाती है। यहाँ टिन व कोलम्बाइट जैसे काफी खनिज पदार्थ भी हैं।

पश्चिमी तट पर स्थित लागोस संघीय राजधानी है और एक अच्छी नगरी है। सागर किनारे मुख्य बाज़ार है जिसे मरीना कहते हैं।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

15. कैमरून

(CAMEROON)

क्षेत्रफल : 1,83,131 **वर्ग मील** **जनसंख्या :** 40,13,000

1959 जब अपनी बूढ़ी छाया समेट कर विदा ले रहा था और 1960 के शुभागमन में गिरजों में घंटे और होटलों में कहकहे गूंज रहे थे, उस समय अफ्रीका में नाइजीरिया के दक्षिण-पूर्वी भाग में 101 तोपों की गड़गड़ाहट के बीच स्वतन्त्र कैमरून का उदय हो रहा था। कैमरून के उदय होने के बाद फ्रांस के अधीन पश्चिमी अफ्रीका और भूमध्य रेखा के सभी देश आज़ाद हो गए। दक्षिणी ब्रिटिश कैमरून के इसमें मिल जाने के बाद 1 अक्तूबर 1961 को इसका नाम कैमरून संघीय गणराज्य हो गया। तिकोनी सी टेढ़ी-मेढ़ी आकृति का यह देश, चाद और मध्य अफ्रीका गणराज्य के पश्चिम में है तथा कैमरून के पश्चिम में है—अटलांतक महासागर। इसका कुल क्षेत्रफल 1,83,181 वर्गमील है जो उत्तर प्रदेश व बिहार के सम्मिलित क्षेत्रफल से कुछ ही अधिक है। इस क्षेत्रफल में वह भाग जो पहले फ्रांस के अधीन था तथा दक्षिण कैमरून जो पहले ब्रिटेन के अधीन था, सम्मिलित हैं।

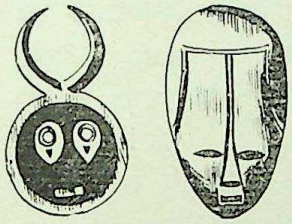

नर्तकों के कुछ मुखौटे

इस देश का मध्यवर्ती और दक्षिणवर्ती भाग मुख्यतया पठारी है पर पश्चिम की ओर यह क्रमशः ऊँचा उठता गया है। चाद झील के दक्षिण से लेकर सागर की ओर दक्षिण-पश्चिम तक कुछ पर्वतमालाएँ फैली हुई हैं। आखिर में पश्चिमी सिरे पर कैमरून पर्वत का वह शिखर है जो 13,353 फुट ऊँचा है तथा पश्चिमी अफ्रीका में जो सर्वोच्च है। इसके दक्षिणी-पश्चिमी सिरे पर अतलांतक सागर की लहरें टकराती हैं। यहाँ के आस-पास का दृश्य बड़ा सुहावना है। सागर से कैमरून पर्वत को देखने से वह बड़ा मनोरम लगता है। यह एक ज्वालामुखी पर्वत है। नाइजीरिया और कैमरून के बीच सीमा बनाने वाले पहाड़ों से कई छोटी नदियाँ निकलती हैं। ये पाँच नदियाँ तट पर मुहाना बनाती हैं। दक्षिणी पठार से निकलने वाली सनागा तथा त्योग नदी अपेक्षाकृत अधिक प्रसिद्ध हैं। ये दोनों ही दक्षिणवर्ती तट पर मुहाना बनाती हुई अतलांतक महासागर में गिरती हैं। कैमरून का जलवायु शीतोष्ण है। कैमरून पर्वत के इलाके में सर्वाधिक वर्षा (400 इंच प्रति वर्ष) होती है। पठार और पहाड़ जंगलों से ढके हुए हैं पर उत्तरी भाग में सवाना घास के खुले और शुष्क मैदान हैं।

जन-जीवन—कैमरून की आबादी 40,13,000 है जो हमारे जम्मू-कश्मीर की जनसंख्या से भी कम है। यह देश सूडानी और बांतू जातियों का संगम है। उत्तरी भाग में बांतू वर्ग की जातियाँ हैं। प्रमुख जातियाँ हैं:—बामिलेक, फिग्रा, फगंम, मम, एन्सा, बीकर एफिक तथा वम। ये लोग मुख्यतया कृषि का काम करते हैं। पश्चिमी भाग में रहने वाली जाति बामिलेक काफ़ी सम्पन्न जाति है क्योंकि इस इलाके में कोका और कॉफी के बागान हैं। कैमरून के प्राचीन निवासी वे बौने माने जाते हैं जो अब कुछेक हज़ार की संख्या में हैं तथा वे सनागा नदी के आस-पास के बीहड़ जंगलों में रहते हैं। अधिकांश जातियों में पुरुष शिकार, व्यापार तथा भूमि को ठीक-ठाक करने का काम करते हैं। खेती तथा मछली पकड़ने का काम स्त्रियों के ज़िम्मे है। गाँवों में झोंपड़े चौकोर होते हैं और

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

उन पर पिरेमिडाकार छप्पर होते हैं। विवाह के समय वधू की क़ीमत चुकाने की प्रथा यहाँ भी प्रचलित है। नगाड़ों की ध्वनि से संदेश भेजने की कला यहाँ पर्याप्त विकसित है। पश्चिमी अफ्रीका के अन्य देशों की भाँति यहाँ के लोग भी नृत्य और संगीत में बहुत रुचि रखते हैं।

कैमरून की पराधीनता की कहानी परस्पर संघर्ष और विदेशियों के कुचक्र की कहानी है। 1879 में माउण्ट कैमरून के आस-पास क्षेत्र के एक नरेश अकवा ने अपनी समकालीन महारानी विक्टोरिया को पत्र लिख कर प्रार्थना की थी कि परस्पर संघर्ष, खून-खराबी और कुव्यवस्था के कारण, वे चाहते हैं कि उस क्षेत्र पर इंगलैंड का शासन हो जाय। पर तब इंगलैंड तैयार न हुआ। इंगलैंड के राजनीतिज्ञों ने 1883 में फैसला किया कि कैमरून पर शासन जमाया जाय पर तब तक जर्मन चिड़ियाँ खेत चुग चुकी थीं। जर्मन व्यापारियों ने स्थानीय शासकों से मिल मिलाकर उन्हें जर्मनी शासन के अन्दर लाना स्वीकार करवा लिया और 1884 से कैमरून विधिवत जर्मनी का उपनिवेश बन गया। यह सही है कि जर्मनी ने इस क्षेत्र के विकास में सहायता की, रेलवे, और सड़कें बनवाई पर उन्होंने विद्रोहों को बड़ी सख्ती से दबा दिया। प्रथम 12 वर्षों में उन्होंने 29 बार विद्रोहों को पूरी ताकत के साथ कुचल कर रख दिया।

प्रथम विश्वयुद्ध के शुरू होते ही ब्रिटेन ने नाइजीरिया की तरफ से और फ्रांस ने गैबॉन से यहाँ हमला कर दिया। जर्मन सेनाओं ने पहले तो डटकर मुकाबला किया पर जब शस्त्रास्त्र खत्म होने लगे तो वे भाग कर पास के स्पेनिश क्षेत्र में चले गए। मित्र राष्ट्रों की विजय होने पर टोगो की भांति इस देश का भी विभाजन हुआ। नाइजीरिया के पूर्व से लगा लगभग 1/5 कैमरून ब्रिटेन को मिला और शेष 4/5 कैमरून फ्रांस को। लीग ऑफ नेशन्स ने ब्रिटिश भाग को ब्रिटेन का और फ्रेंच भाग को फ्रांस का 'मैनडेट' (रक्षित) क्षेत्र मान लिया, 1946 में राष्ट्रसंघ ने भी यही क्रम बनाये रखा। पर मैनेडेट क्षेत्र के स्थान ये भाग, ट्रस्ट क्षेत्र कहलाने लगे।

फ्रांसीसी भाग और ब्रिटिश भाग दोनों को एकीकृत करने और कैमरून की स्वतन्त्रता के आन्दोलन चलते रहे राष्ट्रसंघ में तात्कालीन भारतीय प्रतिनिधि श्री कृष्णामेनन ने कई बार फ्रांस और ब्रिटेन के उपनिवेश शासन की आलोचना की थी और उन्हें आज़ाद करने के लिए जोरदार अपील की। फ्रांसीसी भाग 1 जनवरी, 1960 को आज़ाद हो गया। फरवरी, 1961 में ब्रिटिश कैमरून में जनमत संग्रह हुआ। उत्तरी खण्ड ने फैसला किया कि वह नाइजीरिया में मिलना चाहता है। दक्षिणी कैमरून ने कैमरून गणराज्य में मिलना स्वीकार कर लिया। इसी फैसले के अनुसार दक्षिणी कैमरून कैमरून गणराज्य में शामिल हो गया और उत्तरी खण्ड नाइजीरिया का भाग बन गया। इस प्रकार कैमरून को एकीकृत करने का आन्दोलन आंशिक रूप से सफल हो पाया।

शासन-व्यवस्था—कैमरून एक संघीय गणराज्य है। राजाध्यक्ष राष्ट्रपति होता है और वह वयस्क मताधिकार से 5 वर्ष के लिए चुना जाता है। संघीय असेम्बली में 50 सदस्य हैं। 40 सदस्य पूर्वी प्रान्त (भूतपूर्व फ्रेंच कैमरून) से तथा 10 सदस्य पश्चिमी प्रान्त (भूतपूर्व ब्रिटिश कैमरून) से चुने जाते हैं। दोनों प्रान्तों में प्रादेशिक असेम्बलियाँ भी हैं। राष्ट्रीय ध्वज में हरा, लाल व पीला रंग है तथा बीच में दो सितारे हैं।

दक्षिणी भाग में कसावा जमीकन्द, अनाज और केले उगाये जाते हैं। उत्तरी भाग की मुख्य फसल है—चावल व मूंगफली। पश्चिमी भाग में कोका और कॉफी होती है। कोका, कॉफी, केले, कपास, लकड़ी तथा एल्यूमीनियम इसके मुख्य निर्यात हैं। सनागा नदी पर बना हुआ इडिआ बाँध तथा बिजलीघर इसकी आर्थिक प्रगति के चिन्ह

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

हैं। इस बिजली घर से बनी बिजली एल्यूमिनियम कारखाना चलाने तथा दुआला बन्दरगाह पर रोशनी की व्यवस्था के लिए काम आती है।

लगभग देश के मध्य में स्थित याऊन्दे यहाँ की राजधानी है पर दुआला बन्दरगाह याऊन्दे से बड़ा और प्रभावशाली नगर है। पश्चिमी प्रान्त का प्रमुख नगर बुएआ है। जर्मन काल में बनी दो रेलवे लाइनें भी यहाँ हैं। एक दुआला और याऊन्दे को मिलाती है, दूसरी बोनावरी से केलों के बागान क्षेत्र में जाती है।

पश्चिमी अफ़्रीका की एक लोक कथा

पति पत्नी में उस दिन बहस छिड़ गई। पति का दावा था कि वह अपने श्वसुर से अधिक बुद्धिमान और चतुर है। पत्नी ने कहा कि तुम मेरे बाप की बराबरी हर्गिज नहीं कर सकते। तय हुआ कि परीक्षा ली जाए।

पति ने श्वसुर के पास एक खाली घड़ा भेजा और यह संदेश भी कि आपके दामाद को ऐसी शराब की सख्त जरूरत है जो न देश में बनी हो और न विदेश से मंगाई गई हो।

दूसरे ही दिन दामाद साहब को संदेश मिला। आपकी इच्छानुसार शराब घड़े मे भरवा दी गई है। इसे मंगवा लीजिए पर इस घड़े को वही उठा सकता है जो न आदमी हो और न औरत।

दामाद का सिर झुक गया।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

मध्य अफ्रीका

16. चाद (TCHAD)

17. केन्द्रीय अफ्रीका गणराज्य (CENTRAL AFRICAN REPUBLIC)

18. कांगो-ब्राज़विल (CONGO-BRAZZAVILLE)

19. गैबॉन (GABON)

20. रिओमुनी और फेरनंदोपो (RIO MUNI AND FERNANDO PO)

21. कांगो-लिओपोल्डविल (CONGO—LEOPOLDVILLE)

22. रुआण्डा (RWANDA)

23. बुरुण्डी (BURUNDI)

24. अंगोला (ANGOLA)

25. ज़ैम्बिया (ZAMBIA)

26. मलावी (MALAWI)

27. रोडेशिया (RHODESIA)

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

16. चाद

(TCHAD)

क्षेत्रफल : 4,95,000 वर्गमील जनसंख्या : 25,71,000

ढम, ढम, ढम !

ढोलों की यह पूर्व परिचित आवाज़ आप को फिर सुनाई देगी जबकि आप कैमरून की सीमा पार करके पूर्व में चाद गणराज्य में प्रवेश करते हैं। पश्चिमी अफ्रीका के बाद अब हम चाद के साथ मध्य अफ्रीका की यात्रा प्रारम्भ कर रहे हैं। अफ्रीका चाहे पश्चिमी हो या मध्य ढोल तो जन-जीवन का अटूट अंग बन गया है। चाद, अफ्रीका महाद्वीप के उत्तरी खण्ड के मध्य में अवस्थित है। इस की सीमा छः अन्य देशों की सीमाओं में लगती है। उत्तर में लीबिया है और पूर्व में है—सूडान। पश्चिम में चाद झील तक नीजेर की सीमा है। चाद झील के नीचे की ओर पहले नाइजीरिया और फिर कैमरून की सीमाएँ मिलती हैं। दक्षिण में केन्द्रीय अफ्रीका गणराज्य है। 1958 तक चाद, केन्द्रीय अफ्रीका, कांगो (ब्राज़विल) और गैबॉन चारों देशों को मिलाकर फ्रांसीसी भूमध्यरेखीय (फ्रेंच इक्वेटोरियल) अफ्रीका कहलाते थे। स्वतन्त्रता के बाद इन चारों देशों का पृथक्-पृथक् अस्तित्व हो गया।

आकार की दृष्टि से चाद एक बड़ा देश है। कुल क्षेत्रफल 4,95,000 वर्ग मील है जो भारत का भले ही लगभग एक तिहाई हो पर वर्तमान अफ्रीकी देशों के काफी बड़े देशों में से एक है। इसकी भूमि, सागर-तट से कोई 1000 से 2000 मील तक दूर है। इस कारण यहाँ पश्चिमी प्रभाव भी विलम्ब से पहुँचा और व्यापार में असुविधा होने के कारण आर्थिक प्रगति भी मंद रही। इसका उत्तरी भाग बिलकुल रेगिस्तान है और वहाँ पहुँचकर आप ऐसा महसूस करेंगे मानो राजस्थान की मरुभूमि में ऊँटों के बड़े-बड़े काफिले यहाँ आते-जाते देखे जा सकते हैं। उत्तरी छोर पर तिबेस्ती पर्वतमाला है। पश्चिमी सीमा पर चाद झील है जिसका पानी शुष्क दिनों में 5,000 वर्गमील में और वर्षा में 10,000 वर्ग मील में फैल जाता है पर यह अधिक गहरी नहीं है। दक्षिण में सवाना घास के मैदान हैं।

यहाँ की एक प्रमुख नदी, शारी 750 मील का फासला पूरा करके चाद झील में गिर जाती है। शारी के चाद में गिरने के पूर्व ही एक और नदी लोगोन भी शारी में जाकर मिल जाती है। जहाँ यह संगम होता है, वहीं फोर्ट-लैमी नगर बसा हुआ है जो यहाँ की राजधानी है। चाद के पूर्व में बाधा और बहर-एल-गजल नामक दो नदियाँ भी हैं जो वर्ष में अधिकांश महीने सूखी रहती हैं। इसके पूर्व भाग में एनेण्डी पठार और जरा दक्षिण में बडई पर्वत माला है।

ऐतिहासिक झलक—चाद अपनी भौगोलिक स्थिति के कारण पूर्वी पश्चिमी और मध्य अफ्रीका के बीच विभिन्न जातियों का संगमस्थल और व्यापारिक केन्द्र रहा है। प्राचीन काल में नाइजर नदी और ऊपरी नील के बीच कई अफ्रीकी साम्राज्य फले-फूले थे। विशेषकर चाद झील के समीप वाले क्षेत्र में कई राज्य थे। इनमें बगिरमी और बाडई साम्राज्य तो अत्यन्त प्रसिद्ध थे। उन्हीं दिनों उत्तर से इस्लाम के प्रचारक भी

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

इधर आने लगे। वे इधर से गुलाम बनाकर भी भारी संख्या में ले जाते। यूरोपीय यहाँ उन्नीसवीं सदी के आरम्भ के पूर्व नहीं आये। बगिरमी और बाडई सुल्तानों की समृद्धि के स्रोत, गुलामों के अलावा हाथी दांत व शुतुरमुर्ग के पंख भी थे। अत: यूरोपियों ने कमाई की लालसा के वशीभूत होकर इस क्षेत्र की खोज-बीन शुरू की। 1890-93 के बीच यहाँ फ्रांस के फौजी हमले शुरू हो गए और स्थानीय शासकों से संधिया करके प्रभाव बढ़ाने का क्रम शुरू हो गया। 1897 में कप्तान जैण्टिल इधर आये और उन्होंने बगिरमी राज्य तक फ्राँस का झण्डा गाढ़ दिया। काफी लोगों ने विरोध भी किया, लड़ाई भी हुई पर विजयश्री फ्रांस के हाथ रही।

1946 में, जब फ्रांस का चतुर्थ गणराज्य बना तो इसे सागरपारीय प्रदेश का स्तर मिल गया। 1958 में जब जनरल डिगाल द्वारा प्रस्तुत फ्रांस के नये संविधान पर जनमत लिया गया तो संविधान के पक्ष में मत देकर इसने फ्रांसीसी राष्ट्रमण्डल में रहना स्वीकार कर लिया। तब से आन्तरिक रूप में यह स्वशासित हो गया। फिर अन्य फ्रांसीसी देशों में स्वतन्त्रता प्राप्त करने की लहर दौड़ी तो इसे भी 11 अगस्त, 1960 में पूर्णतया स्वतन्त्र घोषित कर दिया गया।

शासन-व्यवस्था—चाद ने अपने लिए लोकतांत्रिक गणराज्य की व्यवस्था स्वीकार की है। संविधान के अनुसार यहाँ 85 सदस्यों की एक विधान सभा है जिसके सदस्य वयस्क मताधिकार से चुने जाते हैं। राजाध्यक्ष राष्ट्रपति होता है। राष्ट्रध्वज में नीले, पीले व लाल रंग की खड़ी पट्टियाँ हैं।

चाद की कुल जन-संख्या केवल 25 लाख 71 हजार है जबकि अकेले दिल्ली की आबादी इससे कहीं अधिक है। यहाँ का सबसे घना आबाद क्षेत्र शारी और लोगोन नदियों का इलाका है। शारी के उत्तरपूर्व में लोग खेती और पशु-पालन का धन्धा करते हैं। उत्तर मे कोई 50,000 खानाबदोश हैं। वहाँ प्रति 4-5 वर्गमील क्षेत्र में औसतन 1 आदमी रहता है। केवल 3 प्रतिशत लोगों को छोड़कर सारी जन-संख्या गाँवों में ही रहती है।

उत्तरी चाद के निवासी आम तौर पर मुसलमान हैं। ये लोग काकेशियन नस्ल के हैं। अरब जाति के लोग पशु और घोड़े पालते हैं, फेलाता और पिग्रोल जाति के लोग खानाबदोश हैं और भेड़-बकरियों के पालन से अपना निर्वाह चलाते हैं। उत्तर के खानाबदोश लोगों में वधू सुसज्जित ऊंट पर सवार होकर आती है। ऊंट पर एक विशेष हौदा रखा होता है और ऊंट को कौड़ियों, घण्टियों और रंग-बिरंगे कपड़ों से सजाते हैं। वर-वधू विवाह वाले दिन ही, एक रिवाज के अनुसार, रेगिस्तान में दूर कहीं मधुयामिनी बिताने चले जाते हैं। बाडई लोग खेती-बाड़ी में कुशल हैं। हासा जाति के लोग व्यापार और कृषि का काम करते हैं। इनकी झोंपड़ियाँ गोलाकार होती हैं और छप्पर शंकु आकार के बनाये जाते हैं।

दक्षिणी चाद में नीग्रो नस्ल के लोग हैं जो मूर्तिपूजक हैं। इनमें एक प्रमुख जाति है सारा जो शारी और लोगोन नदियों के आस-पास रहती है। ये लोग खेती और मछली-पालन का काम करते हैं। एक अन्य जाति हाक्का भी इसी क्षेत्र में रहती है। लोगोन घाटी, मायो केब्बी और बोंगोर क्षेत्र में मासा और मंडंग जातियाँ रहती हैं।

उत्तरी भाग के लोग अरबी या उससे मिलती-जुलती बोलियाँ बोलते हैं। दक्षिण में नीग्रो लोगों की अपनी-अपनी कई बोलियाँ हैं। फ्रेंच यहाँ की सरकारी भाषा है।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

तरह-तरह की जातियों और बोलियों से भरा-पूरा यह देश कई दस्तकारियों के लिए भी प्रसिद्ध है। यहाँ के बुने हुए कालीन, आभूषण, मिट्टी के सुघड़ पात्र, चमड़े की चीज़ें आदि काफी मन-मोहक होती हैं।

चाद के लोगों का मुख्य धंधा कृषि व पशु-पालन है। चावल, मकई, शकर कंद, जमीकंद व मूंगफली यहाँ की मुख्य फसलें हैं। कपास व्यापारिक फसल है।

सारा जाति की एक तरुणी

परिवहन का साधन नौकाएँ व ऊंट हैं। 5 हवाई अड्डे भी यहाँ हैं पर रेलवे लाइन नहीं है। राजधानी फोर्ट लैमी के अतिरिक्त मौण्डू और फोर्ट अरकमबाल्ट यहाँ के बड़े नगर हैं।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

17. केन्द्रीय अफ्रीका गणराज्य

(CENTRAL AFRICAN REPUBLIC)

क्षेत्रफल : 2,38,000 **वर्गमील** **जनसंख्या** : 11,80,000

केन्द्रीय अफ्रीका गणराज्य, चाद के ठीक दक्षिण में है। इसका पहला नाम उबंगी-शारी है। शारी नदी का, जो चाद में बहती है, उद्गम यहीं है। उबंगी नामक एक और नदी दक्षिण में बहकर इस देश तथा कांगो के बीच प्राकृतिक सीमा बनाती है और कांगो नदी में मिल जाती है। इसके पूर्व में सूडान और पश्चिम में कैमरून देश हैं।

इसका कुल क्षेत्रफल 2,38,000 वर्गमील है, जो हमारे राजस्थान और उत्तर प्रदेश के संयुक्त क्षेत्रफल से कुछ कम बैठता है। आम तौर पर यहाँ की भूमि पठारी है और औसत ऊँचाई 2,000 फुट है। यह भाग, भूमध्य रेखा के काफी पास है।

जन-जीवन—केन्द्रीय अफ्रीका गणराज्य की कुल आबादी 11 लाख 80 हजार है जो हमारे केवल एक राज्य जम्मू-कश्मीर की आबादी का लगभग एक तिहाई है। औसतन, प्रति वर्गमील में 5 व्यक्ति रहते हैं पर पूर्व और पूर्वोत्तर भाग में एक वर्गमील में दो व्यक्ति भी नहीं रहते। यहाँ रहने वाली जातियों को चार समूहों में बाँटा जा सकता है—(1) मंदिजिया बया, (2) बांडा, (3) एम्बाका और (4) जांडे। ये सब नीग्रो वंश की जातियाँ हैं। यहीं, जंगलों में रहने वाली सारा जाति भी है जिसकी स्त्रियाँ अपने ओठों को विकृत कर लेती हैं। सारा लड़कियाँ शुरू में ही निचले ओठों में छेद करा कर धातु की गोल चीज़ सटा लेती हैं। आयु बढ़ने के साथ-साथ यह छेद बढ़ता जाता है। कहते हैं कि इस अजीब रिवाज की शुरूआत उस ज़माने में हुई थी जब इधर गुलामों का व्यापार चलता था। स्त्रियों के ओंठ विकृत कर देने के कारण उन्हें गुलामों का कोई व्यापारी नहीं ले जा सकता था। यह रिवाज अब धीरे-धीरे मिटता जा रहा है। यहाँ कई जंगलों में बौने भी रहते हैं। इन सभी जातियों की अपनी-अपनी भाषाएँ हैं पर 'साँघो' भाषा समस्त देश में समझी और बोली जाती है। राज-काज की भाषा फ्रैंच है।

अतीत—फ्राँस ने 1887 में इधर अपना पंजा बढ़ाया था। नीचे, कांगो में जमने के पश्चात् फ्रांसीसियों ने उत्तर में बढ़ना शुरू किया और 1889 तक बांगुई में अपनी चौकी स्थापित कर ली थी। उस समय इसे उबंगी-शारी ही कहते थे। 1906 में चाद और उबंगी-शारी को मिलाकर एक उपनिवेश बनाया गया। 1910 में फिर फ्रांस ने चारों देशों—चाद, उबंगी-शारी, मध्य कांगो और गैबॉन—को मिलाकर फ्रांसीसी भूमध्यरेखीय अफ्रीका (फ्रेन्च इक्वेटोरियल अफ्रीका) बनाया। 1940 में जब फ्रांस पर जर्मनी ने धावा बोल दिया था तो उस समय उबंगी-शारी के वीर सिपाहियों ने जनरल डिगाल की जीत के लिए अपनी जान की बाजी लगा दी थी।

शासन-व्यवस्था—1945 में यहाँ पहली प्रतिनिधि-सभा निर्वाचित हुई थी। 1946 से ही यहाँ की जनता अपना शासन स्वयं चलाने की शिक्षा लेने लगी थी। पर राजनैतिक जीवन में मुख्य मोड़ तो 1958 में ही आया जब फ्रांस में डिगाल सत्तारूढ़ हो गए। इस देश ने पंचम गणराज्य के संविधान के पक्ष में मतदान कर

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

फ्रांसीसी राष्ट्रमण्डल की सदस्यता स्वीकार कर ली थी। यह देश 13 अगस्त, 1960 को पूरी तरह स्वाधीन हो गया। यहाँ के राष्ट्रध्वज में आसमानी, सफेद, हरे व पीले रंग की आड़ी पट्टियाँ मध्य में लाल रंग की एक खड़ी पट्टी और सबसे ऊपर की आसमानी पट्टी में बाईं ओर पीले रंग का एक सितारा है।

केन्द्रीय अफ्रीका गणराज्य का नया संविधान 9 फरवरी, 1959 को स्वीकार किया गया था। इसके अन्तर्गत इसे अविभाज्य, धर्मनिरपेक्ष, लोकतांत्रिक व सामाजिक गणराज्य की संज्ञा दी गई है। इसका आदर्श वाक्य है—'एकता, प्रतिष्ठा और परिश्रम।'

वैधानिक कार्य के लिए वयस्क मताधिकार द्वारा निर्वाचित एक विधान परिषद् है। इसमें 50 सदस्य होते हैं और वे पाँच वर्ष के लिए चुने जाते हैं। राज्याध्यक्ष और कार्यकारी प्रधान राष्ट्रपति होता है। यह विधान परिषद् द्वारा चुना जाता है।

अर्थ-व्यवस्था—चाद की तरह केन्द्रीय अफ्रीका भी एक कृषि-प्रधान देश है। उपभोग लायक खाद्यान्न यहाँ उगा लिया जाता है। कपास, कॉफी और मूंगफली भी उगाई जाती हैं जिनका विदेशों को निर्यात होता है। रबड़ और तम्बाकू भी होती है। हीरे और सोना भी निकाला जाता है। 1955 में यहाँ एक 148 कैरेट का हीरा प्राप्त हुआ था। भूमि कटाव की समस्या बड़ी विकट है।

हरे-भरे वृक्षों से आच्छादित, पहाड़ियों की पृष्ठभूमि लिए बांगुई राजधानी का निर्माण सुन्दर ढंग से हुआ है। 70,000 की आबादी वाली इस नगरी में एक आधुनिक ढंग का होटल तथा हवाई अड्डा भी है।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

18. कांगो (ब्राज़ाविल)

(CONGO-BRAZZAVILLE)

क्षेत्रफल : 1,39,000 वर्गमील **जनसंख्या** : 7,90,000

केन्द्रीय अफ्रीका से और दक्षिण में चलकर हम अब कांगो में आ पहुँचते हैं। अफ्रीका में इस समय दो कांगो गणराज्य हैं, एक तो वह जो पहले बेलजियम के अधीन था, दूसरा यह जो फ्रांस के अधीन था। दोनों कांगो गण-राज्यों के बीच काँगो नदी प्राकृतिक सीमा रेखा बनाती है। काँगो के पूर्वी तट पर लियोपोल्डविल और पश्चिमी तट पर ब्राज़ाविल है। ब्राज़ाविल इस कांगो की राजधानी है अतः इसे कांगो (ब्राज़ाविल) कहा जाता है।

इस कांगो की आकृति टेढ़ी-मेढ़ी है। उत्तर में केन्द्रीय अफ्रीका गणराज्य है, पश्चिमोत्तर भाग में कैमरून है। पश्चिम में गैबॉन और पूर्वी सीमा पर भूतपूर्व बेलजियम काँगो है। इसकी दक्षिणी-पश्चिमी सीमा अतलांतक सागर से मिलती है। इसका कुल क्षेत्रफल 1,39,000 वर्गमील है जो हमारे राजस्थान से थोड़ा अधिक है। कांगो के उस भाग में जो अतलांतक महासागर से सटा है कोई 40 मील लम्बे मैदान हैं। फिर है—मोयम्बे नामक एक ढलवाँ पहाड़। काँगो नदी के पश्चिम में और ब्राज़ाविल के उत्तर में एक पठार है। इसके दक्षिणवर्ती भाग में तिआरो और अन्य कई नदियाँ बहती हैं। उत्तर में उमंगी नदी के अलावा दो और नदियाँ हैं—सौंघा और अलीमा। ये नदियाँ फिर कांगो नदी में गिर जाती हैं। उत्तरी भाग में सवाना घास के घने मैदान हैं।

अतीत—काँगो के पुरातन इतिहास के बारे में कम जानकारी मिलती है फिर भी इतना तो मालूम है कि यहाँ कांगो नामक एक अफ्रीकी साम्राज्य था जिसकी सीमाएँ अंगोला तक फैली थीं। यह राज्य 16वीं शताब्दी में अपने चर्मोत्कर्ष पर था। इसी साम्राज्य का एक हिस्सा अलग होकर लुआंगो साम्राज्य बन गया जो काफी दिनों तक फूलता-फलता रहा। बटेके पठार के पास भी एक अफ्रीकी राज्य होने का उल्लेख यूरोपियन यात्रियों के वृतान्त में मिलता है पर सत्रहवीं शताब्दी के ढलते-ढलते ये सब साम्राज्य बहुत निर्बल हो गए।

इस भाग पर फ्रांस का आधिपत्य स्थापित कराने में सवोरनन द ब्राज़ा का महत्त्वपूर्ण योग रहा है। उसी ने अपने मुट्ठीभर साथियों के साथ 1875 में दुर्गम प्रदेशों को पार करते हुए अलीमा नदी की यात्रा की थी। 1880 में वह बटेके तक पहुँच गया और वहाँ के मुखिया को फ्रांस के संरक्षण में ले लिया। फिर, धीरे-धीरे फ्रांस का प्रभाव बढ़ता गया।

1903 के बाद फ्रांस ने मध्यवर्ती अफ्रीकी क्षेत्रों को संगठित कर व्यवस्थित प्रशासन शुरू किया। उस समय फ्रांसीसियों ने इसका नाम मध्य कांगो रखा। मध्य कांगो के अलावा चाद, उबंगी-शारी और गैबॉन, तीन अन्य प्रदेश थे जिन्हें मिलाकर, फ्रांसीसी भूमध्यरेखीय अफ्रीका की संघात्मक व्यवस्था क़ायम की गई।

द्वितीय विश्व युद्ध के समय इस क्षेत्र ने जनरल डिगाल की बहुत सहायता की थी। 1944 में जब ब्राज़ाविल में फ्रांसीसी अफ्रीकी देशों का सम्मेलन हुआ तो उसमें सिफारिश की गई थी कि अफ्रीकी देशों को अपना शासन स्वयं चलाने का मौका दिया जाय। 15 दिसम्बर, 1946 को मध्य कांगो सर्वप्रथम ऐसा प्रदेश बना जिसे अपनी प्रतिनिधि सभा स्वयं निर्वाचित करने का हक प्राप्त था। 1958 में फ्रांस के पाँचवें गणराज्य के संविधान का

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

कांगो ने समर्थन किया और यह फ्रांसीसी राष्ट्रमण्डल के अन्तर्गत एक स्वशासित देश बन गया।

जब फ्रांस ने ऐसा क़ानून पास कर दिया कि अफ्रीकी देश फ्रांसीसी राष्ट्रमण्डल के सदस्य रहते हुए भी स्वतंत्र हो सकते हैं, तो इस कांगो ने भी पूर्ण स्वतंत्र होने का निर्णय कर लिया। विचित्र संयोग है कि इस कांगो की स्वतंत्रता तिथि और भारतीय स्वतंत्रता तिथि एक हैं। 15 अगस्त, 1960 को यहाँ पूर्ण स्वतंत्रता की घोषणा हुई थी।

कांगो के संविधान के अनुसार वैधानिक कार्य के लिए 60 सदस्यों की एक असेम्बली है जो वयस्क मताधिकार से 5 वर्ष के लिए चुनी जाती है। कार्यकारी अधिकार राष्ट्रपति को प्राप्त हैं जो राज्य प्रमुख और शासन प्रमुख दोनों का काम करता है। यहाँ पृथक् न्यायपालिका है।

कांगों के राष्ट्रध्वज में हरे, पीले और लाल रंग की तीन तिरछी पट्टियाँ हैं। यहाँ का आदर्श वाक्य है—'एकता, मेहनत और प्रगति।'

कांगों की कुल आबादी 7,90,000 है और औसतन प्रति वर्ग मील में यहाँ 6 व्यक्ति रहते हैं। ब्राज़ाविल का समीपवर्ती क्षेत्र सबसे घना आबाद है। उत्तर के जंगलों और बटेके पठार के पास बहुत कम लोग बसते हैं।

यहाँ की सबसे बड़ी जाति भी काँगो ही है। उसकी 15 उप-जातियाँ हैं जिनमें बकांगो और बलाली अधिक प्रसिद्ध हैं। ये लोग कांगो की कुल आबादी का 45 प्रतिशत हैं और ब्राज़ाविल के दक्षिण पश्चिमी क्षेत्र में फैले हुए हैं। इन्हीं लोगों के पूर्वजों ने प्राचीन काल में कांगो और लुआंगो नामक साम्राज्य बनाये थे। ये लोग खेती और व्यापार करते हैं। ब्राज़ाविल के उत्तर में बटेके जाति के लोग रहते हैं जो अधिकांशतः शिकार और मछली पालन का धन्धा करते हैं। एम्ब्रोची जाति के लोग सवाना घास के मैदान व वनों में रहते हैं। नदियों के किनारे पर रहने

रात्रि में कहानी सुनायी जा रही है

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

वाले लोग मछली पालन का काम करते हैं। उत्तर में साँघा जाति के लोग हैं। इस क्षेत्र में नाटे कद के लोग भी रहते हैं। गाँव में जब रात घिर आती है तो लोग खा-पीकर एक पेड़ के पास इकट्ठे हो जाते हैं। यहाँ एक कहानी सुनाने वाला बड़े हाव-भाव से कहानी सुनाता है जिसे बूढ़े-बच्चे, स्त्री-पुरुष सभी बड़े चाव से सुनते हैं।

कांगो की राजधानी ब्राज़ाविल मध्य अफ्रीका के सुन्दरतम नगरों में से है। यहाँ बहुत ऊँचे-ऊँचे आलीशान भवन बने हुए हैं। यहाँ का रेडियो स्टेशन संभवतया अफ्रीका में सबसे शक्तिशाली है। यहाँ होटल भी हैं। यह कला और टैक्नीकल शिक्षा का केन्द्र है। ब्राज़ाविल में ही पोटो-पोटो चित्रकला की विशिष्ट शैली विकसित हुई है। यह नगर साहित्य व पत्रकारिता की गतिविधियों का भी केन्द्र है।

अतलांतिक महासागर तट पर पाइण्टेनोइरे एक अच्छा बन्दरगाह है। यह ब्राज़ाविल से रेल द्वारा जुड़ा हुआ है। पाइण्टेनोइरे और ब्राजाविल में अच्छे हवाई अड्डे हैं। यहाँ की वन-सम्पदा कांगो के लिए निर्यात का बड़ा साधन है। यहाँ से इमारती लकड़ी बाहर भेजी जाती है। यहाँ की मुख्य पैदावार, शकरकंद, चावल, गन्ना, नारंगी और केले हैं। 17 जनवरी, 1959 को चाद, केन्द्रीय अफ्रीका और कांगो ने एक परिसंघ बनाने का फैसला किया था। इस परिसंघ का उद्देश्य विदेश नीति, प्रतिरक्षा, डाक व संचार-व्यवस्था में समान नीति बरतना और आर्थिक व वित्तीय क्षेत्र में समन्वय रखना है।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

19. गैबॉन

(GABON)

क्षेत्रफल : 1,02,290 **वर्गमील** **जनसंख्या** : 4,10,000

गैबॉन कांगो के पश्चिम में अवस्थित एक तटवर्ती देश है । इसके उत्तर में कैमरून, उत्तर-पश्चिमी कोण पर स्पेनिश गिनी नामक एक छोटा उपनिवेश, और पश्चिम में अतलांतिक महासागर है । गैबॉन का कुल क्षेत्रफल 1,02,290 वर्ग मील है जो हमारे केवल आन्ध्र प्रदेश के क्षेत्रफल से भी कम है । इसके तटवर्ती भाग में कोई 125 मील तक निचले मैदान हैं । उत्तरी और पूर्वी भाग में पठार हैं । उत्तर, दक्षिण-पूर्व और मध्य भाग में पहाड़ हैं । यहाँ नदियाँ भी खूब हैं । नदियों के बहाव ने पठारों को काट-काट कर घाटियाँ बना डाला है । यहाँ की मुख्य नदी आगोवे है जो निकलती तो कांगो से है, पर उसका समूचा बहाव क्षेत्र गैबॉन ही में है । यह कोई 750 मील लम्बी नदी है । सागर तक जाने वाली कई छोटी नदियाँ हैं जो न केवल नौ-परिवहन का काम देती हैं बल्कि वन क्षेत्र से बड़े-बड़े लट्ठे बहाकर सागर तट तक पहुँचाने में भी मदद करती हैं । ये लट्ठे फिर विदेशों को निर्यात किये जाते हैं ।

अतीत—गैबॉन तटवर्ती होने के कारण पश्चिमी देशों के सम्पर्क में अपेक्षाकृत जल्दी आया । 1470 से यहाँ यूरोपीय नाविक आने-जाने लग गए थे । 1841 में यहाँ फ्राँसीसी कप्तान आया था जिसने यहाँ के अफ्रीकी राजाओं—डेविस और लुई—से मित्रता की संधियाँ की थीं । उन दिनों गैबॉन मुहाने के दक्षिणी भाग पर डेनिश का आधिपत्य था और उत्तरी भाग पर लुइस का । राजा डेविस ने कोई 66 वर्ष शासन किया था और उसकी बुद्धिमानी और चातुर्य की यूरोपीय भी प्रशंसा करते थे । वह फ्रेंच, अंग्रेजी और स्पेनिश भाषाएँ भी बोल सकता था । लुइस भी कुशल राजा था और उसने यूरोपीय मिशनरियों के काम में इसलिए रोड़ा नहीं अटकाया क्योंकि वह समझता था इससे जनता शिक्षित तो हो ही रही है । 1880 तक फ्रांस इसे अपने अधीन करने में सफल हो गया ।

पहले के तीन अन्य देशों की भाँति गैबॉन भी 1910 में फ्रांसीसी भूमध्यरेखीय अफ्रीका का एक प्रदेश बन गया था और फिर फ्रांसीसी शासन चलता रहा । द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद यहाँ 1947 में पहली निर्वाचित असेम्बली बनी थी ।

अन्य फ्रांसीसी क्षेत्रों की भाँति 1958 में इसने डिगाल द्वारा प्रस्तुत संविधान स्वीकार करके फ्रांसीसी राष्ट्रमण्डल का सदस्य रहना स्वीकार कर लिया । अन्य देश भी पूर्णतया आज़ाद होने लगे तो गैबॉन ने भी स्वतन्त्रता की माँग की और यह 17 अगस्त, 1960 को स्वतन्त्र हो गया ।

शासन-व्यवस्था—गैबॉन का नया संविधान 14 नवम्बर, 1960 को स्वीकृत हुआ था जिसके अन्तर्गत गैबॉन एक अविभाज्य, लोकतांत्रिक व सामाजिक गणराज्य घोषित किया गया है । यहाँ वैधानिक कार्य के लिए 67 सदस्यों की विधान सभा है जो 5 वर्ष के लिए वयस्क मताधिकार से चुनी जाती है । कार्यकारी प्रधान और राजाध्यक्ष राष्ट्रपति होता है । यहाँ स्वतन्त्र न्यायपालिका भी है ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

गैबॉन का राष्ट्रीय ध्वज तिरंगा है जिसमें हरे, पीले और नीले रंग की आड़ी पट्टियाँ हैं। यहाँ का आदर्श वाक्य है—'एकता, मेहनत और न्याय।'

जन-जीवन—गैबॉन की कुल आबादी लगभग 4 लाख 10 हजार है। कोई 3,000 बाबिंगा जाति के लोग हैं जो कद में नाटे होते हैं। ये अक्सर जंगलों में ही रहते हैं। फांग जाति के लोग मेकाम्बो के उत्तरी क्षेत्र में और पोर्ट जेण्टिल के पास रहते हैं। ओगोतो नदी के निचले भाग में ओमीनी जाति के कई कबीले हैं। बकोटा जाति उत्तर पूर्व में बसी हुई है। ये लोग लकड़ी पर खुदाई करके बहुत सुन्दर आकृतियाँ बनाने में सिद्धहस्त हैं। अन्य जातियाँ एशिरा, सेके ओकण्डे व बकेले हैं। यहाँ लैम्बरेने नामक स्थान पर डा० स्विट्ज़र रहते हैं। वे 1913 से यहाँ चिकित्सालय द्वारा अफ्रीकियों की महान् सेवा कर रहे हैं। हाल में इन्हें नोबुल पुरस्कार मिला है।

अर्थ-व्यवस्था—अतुल वन सम्पदा के कारण गैबॉन की अर्थ-व्यवस्था काफी उन्नत है। यहाँ निर्यात आयात से कहीं अधिक है। इसका मुख्य श्रेय यहाँ वनों से मिलने वाली लकड़ी को है। महोगनी, केवाजिगो और आबनूस जैसी बहुमूल्य लकड़ियाँ यहाँ मिलती हैं पर सबसे अधिक मूल्यवान ओकूमे लकड़ी है जो प्लाईवुड बनाने के काम में आती है। लट्ठों को चीर कर तख्ते और अन्य चीजें बनाने के कई कारखाने भी हैं। पर अर्थ-व्यवस्था केवल लकड़ी पर ही निर्भर नहीं है। मैंगनीज, लोहा, यूरेनियम, पोटेशियम, सोना, हीरे जैसे मूल्यवान खनिज पदार्थ भी निकाले जाते हैं। कृषि क्षेत्र में, यहाँ कोका, कॉफी, चावल, मूंगफली, कैसावा, शकरकंद व जमीकंद उगाया जाता है। फलों में यहाँ केले भी खूब उगाये जाते हैं।

तटवर्ती नगर लिब्रेविल यहाँ की राजधानी है और अच्छी बन्दरगाह भी। अन्य प्रसिद्ध बन्दरगाह है—पोर्ट जेंटिल। जेंटिल और लिब्रेविल में अनेक जहाजों के आवागमन से गैबॉन की बढ़ती हुई अर्थ-व्यवस्था की झलक मिलती है।

गैबॉन में भी रेल मार्ग अभी नहीं हैं। कुछ सड़कें हैं, एक मुख्य सड़क राजधानी लिब्रेविल को कैमरून की राजधानी से जोड़ती है और दूसरी कांगो (ब्राज़ाविल) के एक नगर ड़ोलीजी से।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

20. रिओ मुनी और फेरनन्दो पो

(RIO MUNI AND FERNANDO PO)

क्षेत्रफल : 10,000 + 1,000 **वर्गमील** **जनसंख्या :** 2,00,000 + 80,000

जिस प्रदेश को पहले स्पेनिश गिनी कहते थे, उसे स्पेन ने अब दो सागरपारीय प्रदेशों का दर्जा दे दिया है और इन्हें आन्तरिक स्वायत्तता दे दी है।

रिओ मुनी गैबॉन के पास का छोटा भाग है। इसका क्षेत्रफल 10,000 वर्गमील है तथा जन-संख्या लगभग दो लाख है। यहाँ भूमध्यरेखीय जलवायु है और घने जंगल हैं। यहाँ रहने वाले लोग, नीग्रोवर्ग की फान जाति के हैं और पुराने तौर-तरीकों से खेती करते हैं। रिओ मुनी में यूरोपीयों के बागान हैं और इमारती लकड़ी, ताड़ का तेल, कोका और कॉफी पैदा होता है। बाटा यहाँ का प्रमुख नगर और बन्दरगाह है।

कैमरून तट से कोई 50 मील दूर सागर में कई द्वीप हैं। इनमें सबसे बड़ा फेरनन्दो पो है। यहाँ की भूमि मुख्यत: प्रसुप्त ज्वालामुखी पर्वतों की बनी है और ऊँचाई सागरतल से कोई 6000 फुट है। अन्दर के भाग में कुछ घास के मैदान हैं जहाँ पशु पाले जाते हैं।

इसका कुल क्षेत्रफल कोई 1,000 वर्गमील है और जनसंख्या केवल 80,000 है। यहाँ की मुख्य फसल कोका और कॉफी हैं। यहाँ भी यूरोपीयों के बागान हैं। इस द्वीप में रहने वाली नीग्रो जाति, ब्यूवा है। यहाँ का प्रमुख नगर सांता इसाबेल है।

फेरनन्दो पो के अतिरिक्त तीन और छोटे द्वीप भी हैं। ये हैं : अन्नोबोन, कोरिस्को, बड़ा स्लोवे व छोटा स्लोवे। अन्नोबोन में काफी लोग बसे हैं। ये मछलियाँ पकड़कर या फल व कंदमूल इकट्ठा करके गुज़ारा चलाते हैं।

स्पेन ने इन क्षेत्रों पर 1778 में कब्ज़ा जमाया था। 1963 में यहाँ आन्तरिक स्वायत्तता के लिए मतदान करवाया गया। बाद में स्वायत्तता दे दी गई। पर इन्हें पूरी स्वाधीनता नहीं है। 1964 में काहिरा में जो तटस्थ राष्ट्रों का सम्मेलन हुआ था, उसमें स्पष्ट रूप से कहा गया था कि स्पेन को अपने अफ्रीकी उपनिवेश जल्दी ही पूर्ण स्वतन्त्र कर देने चाहिएँ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

21. कांगो गणराज्य-लियोपोल्डविल

(CONGO REPUBLIC—LEOPOLDVILLE)

क्षेत्रफल : 9,10,000 वर्गमील **जन-संख्या** : 1,50,00,000

अफ्रीका के हृदय में अवस्थित कांगो एक विशाल देश है। इसका क्षेत्रफल भारत के क्षेत्रफल से कुछ ही कम है पर अपने भूतपूर्व शासक देश बेल्जियम से 77 गुना है। इसकी 9,10,000 वर्गमील भूमि में लगभग डेढ़ करोड़ लोग बसते हैं। देश के लगभग मध्य से भूमध्य रेखा गुज़रती है। इसी भूमध्य रेखा के आस-पास कांगो नदी का मुहाना है। यह क्षेत्र एक तरह बड़े चौड़े बर्तन की तरह बन गया है। कांगो नदी इस देश की गंगा है जो कुल-मिलाकर 2,900 मील बहती है और इस प्रकार अफ्रीका की सबसे लम्बी तीसरी नदी और विश्व की सबसे लम्बी छठी नदी कहलाती है। यह दो बार भूमध्य रेखा को पार करती है। पूर्वी पहाड़ों से निकलने वाली यह नदी चन्द्राकार बनाती हुई मताडी बन्दरगाह के पास अतलांतक महासागर में मिल जाती है। महाद्वीप के मध्य में बसे हुए इस विशाल देश का एक हिस्सा, भूतपूर्व फ्राँसीसी कांगो के दक्षिण में अतलांतक महासागर से भी मिलता है। वहाँ कोई 25 मील लम्बी तट रेखा है। इससे कांगो को समुद्री यातायात का लाभ भी सुलभ है। काँगो मुहाने के चारों तरफ पठार हैं। उसके पूर्व में पर्वत श्रेणियाँ हैं जिन्हें अफ्रीका की रीढ़ कहा जाता है। उन्हीं पर्वतों में अलबर्ट, एडवर्ड और कीबू व टांगानिका झीलें हैं। कांगो का अधिकांश भाग वनों से आच्छादित है।

खनिज पदार्थ की दृष्टि से भी यह अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। विश्व के कुल उत्पादन का 70 प्रतिशत औद्योगिक हीरे, 75 प्रतिशत कोबाल्ट और 7 प्रतिशत सोना यहीं निकलता है। इसके अलावा तांबे, अभ्रक व कोयले की खानें भी हैं। पर सबसे महत्त्वपूर्ण खनिज है—यूरेनियम, जिसका आज सामरिक महत्त्व बढ़ा-चढ़ा है। यूरेनियम आणविक बम और युद्ध सामग्री के निर्माण में प्रयुक्त होता है।

इतिहास की झलक—कांगो का अस्तित्व तो काफी प्राचीन काल से है पर इसका लिखित इतिहास बहुत कम उपलब्ध है। इस क्षेत्र में कांगो नदी के मुहाने की खोज पुर्तगाली अन्वेषक डिएगो काओ ने 1482 में की थी। इसके बाद 1642 में डच और 1886 में स्वीडिश खोजकर्ता और अन्य कई लोग भी इधर आये पर इसके आंतरिक भाग को अच्छी तरह खोजने का श्रेय पत्रकार स्टेनले को है जिन्हें 'डेली टेलीग्राफ' नामक पत्र ने यहाँ भेजा था। यह 1871 के आस-पास की बात है। इन्हीं दिनों बेलजियम नरेश लियोपोल्ड द्वितीय ने स्टेनले से सांठ-गांठ कर ली और कांगो पर अपना अधिकार जमाने की कोशिश करने लगे। 12 सितम्बर, 1876 को लियोपोल्ड द्वितीय ने ब्रुशेल्स में एक सम्मेलन बुलाया और कांगो पर लियोपोल्ड का प्रभाव स्वीकार कर लिया गया। 1879 में लियोपोल्ड की ओर से एक नई संस्था बनाई गई 'इंटरनेशनल कांगो एसोसिएशन'। 1883 में स्टेनले पुनः कांगो गया तथा विभिन्न सरदारों से कोई 500 संधियाँ कीं और 40 चौकियाँ स्थापित कीं। इसके बाद 15 नवम्बर, 1884 से 26 फरवरी, 1885 तक बर्लिन में यूरोपीय राष्ट्रों का सम्मेलन हुआ जिसमें इंटरनेशनल काँगो एशोसिएशन यानी लियोपोल्ड नरेश का कांगो पर आधिपत्य स्वीकार कर लिया

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

गया। कांगो का नाम 'कांगो फ्री स्टेट' रखा गया पर वास्तव में कांगो बुरी तरह पराधीनता के शिकंजे में जकड़ गया था। 30 अप्रैल, 1885 को बेलजियम की संसद् ने यह स्वीकार कर लिया कि कांगो बेलजियम नरेश की व्यक्तिगत सम्पत्ति है। लियोपोल्ड ने कांगो से खूब धन कमाया, इतना धन कि वह कुछ वर्षों में विश्व के धनाढ्यतम व्यक्तियों में गिना जाने लगा। पर बाद में नरेश की आलोचना होने लगी और 23 वर्ष के भोग के बाद बेलजियम नरेश से उनकी यह 'व्यक्तिगत' सम्पत्ति छिन गई और 20 अगस्त, 1908 को यह बेलजियम का उपनिवेश बन गया। यह स्थिति 29 जून, 1960 तक बनी रही। 30 जून, 1960 को यह देश स्वतन्त्र हो गया।

राष्ट्रीय आन्दोलन—कांगो में राष्ट्रीय आन्दोलन का आरम्भ 1955 से ही माना जाना चाहिए। सर्वप्रथम वान विल्सन की एक पुस्तक के प्रकाशन ने तहलका मचा दिया, इसका नाम था—'बेलजियन अफ्रीका के मुक्ति की 30 वर्षीय योजना।' विल्सन ने पहली बार कांगो के स्वाधीनता की दिशा में सोचा था पर उनकी योजना दीर्घकालीन थी। इधर कासावूबू के दल 'अबाको' ने भी स्वतन्त्रता की माँग शुरू की। यह दल मुख्यत: बोकांगो जाति के सदस्यों का था। अबाको दल ने 30 वर्षीय मुक्ति योजना की आलोचना की और धीरे-धीरे राष्ट्रवाद जड़ें पकड़ने लगा। 1958 में कांगो नदी के उस पार ब्राज़ाविल में जब जनरल डिगाल ने फ्रांस अधीन सभी देशों को स्वाधीन करने की योजना रखी तो उसका प्रभाव इस कांगो पर भी पड़ा। अत: 26 अगस्त, 1958 को कांगो के विभिन्न राजनैतिक नेताओं ने (जिनमें लुमुम्बा और अडूला भी थे) बेलजियन कांगो के मन्त्री को एक संयुक्त प्रस्ताव भेजा कि कांगो को स्वतंत्रता दी जाय और आर्थिक, सामाजिक तथा राजनैतिक सुधार तेजी से किये जाएँ। उधर घाना की राजधानी अकरा में दिसम्बर, 1958 में एक पान-अफ्रीकी सम्मेलन हुआ जिसमें एक प्रस्ताव पास किया गया कि सारा अफ्रीका शीघ्र ही स्वाधीन होना चाहिए और 1960 के बाद कोई भाग विदेशी सत्ता के अधीन नहीं रहना चाहिए। इस सम्मेलन से लौटकर श्री लुमुम्बा ने लियोपोल्डविल में एक जोशीला भाषण दिया और कहा कि हम स्वतन्त्रता बेलजियम से उपहार के तौर पर नहीं माँग रहे हैं, हम तो अपना वह अधिकार वापस चाहते हैं जो हम से छीन लिया गया है।

इसके बाद ही कांगो में स्वतन्त्रता के लिए तीव्र आन्दोलन शुरू हो गया। बेलजियम का सिंहासन डोल उठा। वह अब तक समझे बैठा था कि कांगो पूरी तरह उसकी गिरफ्त में है। 3-4 जनवरी, 1959 को लियोपोल्डविल में दंगे-फसाद हुए और हिंसा भड़क उठी। दंगों की शुरूआत अबाको द्वारा सभा बुलाये जाने पर लगाये गए प्रतिबन्ध के कारण हुई। इन दंगों के पूर्व बेलजियम सरकार ने एक कमीशन भी बनाया था जिसका काम कांगो की परिस्थिति पर रिपोर्ट पेश करना था पर वह काम बड़ी ढिलाई से चल रहा था। बेलजियम सरकार ने तत्परता से 13 जनवरी, 1959 को एक वक्तव्य प्रकाशित किया कि 'बेलजियम, कांगो में एक ऐसा लोकतंत्र बनाना चाहता है जो अपनी सार्वभौम सत्ता का उपयोग कर सके और अपनी स्वाधीनता के बारे में फैसला कर सके। हमारा देश संयुक्त राष्ट्र संघ घोषणापत्र के हस्ताक्षरकर्ताओं में एक है और कांगो को हम उस स्थिति तक पहुँचाना चाहते हैं जहाँ से वह अपना शासन स्वयं चलाने लगे।' पर इस घोषणा से राष्ट्रीय तत्त्व शान्त नहीं हुए क्योंकि उसमें स्वाधीनता की स्पष्ट तारीख निश्चित नहीं की गई थी। 7 से 12 अप्रैल तक 1959 को लुलुआवर्ग में पेट्रिस लुमुम्बा की अध्यक्षता में कांगो की 8 राजनैतिक पार्टियों के विभिन्न नेता पहली बार एक स्थान पर एकत्र हुए और उन्होंने स्वतन्त्रता की माँग की। इन्हीं दिनों लुमुम्बा की अध्यक्षता में एम० एन० सी० (कांगो राष्ट्रीय आन्दोलन) दल संगठित हुआ और स्वतन्त्रता की माँग जोरों से होने लगी।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

कुछ दिनों बाद बेलजियम ने इस तथ्य को स्वीकार कर लिया कि कांगो को जल्दी आज़ादी देनी ही पड़ेगी इसलिए 20 जनवरी से 20 फरवरी, 1960 तक ब्रूशेल्स में गोल मेज़ सम्मेलन हुआ। इसमें यह निश्चित हुआ कि 30 जून, 1960 को बेलजियन कांगो एक स्वतन्त्र राष्ट्र बन जाएगा। मई, 1960 में यहाँ चुनाव हुए जिसमें सबसे ज्यादा स्थान पेट्रिस लुमुम्बा के दल राष्ट्रीय कांगो आन्दोलन (एम० एन० सी०) को प्राप्त हुए। पर 137 सदस्यों की असेम्बली में वह बहुमत नहीं था। काफी जोड़-तोड़ के बाद यह फैसला हो गया कि कासावूबू राष्ट्रपति बनेंगे और लुमुम्बा प्रधान मन्त्री। कांगो पूर्व योजनानुसार निश्चित तारीख को स्वतन्त्र हो गया। पर कांगो का जन्म शायद अच्छे महूर्त में नहीं हुआ था। स्वाधीनता के कुछ ही दिनों बाद आंतरिक झगड़े शुरू हो गए। पहले सेना ने विद्रोह किया। वह शान्त हुआ तो कांगो के एक प्रान्त कटांगा के नेता शोम्बे ने कटांगा को अलग करने की घोषणा कर दी। श्री लुमुम्बा कांगो को एकात्मक राज्य बनाना चाहते थे और अन्य कुछ नेता उसे संघ के रूप में रखना चाहते थे। झगड़ा इतना बढ़ा कि संयुक्त राष्ट्र संघ की सेना यहाँ भेजी गई। इस बीच में पेट्रिस लुमुम्बा को बेलजियम के पिट्ठुओं ने गोली मार दी। सारे कांगो में मातम छा गया। राष्ट्र संघ के महामन्त्री हैमरशोल्ड भी विभिन्न पक्षों में समझौता कराने कांगो गए थे पर एक विमान दुर्घटना के कारण वे चल बसे। इस प्रकार कांगो के लिए लुमुम्बा और हैमरशोल्ड का खून भी बहा पर समस्या हल नहीं हुई। अगस्त, 1962 के संयुक्त राष्ट्र संघ के नये महासचिव ऊ थान्त ने एक नई योजना पर सख्ती से अमल शुरू किया। अनेक कठिनाइयों के बाद जनवरी, 1963 में कटांगा का पृथकत्व समाप्त हो सका।

भारत और कई अन्य देशों ने राष्ट्र संघ की सेना के लिए सैनिक भेजे। भारत ने 3000 सैनिक और एक अस्पताल भेजा था। राष्ट्रसंघ ने बाद में अपनी सेनाएँ हटा लीं पर यहाँ आंतरिक विद्रोह अब भी मिटा नहीं है।

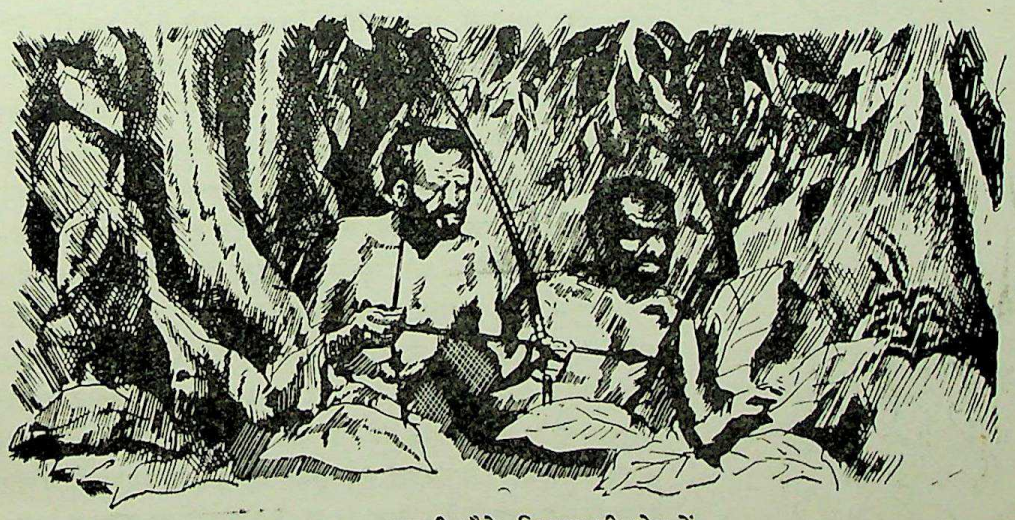

बम्बूती बौने, शिकार की टोह में

श्री लुमुम्बा के बाद श्री अडूला प्रधान मन्त्री बने और 10 जुलाई, 1964 को राष्ट्रपति कासावूबू ने मोइसे शोम्बे को प्रधान मन्त्री नियुक्त किया। प्रधान मन्त्री बनने पर शोम्बे को कांगो के प्रधान मन्त्री के रूप में अन्य अफ्रीकी देशों ने स्वीकार नहीं किया। काहिरा के तटस्थ राष्ट्र सम्मेलन में उन्हें भाग नहीं लेने दिया गया। शोम्बे के बाद भी कांगो में विद्रोह की आग दब नहीं सकी।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

कांगो के संविधान के अनुसार यह एक लोकतांत्रिक संघीय गणराज्य है और संघीय राष्ट्रपति को व्यापक अधिकार हैं। पूरा कांगो 21 प्रांतों में विभक्त है और उन्हें आंतरिक स्वायत्तता प्राप्त है। केन्द्र में 166 निर्वाचित प्रतिनिधियों की संसद् है।

कांगो का राष्ट्रध्वज नीले रंग का है उसमें सफेद सितारे हैं।

जन-जीवन—कांगो में अनेक अफ्रीकी जातियाँ रहती हैं। उनके रहन-सहन, रीति-रिवाज और शारीरिक रचना भी भिन्न-भिन्न है। अधिकांश जातियाँ बांतू वर्ग की हैं। उत्तर पश्चिमी भाग में, नीलोटिक वर्ग की जातियाँ हैं जिनमें मंगबेतू और अजाण्डे अधिक प्रसिद्ध हैं।

लियोपोल्डविल की एक गृहिणी

मध्यभाग में कसाई और संकुरू नदियों के बीच रहने वाली बोशंगो जाति कारीगरी और कला में काफी पटु है। ये लोग लकड़ी से मूर्तियाँ बनाने में सिद्धहस्त हैं। पूर्वी सीमा पर कीवू प्रांत के लोग हाथीदाँत की कारीगरी में बहुत कुशल हैं।

उत्तर के इट्टरी जंगलों में यहाँ बम्बूती बौने रहते हैं। ये बौने अपने छोटे कद के लिए संसार भर में विख्यात हैं। इनकी औसत ऊँचाई 4 फुट होती है। वयस्क स्त्री और पुरुषों को देखकर भी बालक-बालिकाओं का सा भ्रम होता है। ये लोग स्थायी रूप से कहीं नहीं रहते। घने जंगलों में जहाँ भी पहुँच जाते हैं, घासफूँस की झोंपड़ी डाल लेते हैं। ये तीर-कमान और भालों से घात लगाकर शिकार करते हैं। बन्दरों, हिरन और अन्य वन्य पशुओं को पकड़ लेते हैं। हाथी जैसे विशाल जीव का शिकार करने से भी ये नहीं कतराते। इनमें से एक आदमी छिपता हुआ रेंग कर हाथी के पीछे पहुँच जाता है और चुपके से तेज औज़ार से उसके पीछे के पैर काट डालता है। हाथी लड़खड़ा कर गिर पड़ता है और अन्य लोग भालों से हाथी को मार डालते हैं। फिर पूरी जाति की डट कर दावत होती है और उससे कई दिनों तक भोजन चलता है।

विषुवत रेखा के पास ही बोइन्दे नगर के पास जंगलों में एक और जाति रहती है बकूतू। ये लोग अपने दाँतों को रगड़कर बहुत नुकीला बनवा लेते हैं। ये लोग अपने सिर पर मिट्टी का पलस्तर चढ़ाकर जानवरों के पंख लगा लेते हैं और मुँह पर लाल पेंट लगाते हैं। पुरुष अक्सर जानवरों के दाँतों से बनाई गई माला पहनते हैं, स्त्रियाँ पैरों में पीतल के भारी कड़े पहनती हैं। एक पैर में इन ज़ेवरों का वज़न 5-6 सेर से कम नहीं होता। इन्हें चढ़ाने और उतरवाने के लिए लुहार की सहायता लेनी होती है।

शहरों में बाज़ार से चीजें खरीदने का काम अक्सर गृहणियाँ ही करती हैं। ये चटकीले रंगों के कपड़े अधिक पसंद करती हैं। गाँवों में भी खेती-क्यारी का काम अधिकतर स्त्रियाँ ही

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

करती हैं। पुरुष शिकार और मछली पकड़ने का काम करते हैं।

कांगो में खाने से लिए कसावा, मकई, चावल, जौ और मूँगफली की फसलें उगाई जाती हैं। रबड़, कपास, और कहवे की फसलें व्यापारिक लाभ के लिए उगाते हैं।

राजधानी लियोपोल्डविल देश के पश्चिमी भाग में अवस्थित यह एक सुन्दर नगर है। यहाँ चौड़ी-चौड़ी सड़कें और कुछ दस मंजिली इमारतें भी हैं। दक्षिण में लुलुआबर्ग, दक्षिण-पश्चिम में कटांगा की राजधानी एलिजावेथ विल, पूर्व में बुलावो और उत्तर में स्टेनलेविल अन्य प्रसिद्ध नगर हैं।

कांगो में परिवहन का मुख्य साधन नदियाँ हैं। लियोपोल्डविल और स्टेनलेविल के बीच नावों से आना-जाना बहुत ही आसान है। कांगो में रेल लाइनें तथा कुछ हवाई अड्डे भी हैं। अतलांतक सागर के तट पर मताडी बन्दरगाह है।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

22. रुआण्डा

(RWANDA)

क्षेत्रफल : 10,166 वर्ग मील **जनसंख्या** : 25,00,000

रुआण्डा 1 जुलाई, 1962 से एक स्वतंत्र गणराज्य है। इसके पहले रुआण्डा और बुरुण्डी राष्ट्र संघ के संरक्षित क्षेत्रों के रूप में बेलजियम द्वारा शासित होते थे।

इन दोनों में उत्तरवर्ती देश है—रुआण्डा। यह कांगो के पूर्व में, टांजानिया के पश्चिम में तथा उगाण्डा के दक्षिण में अवस्थित है। इसके दक्षिण में बुरुण्डी है। रुआण्डा का कुल क्षेत्रफल 10,166 वर्ग मील है जो हमारे हिमाचल प्रदेश से कुछ ही अधिक है। इसकी भूमि मुख्यतः पठारी है और नदी-नालों के प्रवाह ने उसे कटी-फटी बना दिया है। इसके पश्चिमी भाग में कुछ ऊँची पर्वत-मालाएँ भी हैं। उगाण्डा व कांगो की सीमा के पास का किरिसिम्बी शिखर 14,873 फुट ऊँचा है। पश्चिम के पहाड़ों से पूर्व की ओर भूमि धीरे-धीरे नीची होती चली गई है। पूर्वी सीमा पर कगेरा नदी है जिसके आस-पास कोई 16 मील चौड़े दलदलीय क्षेत्र हैं। रुआण्डा के अधिकांश भाग का जलवायु शीतोष्ण है।

आरम्भ में यहाँ हुतू और त्वा जातियाँ रहती थीं और कुछ समय बाद तुत्सी जाति-संभवतः इथियोपिया की तरफ से इधर आई। चौदहवीं शती के आरम्भ में पूर्वी भाग में बाहर से आई इस जाति के छोटे-छोटे कई रजवाड़े थे और पश्चिमी भाग में पहले से चले आ रहे देशी रजवाड़े बने हुए थे। पूर्वी भाग में ही मुहाजी झील के आस-पास रुआण्डा नामक छोटा-सा रजवाड़ा धीरे-धीरे शक्ति प्राप्त करने लगा और इसका क्षेत्र बढ़ने लगा। रुन्गूंज प्रथम को यहाँ का पहला ऐतिहासिक नरेश माना जाता है। इसके बाद क्रमशः नए उत्तराधिकारी राजा बनते रहे।

1895 में किगेरी (चतुर्थ) नरेश का शासन समाप्त होते-होते रुआण्डा एक शक्तिशाली राज्य बन चुका था। 1896 में यूही पंचम यहाँ के म्वामी (नरेश) बने थे और इसके अगले ही वर्ष जर्मनी सेनाएँ यहाँ आ पहुँची। म्वामी ने जर्मनी का आधिपत्य स्वीकार कर लिया।

1885 के बर्लिन सम्मेलन में जब अफ्रीका का यूरोपीय शक्तियों में बंटवारा हुआ तो रुआण्डा, उरुण्डी को जर्मनी का प्रभाव क्षेत्र मान लिया गया। 1897 तक जर्मन उसुम्बरा में अपना एक सैनिक केन्द्र बनाने में सफल हो गए और रुआण्डा जर्मनी के अधीन हो गया। प्रथम विश्व युद्ध के दौरान 1916 में यहाँ बेलजियम की सेना आ गई थी और फिर यह बेलजियम के अधीन माना जाने लगा। 1923 में लीग ऑफ नेशन्स ने इसे तथा बुरुण्डी को बेलजियम का ट्रस्ट प्रदेश के रूप में माना और तात्कालीन व्यवस्था पर अपनी मुहर लगा दी। राष्ट्र संघ ने भी इसी व्यवस्था को जारी रखा।

बेलजियम 1957 तक कांगों और रुआण्डा-बुरुण्डी का शासन चलाता रहा पर बाद में अफ्रीकी नवजागरण की लहर यहाँ भी आ पहुँची। 30 जून, 1960 को कांगो के स्वतंत्र हो जाने के बाद बेलजियम के हाथों में ये ही दो छोटे प्रदेश बच रहे थे। राष्ट्र संघ ने पहले तो इन दोनों को मिलाकर एक राज्य बनाने की कोशिश की

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पर सफल नहीं हुआ । अतः जून, 1962 में पारित राष्ट्र संघ के प्रस्ताव के अनुसार रुआण्डा और बरुण्डी 1 जुलाई, 1962 को दो पृथक् स्वतंत्र राज्य घोषित कर दिये गए ।

रुआण्डा की कुल आबादी लगभग 25,00,000 है । इसमें लगभग 84 प्रतिशत हुतू जाति के, 15 प्रतिशत तुत्सी तथा 1 प्रतिशत त्वा जाति के लोग रहते हैं । तुत्सी जाति यहाँ सामन्त-वर्ग है और इसी जाति के लोग गणराज्य बनने तक यहाँ शासन करते रहे हैं । त्वा जाति की संख्या हालांकि बहुत कम है पर इनका अपना स्थान है ।

1959 तक यहाँ तुत्सी जाति के लोग बहुसंख्यक जाति हुतू पर निश्चिन्त होकर शासन करते रहे । तुत्सी जाति का ही यहाँ राजा होता था जिसे यहाँ की भाषा में म्वामी कहते हैं । जुलाई, 1959 में मुतारा तृतीय की मृत्यु हो जाने पर जब युवा किगेरी (पंचम) यहाँ म्वामी बने तब से ही यहाँ गृह-युद्ध की स्थिति बनने लगी और नवम्बर, 1959 में यहाँ हुतू और तुत्सी जाति के बीच परस्पर लड़ाई छिड़ गई । तुत्सी जाति के बहुत-से लोग शरणार्थी बनकर पड़ौसी देशों में चले गए । स्वयं म्वामी (नरेश) भी टांगानिका में शरण लेने चले गए ।

बेलजियन शासन के अधीन यहाँ जुलाई, 1960 में कौंसिल के चुनाव हुए थे । इनमें हुतू जाति से 35, तुत्सी के 12 और त्वा के 1 सदस्य चुने गए थे । बेलजियम सरकार ने इस कौंसिल का दर्जा बढ़ा दिया और हुतू जाति के नेता कायिबन्दा को प्रधान बनाया गया । तुत्सी जाति को यह सब पसंद नहीं था । उसके हाथों से सदियों से सुरक्षित सत्ता छिन रही थी, पर वह तो बहुमत की जीत थी । सितम्बर, 1961 में यहाँ राष्ट्र संघ की देख-रेख में चुनाव हुए । इसमें वयस्क मताधिकार के आधार पर 42 सदस्यों की राष्ट्रीय असेम्बली के चुनाव हुए । हुतू जातिके दल परमेहुतू को 44 में से 35 स्थान तथा तुत्सी के दल 'उनार' को केवल 7 स्थान ही मिले । हालांकि हुतू जाति 1959 से ही शासक बन गई थी पर इन चुनावों ने इसे और पुष्ट कर दिया । 1961 ही में रुआण्डा गणराज्य बन गया । कायिबन्दा राष्ट्रपति चुने गए तथा हुती मंत्रिमण्डल बनाया गया ।

1 जुलाई, 1962 को रुआण्डा पूरी तरह स्वतंत्र हो गया । यहाँ गणतांत्रिक शासन व्यवस्था है । राज्य का प्रधान राष्ट्रपति होता है । यहाँ के राष्ट्रध्वज में लाल, पीले व हरे रंग की खड़ी पट्टियाँ हैं ।

एक तुत्सी नर्तक

जन-जीवन—रुआण्डा में लोगों का मुख्य धंधा खेती और पशुपालन है । हुतू जाति के लोग ज्यादातर खेतिहर ही हैं । यहाँ मटर, सेम, ज्वार, मकई, शकरकंद आदि की फसलें उगाई जाती हैं । टमाटर, लालमिर्च मूंगफली भी उगाई जाती हैं । हुतू झोपड़ियों के पास ही केले के पेड़ भी होते हैं । केला भोजन में भी काम

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

आता है और शराब बनाने में भी। सामाजिक उत्सवों में केले की शराब पिलाने का रिवाज है।

तुत्सी जाति के लोग अपनी असाधारण लम्बाई के लिए विख्यात हैं। 6 से 7 फुट के बीच के तुत्सी लोग संसार में सबसे लम्बे लोग हैं। अत: 7-8 फुट की कुदाई कूदना इनके लिए बड़ी साधारण बात है। तुत्सी जाति को नृत्य व गान से बहुत प्रेम है। जानवरों के बाल अथवा पंख सिर पर लगाकर और विचित्र परिधान पहन कर ये कई नृत्य करने में निपुण हैं। त्वा जाति के लोग कुम्हारी कला में सिद्धहस्त हैं। रुआण्डा की स्त्रियों में हुक्का पीने का रिवाज भी आम है।

रुआण्डा की आर्थिक स्थिति अच्छी नहीं है। यहाँ की एक प्रमुख समस्या घनी आबादी है। रुआण्डा में प्रति वर्ग मील में 241 व्यक्ति रहते हैं।

देश के लगभग मध्य में स्थित किगाली यहाँ की राजधानी है।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

23. बुरुण्डी

(BURUNDI)

क्षेत्रफल : 10,474 वर्ग मील **जनसंख्या** : 25,00,000

रुआण्डा के दक्षिण में अवस्थित बुरुण्डी भी 1 जुलाई, 1962 को रुआण्डा के साथ ही स्वतन्त्र हुआ था। अन्तर यही है कि रुआण्डा एक गणराज्य बन गया पर बुरुण्डी में राजतन्त्रीय शासन है।

बुरुण्डी के पूर्व में टांजानिया है तथा पश्चिम में काँगो गणराज्य। इसका क्षेत्रफल 10,474 वर्ग मील है जो रुआण्डा से थोड़ा अधिक है। रुआण्डा की तरह उसके पश्चिमी भाग में भी पर्वत श्रेणियाँ हैं और पूर्व में कुछ नदियाँ हैं।

रुआण्डा की तरह बुरुण्डी का इतिहास इतना जाना-पहिचाना नहीं है। इसका मुख्य कारण यह है कि रुआण्डा नरेश अपने दरबार में इतिहासकार और कवियों को उचित स्थान देते थे पर बुरुण्डी में ऐसी प्रथा नहीं थी। एन्तारे प्रथम यहाँ के पहले नरेश माने जाते हैं। रुआण्डा की तरह यहाँ के नरेश भी 'म्वामी' कहलाते हैं। पहले इसका क्षेत्र छोटा था पर धीरे-धीरे बढ़ता गया। एन्तारे तृतीय ने रुआण्डा पर भी हमला किया और उसका एक इलाका बुंगवे छीन लिया। इनके बाद के नरेशों ने भी इलाका और बढ़ाया। 1908 में यहाँ मुनागा चतुर्थ गद्दी पर आसीन थे और इनके बाद म्वामबुतूसा चतुर्थ 1915 में सिंहासनारूढ़ हुए। ये अब भी बुरुण्डी के म्वामी हैं। जर्मनी ने यहाँ 1895 में आक्रमण किया था और 1903 तक बुरुण्डी नरेश ने जर्मनी का आधिपत्य स्वीकार नहीं किया। आखिरकार यह भी रुआण्डा की भाँति जर्मनी के अधीन हो गया और प्रथम विश्वयुद्ध के पूर्व तक जर्मनी द्वारा शासित होता रहा। प्रथम विश्वयुद्ध के दौरान 1916 में यहाँ बेल्जियम सेना आ गई और रुआण्डा सहित यह बेलजियम के कब्जे में आ गया।

पहले लीग ऑफ नेशन्स और बाद में संयुक्त राष्ट्र संघ के संरक्षित प्रदेश के रूप में बेलजियम इसका शासन करता रहा।

बुरुण्डी की जनसंख्या भी लगभग 25 लाख है। यहाँ रहने वाली जातियों का अनुपात भी लगभग रुआण्डा की तरह ही है। हुतू यहाँ भी बहुमत में हैं और शासनारूढ़ जाति तुत्सी है। यहाँ यह जातियाँ परस्पर काफी घुल-मिल गई हैं। म्वामी यानी नरेश का अब भी प्रभाव है। हुतू व तुत्सी जातियों का काम-धंधा व रहन-सहन रुआण्डा की तरह है।

रुआण्डा की उथल-पुथल का असर यहाँ भी पड़ा, चाहे उसका रूप कैसा भी रहा हो। यहाँ जो राजनैतिक दल हैं वे 1960 के आस-पास ही बने हैं। एक है : उपरोना (एकता व राष्ट्रीय प्रगति दल) जिसे म्वामी (नरेश) का संरक्षण प्राप्त है। म्वामी के बड़े लड़के खागासोर इसके नेता थे। दूसरा है सरदार करायका का दल क्रिश्चियन

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

डेमोक्रेटिक पार्टी। खागासोर के दल 'उवेरोने' को सितम्बर, 1961 में हुए आम चुनावों में बहुमत प्राप्त हुआ था और वे बुरुण्डी के प्रधानमन्त्री बनाये गए। पर अक्तूबर, 61 में उनकी हत्या कर दी गई। इनके बाद अन्द्रे मुहरबा प्रधानमन्त्री पद पर आसीन हुए।

रुआण्डा की तरह बुरुण्डी में भी राष्ट्र संघ के जून, 62 के प्रस्ताव के अनुसार राष्ट्रसंघीय संरक्षण समाप्त हो गया और इसे 1 जुलाई, 1962 को पूर्ण स्वाधीनता मिल गई।

स्वाधीनता के बाद यहाँ संवैधानिक राजतन्त्रीय शासन है। राजाध्यक्ष है नरेश। कार्यकारी प्रमुख प्रधान मंत्री है जो 64 निर्वाचित तदस्यों की असेम्बली के प्रति उत्तरदायी है। बुरुण्डी के राष्ट्रीय ध्वज में लाल, सफेद व हरे रंग हैं। यहाँ की देशी भाषा किरूण्डी है।

बुरुण्डी की आर्थिक स्थिति भी रुआण्डा की तरह ही खराब है। जनसंख्या वृद्धि की तेज गति, पशुओं का आधिक्य तथा उद्योगों का अभाव मुख्य समस्याएँ हैं। टांज़ानिया इसके लिए अब सहायता दे रहा है। बुरुण्डी और टांज़ानिया में हाल ही में सम्बन्ध काफी बढ़े हैं।

बुरुण्डी की राजधानी उसम्बरा टांगानिका झील के किनारे पर स्थित एक साधारण नगर है। लगभग मध्य में अवस्थित कितेगा भी यहाँ का प्रमुख नगर है।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

24. अंगोला

(ANGOLA)

क्षेत्रफल : 4,81,351 वर्ग मील **जनसंख्या** : 45,30,700

कांगो गणराज्य के दक्षिण-पश्चिम में अंगोला है जो पुर्तगाल के अधीन है। इसके पूर्व में जैम्बिया तथा दक्षिण में दक्षिण-पश्चिमी अफ्रीका और बेचुआना हैं। पश्चिम में अतलांतक महासागर है और उसकी कोई 1,000 मील लम्बी तट रेखा है। इसका कुल क्षेत्रफल 4,81,351 वर्ग मील है, जो भारत का कोई एक तिहाई बैठता है।

इस देश के पश्चिमी भाग में 30 मील से लेकर 100 मील चौड़े तटवर्ती मैदान हैं। इन मैदानों के समानान्तर पूर्व में पठार हैं। ये पठार सामान्यतया सागरतल से 4,000 फुट से 6,000 फुट की ऊँचाई पर हैं। पठारी क्षेत्र क्रमशः पूर्व की ओर नीचा होता गया है। क्वान्जा और कुनेने यहाँ की प्रमुख नदियाँ हैं और ये अतलांतक महासागर में गिरती हैं। कसाई और कुआंगो अन्य छोटी नदियाँ हैं।

इतिहास की झलक—अंगोला का नामकरण यहीं के एक राजा अंगोल के नाम पर हुआ है जो प्राचीन काल में राज्य करता था। पुर्तगाली यहाँ 1482 में आये थे और लगभग 500 वर्ष के उपरान्त भी इसे वे स्वतन्त्र करने को तैयार नहीं हैं। पुर्तगालियों का मुख्य धन्धा गुलामों का व्यापार करना था। पुर्तगाली व्यापारियों ने अंगोला से इतने गुलाम पकड़ कर बेचे हैं कि यदि वे नहीं ले जाये गए होते तो आज अंगोला की आबादी अब से तिगुनी होती। यहाँ से गुलामों का इतना निर्यात हुआ कि दक्षिण अमेरिकी देश ब्राजील को तो अंगोला की 'माँ' कहा जाने लगा। गुलामों के अलावा यहाँ के हाथी दांत और सोना जैसे बहुमूल्य पदार्थ से भी पुर्तगालियों के मुँह खून लग गया और वे इस भू-भाग का शोषण करने के लिए यहाँ जमकर बैठ गए।

1951 में पुर्तगाल ने एक नया ढोंग रचा। अपने संविधान में संशोधन करके उसने उपनिवेशों को 'सागरपारीय प्रांत' का नाम दिया। यह सब ढकोसला है। फ्रांस भी कुछ समय पूर्व तक अल्जीरिया को अपना प्रांत कहा करता था। आखिर एक समय आया जबकि उसने हार स्वीकार कर ली और अल्जीरिया को स्वतन्त्र करना पड़ा।

स्वतन्त्रता आन्दोलन—अंगोला में भी अब स्वतन्त्रता संघर्ष का शुभारम्भ हो चुका है। 1961 के प्रारम्भ से अंगोला के राष्ट्रवादियों ने पुर्तगाल के खिलाफ हिंसात्मक विद्रोह कर दिया है और पुर्तगाल ने उसका बदला चुकाया है—निर्ममता से अत्याचार करके। आजादी की माँग करने के अपराध में पुर्तगाली सैनिकों ने अंगोलाई लोगों के गाँव-गाँव जलाकर राख कर दिये और लाखों लोगों को मौत के घाट उतार दिया। पर स्वतन्त्रता की आग इससे बुझ नहीं सकी। नई दिल्ली में अक्टूबर, 61 के पुर्तगाली बस्तियों पर हुई गोष्ठी में अंगोला के राष्ट्रवादी नेता साविम्बी और वियाना आये थे। उन्होंने बताया कि मूलतः अंगोलावासी शांतिप्रिय लोग हैं पर पुर्तगाली अत्याचारों ने उन्हें विवश कर दिया है कि वे पुर्तगाल के विरुद्ध शस्त्र उठायें। पुर्तगाल राष्ट्रवादियों पर अनगिनित अत्याचार ढा रहा है। सारे विश्व में इससे गहरी चिन्ता फैल गई। संयुक्त राष्ट्र

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

संघ में प्रस्ताव पास किये गए कि अंगोला की वर्तमान स्थिति बनी रहने से अंतराष्ट्रीय शांति व सुरक्षा को खतरा है। पर पुर्तगाल के कान पर जूँ तक नहीं रेंगी। राष्ट्रसंघ ने अंगोला की जांच-पड़ताल करने के लिए एक कमीशन भी बनाया पर पुर्तगाल ने उसे अंगोला में जाने की इजाज़त नहीं दी।

1962 के शुरू में राष्ट्रवादी नेता रोबर्टो ने कांगो की राजधानी लियोपोल्डविल में निर्वासित अंगोलाई सरकार बना ली है। अल्जीरिया के राष्ट्रवादी अब अंगोला के राष्ट्रवादियों को प्रशिक्षण दे रहे हैं। अफ्रीका के अन्य स्वतन्त्र देश भी अंगोला के राष्ट्रवादियों की मदद कर रहे हैं। मई, 1963 में हुए स्वतन्त्र अफ्रीकी देशों के आदिस अबाबा सम्मेलन में यह निर्णय किया गया है कि पराधीन अफ्रीकी देशों को स्वाधीन कराने के लिए हर प्रकार की सहायता दी जायेगी।

जन-जीवन—अंगोला की कुल जनसंख्या 45,30,700 है। इनमें से अधिकांश लोग बांतू नस्ल के नीग्रो हैं। दक्षिण-पूर्वी भाग में कुछ बुशमैन भी रहते हैं। बांतू नस्ल के लोगों में उत्तरी भाग में बकांगो, मध्य में अम्बुण्डा और पश्चिमी भाग में बंगाला जातियाँ रहती हैं। ये लोग मूर्तिपूजक हैं। उत्तर में किसी कांगो उत्तर व मध्य में किम्बुण्डू, पूर्ववर्ती उच्चभूमि में उम्बुण्डू व लोवितो तथा दक्षिण में लुसाई भाषाएँ बोली जाती हैं। पुर्तगाली शासन के कारण पुर्तगाली यहाँ की राज-भाषा है।

यहाँ के लोग मुख्यतया खेती-बाड़ी का काम करते हैं। अच्छी और उर्वर जमीन यूरोपियों के कब्ज़े में है और वे कॉफी-बागान से खूब धन कमाते हैं। यहाँ के मूल निवासी तो गुलामों का सा जीवन व्यतीत कर रहे हैं।

अंगोला की सबसे शर्मनाक प्रथा बेगार अथवा जबरन मज़दूरी की है। यहाँ के लोगों से ज़बरदस्ती काम कराया जाता है। केवल बहुत बूढ़े और रोगियों को छोड़कर शेष सब के लिए मज़दूरी करना अनिवार्य होता है। पारिश्रमिक कभी बहुत मामूली और कभी बिलकुल नहीं दिया जाता। काम से इन्कार करने पर मज़दूरों को हण्टरों से पीटा जाता है। यहाँ के लोगों का जीवन गुलामों से बदतर है। कुछ समय पहले सांतामारिया जहाज़ के विद्रोही कप्तान गलवायो ने पुर्तगाली उपनिवेशों के सम्बन्ध में अपनी एक रिपोर्ट प्रकाशित करवाई थी। इस रिपोर्ट में कहा गया कि जबरन मज़दूरी से अंगोला में वही व्यक्ति छुटकारा पा सकते हैं जो मर जाते हैं या बहुत बीमार हो जाते हैं। अंगोला के सरकारी अधिकारियों के पास एक सूची होती है जिसमें लगभग सभी स्वस्थ अफ्रीकियों के नाम होते हैं। किसी फर्म या ठेकेदार को मज़दूरों की ज़रूरत होती है तो वह सरकारी अधिकारी को लिख देते हैं। सरकारी अधिकारी उसी सूची में से आवश्यक मज़दूर भेज देते हैं। मज़दूरों से पूछने या मज़दूरी ठहराने की स्वतन्त्रता नहीं है। उनके लिए वहाँ जाकर काम करना अनिवार्य है। अगर मज़दूर बीमार हो जाएँ तो उनके इलाज पर पैसा खर्च करने की मूर्खता कोई ठेकेदार या फर्म नहीं करती, क्योंकि जितने मज़दूर मर जाते हैं, उतने ही सरकारी सूची में से और आ जाते हैं।

पुर्तगालियों की यह मान्यता है कि सभी मूल अफ्रीकी असभ्य होते हैं। तभी तो उन्होंने ऐसी व्यवस्था रखी है कि कुछ लोग चाहें तो 'सभ्य' बन सकते हैं। पुर्तगाली नियमों के अनुसार 'सभ्य' बनने वालों को 'ऐसीमिलेडो' कहा जाता है। 'ऐसोमिलेडो' बनने के लिए अफ्रीकियों को कुछ शर्तें पूरी करनी होती हैं। एक परीक्षा पास करने, पुर्तगाली भाषा सीखने, ईसाई धर्म स्वीकार कर लेने, निर्धारित आर्थिक स्थिति होने और अपने पुराने रिवाज जैसे बहुपत्नीत्व, छोड़ देने के बाद 'सभ्य' होने का प्रमाण-पत्र मिल जाता है। यह एक कठिन काम है, उसके लिए एक 'ट्रिब्यूनल' को आवेदन-पत्र देना होता है। पुर्तगालियों ने सोचा था कि इस तरीके से अफ्रीकियों में से ही कुछ

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

लोग उनके अपने हो जाएँगे और अंगोला या अन्य उपनिवेशों में अफ्रीकी राष्ट्रवाद जड़ें न जमा सकेगा। पर उनकी कल्पना मिथ्या सिद्ध हुई।

अंगोला की मुख्य पैदावार मकई, कॉफी और गन्ना है। यहाँ हीरों और तांबे की भी खानें हैं।

वैसे नाम को तो अंगोला की राजधानी दक्षिण पठार पर अवस्थित 'नोवा लिस्बोआ' है पर वास्तव में राजधानी लुआण्डा ही है जो एक तटवर्ती नगर भी है। अंगोला में जितने यूरोपीय हैं, वे लगभग सब यहीं रहते हैं।

अंगोला के राष्ट्रवादी कवि अगस्तीनो नेतो की कुछ पंक्तियाँ

"मेरी माँ,
(श्यामवर्णी माँ जिसके बेटे चले जाते हैं)
तुमने मुझे प्रतीक्षा और आशा करना सिखाया
जैसा कि तुमने स्वयं अपने कठिन समय में सीखा था
पर माँ अब मुझ में,
जीवन ने आशा को नष्ट कर दिया है,
मैं वह नहीं हूँ जो प्रतीक्षा करता है,
मैं वह हूँ जिसकी प्रतीक्षा की जाती है,
हम हैं आशा,
तुम्हारी सन्तान.....
जीवन की खोज में"

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

25. जैम्बिया

(ZAMBIA)

क्षेत्रफल : 2,90,587 **वर्गमील** **जनसंख्या** : 35,00,000

अंगोला के पूर्व में स्थित है जैम्बिया। यह 24 अक्तूबर, 1964 को ब्रिटेन की पराधीनता से स्वतन्त्र हुआ था। इसे पहले उत्तरी रोडेशिया कहते थे। उत्तरी रोडेशिया, दक्षिणी रोडेशिया तथा न्यासालैण्ड को मिलाकर 1953 में मध्य अफ्रीका संघ बनाया गया था। इसमें प्रवासी यूरोपीय गोरों का प्रभुत्व था। अफ्रीकी इस व्यवस्था से बहुत असंतुष्ट थे। इस संघ को तोड़ने के लिए उत्तरी रोडेशिया और न्यासालैण्ड में ज़ोरदार आन्दोलन चला। आखिर 31 दिसम्बर, 1963 को यह संघ टूट गया और तीनों प्रदेश अलग-अलग हो गए।

ज़म्बिया देश कांगो नदी के बेसिन के दक्षिणी सिरे से लेकर जम्बेज़ी तक फैला है। इसके दक्षिण में रोडेशिया और बेचुआना, पश्चिम में अंगोला, उत्तर में कांगो गणराज्य, पूर्व में टांज़ानिया व मलावी तथा दक्षिण-पूर्व में मोज़ाम्बीक है। इसका कुल क्षेत्रफल 2,90,587 वर्गमील है। ज़ैम्बिया की अधिकांश भूमि पठारी है जो सागर तल से 3000 से 4000 फुट की ऊँचाई पर है। उत्तरी-पूर्वी भाग पहाड़ी है और वहाँ की ऊँचाई कोई 5000 फुट से भी अधिक चली गई है। इस उच्च भूमि को लुआंगवा नदी की निचली घाटी अलग करती है। लुआंगवा घाटी के पश्चिम में नुचिगा पर्वतमाला है। वहीं एक छिछली झील बंगवेलू तथा उसकी दलदलीय भूमि है। यहीं कांगो नदी की एक धारा लुआपूला भी बहती है। दक्षिणी भाग में जम्बेजी नदी है जो बरोत्सोलैंड के लोगों को बाढ़ के कारण हर वर्ष स्थानांतरण के लिए मज़बूर कर देती है। यह नदी कई दर्रों और घाटियों में से होकर निकलती है तथा कई प्रपात बनाती है। इनमें से एक विश्व प्रसिद्ध 'विक्टोरिया प्रपात' है जो रोडेशिया की सीमा के पास है। यहाँ ज़म्बेजी कोई सवा मील चौड़ी है। यहाँ 350 फुट की ऊँचाई से जब पानी गिरता है तो एक अनोखा नज़ारा होता है। यह मीलों दूर से ही दिखाई पड़ जाता है। इसका स्थानीय नाम 'मूसीओआ तुन्या' है जिसका अर्थ है गरजने वाला धुआँ। जम्बेज़ी की ही सहायक नदी काफुए पश्चिमी व मध्य भाग में बहती है। दक्षिण में रोडेशिया की सीमा पर, मानव निर्मित विशाल करीबा झील तथा बाँध है।

उत्तरी रोडेशिया की जलवायु मौसमी है। गर्मियों में अधिक वर्षा होती है और सर्दियाँ शुष्क जाती हैं। पठारों की ऊँचाई के कारण यहाँ तापमान अपेक्षाकृत कम करता है।

अतीत की झलक—यह भू-भाग प्राचीन मानव की रंगभूमि के रूप में प्रसिद्ध है। 1921 में ब्रोकन हिल के पास एक गुफा में मानव की खोपड़ी के अवशेष प्राप्त हुए थे। इसके अलावा यहाँ लकड़ी की कुदालियाँ, पत्थर के औज़ार भी प्राप्त हुए हैं, जिनके बारे में कहा जाता है कि वे 36 हज़ार वर्ष पुराने हैं। 1964 के आरम्भ में राजधानी लुसाका के 70 मील दक्षिण में जो कब्रों की खुदाई हुई उससे पता चलता है कि यहाँ सन् 850 ई० में सूती कपड़ा बुनने वाले लोग रहते थे।

यूरोपीयों के आने के पूर्व इस क्षेत्र में कई अफ्रीकी जातियाँ रह रही थी। इनमें उत्तरी-पश्चिमी भाग में

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अवस्थित बरोत्से जाति सबसे अधिक संगठित और व्यवस्थित थी। सर्वप्रथम पुर्तगालियों ने इधर प्रभाव बढ़ाने की कोशिश की पर वे सफल नहीं हुए। इस क्षेत्र को खोजने में डेविड लिविंगस्टन का महत्त्वपूर्ण योग रहा है। उन्होंने 1851 व 1872 के बीच इस क्षेत्र की कई यात्राएँ कीं। उनके कई यात्रा-वृतान्त तात्कालीन स्थिति पर प्रकाश डालते हैं। इस साहसी यात्री की उत्तर-पूर्वी रोडेशिया में ही मृत्यु हो गई। लिविंगस्टन के बाद यहाँ ईसाई मिशनरियों ने अपना काम ज़ोरों से चलाया पर राजनैतिक प्रभाव बढ़ाने का मुख्य श्रेय महत्त्वाकांक्षी सेसिल रोड को है। रोड ने धन और कुशाग्र बुद्धि के बल पर दक्षिण रोडेशिया को जीतने के बाद उत्तर की ओर हाथ बढ़ाया। रोड के कुछ दूतों ने उत्तरी रोडेशिया के सरदारों से संधि पर हस्ताक्षर करा लिये और वह भाग रोड द्वारा निर्मित कम्पनी के अधिकार में आ गए। 1900 में बरोत्से नरेश को भी फुसला लिया गया पर बरोत्से के साथ की गई संधि में यह स्पष्ट उल्लेख था कि इससे बरोत्से नरेश के वैधानिक अधिकारों में कोई अन्तर नहीं आयेगा तथा बरोत्से नरेश की अनुमति के बिना वहाँ बाहर के लोग नहीं बसाये जाएँगे। 1911 के पूर्व उत्तरी रोडेशिया दो भागों में विभक्त था—उत्तर-पश्चिमी रोडेशिया और उत्तर-पूर्वी रोडेशिया। 1911 में दोनों भागों को मिलाकर उत्तरी रोडेशिया नाम रखा गया और शासन मुख्यतया कम्पनी का बना रहा। 1924 से यह विधिवत् ब्रिटेन का एक रक्षित प्रदेश बन गया। 1953 में यह रोडेशिया व न्यासालैण्ड संघ में शामिल कर लिया गया। पर उत्तरी रोडेशिया के लोग इस संघ में नहीं रहना चाहते थे। इस संघ का मुख्य उद्देश्य उत्तरी रोडेशिया की ताम्बे की बड़ी-बड़ी खानों के लिए सस्ते अफ्रीकी मज़दूर जुटाना था, पर लाभ यूरोपीय प्रवासियों के लिए सुरक्षित रखना था। इस संघ के जन्म से ही अफ्रीकियों ने इसका डटकर विरोध किया।

उत्तरी रोडेशिया वैधानिक रूप से ब्रिटेन का एक संरक्षित प्रदेश था अतः उसे स्वतन्त्र करने की ज़िम्मेदारी ब्रिटेन की ही थी। दिसम्बर, 1962 में यहाँ ब्रिटिश सरकार ने ऐसी असेम्बली की स्थापना की जिसमें अफ्रीकियों का बहुमत था। जनवरी, 1964 में यहाँ पहले आम चुनाव हुए और डा० कीनिथ कौण्डा के दल यूनाइटेड नेशनल इंडिपेण्डेन्स पार्टी को भारी बहुमत प्राप्त हुआ। और डा० कौण्डा प्रधान मन्त्री बने। इसके बाद ब्रिटेन से स्वाधीनता के लिए बातचीत चली और वह इसे 24 अक्तूबर, 1964 को स्वतन्त्र करने के लिए तैयार हो गया। निर्धारित तिथि को यह स्वतन्त्र हो गया।

शासन-व्यवस्था—अब ज़ैम्बिया एक स्वतन्त्र गणराज्य है। राष्ट्रपति, राजाध्यक्ष और कार्यकारी प्रमुख दोनों होता है। प्रथम राष्ट्रपति का चुनाव स्वतन्त्रता-पूर्व की विधान सभा के सदस्यों ने किया था। बाद में आम चुनावों में राष्ट्रपति और राष्ट्रीय असेम्बली का चुनाव साथ-साथ हुआ करेगा। राष्ट्रपति, एक उप-राष्ट्रपति और मंत्रिमण्डल के सहयोग से शासन चलाते हैं।

राष्ट्रीय असेम्बली विधान बनाने का कार्य करती है। इसमें 75 निर्वाचित सदस्य होते हैं। इनमें से 10 स्थान यूरोपीय प्रवासियों के लिए आरक्षित हैं।

लाल, काले, हरे व नारंगी रंग का यहाँ राष्ट्रध्वज है।

यहाँ के तीन प्रमुख राजनीतिक दल हैं : डा० कौण्डा की यूनाइटेड इण्डिपेण्डेन्स पार्टी, डा० एंकूबूला की अफ्रीकी नेशनल काँग्रेस तथा नेशनल प्रोग्रेस पार्टी।

जन-जीवन—यहाँ की कुल आबादी लगभग 22 लाख 80 हजार है। इसमें 22 लाख अफ्रीकी हैं, 72 हजार यूरोपीय तथा कोई 8 हजार भारतीय हैं। अफ्रीकियों की सबसे बड़ी जाति बरोत्से है। बरोत्से जाति

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

की अपनी एक सुगठित रियासत है—बरोत्सेलैण्ड । इसे ज़ैम्बिया में विशेष स्थिति प्राप्त है ।

इसके पूर्वोत्तर भाग में एक अन्य प्रमुख जाति रहती है वेम्बा । वेम्बा जाति की प्रशासन व्यवस्था भी बहुत अच्छी है । इनका सारा क्षेत्र ज़िलों में बँटा है । हरेक जिला प्रमुख सरदार के लड़कों अथवा रिश्तेदारों के सुपुर्द है । सरदार की शासन परिषद् में दो प्रकार के सदस्य होते हैं एक यो वंशानुगत जो सरदार के सलाहकार भी होते हैं । दूसरे वे लोग जो क़ानून और रीति-रिवाज़ों का अच्छा ज्ञान होने के कारण चुने जाते हैं । इस प्रकार के सदस्यों को सिर पर विशेष प्रकार के पंख लगाने की अनुमति होती है और इनका काफी सम्मान किया जाता है । एक सरदार की मृत्यु हो जाने पर दूसरे सरदार का चुनाव करने में इनकी सलाह ली जाती है । वेम्बा जाति में कृषि की समृद्धि के लिए एक समारोह मनाया जाता है जिसमें प्रमुख सरदार एक विशेष रूप से बनाई हुई कुल्हाड़ी से एक वृक्ष काटता है तथा पूर्वजों की आत्माओं से प्रार्थना करता है कि उनकी खेती सफल हो ।

बरोत्सेलैण्ड के दक्षिणवर्ती भाग में एक जाति रहती है—टोंगा । इन लोगों में सरदार बनाने की प्रथा नहीं है पर नथुनों में हाथी दाँत की कील पहनने की प्रथा है । इला, मकिशी और लोई अन्य जातियाँ हैं । जैम्बिया में भारतीय अफ्रीकियों के साथ सौहार्दपूर्ण वातावरण में रह रहे हैं । राष्ट्रपति श्री कौण्डा कई बार भारत-यात्रा कर चुके हैं । श्रीमती इन्दिरा गांधी और श्री दिनेशसिंह भी जैम्बिया गए थे । भारत अब वहाँ धातु गलाने का एक संयंत्र बनाने में मदद दे रहा है । यहाँ जमीन की कमी नहीं । जब कोई गाँव बहुत गन्दा हो जाता है, या वहाँ सरदार की मृत्यु हो जाती है तो वह गाँव जलाकर राख कर दिया जाता है और एक दूसरा स्थान चुन कर नया गाँव बस जाता है । मकई से बनाई हुई शराब पीना और नृत्य-गान यहाँ आम मनोरंजन हैं ।

अर्थ-व्यवस्था—ज़ैम्बिया की अर्थ-व्यवस्था मुख्यतः ताम्बे की खानों पर आधारित है । उत्तरी भाग में कांगो की सीमा के पास ये खानें हैं । इस समय 6 बड़ी खानों में काम चल रहा है । जहाँ-जहाँ खानें हैं वहाँ नई बस्तियाँ बस गई हैं । इनमें काफी तादाद में अफ्रीकियों को रोज़गार मिला हुआ है । इन खानों से कोई 5 लाख टन ताम्बा प्रतिवर्ष निकाला जाता है । संसार के ताम्बा उत्पादक देशों में ज़ैम्बिया का तीसरा स्थान है । आज़ादी के पहले ताम्बे की खानों पर ब्रिटिश-साउथ अफ्रीका कम्पनी का नियन्त्रण था, पर अब ये राष्ट्रीय सरकार के हाथ में हैं । ताम्बे के अलावा, सीसा, जस्ता, कोबाल्ट भी निकाला जाता है ।

खाद्यान्नों में यहाँ की मुख्य फसल मकई है । मकई यहाँ का मुख्य भोजन है । तम्बाकू भी खूब उगाई जाने लगी है और इसका निर्यात किया जाता है ।

देश के लगभग मध्य में अवस्थित लुसाका यहाँ की राजधानी है । यह एक सुन्दर नगर है जिसमें चौड़ी-चौड़ी व साफ सड़कें तथा ऊँची-ऊँची इमारतें हैं । लुसाका से भी अधिक सुन्दर नगर लिविंगस्टन है । यहाँ का संग्रहालय देखने योग्य है । लुसाका से कुछ दूर काफुए नेशनल पार्क है जहाँ अनेक जंगली जानवर हैं ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

26. मलावी

(MALAWI)

क्षेत्रफल : 36,871 **वर्गमील** **जनसंख्या** : 32,50,000

जैम्बिया के पूर्व में तथा टांज़ानिया के पश्चिम में अवस्थित मलावी एक लम्बे कीड़े की सी आकृति का देश है। इसकी आकृति ही वेढव है अन्यथा यह एक सुरम्य भू-भाग है। न्यासा झील की प्रशांत नीली लहरें और आस-पास तीखे पहाड़ी ढालों की पृष्ठ-भूमि के कारण यह एक दर्शनीय देश है पर यहाँ के निवासी निर्धनता के बाहू-पाश में जकड़े हुए हैं।

इसका कुल क्षेत्रफल 36,871 वर्ग मील है जो पश्चिम बंगाल व त्रिपुरा के सम्मलित क्षेत्रफल से कुछ ही कम है। इसका मुख्य भाग न्यासा झील के पश्चिम में है। उत्तरी हिस्से भी ऊँचे पठार हैं और अधिकतम ऊँचाई 8,258 फुट है। रुकुरू, द्वांगवा बुआ लिन्तिपे नदियाँ इस भाग में बहती हैं। न्यासा का दक्षिणवर्ती भाग जो न्यासा झील के दक्षिण में फैला है, पश्चिम, दक्षिण तथा पूर्व में पुर्तगाल अधीन मोजाम्बीक से घिरा है। इसी भाग में यहाँ की प्रमुख नदी शीरे बहती है तथा यहीं यहाँ के प्रमुख नगर जोम्बा तथा ब्लेन्तायर स्थित हैं।

यूरोपीयों के आगमन के पूर्व, न्यासालैण्ड में भी कई कबीलों का राज्य था और उनके सरदारों का शासन चलता था। लिविंग्स्टन ने 1859 में न्यासा झील की खोज की थी और आज भी उस साहसी ब्रिटिश यात्री के स्मृति-चिह्न यहाँ मौजूद हैं। इस देश के उत्तरी भाग में न्यासा झील के पश्चिमी तट की तरफ एक नगर का नाम लिविंग्स्टनियो है। लिविंग्स्टन के बाद ईसाई धर्म के प्रचारकों ने यहाँ अपना प्रचार शुरू कर दिया। न्यासा-लैण्ड को ब्रिटेन ने कभी जीता नहीं था। 1889 में ब्रिटिश साउथ अफ्रीका कम्पनी की ओर से हैरी जोन्स्टन को यहाँ भेजा गया था। रोडेशिया को जीतने वाले महत्वाकांक्षी रोड ने इसे 10,000 पौण्ड दिये थे। जोनस्टन ने यहाँ के सरदारों को फुसला कर संधियों पर हस्ताक्षर करा लिए और इस प्रकार वे ब्रिटेन के संरक्षण में आ गए। 1891 में ब्रिटेन ने इसे अपना रक्षित प्रदेश घोषित किया था।

यहाँ के सरदारों और जनता के घोर विरोध के बावजूद इसे 1953 में ज़बरदस्ती मध्य अफ्रीका संघ में शामिल कर दिया गया।

1959 मे डा० हैस्टिंग्ज बांडा के यहाँ आने पर राष्ट्रीय आन्दोलन ने बल पकड़ा। 1961 में यहाँ आम चुनाव हुए थे उसमें डा० बांडा की मलावी कांग्रेस विजयी हुई। इस दल ने इस प्रश्न पर ही चुनाव लड़ा था कि न्यासालैण्ड को मध्य अफ्रीकी संघ से पृथक् करना चाहते हैं। ब्रिटिश सरकार ने यह मान लिया है कि डा० हैस्टिंग्ज बाँडा को न्यासालैण्ड पृथक् करने के मामले में जनता का समर्थन प्राप्त है। अप्रैल, 1964 में यहाँ स्वतन्त्रता पूर्व के आम चुनाव हुए और डा० हैस्टिंग्ज बांडा का दल फिर विजयी रहा। 6 जुलाई, 1964 को यह देश ब्रिटेन की पराधीनता से मुक्त हुआ।

शासन-व्यवस्था—मलावी एक स्वतन्त्र देश है और ब्रिटिश राष्ट्रमण्डल का सदस्य भी है। राजाध्यक्ष ब्रिटेन की रानी द्वारा मनोनीत गवर्नर जनरल होता है। पर व्यावहारिक रूप में प्रधानमंत्री सर्वेसर्वा हैं।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

हैस्टिंग्ज बांडा प्रधानमंत्री हैं। वैधानिक कार्य के लिए जनता द्वारा निर्वाचित 50 सदस्यों की असेम्बली है। काले लाल व हरे रंग का यहाँ राष्ट्रध्वज है।

जन-जीवन—न्यासालैण्ड की जनसंख्या 32,50,000 है। अपेक्षाकृत यह एक घना आबाद देश है। कुछ भारतीय भी यहाँ रहते हैं।

अफ्रीकियों की मुख्य जातियाँ अंगोनी, याओ, चेवा आदि हैं।

अंगोनी जाति को जुलू जाति की शाखा बताया जाता है। कहते हैं शक के राज्यकाल में वे दक्षिण अफ्रीका से यहाँ आई थी। इनके कुछ रीति-रिवाजों में अब भी जूलू जाति की झलक मिलती है। यह एक शूरमा जाति है और युद्ध के तौर-तरीकों से सुपरिचित है। दूसरी मुस्लिम जाति है—याओ। यह टांगानिका तथा मोजम्बीक सीमा से इधर आई थी। ये मुख्यतया मुसलमान हैं। ये ज्यादातर दक्षिणी भाग में रहते हैं और खेती-बाड़ी करते हैं। याओ जाति के काफी लोग ज़ैम्बिया व रोडेशिया की खानों में काम करने जाते हैं। मंगंजा यहाँ की एक प्राचीन जाति है, जो मुख्यतया शीरे उच्च-भूमि में रहती हैं, इनकी भाषा चिन्यांजा ही मलावी की सरकारी भाषा है। जनसंख्या की दृष्टि से सबसे बड़ी जाति चेवा है और यह मध्य प्रांत में रहती है। तुम्बुका और अटोंगा अन्य जातियाँ हैं।

अंगोनी जाति की समाज-व्यवस्था पितृवंशीय है। शेष अन्य जातियों की मुख्यतया मातृवंशीय। इस प्रकार अंगोनी जाति में पिता और पुत्र का हक ज्यादा है, चेवा और अन्य जातियों में माँ व माँ के रिश्तेदारों का। इसी ढंग से अंगोनी जातियों में सरदार का बेटा गद्दी का हकदार होता है पर चेवा जाति में माँ का भाई या बहिन का लड़का। अंगोनी जाति में विवाह होने पर पत्नी पति के घर ही आती है, पर मातृवंशीय जातियों में पति पत्नी के घर जाकर रहता है।

मलावी के लोग परिश्रमी और हंसमुख होते हैं पर वे अन्धविश्वासी और रूढ़िवादी भी हैं। उपचार अथवा कार्य-सिद्धि के लिए जादू-टोने वालों के पास दौड़ते हैं।

अन्य अफ्रीकी जनों की भांति मलावी के लोगों को भी नृत्य से बड़ा प्रेम है। अधिकतर नृत्य रात्रि में सम्पन्न होते हैं, जब चन्दा की चांदनी छिटकी होती है। पर कई ऐसे भी नृत्य हैं, जो केवल दिन में किये जाते हैं। नृत्य के समय मुख्य वाद्ययन्त्र नगाड़े ही होते हैं। पर मगाण्डा नृत्य बिना नगाड़े के भी हो जाता है। मगाण्डा नृत्य में सब नर्तक हाथ में तूम्बी का सा वाद्ययन्त्र लिए होते हैं। नृत्यों में अन्य वाद्ययन्त्र सांसा तथा बांसुरी की तरह के यन्त्र का भी प्रयोग होता है।

आजकल गाँवों में गिटार और बैंजो जैसे आधुनिक वाद्ययन्त्र भी पहुँच गए हैं। वाकोण्डे जाति के लोग जेज़े नामक इकतारा बड़े चाव से बजाते हैं। मलावी लोग नाट्य कला में भी अब अधिकाधिक रुचि लेने लगे हैं। गाँवों में रात के समय कहानी-सुनाने और सुनने का भी बड़ा रिवाज है।

मलावी में खुदाई की कला भी काफी उन्नत है। कोटा नामक नगर में हाथी दाँत तथा लकड़ी की आकृतियाँ बड़ी सुन्दर बनती हैं, चटाई और टोकरियाँ बनाने की कला काफी विकसित है। कोई-कोई टोकरी तो इतनी अच्छी बनाई जाती हैं कि उसमें पानी या तरल पदार्थ भर कर रखा जा सकता है।

मलावी एक कृषि-प्रधान देश है। धान और मकई यहाँ का मुख्य अनाज, व्यापारिक फसलों में कपास तम्बाकू और चाय खूब उगाई जाती हैं।

ज़ोम्बा यहाँ की राजधानी है। प्राकृतिक दृष्टि से या अगठन है नूहर यहाँ कई मनोरम उद्यान हैं। ब्लैंतायर प्रमुख व्यापारिक नगर है। लिम्बे भी बड़ा शहर है।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

27. रोडेशिया

(RHODESIA)

क्षेत्रफल : 1,50,333 वर्गमील **जनसंख्या :** 40,00,000

ज़ैम्बिया के दक्षिण में, जम्बेज़ी और लिम्पोपो नदियों के बीच रोडेशिया स्थित है। इसे पहले दक्षिण रोडेशिया कहते थे। इसके दक्षिण-पश्चिम में बेचुआनालैण्ड, दक्षिण में दक्षिण-अफ्रीका तथा पूर्व में मोज़ाम्बीक हैं। इसका कुल क्षेत्रफल 1,50,333 वर्ग मील है। यहाँ की भी भूमि मुख्यतया पठारी और ऊबड़-खाबड़ है। कोई भी स्थान 1,000 फुट की ऊँचाई से कम नहीं है, कुछ भाग 5,000 फुट से भी अधिक ऊँचे हैं। अधिक ऊँचाई के कारण ही यहाँ का जलवायु उत्तम है। इस कारण यहाँ बहुत से यूरोपीय आ बसे हैं।

अतीत की झलक—रोडेशिया के भू-भाग का इतिहास काफी प्राचीन जान पड़ता है। जिम्बाबवे के समीप जो इमारतों के खण्डहर हैं, वे यह सिद्ध करते हैं कि यहाँ बहुत प्राचीन काल से कोई सभ्यता फल-फूल रही थी पर ये इमारतें कब बनीं और किसने बनवायी हैं, यह सब कुछ अभी रहस्य ही बना हुआ है।

1800 ई० के लगभग यहाँ मातावेले नामक शक्तिशाली राज्य था जिसके शासक मोसेलकात्से थे। मातावेले जाति दक्षिण अफ्रीका से खदेड़ी गई जाति ही है। 1870 ई० में मोसेलकात्से का पुत्र लोबेनगुला यहाँ सिंहासनारूढ़ हुआ था। इन्हीं दिनों एक अंग्रेज पादरी के पुत्र सेसिल रोड का, जो दक्षिण अफ्रीका में रहता था, ध्यान इस ओर आकृष्ट हुआ। इधर की खनिज-सम्पदा से लालायित होकर रोड ने इस भू-भाग पर अधिकार जमाने का सुनियोजित षड्यंत्र रचा। रोड ने अपना एक दूत लोबेनगुला के पास भेजा और 1888 में एक करार सम्पन्न हो गया जिसके अनुसार केवल 100 पौंड प्रति मास तथा कुछ शस्त्र व गोला-बारूद के बदले लोबेनगुला ने मातावेलेलैण्ड के 75,000 वर्गमील क्षेत्र के खनिजों का अधिकार रोड को सौंप दिया। रोड अपनी चतुराई की पहली सफलता से खिल उठा। उसने एक ब्रिटिश साउथ अफ्रीका कम्पनी बनाई और 1889 में इसे ब्रिटिश चार्टर दिलवा दिया। इस कम्पनी का काम था वाणिज्य व्यापार और तथाकथित सभ्यता का विस्तार। पर सबसे ज्यादा काम इसने राजनैतिक आधिपत्य के विस्तार का किया।

मातावेलेलैण्ड पर खनिज-अधिकार प्राप्त कर लेने के बाद रोड ने कुछ सैनिक दस्ते मातावेलेलैण्ड के उत्तर में स्थित मशोनालैण्ड भेजे और 13 सितम्बर, 1890 को उस स्थान पर यूनियन जैक लहरा दिया गया, जहाँ आजकल सैलिस बरी नगरी है। रोड केवल खनिज अधिकारों से संतुष्ट होने वाला व्यक्ति नहीं था, उसकी महत्त्वाकांक्षा तो झटपट राजनैतिक अधिकार जमाने की थी। अतः 1893 में मशोनालैण्ड और मातावेलेलैण्ड के बीच पशुओं के एक छोटे से झगड़े का बहाना लेकर रोड की सेना मातावेलेलैण्ड पर टूट पड़ी—मातावेलेलैण्ड के लोगों के पास नये ढंग के हथियार नहीं थे। अतः समर्पण कर दिया गया तथा लोबेनगुला नरेश बुलवायो के पास की पहाड़ियों में छिप गए। 1894 में वे वहीं मर गए। 1896 में मातावेलेलैण्ड और मशोनालैण्ड दोनों क्षेत्रों में सशक्त विद्रोह हुए पर तब तक रोड के सैनिक सुदृढ़ हो चुके थे अतः विद्रोह

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

निर्ममता से कुचल दिये गए। विद्रोह को कुचलने के पूर्व 1895 में ही रोड ने इस क्षेत्र को अपने नाम के आधार पर रोडेशिया नाम दे दिया।

1889 से 1914 तक इस इलाके का शासन ब्रिटिश साउथ अफ्रीका कम्पनी ही चलाती रही। इसी बीच यहाँ काफी यूरोपीय प्रवासी आकर बस गए। कुछ प्रवासियों का कहना था कि इस रोडेशिया को दक्षिण अफ्रीका का अंग बना दिया जाय। कुछ लोगों ने इसे ब्रिटिश उपनिवेश बनाना ठीक समझा। इस परस्पर संघर्ष का निपटारा 1922 में एक मतदान से हुआ (मतदान का अधिकार केवल यूरोपियों को था) और यह 1923 से एक स्वशासित ब्रिटिश उपनिवेश बन गया ('स्वशासित' शब्द से पाठक भ्रम में न पड़े, यहाँ स्वशासित का अर्थ स्थानीय गोरों के स्वशासन से है, सभी निवासियों के स्वशासन से नहीं)। 1953 में दक्षिण रोडेशिया उत्तर रोडेशिया व न्यासालैण्ड को मिलाकर मध्य अफ्रीकी संघ बनाया गया था। इसका अधिक फायदा यहाँ के यूरोपीय अल्पसंख्याकों को मिल रहा था। आर्थिक व राजनीतिक दोनों ही दृष्टि से यूरोपीय प्रवासी, अफ्रीकियों पर हावी थे। उत्तर रोडेशिया और नयासालैण्ड द्वारा संघ से पृथक् होने की ज़ोरदार माँग होने पर यह संघ 31 दिसम्बर, 1963 को भंग कर दिया गया।

1964 में उत्तर रोडेशिया और नयासालैण्ड के स्वतन्त्र हो जाने के बाद दक्षिण रोडेशिया ने अपना नाम रोडेशिया रख लिया। यहाँ के अल्पसंख्यक गोरे माँग करने लगे कि अब रोडेशिया को इकतरफा स्वतन्त्रता की घोषणा कर देना चाहिए। इस प्रश्न पर एक मतदान किया गया। इन मतदाताओं में से प्रत्येक 10 व्यक्तियों में से 9 यूरोपीय थे अतः स्वभावतः ही वह निर्णय निकाला गया कि लोग रोडेशिया की स्वतन्त्रता चाहते हैं। ब्रिटेन के प्रधान मन्त्री श्री विल्सन ने स्पष्टरूप से रोडेशिया के प्रधान मन्त्री को बता दिया कि एकतरफा स्वतन्त्रता की घोषणा अनुचित होगी। रोडेशिया के प्रति ब्रिटेन ज़िम्मेदार है अतः सभी अफ्रीकी देशों ने ब्रिटेन से अनुरोध किया है कि ब्रिटेन रोडेशिया को एकतरफा स्वतन्त्रता का एलान करने से रोके। वर्तमान संविधान के अन्तर्गत द० रोडेशिया की स्वतन्त्रता यहाँ के अफ्रीकियों की पराधीनता को चिरस्थाई बनाना है। वर्तमान संविधान के अनुसार 65 सदस्यों की संसद् में यूरोपीयों के 50 स्थान हैं अफ्रीकियों को मताधिकार न के बराबर है। आजकल स्मिथ यहाँ के प्रधान मन्त्री हैं। अफ्रीकियों का प्रमुख राष्ट्रवादी दल ज़िम्बाबवे अफ्रीकी पीपुल्स यूनियन है। जो शुओ एकोमो यहाँ के प्रसिद्ध राष्ट्रवादी नेता है।

जन-जीवन—रोडेशिया की कुल जन-संख्या 40,00,000 है इसमें लगभग 38 लाख अफ्रीकी हैं और 2 लाख यूरोपीय, पर यूरोपीयों ने सारी राजनैतिक सत्ता हथिया रखी है। आर्थिक दृष्टि से भी यूरोपीय ही छाये हुए हैं। कुल कृषि योग्य भूमि का 50 प्रतिशत भाग यूरोपीयों ने दाब रखा है। हालांकि वे वहाँ की कुल जनसंख्या के आठवें भाग से अधिक नहीं हैं। स्वास्थ्यप्रद जलवायु वाले स्थान और उर्वर भूमि यूरोपीय दाब बैठे हैं, अफ्रीकी तो अपने देश में ही बेगाने बन गए हैं। यहाँ कुछ भारतीय भी बसे हुए हैं।

अफ्रीकी जातियों में यहाँ दो अधिक प्रसिद्ध हैं। उत्तरवर्ती भाग में मशोना और दक्षिणवर्ती भाग में माताबेले। गाँवों में अधिकतर पुराने ढंग से ही लोग रहते हैं पर शहर जाने वाले लोग नई युग की नई रोशनी से अछूते नहीं हैं।

अर्थ-व्यवस्था—रोडेशिया की मुख्य पैदावार मकई, जई, तम्बाकू आदि हैं पर कृषि से अधिक महत्त्वपूर्ण यहाँ के खनिज पदार्थ हैं—सोना यहाँ का एक प्रमुख खनिज है। सोने की खानों के लालच ही में यूरोपीय

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

इधर आकृष्ट हुए थे। अन्य खनिज एसबेस्टस और क्रोम हैं। यहाँ कुछ कपड़ा मिलें तथा धातु व चीनी आदि के कुछ कारखाने भी हैं।

रोडेशिया की राजधानी सैलसिबरी 4825 फुट की ऊँचाई पर बसी सुहावनी जलवायु वाली नगरी है। चौड़ी-चौड़ी और स्वच्छ सड़कें, आधुनिक इमारतें, उद्यान वगैरह इसकी शोभा बढ़ाते हैं पर यह वैभव यहाँ के यूरोपीयों की समृद्धि का ही प्रतीक है।

रोडेशिया का अन्य प्रमुख नगर है बुलवायो। यह एक औद्योगिक और व्यापारिक केन्द्र भी है। बुलवायो ही माताबेले जाति के राजा लोबेनगुला की अंतिम राजधानी था। अब यहाँ रेल-व्यवस्था के मुख्यालय हैं। यहाँ के प्रमुख नगर रेल व सड़कों द्वारा जुड़े हुए हैं।

हमारा संघर्ष गोरे लोगों से नहीं अफ्रीकियों पर उनके राजनीतिक, आर्थिक और सामाजिक प्रभुत्व से है।

—जोशुआ एंकोमो

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

दक्षिणी अफ्रीका

28. बेचुआना (BECHUANA)
29. दक्षिण-पश्चिम अफ्रीका (SOUTH-WEST AFRICA)
30. दक्षिण अफ्रीका (SOUTH AFRICA)
31. बसूतोलैण्ड (BASUTO LAND)
32. स्वाजीलैण्ड (SWAZI LAND)
33. मोजाम्बीक (MOZAMBIQUE)
34. मालागाशी (MALAGASI)
35. रीयूनियन द्वीप (REUNION)
36. कोमोरो द्वीप-समूह (COMORO)
37. मारीशस (MAURITIUS)

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

28. बेचुआना

(BECHUANA)

क्षेत्रफल : 2,22,000 **वर्गमील** **जनसंख्या** : 5 50,000

बेचुआना के साथ हम दक्षिणी अफ्रीका का अवलोकन शुरू करते हैं। इसके अंतर्गत हम दक्षिण अफ्रीका, बेचुआना, बसूतोलैंड, स्वाजीलैंड, मालागाशी तथा अन्य आस-पास के द्वीपों की चर्चा करेंगे। आरम्भ में हम दक्षिण अफ्रीका और दक्षिणी अफ्रीका का अन्तर भी स्पष्ट कर देना चाहते हैं। दक्षिण अफ्रीका से हमारा अभिप्राय, गोरों के प्रभुत्व वाले धुर दक्षिण के देश से है, जबकि दक्षिणी अफ्रीका भौगोलिक क्षेत्र का द्योतक है।

बेचुआना देश रोडेशिया के दक्षिण पश्चिम में अवस्थित है। इसके पश्चिम में दक्षिण-पश्चिम अफ्रीका तथा दक्षिण और पूर्व में दक्षिण अफ्रीका हैं। इसका क्षेत्रफल 2 लाख 22 हजार वर्गमील है, जो हमारे मध्यप्रदेश और राजस्थान के संयुक्त क्षेत्रफल से कुछ कम है। देश की भूमि मुख्यतः पठारी है और इसकी औसत ऊँचाई 3,300 फुट है। पूर्वी भाग में अच्छी वर्षा होती है और कृषि के लिए उपयुक्त है पर पश्चिमी और दक्षिण-पश्चिमी भाग मुख्यतः कालाहारी रेगिस्तान के अंतर्गत है और वहाँ आबादी बहुत कम है। पर कालाहारी रेगिस्तान निरा वीरान नहीं है, वहाँ झाड़ियाँ, घास और कुछ वनस्पतियाँ उगती हैं। उत्तर पश्चिमी भाग में ओकवागों और चोबे नदियाँ बहती हैं। उत्तर में दो झीलें भी हैं। अक्तूबर से अप्रैल तक यहाँ वर्षा होती है और मई से सितम्बर तक मौसम शुष्क रहता है।

जन-जीवन—यहाँ की कुल जनसंख्या लगभग 5 लाख 50 हजार है। बेचुआना में अधिकतर लोग पूर्वी भाग में रहते हैं। कुछ आबादी उत्तर-पश्चिम में भी है। यहाँ मुख्यतः 8 जातियाँ रहती हैं। ये हैं बमांगवतो, बत्वाना, बकगत्ला, बकवेना वंगवकत्सी, बत्लोकवा, बरोलोंग तथा बमलेते। इन सब जातियों के अपने-अपने सरदार हैं। ये जातियाँ सामाजिक व्यवस्था के लिए स्वतन्त्र हैं।

बेचुआना के निवासियों की एक विशेषता यह है कि वे अपेक्षाकृत बड़े कस्बों में रहते हैं और खेत व चरागाह उनके घर से काफी फासले पर होते हैं। अतः कभी-कभी वे कुछ दिन तक लगातार खेतों पर काम करते रहते हैं। यहाँ से काफी लोग दक्षिण अफ्रीका की खानों में काम करने जाते हैं।

अतीत की झलक—यहाँ की एक प्रमुख जाति बमांगवतो के सुप्रसिद्ध शासक हुए हैं—खामा तृतीय। वे 1872 में पदासीन हुए और 51 वर्ष तक लगातार शासन करते रहे। सुप्रसिद्ध ब्रिटिश खोजकर्ता लिविंगस्टन इनके मित्र बन गए थे। इन्होंने माताबेले जाति के हमलों से अपनी जाति की रक्षा की और कई सुधार किये। पर ट्रांसवाल के बोअर लोगों के साथ सम्बन्ध बिगड़ जाने पर इन्होंने ब्रिटेन से मदद मांगी। 1885 में ब्रिटेन ने इस प्रदेश को संरक्षित प्रदेश घोषित कर दिया। 1895 में ब्रिटेन ने इस भाग को ब्रिटिश साउथ अफ्रीका कम्पनी को सौंपने की इच्छा का संकेत दिया, पर खामा और कई सरदारों ने इंगलैंड जाकर कहा कि इससे तो अच्छा यही है कि ब्रिटेन का संरक्षण बना रहे। ब्रिटेन ने यह मान लिया। 1923 में खामा तृतीय की मृत्यु के बाद

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

सेगोमा द्वितीय शासक हुए, पर वे भी जल्दी ही मर गए। इनके बाद उत्तराधिकारी थे सेरेत्से। पर उस समय इनकी आयु 4 वर्ष की ही थी, अतः जाति की महासभा में तय हुआ कि सेरेत्से के बालिग होने तक, इनके चाचा शेकेडी शासन चलाएँ। शेकेडी ने 1926 से लगभग 25 वर्ष तक शासन चलाया। उनका प्रशासन प्रगतिशील, स्थिर और सुव्यवस्थित था। कदाचित तात्कालीन अफ्रीका में उनके समकक्ष कोई और अफ्रीकी शासक नहीं था। उन्होंने कृषि की उन्नति और पशुओं के संवर्धन में गहरी दिलचस्पी ली। बेचुआना में पहला माध्यमिक स्कूल खोलने का श्रेय भी उन्हीं को था। उनकी कार्यकुशलता और यथार्थवादी दृष्टिकोण का लोहा अंग्रेज भी मानते थे। शेकेडी का अपना व्यक्तित्व था और वे अंग्रेजों से दबते नहीं थे। कई बार उन्होंने ब्रिटिश हाई कमिश्नर के आदेशों का पालन करने से इन्कार कर दिया। 1939 में एक अजीब घटना हुई। बमांगवतो जाति के क्षेत्र के प्रमुख शहर सेरोवे में एक गोरे ने अफ्रीकी महिला के साथ अभद्र आचरण किया। शेकेडी ने उसे पकड़वा लिया और अन्य अपराधियों की तरह उसे भी कोड़े मारने की सज़ा दी गई। इससे गोरों में तहलका मच गया। गोरों का ख्याल था कि काले आदमी उन्हें सज़ा नहीं दे सकते। दक्षिण अफ्रीका स्थिति ब्रिटिश हाई कमिश्नर ने कुछ सैनिक सेरोवे भेजे तथा शेकेडी को पदच्युत कर दिया गया। पर लंदन के कुछ उदार पंथी लोगों ने शेकेडी का समर्थन किया और वे पुनः पदासीन हो गए।

इस बीच शेकेडी ने अपने भतीजे और गद्दी के वास्तविक उत्तराधिकारी सेरेत्से को इंगलैंड पढ़ने भेज दिया। सेरेत्से ने आक्सफोर्ड के बेलिओल कालेज में क़ानून की शिक्षा पूरी की। पर इसी बीच एक अंग्रेज लड़की रूथ विलियम्स से उनका प्रेम हो गया। दोनों ने 1949 में विवाह कर लिया। इस विवाह ने यूरोपीयों और अफ्रीकियों दोनों में खलबली मचा दी। शेकेडी को अपनी जाति और वर्ण पर गर्व था अतः उन्होंने अपने भतीजे के इस कार्य की निन्दा की। बमांगवतो जाति की महासभा ने सेरेत्से के विवाह को ठीक नहीं बताया। उधर अंग्रेजों को भी यह पसंद नहीं था कि अंग्रेज लड़की अफ्रीकी से विवाह करे। शासक अंग्रेजों ने विवाह कांड का खूब लाभ उठाया और मार्च, 1950 में सेरेत्से के सरदार पद की मान्यता 5 वर्ष के लिए रद्द कर दी। उधर शेकेडी को भी रीजेंट के पद से हटाकर निर्वासित कर दिया गया और सत्ता जिला कमिश्नर को सौंप दी। दो वर्ष बाद सेरेत्से को स्थायी रूप से सरदार पद से अलग कर दिया और आदेश दिया कि वे बेचुआना लैण्ड में प्रवेश न करें। पर बमांगवतो जाति ने कोई दूसरा सरदार चुना ही नहीं। मई, 1953 में ब्रिटिश सरकार ने उप-सरदार का पद बनाकर उस पर एक और व्यक्ति को नियुक्त कर दिया। सितम्बर, 1956 में सेरेत्से और शेकेडी दोनों को विवश कर दिया कि वे सरदार पद के अपने अधिकार बिलकुल छोड़ दें। सेरेत्से और शेकेडी दोनों को बेचुआना में आने की अनुमति तब ही दी गई, जबकि उन्होंने सरदार पद के अपने सारे अधिकार त्याग दिये। शेकेडी और सेरेत्से दोनों को ही जनता बहुत प्यार करती थी। शेकेडी से अंग्रेजों ने अधिकार तो छीन लिये पर 1959 में मृत्यु-पर्यन्त उनका जनता में प्रभाव अक्षुण्ण ही बना रहा।

1960 से सेरेत्से ने राजनीतिक गति-विधियों में भाग लेना शुरू कर दिया और बेचुआना की आज़ादी का आन्दोलन ज़ोर पकड़ने लगा। 1961 में उन्होंने डेमोक्रेटिक पार्टी की स्थापना की। इस दल के अलावा यहाँ अन्य प्रमुख दल हैं : बेचुआना पीपल्स पार्टी तथा बोत्सवाना इंडिपेण्डेंस पार्टी।

शासन-व्यवस्था—1964 में ब्रिटिश सरकार ने बेचुआना के लिए नये संविधान की घोषणा की। इसके अनुसार मार्च, 1965 में बालिग मताधिकार पर चुनाव हुए और 31 सदस्यों की एक राष्ट्रीय असेम्बली निर्वाचित हुई। सेरेत्से खामा के दल डेमोक्रेटिक पार्टी को बहुमत प्राप्त हुआ। अतः सेरेत्से खामा बेचुआना के प्रथम प्रधान-

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

मन्त्री बनाये गए और देश आन्तरिक रूप से स्वशासित हो गया। निर्वाचित असेम्बली के अलावा सरदारों का सदन भी है पर उसका काम सलाह देना मात्र है।

प्रतिरक्षा और विदेशी मामले ब्रिटिश कमिश्नर के हाथ में हैं। अन्यथा आन्तरिक रूप से यह स्वतंत्र ही है। यह 1966 में पूर्ण स्वतन्त्र हो कर बोत्सवाना गणराज्य हो जाएगा।

स्वशासन के पहले बेचुआना संसार का एकमात्र ऐसा देश था, जिसकी राजधानी उसकी सीमा में नहीं थी। इसकी राजधानी माफकिंग थी, जो दक्षिण अफ्रीका के सीमा क्षेत्र में है। पर स्वशासन के बाद गैबरोनीज को राजधानी बनाया गया है। स्वशासन के पहले इस देश का नाम बेचुआनालैण्ड था। लैण्ड शब्द को गुलामी का सूचक मानकर प्रथम प्रधानमंत्री ने उसे देश के नाम से हटा दिया।

अर्थ-व्यवस्था—आर्थिक दृष्टि से बेचुआना पिछड़ा देश है। अर्थ-व्यवस्था मुख्यतः पशुधन पर आधारित है। स्थानीय खपत के लिए मकई-ज्वार वगैरह उगा लिये जाते हैं। गेहूँ, कपड़ा और अन्य जरूरी चीज़ें बाहर से मंगानी पड़ती हैं। कुल मिलाकर 5-6 माध्यमिक स्कूल हैं। कालेज एक भी नहीं है। स्वास्थ्य सेवाओं का भी अभाव है।

आवागमन के साधनों के नाम पर 394 मील रेलवे लाइन का वह टुकड़ा है, जो दक्षिण अफ्रीका से रोडेशिया जानेवाली मुख्य रेल लाइन का हिस्सा है। यह रेलवे लाइन इसके दक्षिण पूर्वी भाग में है। इसके अलावा 4,000 मील लम्बी पक्की सड़कें हैं।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

29. दक्षिण-पश्चिम अफ्रीका

(SOUTH-WEST AFRICA)

क्षेत्रफल : 3,17,725 **वर्गमील** **जनसंख्या** : 4,50,000

बेचुआना के पश्चिम में दक्षिण-पश्चिम अफ्रीका है। अंगोला के दक्षिण तथा दक्षिण अफ्रीका की पश्चिमोत्तर सीमा पर अवस्थित इस देश की भूमि मुख्यतया पठारी है। इसकी औसत ऊँचाई 3,600 फुट है तथा यहाँ कई पर्वत श्रेणियाँ फैली हैं। विन्ढोक के दक्षिण में जो पहाड़ हैं, वहीं से यहाँ कुछ नदियाँ निकलती हैं। यहाँ केवल गिनी-चुनी बारहमासी नदियाँ हैं। उत्तर में ओकावांगो तथा कुनेन नदियाँ बहती हैं। दक्षिण सीमा पर आरेंज नदी है। पूर्व में जम्बेजी नदी है। पश्चिम में 1,000 मील लम्बी तट रेखा के उस ओर अतलांतक महासागर की लहरें हैं। समुद्रतट पर रेगिस्तानी इलाका है। यहाँ वर्षा भी बहुत कम होती है।

दक्षिण-पश्चिम अफ्रीका का कुल क्षेत्रफल 3, 17,725 वर्ग मील है, जो फ्रांस व इटली के संयुक्त क्षेत्रफल के बराबर है। भारत के क्षेत्रफल का यह एक चौथाई हिस्सा है।

अतीत की झलक—दक्षिण-पश्चिम अफ्रीका में 1880 से ही जर्मन लोग घुस पड़े थे और 1885 तक इसे पूर्णतया उपनिवेश बना डाला। यहाँ के निवासी होटेंटोट तथा हेरेरे लोगों ने कई बार जर्मन शासन के विरुद्ध विद्रोह का शंख बजाया। पर उन्हें सफलता प्राप्त नहीं हो सकी। फिर यहाँ बड़ी संख्या में जर्मन लोग आकर रहने लगे। फलस्वरूप कुछ समय बाद जर्मन आबादी की दृष्टि से यह विश्व का सबसे बड़ा उपनिवेश बन गया।

प्रथम विश्व युद्ध के दौरान यहाँ दक्षिण अफ्रीका यूनियन की सेनाएँ आ जमी थीं। युद्ध के बाद यह क्षेत्र दक्षिण अफ्रीका यूनियन को 'मैनडेट' क्षेत्र के रूप में प्रशासनार्थ मिला। द्वितीय विश्व युद्ध के बाद 1945 में जब संयुक्त राष्ट्रसंघ की ट्रस्टीशिप कौंसिल बनी तो पूर्व के सारे 'मैनडेट' क्षेत्र ट्रस्टीशिप कौंसिल के अधिकार क्षेत्र में आ गए। पर दक्षिण अफ्रीका यूनियन ने स्पष्ट इन्कार कर दिया कि वह इस क्षेत्र को ट्रस्टीशिप को नहीं सौंपेगा। 1956 में दक्षिण अफ्रीका यूनियन ने अपनी आकांक्षा प्रकट की कि वह इस क्षेत्र को दक्षिण अफ्रीका यूनियन में मिला लेना चाहता है। संयुक्त राष्ट्र संघ ने कहा कि उसे ऐसा करने का हक नहीं है। काफी वाद-विवाद के पश्चात् यह मामला हेग स्थित विश्व अदालत के सामने रखा गया। अदालत ने फैसला दिया कि दक्षिण अफ्रीका यूनियन इस क्षेत्र को राष्ट्रसंघ को सौंपने के लिए बाध्य नहीं है पर दक्षिण-अफ्रीका यूनियन इसकी 'वर्तमान स्थिति' को बदल भी नहीं सकता (यानि उसे यूनियन में सम्मिलित नहीं कर सकता)। अतः अब भी दक्षिण-पश्चिमी अफ्रीका दक्षिण अफ्रीका यूनियन का एक तरह 'मैनडेट' क्षेत्र है और वह राष्ट्रसंघ की पूर्णतया अवज्ञा करता है।

संयुक्त राष्ट्रसंघ और स्वतंत्र अफ्रीकी देश इसे आज़ाद कराने के लिए काफी सक्रिय रूप से काम कर रहे हैं।

जन-जीवन—यहाँ की आबादी कोई 4 लाख 50 हज़ार है। उत्तर की मुख्य जाति ओवम्बो है। ये लोग

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

प्रायः खेती के काम में लगे हैं। इसी क्षेत्र में बुशमैन भी रहते हैं। ये संख्या की दृष्टि से अधिक नहीं हैं पर अफ्रीकी जातियों में इनका प्रमुख स्थान है। इनका कद लम्बा होता है और नाक चपटी। तथा सिर लम्बा-सा। रंग हल्का पीला-सा होता है। बुशमैन तीर कमान से शिकार करते हैं और प्रायः नग्न ही रहते हैं।

मध्यभाग में हेरेरे जाति के लोग रहते हैं। इनका धंधा पशु पालन है। इनका रंग धूमिल चाकलेटी होता है। दक्षिण भाग में नामा-होटेंटोट जाति रहती है। मध्य और उत्तर में एक छोटी-सी जाति डमारा रहती है। यह नामा होटेंटोट जाति की भाषा बोलती है। कहा जाता है कि ये विशुद्ध नीग्रोवंश के लोग हैं। वस्टार्ड जाति होटेंटोट और यूरोपीयों के मिश्रित रक्त से तैयार हुई है।

इनके अलावा कोई 70 हज़ार यूरोपीय भी हैं जो खेती, व्यापार और सरकारी नौकरी में लगे हैं।

ब्राण्ड वर्ग की तरुणी—सागरतट के पास वेलविस खाड़ी से कोई 100 मील उत्तर में ब्राण्ड वर्ग की गुफाओं में बुशमैन चित्रकला का एक सुन्दर नमूना सुरक्षित है। लगभग 16 इंच के इस चित्र में एक युवती दर्शाई गई है, जिसके केशों में मोतियों की माला है। एक हाथ में प्याला और दूसरे हाथ में तीर तथा एक कमान है। इसका रंग कमर से पैर तक सफेद है। अतः इस चित्र का नाम ही श्वेत युवती पड़ गया है। इस चित्र के बारे में तरह-तरह के विचार हैं। कुछ लोग इसे उत्तरी अफ्रीका से आयी एक राजकुमारी का चित्र बताते हैं तो कुछ उसे यहाँ की उस जाति की तरुणी कहते हैं, जो अब विलुप्त हो गई है। कुछ लोग इसे यहीं की ऐसी युवती का चित्र बताते हैं जिसने अपने अंग पर सफेदी पोत रखी है। कुछ भी हो यह गुफा-चित्र अफ्रीका की एक अमूल्य सांस्कृतिक धरोहर है।

अर्थ-व्यवस्था—दक्षिण पश्चिम अफ्रीका को हीरों की धरती कहा जाता है। क्योंकि यहाँ हीरे बहुत मिलते हैं। ओरेंज नदी के मुहाने पर स्थित हीरक क्षेत्रों में हीरे काफी ऊपरी सतह पर ही उपलब्ध हो जाते हैं। अतः जब यहाँ थोड़ी-बहुत भी खुदाई होती है तो पुलिस निगरानी के लिए आ जाती है। इस नदी के उत्तर भाग में जो हीरक क्षेत्र है उन पर एक कम्पनी (कन्सोलिडेटेड डायमण्ड माइन्स आफ साउथ वेस्ट अफ्रीका) का आधिपत्य है। यहाँ प्रतिमास 60,000 कैरेट हीरे निकाले जाते हैं। दक्षिण-पश्चिम अफ्रीका की धरती के गर्भ में हीरों के विपुल भण्डार हैं। पर अधिक हीरे निकालने का काम इसलिए नहीं किया जाता ताकि हीरों के दाम ऊँचे बने रहें। अधिक हीरे हो जाने पर दामों में गिरावट आ जाने का अंदेशा बना रहता है। यहाँ का मुख्य निर्यात हीरे ही हैं। हीरों के अलावा यहाँ जस्ते की भी खानें हैं।

खनन-कार्य के अलावा यहाँ मत्स्य पालन का भी तेजी से विकास हो रहा है।

राजधानी विन्ढोक है। राजधानी, लुप्रिज और वेलविस बन्दरगाह तथा एक उत्तरवर्ती कस्बा सुमेब रेल द्वारा परस्पर और दक्षिण अफ्रीका से जुड़े हैं। विन्ढोक में हवाई अड्डा भी है।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

30. दक्षिण अफ्रीका

(SOUTH AFRICA)

क्षेत्रफल : 4,72,494 **वर्गमील** **जनसंख्या :** 1,50,41,128

दक्षिण अफ्रीका, जैसा कि नाम से स्पष्ट है, अफ्रीका महाद्वीप के धुर दक्षिण में स्थित है। दक्षिण अफ्रीका यूनियन का निर्माण ब्रिटिश संसद् में पारित अधिनियम के अनुसार केप, नैटाल, आरेंज फ्री स्टेट तथा ट्रांसवाल राज्यों को मिलाकर किया गया था। अब इन्हीं नाम के ये चार प्रांत हैं। दक्षिण अफ्रीका 31 मई, 1961 से गणराज्य बन गया है और ब्रिटिश राष्ट्रमण्डल का सदस्य नहीं है।

दक्षिण अफ्रीका का कुल क्षेत्रफल 4,72,494 वर्ग मील है, जो हमारे राजस्थान, मध्यप्रदेश, उत्तरप्रदेश और बिहार के सम्मिलित क्षेत्रफल से कुछ कम बैठता है। दक्षिण अफ्रीका के पश्चिम में अलतांतक महासागर है और पूर्व में है हिन्द महासागर। इसकी अधिकांश भूमि पठारी है, जिसकी औसतन ऊंचाई सागर-तल से 2,000 फुट से 6,000 फुट तक की है। तटवर्ती भागों पर संकरे मैदान हैं जो मुख्य पठार से सपाट पहाड़ों द्वारा अलग हो गए हैं। यहाँ की मुख्य नदी आरेंज है। पूर्वोत्तरी सीमा पर लिम्पोपो नदी बेचुआना, रोडेशिया तथा मोज़ाम्बीक के मध्य सीमा-रेखा बनाती है।

अतीक की झलक—दक्षिण अफ्रीका की भूमि पर सर्वप्रथम डच प्रवासी रीबेक आया था, जो 6 अप्रैल, 1652 को यहाँ टेबल खाड़ी में उतरा था। रीबेक का उद्देश्य था केप में डच ईस्ट इण्डिया कम्पनी के जहाजों के लिए कोयला-पानी लेने और इसे अन्य जरूरी सामग्री इकट्ठी करने का केन्द्र बनाना। इसके बाद कुछ और डच प्रवासी यहाँ आ गए और उत्तर की ओर बढ़ने लगे। डचों की भिड़न्त यहाँ के तत्कालीन अफ्रीकी निवासियों से हुई। 17 वीं शताब्दी में यहाँ बुशमैन और होटेंटोट रहते थे, जिनका मुख्य धंधा पशु चराना था और जो कंदमूल खाकर गुज़र-बसर करते थे। अब इनमें से केवल कुछ मुट्ठी भर बुशमैन जीवित हैं। डचों को बोअर भी कहते हैं। भाषा के अंतर्गत बोअर शब्द का व्यवहार किसान के लिए होता है, परन्तु दक्षिण अफ्रीका में बोअर डच-प्रवासी का पर्याय समझा जाता है। उत्तर की ओर बढ़नेवाले इन बोअरों को बांतू नस्ल की एक लड़ाकू अफ्रीकी जाति ज़ोसा का सामना करना पड़ा। 1776 में बांतू और बोअरों के बीच एक सीमारेखा तय हो गई, पर शांति स्थायी न रह सकी, 1779 में दोनों पक्षों के बीच संघर्ष फिर भड़क उठा।

उस समय संघर्ष बोअरों और अफ्रीकियों के बीच ही था पर 1795 में अंग्रेज भी यहाँ आ गए। अंग्रेजों को यह सह्य नहीं था कि केप जैसे महत्त्वपूर्ण बन्दरगाह पर, जो भारत जाने के मार्ग में पड़ता है, डचों का कब्जा रहे; अत: 1795 में अंग्रेजों ने केप को डचों से छीन लिया, धीरे-धीरे केप ब्रिटिश उपनिवेश बन गया। केप में जम जाने के बाद अंग्रेज पूर्वोत्तर की ओर बढ़े और बोअरों को सागर तट से खदेड़ कर नैटाल पर कब्जा कर लिया। नैटाल पर कब्जा करने के पूर्व अंग्रेजों को इस क्षेत्र के शक्तिशाली जूलू राजाओं से लोहा लेना पड़ा। 1838 की लड़ाई में जूलू शक्ति क्षीण हो गई और अंग्रेजों का प्रभुत्व जम गया। उधर डच प्रवासी उत्तर की ओर खिसक गए। डच प्रवासियों ने प्रथम बोअर राज्य साउथ अफ्रीका रिपब्लिक बनाया (इस क्षेत्र को आज

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

कल ट्रांसवाल कहते हैं) 12 वर्ष बाद 1854 में दूसरे बोअर राज्य औरेंज फ्री स्टेट की स्थापना हुई। औरेंज नदी पर हीरों और ट्रांसवाल में सोने की खानों का पता लगने पर इस क्षेत्र में अंग्रेजों की रुचि और बढ़ गई। बोअरों और अंग्रेजों के बीच 1899-1902 में लड़ाई हुई और आखिर ये दोनों क्षेत्र अंग्रेजों के आधिपत्य में आ गए, 1910 में दोनों ब्रिटिश उपनिवेशों और दो विजित बोअर राज्यों को मिलाकर दक्षिण अफ्रीका यूनियन बनाया गया। यह 30 मई 1960 तक ब्रिटेन का डोमिनियन रहा। राष्ट्रमण्डल का सदस्य भी। इसके बाद यह गणराज्य हो गया और राष्ट्रमण्डल से अलग होगया।

जन-जीवन—1960 की जन-गणना के अनुसार दक्षिण अफ्रीका की आबादी 1,50,41,12 है। इनमें 30,67,638 गोरे, 14,88,268 मिश्रित रक्त के लोग, 4,77,414 एशियाई तथा 1,08,07,808 अफ्रीकी हैं।

हालांकि संख्या की दृष्टि से अफ्रीकी और अश्वेत लोग गोरों की तुलना में बहुत अधिक हैं पर फिर भी यहाँ सभी अफ्रीकी और अश्वेत हेय जीवन बिता रहे हैं, क्योंकि यहाँ गोरों की सरकार है और उसकी यह मान्यता है कि अफ्रीकी, अश्वेत और यूरोपीय लोगों को परस्पर मिलने नहीं दिया जाना चाहिए और उन्हें पृथक् रखा जाना चाहिए। यही वर्णभेद है। अफ्रीकियों और अश्वेतों को क़ानूनी रूप से निर्धारित क्षेत्रों में ही रहना होता है। ये यूरोपीयों की सड़क पर नहीं चल सकते, यूरोपीयों की सवारी का उपयोग नहीं कर सकते। सिनेमा या जल-पान गृह में पास नहीं बैठ सकते। भारत में जो स्थिति गांधी जी के हरिजन उद्धार आन्दोलन के पूर्व अछूतों की थी, वही स्थिति दक्षिण अफ्रीका में गैर-यूरोपीयों की है। गैर-यूरोपीयों को राजनीतिक अथवा नागरिकता के अधिकार नगण्य हैं। संसद् में यूरोपीय ही बैठ सकते हैं और ऊँचे पदों पर अफ्रीकी नियुक्त नहीं हो सकते।

यूरोपीयों में भी परस्पर एकता हो यह बात नहीं है। जैसा कि इतिहास से पता चलता है, यहाँ दो प्रकार के यूरोपीय हैं—डच वंशी तथा ब्रिटिशवंशी। डचवंशी अफ्रीकान कहलाते हैं और उनकी भाषा अफ्रीकान्स है। ये ज्यादातर गाँवों में रहते हैं और बड़े फार्मों के मालिक हैं। ब्रिटेन वंशी अंग्रेजी भाषी हैं और शहरों में रहते हैं। ये कारखानों और खानों के स्वामी हैं। भाषा के अतिरिक्त इनमें आर्थिक और अन्य भेद भी हैं। आजकल अफ्रीकान्स का ज़ोर है। वे संख्या में भी ब्रिटेन वंशियों से अधिक हैं।

अफ्रीकी जातियाँ—अफ्रीकी जातियाँ यहाँ मुख्यतया बांतू वर्ग की हैं। इनमें ज़ोसा, ज़ूलू, स्वाजी एंडेबेले सोंगां, सोथो, स्वाना, वेण्डा मुख्य हैं। अफ्रीकी लोगों में कोई 35 प्रतिशत लोग गाँवों में रहते हैं। बाकी लोग शहरों में आ गए हैं। खास तौर से नयी पीढ़ी के लोग शहरों में ही काम करना पसन्द करते हैं। शहरों में ये सोने और हीरों की खानों और कारखानों में काम करते हैं। यूरोपीयनों के बड़े-बड़े फार्मों पर भी बहुत से अफ्रीकी काम करते हैं।

निर्धारित क्षेत्रों में रहनेवाली अफ्रीकी जातियों का जीवन पुरानी परम्पराओं और रीति-रिवाजों में बंधा हुआ है। इनकी बस्ती 20-25 झोंपड़ियों का एक समूह होती है, जिसे क्राल कहते हैं। प्रत्येक घर का वरिष्ठ व्यक्ति मुखिया कहलाता है और वह गाँव के मुखिया का आदेश मानता है। गाँव का मुखिया पूरी जाति के सरदार के आदेशानुसार काम करता है। एक व्यक्ति कई पत्नियाँ रख सकता है। पर अधिक पत्नी रखना आसान नहीं। शादी के समय दामाद अपने श्वसुर को दहेज देता है, इसलिए यहाँ अधिक लड़कियाँ हो जाने पर माँ-बाप को

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

चिन्ता नहीं होती, फ़ायदा ही होता है। इस दहेज की प्रथा को 'लोबोला' कहते हैं। दहेज प्राय: पशुओं के रूप में दिया जाता है। आम लोग 10-15 पशु देते हैं और यदि सरदार की बेटी ब्याहनी हो तो 100 पशु भी देने पड़ सकते हैं।

शादी-ब्याह में 'किस्तों में दहेज चुकाने की' प्रथा भी प्रचलित है। मान लीजिए किसी युवक-युवती में प्रेम हो जाता है। युवक के पास दहेज में देने को उतने पशु नहीं हैं, जितने श्वसुर को चाहिएँ। ऐसी स्थिति में लड़की का बाप किस्तों पर ब्याह कर देता है। यदि दामाद समय पर किस्त नहीं चुका सके तो बाप, बेटी को वापस अपने घर ले आता है। यदि बेटी खुद पति से सम्बन्ध तोड़ कर मायके आ जाती है तो श्वसुर द्वारा दामाद को दहेज के पशु लौटाने पड़ते हैं।

ट्रांसकी और पौण्डोलैण्ड—केप प्रांत के पूर्वी भाग में अफ्रीकी जातियों के दो बड़े क्षेत्र हैं, ट्रांसकी और पौण्डोलैण्ड। यहाँ के निवासी लाल मिट्टी में रंगा हुआ कंबल लबादे की तरह ओढ़ते हैं। नीचे पुरुष नेकर या पैण्ट पहन लेते हैं और स्त्रियाँ घाघरा। कुमारी लड़कियाँ छोटा घाघरा पहनती हैं। संतानवाली स्त्रियाँ अपने घाघरे में मनके टाँकती हैं। स्त्रियाँ पैरों और हाथों में धातु के आभूषण भी पहनती हैं। शाम को सब लोग इकट्ठे होकर देशी-शराब पीते हैं।

पौण्डोलैण्ड में मनके संदेश पहुँचाने में इस्तेमाल होते हैं। सफेद मनका प्रेम का और हरा मनका धन का सूचक माना जाता है। संकट का बोध काले मनके से कराया जाता है। प्रेमिका विभिन्न अनुपात से रंग-बिरंगे मनकों की माला भेज कर जब किसी से प्रणय निवेदन करती है तो प्रेमी इस माला से ही सारे भाव समझ जाता है।

जादू टोनों की प्रथाएँ भी प्रचलित हैं। सयाना पंखों का ताज पहन कर, रोएँदार खाल ओढ़कर, हाथ मुँह पर रंग पोत कर कई क्रियाएँ सम्पन्न करता है।

ज़ोसा जाति के प्रत्येक युवक को 6 महीने वनवास करना होता है। इस दौरान वह किसी स्त्री का मुँह नहीं देखता। अधिकांश समय शिकार में गुजारता है।

जूलू प्रदेश—अफ्रीकी जातियों में सब से प्रसिद्ध है जूलू। नैटाल के पूर्वी भाग में इसका प्रदेश जूलूलैण्ड है। जूलूलैण्ड को 1897 में अंग्रेजों ने विजित करके नैटाल में मिलाया था। अब यह पृथक् क्षेत्र है। इसका वर्तमान क्षेत्रफल 10,425 वर्गमील है। यहाँ का प्रमुख नगर इशोवे है। जूलू जाति के एक महान् सम्राट् हुए हैं—शक, जिन्होंने कई विभक्त कबीलों को मिला कर जूलू राष्ट्र की स्थापना की थी। इन्होंने जूलू जाति की एक सुसंगठित सेना भी बनायी और उसे रण कौशल सिखाया था। जूलू योद्धा अर्द्धवृत्त बना कर लड़ते थे। मध्य की सेना पीछे हटती जाती और बाजुओं की तरफ से दूसरी टुकड़ियाँ शत्रुओं को घेरती आगे बढ़तीं। ऐसी व्यूह रचना का ही एक परिणाम यह हुआ कि 1879 में जूलू युद्ध में अंग्रेजों के 24वें रेजीमेंट का एक भी व्यक्ति जीवित नहीं बच सका। जूलू योद्धाओं में अनुशासन भी कमाल का होता था। 40 वर्ष तक वे विवाह नहीं करते थे पर यदि कोई प्रेमालाप के चक्कर में फंस जाता तो उसकी सज़ा मौत ही होती थी। कहते हैं कि एक घंटे की सूचना के भीतर ही 15 हजार जूलू जवान युद्ध के लिए निकल पड़े।

अब जूलू लोगों को युद्ध तो इतना प्रिय नहीं पर युद्ध नृत्य अवश्य प्रिय रह गया है। अब भी कभी-कभी शुतुरमुर्ग के पंखों, तेंदुए की खाल और रंग-बिरंगे लेप से सज-धज कर जूलू लोग अपना परम्परागत नृत्य करते

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

जुलू जाति का युद्ध नृत्य

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

हैं। कभी-कभी सारा गाँव ऐसे नृत्य में शामिल होता है। शादी-ब्याह पर अन्य नृत्य होते हैं, जिसमें लोग सीटियाँ बजाते हुए नाचते हैं।

जूलू लोग अपने झोंपड़ों को बांस व पेड़ की टहनियों से बड़ी सुघड़ता से बनाते हैं। प्रत्येक झोंपड़े के साथ खुला आंगन और बाड़ा भी होता है, जिसमें पशु बाँधे जाते हैं। पशुओं की देख-भाल, रोज़मर्रा की चीजें लाने, झोंपड़ों के छप्पर बनाने या ठीक करने का काम पुरुषों का है। स्त्रियाँ खेतों पर काम करने जाती हैं और घर का काम-काज भी करती हैं। औरतों को अपने केश विशिष्ट ढंग से संवारने का बड़ा चाव है। वे ऊपर की ओर उठा हुआ जूड़ा बनाती हैं। इस काम में वे परस्पर सहायता करती हैं। स्त्रियाँ बाँह के नीचे से निकाल कर लम्बे वस्त्र पहनती हैं, पुरुष तहमद की तरह कपड़ा बाँधते हैं या कोपीन पहनते हैं। ये लोग भोजन में मांस, मछली उबाली गई शाक-सब्जियाँ, अनाज कूट कर और फिर पकाकर बनाया गया हलवा खाते हैं।

गर्मी की ऋतु के बीच यहाँ एक बड़ा त्यौहार मनाया जाता है। इस त्यौहार के रूप में जूलू लोग फसल के लिए ईश्वर को धन्यवाद देते हैं। इस अवसर पर युवक शस्त्र का प्रयोग किये बिना सांड को मार कर उसकी बलि चढ़ाते हैं। इनका विश्वास है कि मर कर भी व्यक्ति किसी न किसी रूप में अपने कुटुम्बियों के पास रहता है। उनके खाने-पीने के लिए एक अलग झोंपड़ी में चीजें चढ़ाई जाती हैं।

जूलू जाति के ही एक महान नेता अलवर्ट लुथुली दक्षिण अफ्रीका के प्रभावशाली अफ्रीकी नेताओं में माने जाते हैं। जूलू सरदार के प्रपौत्र श्री लुथुली 1952 में अफ्रीकी नेशनल कांग्रेस के अध्यक्ष निर्वाचित हुए थे। वे अश्वेतों को न्याय और समता का अधिकार दिलवाने के लिए शांतिपूर्ण संघर्ष करते रहे हैं। इसके लिए इन्हें कई बार जेल जाना पड़ा। दक्षिण अफ्रीका सरकार ने इन्हें सरकार विरोधी नीति के कारण सरदार पद से भी अलग कर दिया था पर संसार ने उनके शांतिपूर्ण आन्दोलन को सराहते हुए 1961 में उन्हें नोबल पुरस्कार से विभूषित किया।

भारतवंशी—इन दिनों दक्षिण अफ्रीका में लगभग पाँच लाख भारत मूलक लोग बसते हैं। इनमें से कुछ तो वे लोग हैं, जिनके पूर्वज 1860 में नैटाल के बागानों में मज़दूरी करने गए थे। नैटाल के गोरों ने वहाँ की भूमि पर चाय, कॉफी व गन्ने की पैदावार से धन कमाने की युक्ति सोची पर उन्हें वहाँ मेहनती मज़दूर नहीं मिल पाये अतः भारत से ये मज़दूर एक निश्चित अवधि के करार पर काम करने गए। निश्चित अवधि पूरी होने के बाद ये वहीं बस गए। भारत मूलक लोगों में दूसरे लोग व्यापारी हैं जो मुख्यतः भारत के पश्चिमी भाग से वहाँ व्यापार करने गए हैं, कुछ लोग दुकानों में नौकरी-चाकरी करने वाले भी इनके साथ गए। कुल भारतमूलक लोगों में से तीन चौथाई नैटाल में हैं, शेष केप और ट्रांसवाल प्रान्तों में फैले हैं।

दक्षिण अफ्रीका की धरती पर ही महात्मा गांधी ने सत्याग्रह के अस्त्र का पहला प्रयोग किया था। गांधी जी 1893 में दक्षिण अफ्रीका गए थे और कोई 21 वर्ष वहाँ रहे। दक्षिण अफ्रीका के गोरों और गोरी सरकार का भारतमूलक लोगों के प्रति अपमानजनक व्यवहार और 3 पौण्ड का कर, भारतीय पद्धति से हुए विवाहों की अमान्यता, भारतीयों को परवाना लेने के लिए विवश करना आदि कानूनों के खिलाफ भारतीयों ने आवाज उठाई। गांधी जी के नेतृत्व में यहाँ 1906 से लेकर 1914 तक सत्याग्रह की लड़ाई चली। गांधी जी ने हजारों स्त्री-पुरुषों को सत्याग्रह के अनोखे मंत्र से प्रेरित किया। गिरफ्तारियाँ हुईं, दक्षिण अफ्रीका की जेलें भर गईं और भारतीयों को अनेक दुख उठाने पड़े। स्वयं गांधी जी को भी कई बार गिरफ्तार किया गया और उन्हें जेल की सज़ा दी गई। पर मेहनत सफल हुई

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

और आखिरकार हठीली गोरी सरकार ने नियमों में संशोधन करना स्वीकार किया। सत्याग्रह की सफलता से यहाँ भारतीयों को प्रतिष्ठा मिली। इसी सिलसिले में गांधी जी ने नैटाल में फिनिक्स आश्रम तथा ट्रांसवाल में टालस्टाय फार्म की स्थापना की। इस फार्म के लिए 1100 एकड़ जमीन एक एक जर्मन ने दी। ये दोनों ही सत्याग्रह के प्रमुख केंद्र बने रहे। दक्षिण अफ्रीका से 1904 में गांधी जी ने 'इंडियन ओपीनियन' अखबार निकाला। इस अखबार में गांधी जी अपनी आत्मा उंडेल कर लिखते थे। और वहाँ के भारतीयों का यह मुख-पत्र बन गया।

गांधी जी ने वहाँ रह कर इस बात पर बल दिया कि भारतीयों को अफ्रीकियों के साथ मिलजुल कर रहना चाहिए। उन्होंने बोअर युद्ध के दौरान भारतीयों का एक ऐसा दल बनाया, जो घायलों की सेवा-सुश्रूषा करता था। उन्होंने उन दिनों विशुद्ध सेवा भाव से, युद्ध में घायल अफ्रीकियों की मरहम पट्टी और सेवा की जब कि गोरी नर्सें उनके हाथ लगाने को भी तैयार नहीं थीं।

गांधी जी का पूरे अफ्रीका पर बड़ा असर पड़ा। सच तो यह है कि उन्होंने भारतीय व अफ्रीकियों को मुक्ति की नयी राह दिखाई थी।

दक्षिण अफ्रीका में चार प्रांत हैं। इनमें सबसे बड़ा है केप। इसका क्षेत्रफल लगभग 2,77,113 वर्गमील है। यूरोपीयों ने सजा संवार कर इसे बड़ा ही मनोहर प्रदेश बना डाला है।

नैटाल केपटाउन के पूर्वोत्तर में तथा बसूतोलैंड के बीच में है। इस प्रांत का क्षेत्रफल 35,284 वर्गमील है। इस प्रांत की मुख्य उपज गन्ना है।

केप प्रांत के उत्तर में औरेंज फ्री स्टेट है, जिसका क्षेत्रफल 49,647 वर्गमील है। नैटाल के उत्तर में ट्रांसवाल प्रांत है। इसका क्षेत्रफल 1,10,450 वर्गमील है। यह प्रांत सबसे घना आबाद है तथा सबसे अधिक धनाढ्य है। यहाँ उद्योग-धंधे भी बहुत हैं।

शासन-व्यवस्था—दक्षिण अफ्रीका का राजाध्यक्ष स्टेट प्रेसीडैंट होता है। वैधानिक कार्य के लिए दो सदनी संसद् है : सीनेट और असेम्बली। संसद् में केवल गोरे ही प्रतिनिधि चुने जा सकते हैं। अंग्रेजी और अफ्रीकान्स दोनों ही सरकारी भाषाएँ हैं। प्रिटोरिया यहाँ की राजधानी है पर संसद् की बैठक केपटाउन में होती है। नारंगी, सफेद और नीले रंग की खड़ी पट्टियों का राष्ट्रध्वज है।

1946 से यहाँ गोरों की नेशनलिस्ट पार्टी का शासन है और वह वर्णभेद की नीति का बड़ी कठोरता से पालन कर रही है। उधर अफ्रीकी और अश्वेत जातियों ने भी गोरी सरकार की इस वर्णभेद नीति को समाप्त करने के लिए निरन्तर संघर्ष करते रहने का प्रण ले रखा है। अफ्रीकियों का संघर्ष गांधी जी के सिद्धान्त के अनुरूप अहिंसात्मक है पर मार्च, 1960 में 'पास-कानून' के विरुद्ध शार्पविले में प्रदर्शन करने पर अफ्रीकियों पर गोरी सरकार की फौज ने निर्ममता से गोली बरसायी, जिसमें 72 व्यक्ति तत्काल मर गए और उससे बहुत अधिक घायल हुए। शार्पविल हत्याकांड के विरुद्ध भारत सहित अनेक देशों में प्रदर्शन हुए और दक्षिण अफ्रीकी सरकार की भर्त्सना की गई। राष्ट्रसंघ में भी सवाल उठा पर गोरी सरकार की नीति पर कोई असर नहीं हुआ।

दक्षिण अफ्रीका के प्रमुख राष्ट्रवादी नेता नेल्सन मण्डेला और उनके सहयोगियों पर राजद्रोह का आरोप लगा कर 1964 में उन्हें उम्रकैद तथा अन्य तीन को फांसी दे दी गई। विश्वभर में इसकी तीव्र निन्दा की गई।

अफ्रीका व एशिया के अधिकांश देश दक्षिण अफ्रीका का व्यापारिक बहिष्कार करने लगे हैं। भारत ने शुरू

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

से ही दक्षिण अफ्रीका की गोरी सरकार के खिलाफ आवाज़ उठाई थी और 1954 से राजनयिक सम्बन्ध बिलकुल तोड़ लिये। विश्व जनमत भी दक्षिण अफ्रीका के विपक्ष में हो रहा है। पर दक्षिण अफ्रीका सरकार वर्णभेद नीति को छोड़ने के लिए तैयार नहीं है।

सोना और हीरे—दक्षिण अफ्रीका की अर्थ-व्यवस्था में यहाँ के बहुमूल्य खनिजों का बड़ा योग है। अफ्रीका महाद्वीप में संसार भर का तीन-चौथाई सोना प्राप्त होता है। इस मात्रा का कोई 80 प्रतिशत सोना केवल दक्षिण अफ्रीका से निकलता है। सोने की सब से बड़ी खान ट्रांसवाल प्रांत में रैण्ड खान है। इसका पता 1884 में लगा था और 1886 में यहां एक छोटासा गांव बसा। वही गांव आज लगभग 9 लाख की आबादी का फलता-फूलता शहर जोहान्सवर्ग बन गया है। इसके आस-पास की स्वर्ण खानों की वजह से इसे स्वर्णनगरी भी कहते हैं।

1867 में ऑरेंज नदी के किनारे पर किसान के एक लड़के को एक चमकता हुआ कंकड़ मिला था, जिसे वह उठाकर खेलने के लिए घर ले गया। बाद में पता चला कि वह $21\frac{3}{4}$ कैरेट का हीरा था। अब किम्बरले संसार भर में हीरों की खानों के लिए प्रसिद्ध है। हीरों की अन्य प्रसिद्ध खानें हैं—प्रिटोरिया के पास प्रीमियर खान तथा ऑरेंज फ्री स्टेट में जैगर्सफोन्तीन। 1905 में प्रीमियर खान में कुल्लीन नामक हीरा मिला था, जिसका वजन $1\frac{1}{2}$ पौंड था।

सोने और हीरों के अलावा यहाँ कोयला, तांबा, अभ्रक, एस्बस्टस तथा सामरिक महत्त्व का यूरेनियम भी मिलता है।

इसके अलावा, दक्षिण अफ्रीका में दूसरे महायुद्ध के बाद कई उद्योग भी स्थापित हो गए हैं। इनमें इस्पात कारखाने, कपड़ा मिलें तथा रसायन उद्योग महत्त्वपूर्ण हैं।

कृषि के क्षेत्र में दक्षिण अफ्रीका उतना समृद्ध नहीं है। अनाजों में यहाँ की मुख्य फसल मकई है। अफ्रीकी अधिकतर मकई खाते हैं। गेहूँ, जौ व जई भी उगाई जाती है। ट्रांसवाल में तम्बाकू और नैटाल में गन्ना काफी उगाया जाता है। फलों में अंगूर, अनानास, सेव, नींबू और केले काफी उगाये जाते हैं। यहाँ यूरोपीयों ने बड़े-बड़े कृषि फार्म बना रखे हैं। इन पर अफ्रीकी मज़दूर के रूप में काम करते हैं।

अनुमान है कि यहाँ कोई 4 करोड़ भेड़ें हैं। इनसे बढ़िया ऊन प्राप्त होता है, जो निर्यात भी किया जाता है।

प्रमुख नगर—महाद्वीप के दक्षिणी सिरे पर स्थित केपटाउन एक मनोरम नगर है। यह केप प्रांत की राजधानी है। दक्षिण अफ्रीका की संसद् की यहाँ बैठकें होती हैं। यहाँ से आशा अन्तरीप या केप आफ गुड होप बहुत समीप है। ट्रांसवाल स्थित स्वर्णनगरी जोहान्सवर्ग, गगनचुम्बी भवनों और साफ-सुथरी सड़कों का नगर है। यहाँ विश्वविद्यालय, संग्रहालय तथा पुस्तकालय स्थित हैं। ट्रांसवाल की राजधानी प्रिटोरिया दक्षिण अफ्रीका की भी राजधानी है। प्रिटोरिया के उत्तर पश्चिम में क्रूगर नेशनल पार्क है जिसमें बहुत-से वन्य प्राणी विचरण करते देखे जा सकते हैं। इनमें शेर, काली सफेद धारियों वाला जेबरा, लम्बी गर्दन वाला जिर्राफ, हाथी मुख्य हैं। प्रिटोरिया के अजायबघर में नाटा हिप्पो और उरंग उटांग बन्दरों की एक जोड़ी भी है। नैटाल की राजधानी डरबन है। जो एक तरफ सदाबहार भूमि और दूसरी तरफ सागर की उमड़ती लहरों के

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

बीच बसा हुआ है। यहाँ का बन्दरगाह अफ्रीका के श्रेष्ठ बन्दरगाहों में है। भारतवंशी मुख्यतः यहीं रहते हैं। औरेंज फ्री स्टेट की राजधानी ब्लोमफोन्तीन एक अच्छा व बड़ा नगर है। बड़े शहर रेलवे लाइनों से जुड़े हुए हैं। एक रेलवे लाइन बेचुआना होती हुई रोडेशिया चली गई है। अच्छी सड़कों की भी व्यवस्था है। यहाँ कई हवाई अड्डे भी हैं।

मैं पूरी ज़िम्मेदारी के साथ कहता हूँ कि मैं दक्षिण अफ्रीका की सभी जातियों के लिए लोकतांत्रिक अधिकार दिलाने के संघर्ष में भाग लेता रहूँगा। मैंने आज़ादी की लड़ाई के लिए अहिंसक आन्दोलन का रास्ता अपनाया है, क्योंकि मेरे विचार से यही न्योयोचित और मानवोचित तरीका है, जिसे हमारी तरह के लोग अपना सकते हैं।—अलबर्ट लुथूली

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

31. बसूतोलैण्ड

(BASUTO LAND)

क्षेत्रफल : 11,716 वर्गमील **जनसंख्या : 8,00,000**

बसूतोलैण्ड की भौगोलिक स्थिति बड़ी अजीब है। यह चारों तरफ से दक्षिण अफ्रीका से घिरा हुआ है। इसका 11,716 वर्गमील का क्षेत्रफल हमारे हिमाचल प्रदेश से कुछ ही अधिक है। आकार में छोटा होने के बावजूद यहाँ अनूठे प्राकृतिक दृश्यों की प्रचुरता है। कुछ लोग इसे अफ्रीका का स्विट्ज़रलैण्ड भी कहते हैं। इसका एक चौथाई भाग निचली भूमि है। मध्य में ऊँचा पठार है जिसकी औसत ऊँचाई नौ हज़ार से साढ़े दस हज़ार फुट के बीच है। दक्षिण अफ्रीका की दो बड़ी नदियाँ ओरेंज और तुगेला के स्रोत यहीं हैं। पश्चिमी भाग की निचली भूमि में ही अधिकांश जनसंख्या रहती है और खेती-बाड़ी भी मुख्यतः यहीं होती है।

इतिहास — लगभग 1818 में इस क्षेत्र के एक चतुर और सूझबूझ वाले सरदार मोशेश द्वारा जूलू और माताबेले जातियों के आक्रमणों से विघटित कबीलों को एक सूत्र में बांध बसूतो राष्ट्र का गठन किया गया था। मोशेश ने 1870 तक शासन किया पर इस बीच बोअरों के राज्य ओरेंज फ्री स्टेट से कई बार झगड़ा होता रहा। अतः उन्होंने ब्रिटेन से मिलना ठीक समझा। 1868 में बसूतोलैण्ड विधिवत् ब्रिटिश प्रदेश बन गया। 1870 में मोशेश की मृत्यु हो गई और अगले ही वर्ष इसे केप प्रान्त में मिला दिया गया। यह बसूतो लोगों से पूछे बिना ही किया गया। अतः बसूतो और केप उपनिवेश के बीच संघर्ष छिड़ गया। केप उपनिवेश के अधिकारी बसूतो से इतने तंग हो गए कि उन्होंने ब्रिटेन से अनुरोध किया कि वे उसका सीधा शासन सम्हाल लें। अतः 1884 में ब्रिटेन ने फिर बसूतोलैण्ड को अपने सीधे शासन में ले लिया। पर इसके साथ ही बसूतोलैण्ड के सर्वोच्च सरदार का महत्त्व भी अंग्रेज़ स्वीकार करने लगे।

वैसे 1903 में यहाँ बसूतोलैण्ड परिषद् बना दी गई थी पर शुरू में इसका काम विचार-विमर्श करना और सलाह देना मात्रा था धीरे-धीरे इस परिषद् को अधिक महत्त्व दिया जाने लगा और इसमें निर्वाचित प्रतिनिधियों की संख्या बढ़ाई जाने लगी। उधर बसूतोलैण्ड के लोग भी स्वतंत्रता की मांग करने लगे।

मई, 1964 में लन्दन में एक सम्मेलन हुआ जिसमें बसूतोलैण्ड के प्रतिनिधियों ने और ब्रिटिश अधिकारियों ने मिलकर एक संविधान बनाया। इसके अनुसार बसूतोलैण्ड का सर्वोच्च पद मोत्लोत्लेही (MOTLOTLEHI) का है। एक प्रकार से ये बसूतो नरेश ही है। शासन संचालन के लिए ये प्रधानमंत्री और अन्य मंत्री नियुक्त करते हैं। वैधानिक कार्य के लिए दो सदनी संसद् है। उच्च सदन सीनेट हैं, जिसमें 22 प्रमुख सरदार और 11 मोत्लोत्लेही द्वारा मनोनीत सदस्य होते हैं। निम्न सदन राष्ट्रीय असेम्बली में वयस्क मताधिकार से निर्वाचित 60 सदस्य होते हैं। निर्वाचन में अंग्रेज़ी या यहाँ की भाषा सेसूथो पढ़ा व्यक्ति ही खड़ा हो सकता है।

राष्ट्रीय असेम्बली के मई, 65 में आम चुनाव हुए थे। इसमें बसूतोलैण्ड नेशनल पार्टी को बहुमत प्राप्त हुआ। इस पार्टी के नेता सरदार जोनाथन है। दूसरा प्रमुख दल है; बसूतोलैंड कांग्रेस पार्टी।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पहली मई, 1965 से बसूतोलैंड स्वशासित हो गया है और यहाँ के सर्वोच्च पद मोत्लोत्लेही पर मोशेश द्वितीय आसीन हुए। पर विदेशी, प्रतिरक्षा और आन्तरिक सुरक्षा के मामले ब्रिटिश सरकार के हाथ में हैं। आशा है यह देश 1966 में स्वतंत्र हो जाएगा।

जन-जीवन—यहाँ की आबादी कोई 8 लाख है। मुख्य जाति बसूतो ही है। पहाड़ी प्रदेश के होने के कारण यहाँ के लोग परिश्रमी, स्वाभिमानी और स्वतंत्रता-प्रेमी हैं। ये लोग कुशल घुड़सवार होते हैं। यहाँ का राष्ट्रीय परिधान कम्बल है जिसे स्त्री-पुरुष दोनों ही पहनते हैं। ये कम्बल बहुत मुलायम ऊन से बनाए जाते हैं। बसूतो लोग मिट्टी के पात्र बनाने में भी पटु हैं।

यहाँ के लोग जादू-टोने में भी बड़ी आस्था रखते हैं। अपनी कार्य सिद्धि के लिए अपने किसी साथी, रिश्तेदार अथवा निरपराध व्यक्ति की हत्या तक कर दी जाती है। कार्य सिद्धि चाहने वाला व्यक्ति किसी जीवित व्यक्ति के शरीर से मांस का टुकड़ा काटकर उससे टोन युक्त लेप तैयार करता है और उसे अपने अंग पर लगाता है। इन लोगों का ख्याल है कि प्रतिष्ठा बढ़ाने, नौकरी पाने या अधिक लाभ कमाने के लिए यह कृत्य किया जाता है। मनुष्य के मांस से बनाई गई औषधि को किसी जानवर के खोखले सींग में रखा जाता है। कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय के मानव शास्त्री जी० आई० जोन्स ने इस प्रकार की हत्याओं के बारे में लोमहर्षक जानकारी इकट्ठी की। पुलिस इस प्रकार की हत्याओं को रोकने की चेष्टा कर रही है। कहा जाता है कि 1947 से 1957 के बीच पुलिस को इस प्रकार की सौ हत्याओं की खबर मिली।

अर्थ-व्यवस्था—बसूतोलैण्ड की अर्थव्यवस्था खेती और पशुपालन पर आधारित है। यहाँ की मुख्य फसल मकई है, जो यहाँ का मुख्य भोजन भी है। यहाँ कोई उद्योग नहीं है। आम इस्तेमाल की चीज़ें बाहर से मंगानी पड़ती हैं। ऊन और पशु यहाँ से बाहर भेजे जाते हैं। यहाँ से प्रतिवर्ष 60,000 मजदूर दक्षिण अफ्रीका में काम करने जाते हैं। आर्थिक दृष्टि से यह काफी सीमा तक दक्षिण अफ्रीका पर निर्भर करता है।

इसकी पश्चिमी सीमा के पास स्थित मसेरू नगर यहाँ की राजधानी है। मसेरू दक्षिण अफ्रीका की ब्लौम फौन्तीन-डरबन रेल लाइन से जुड़ा है। इसके अलावा न यहाँ कोई और बड़ा शहर है और न ही रेलवे लाइन। यहाँ सड़कें भी बहुत कम हैं। लगभग तीन-चौथाई भाग में आने-जाने का मुख्य साधन घोड़ा है। शिक्षा की भी अभी बहुत धीमी प्रगति है। 1962 में यहाँ केवल 6 माध्यमिक स्कूल थे। पायस 12वें कालेज को अब बसूतो विश्वविद्यालय बना दिया गया है।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

32. स्वाजीलैण्ड

(SWAZI LAND)

क्षेत्रफल : 6,670 वर्गमील **जनसंख्या** : 2,73,000

स्वाजीलैण्ड दक्षिण अफ्रीका के पूर्वी भाग में अवस्थित है। उत्तर, पश्चिम और दक्षिण की ओर से यह ट्रांसवाल प्रान्त से घिरा हुआ है। पूर्व में इसकी सीमा पुर्तगाली उपनिवेश मोजाम्बीक से मिलती है। इसका क्षेत्रफल 6,670 वर्गमील हमारे मणिपुर प्रदेश से कुछ कम बैठता है पर बसूतोलैण्ड का आधा ही है। इसके पश्चिमी भाग में पहाड़ी इलाका है जिसकी औसत ऊँचाई 3,500 से 5,000 फुट है। मध्यवर्ती भाग में नीचे पहाड़ है। और वहाँ वर्षा काफी होती है। पूर्व में पठारी धरती है जो काफी उर्वरा है। बड़ी उशूतू, काली एम्बूलूजी तथा कोमाती इस देश की प्रमुख नदियाँ हैं।

अतीत—स्वाजी जाती का सुगठित रूप उन्नीसवीं सदी के आरम्भ से माना जाता है। 1840 के आस-पास जूलू जाति के आक्रमणों से परेशान होकर यहाँ के तत्कालीन शासक एमस्वाती ने ब्रिटिश एजेंट से सहायता मांगी थी पर एजेंट दोनों जातियों में सुलह कराने में सफल हो गए। उन्हीं दिनों से स्वाज़ी लैण्ड में यूरोपीय आने शुरू हो गए। आरंभ में तो ब्रिटेन और ट्रांसवाल की सरकारों ने स्वाजीलैण्ड की स्वतंत्रता को बनाये रखने का आश्वासन दिया पर बाद में वहाँ यूरोपीयों को विशेष रियायतें दी गईं और इसका लाभ उठा कर स्वाजीलैंड पर यूरोपीय नियंत्रण बढ़ाया जाने लगा। 1904 में ब्रिटेन ने इसे ट्रांसवाल के गवर्नर को सौंप दिया, और दो वर्ष बाद यह बेचुआनालैण्ड, बसूतोलैण्ड और स्वाजीलैण्ड के ब्रिटिश हाई कमिश्नर के नियंत्रण में आगया। इसके बाद हाई कमिश्नर के निर्देशन में रेजीडेंट कमिश्नर ने यहाँ का शासन चलाया।

1963 में लन्दन में संविधान सम्मेलन हुआ था उसके अनुसार यहाँ जनवरी, 1964 से एक नया विधान लागू किया गया। इसके अनुसार जून, 1964 में यहाँ विधान परिषद के लिए पहली बार चुनाव हुए। परिषद में 24 निर्वाचित सदस्य हैं जिनमें कोई पौने तीन लाख स्वाजी लोगों के भी आठ और केवल नौ हजार यूरोपीयों के भी आठ प्रतिनिधि होते हैं। आठ सदस्य किसी भी जाति के हो सकते हैं। कार्यकारी परिषद में चार सरकारी और चार गैर-सरकारी सदस्य हैं और प्रधान ब्रिटिश हाई कमिश्नर है।

जन-जीवन—स्वाजीलैण्ड की जनसंख्या लगभग 2,73,000 है। इनमें कोई 9,700 यूरोपीय हैं शेष अफ्रीकी ही हैं। स्वाजी ही यहाँ की प्रमुख जाति है। यहाँ का आंतरिक शासन प्राचीन परम्परा के अनुसार ही चलता है। नरेश को स्थानीय भाषा में 'एंगवेनयामा' कहते हैं। स्वाजी प्रथा के अनुसार नरेश के अलावा एक राजमाता का होना भी जरूरी है। यदि नरेश की माँ की मृत्यु हो जाए तो राजपरिवार की कोई वरिष्ठ महिला यह पद सम्भाल लेती है। नरेश को सभी राजनैतिक और जातीय मामलों में राजमाता का परामर्श लेना आवश्यक है। इस छोटे से देश की एक तरह से तीन राजधानियाँ हैं—एम्बाबोन जहाँ ब्रिटिश प्रतिनिधि रहता है, वहाँ से कोई 11 मील दूर लोजिथलेजी में अफ्रीकी नरेश रहते हैं, और राजमाता रहती हैं लोमाम्बा में, जहाँ स्वाजी

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

लोगों के जातीय पर्व मनाये जाते हैं।

एंगवेनयामा (नरेश) को कोई फ़ैसला करने से पहले स्वाजी जातीय परिषद से सलाह लेनी होती है। सिद्धान्त रूप में हर स्वाजी परिवार का मुखिया इस परिषद का सदस्य होता है पर व्यवहार में कुछ चुने हुए बड़े-बूढ़े ही इस की बैठक में शामिल होते हैं।

स्वाज़ीलैण्ड में उत्तराधिकार का नियम यह नहीं है कि ज्येष्ठ संतान ही नरेश बने। नरेश बनाने की जब जरूरत होती है तो स्वाजी लोग इकट्ठे होकर कोई युवक चुन लेते हैं। नरेश के पद के लिए लड़के का चुनाव करते समय युवक की प्रतिष्ठा का नहीं, बल्कि युवक की माता की सामाजिक प्रतिष्ठा का अधिक ध्यान रखा जाता है।

स्वाजी स्त्रियां और पुरुष बहुत कम वस्त्र पहनते हैं। पुरुष तो बस कोपीन लपेटे रहते हैं। स्त्रियां पत्ते, छाल आदि लपेटती हैं, अब कहीं-कहीं वस्त्र भी पहने जाने लगे हैं। स्वाजी स्त्रियां बालों का सिर पर खड़ा जूड़ा बनाती हैं पर यदि वे विधवा हो जाती हैं तो पूरा जूड़ा ही कटवा डालती हैं।

गाँवों में झोपड़ियाँ मधुमक्खियों के छत्ते की तरह होती हैं। अधिकतर लोग खेती और पशुपालन का धंधा करते हैं। कोई छः-सात हजार लोग प्रतिवर्ष दक्षिण अफ्रीका की खानों में काम करने जाते हैं।

स्वाजीलैण्ड राजनीतिक रूपसे जो बसूतोलैण्ड से पीछे है पर आर्थिक क्षेत्र में आगे है।

स्वाजीलैण्ड में सिंचाई की अच्छी व्यवस्था है। अतः मकई, जौ, जई, चावल, मूंगफली आलू, टमाटर, सिट्रस फल व सब्जियाँ खूब उगाये जाते हैं। तम्बाकू और गन्ना भी अब काफी उगाया जाता है। स्वाजीलैण्ड की सम्पदा का प्रमुख स्रोत एस्बेस्टस की खानें हैं। हैवलक खान संसार भर में एस्बेस्टस की सबसे बड़ी खानों में से एक है। कोयला व कच्चा लोहा भी यहाँ काफी है।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

33. मोजाम्बीक

(MOZAMBIQUE)

क्षेत्रफल : 2,97,654 **वर्गमील** **जनसंख्या** : 62,86,411

दक्षिण अफ्रीका के उत्तर-पूर्व में और जैम्बिया व मलावी के पूर्व में बसा मोजाम्बीक पिछले 450 वर्ष से पुर्तगाल की पराधीनता में जकड़ा हुआ है, पर अब यहाँ राष्ट्रीय चेतना अंगड़ाई ले रही है। इसका कुल क्षेत्रफल 2,97,654 वर्गमील है, जो उत्तरप्रदेश और मध्यप्रदेश के सम्मिलित क्षेत्रफल से कुछ ही अधिक है। मोजाम्बीक को जम्बेजी नदी दो भागों में बांटती है। उत्तर भाग न्यासा झील और हिन्द महासागर के बीच लगभग वर्गाकार आकृति का है। इसकी लम्बाई लगभग 400 मील और चौड़ाई लगभग 360 मील है। जम्बेजी से दक्षिण में जो हिस्सा है, वह लगभग सागर तट के साथ सटी हुई वेढंगी-सी पट्टी है। कुल मिलाकर मोजम्बीक की तट-रेखा 1430 मील की है। ज़म्बेज़ी डेल्टा के उत्तरी तट पर कई छोटे-छोटे द्वीप हैं। ऐसे ही एक छोटे-से द्वीप पर मोजम्बीक नगर है। मोजम्बीक पुरानी राजधानी था पर आजकल यह परित्यक्त है। ज़म्बेज़ी के आस-पास निचले मैदान हैं। उत्तरी भाग में वनों से ढके पहाड़ हैं। यहाँ की मुख्य नदियाँ ज़म्बेज़ी और लिम्पोपो हैं। ज़म्बेज़ी रोडेशिया से इसकी पश्चिमी सीमा में प्रवेश करती है और हिन्द महासागर में गिरती है। लिम्पोपो दक्षिणी भाग में है और दक्षिण अफ्रीका से यहाँ आती है।

अतीत—वास्कोडिगामा भारत जाते समय 1498 में यहाँ रुका था। उस समय यहाँ मोनोमोटापा नामक अफ्रीकी साम्राज्य फल-फूल रहा था। उसे यहाँ ऐसे कई नगर मिले जहाँ मकान पत्थर व गारे-चूने से बनाये गए थे। उस समय खानों से सोना निकालने का काम भी खूब होता था। इससे कुछ यूरोपीयों की यह धारणा मिथ्या सिद्ध हो जाती है कि उन दिनों अफ्रीकी खनन से पूर्णतया अनभिज्ञ थे। अफ्रीकी मोनोमोटापा साम्राज्य में कई राज्य थे। इनमें से एक प्रसिद्ध राज्य था जिम्बाबवे। यह सागरतट से लगभग 750 मील तक फैला था। कहते हैं हर 7 वर्ष के बाद जिम्बाबवे का राजा राज्य के लोगों द्वारा ही मार दिया जाता तथा एक नया राजा सिंहासन पर बैठाया जाता था। रोडेशिया में उस जमाने के कई खण्डहर मिले हैं जिनमें स्वर्ण, आभूषण, पक्षियों की प्रस्तर आकृतियाँ तथा सेलखड़ी के प्याले प्राप्त हुए हैं। पर जिम्बाबवे सभ्यता कब और कैसे विलीन हो गई, इसका कोई प्रामाणिक अभिलेख नहीं मिलता।

पुर्तगालियों ने यहाँ 1506 तक सोफाला नामक स्थान पर अपने पैर जमा लिये थे। 1508 में उन्होंने मोजाम्बीक भी अपने कब्जे में कर लिया, फिर धीरे-धीरे वे आंतरिक भाग के भी स्वामी बन गए। पिछले लगभग 450 वर्ष से पुर्तगाली इसका निरंकुश शासन चलाते आये हैं। यहाँ उच्चतम पुर्तगाली प्रशासक गवर्नर जनरल है। पुर्तगाल 1951 से इसे अपने मुख्य देश का एक 'प्रांत' बताता है।

मोजम्बीक चार क्षेत्रों में विभक्त है—(1) न्यासा (2) जम्बोजिया (3) सुल डो साव (4) मनीका तथा सोफाला।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

लौरेंको मारकेश यहाँ की राजधानी है । यह ठीक दक्षिण में तट पर बना हुआ नगर है । यह दक्षिणी अफ्रीका के नैटाल प्रांत के लिए आयात-निर्यात के प्रमुख बन्दरगाह का भी काम देता है । रेल द्वारा यह दक्षिण अफ्रीका से जुड़ा हुआ है । जान गुन्थर नामक प्रसिद्ध अमेरिकी लेखक ने इसे अफ्रीका भर में सबसे स्वच्छ नगर कहा है । अन्य प्रमुख नगर हैं—मोजाम्बीक, इनहम्बेन, बेइरा, चिन्दे ।

जन-जीवन—मोजम्बीक की कुल आबादी 62 लाख 86 हजार है । इसमें केवल 50 हजार यूरोपीय हैं, कुछ भारतीय भी हैं । अफ्रीकी लोग बांतू वर्ग के नीग्रो हैं । उत्तरी भाग में मकवा और याओ जातियाँ रहती हैं। मकवा जाति के लोग गोलाकार झौंपड़ियों में रहते हैं । जम्बेजी के दक्षिण में स्वाजी, बसूतो और जूलू जातियाँ रहती हैं, जिनका जिक्र हम दक्षिण अफ्रीका, बसूतो लैण्ड और स्वाजी लैण्ड के अंतर्गत कर चुके हैं ।

मोजम्बीक में अंगोला की भांति ही जबरन मज़दूरी की प्रथा है । यहाँ के प्रचलित कानून के अनुसार हरेक व्यस्क व्यक्ति को इस बात के लिए मजबूर किया जा सकता है कि कम से कम 6 महीने तक गोरे मालिक की नौकरी में रहे । फसल उगाने तक के सम्बन्ध में कोई स्वतन्त्रता नहीं है । जो अधिकारियों की अवज्ञा करे उसे सड़क बनाने जैसे काम पर लगा दिया जाता है । मोजाम्बीक का सबसे बड़ा निर्यात मज़दूर हैं । प्रति वर्ष लगभग 60 से 80 हजार तक मज़दूर दक्षिण अफ्रीका की स्वर्णखानों में काम करने के लिए भेजे जाते हैं । यहाँ के अधिकारियों ने दक्षिण अफ्रीका की सरकार के साथ ऐसा समझौता कर रखा है, जिसके अनुसार खानों में मोजम्बीक के मज़दूरों को पूरी मज़दूरी की अदायगी नहीं होती । उसका एक अंश मोजम्बीक में अधिकारियों के पास भेज दिया जाता है । जब मज़दूर वापस मोजाम्बीक आते हैं, तभी उन्हें यह अंश दिया जाता है । यह व्यवस्था यहाँ से गए मज़दूरों को लौटने के लिए विवश कर देती है ।

यहाँ अब भी पुराने ढंग से खेती की जाती है । अनाज, मूंगफली और शकरकंद स्थानीय उपभोग के लिए उगाई जाती हैं पर काजू, सुपारी, चीनी व चाय यहाँ से निर्यात की जाती है । कुल मिलाकर यह आर्थिक दृष्टि से बहुत पिछड़ा हुआ है । शिक्षा का भी अभाव है । सारे मोजम्बीक में केवल एक हाई स्कूल है । शिक्षा देने से अफ्रीकियों में जाग्रति आ सकती है और वे स्वतन्त्रता की माँग कर सकते हैं । इसी भय से पुर्तगालियों ने अपने पाश में कसकर बाँध रखा है । वहाँ काफी सेना भी भेज दी है पर फिर भी वहाँ राष्ट्रीय आन्दोलन बल पकड़ रहा है ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

34. मालागाशी

(MALAGASHI)

क्षेत्रफल : 2,28,000 वर्गमील **जनसंख्या** : 56,00,000

मोजम्बीक के पूर्व में हिन्द महासागर की गोद में एक द्वीप है—मेडागास्कर। 1960 के पूर्व यह फ्रांस के अधीन था और अब यह पूर्ण स्वतंत्र गणराज्य है। इसका कुल क्षेत्रफल 2, 28,000 वर्गमील है और संसार में यह चौथा विशाल द्वीप है। ग्रीनलैण्ड, न्यूगिनी और बोर्नियो द्वीप ही मेडागास्कर से अधिक बड़े द्वीप हैं। अब इसका अधिकृत नाम मालागाशी गणराज्य है।

प्राकृतिक दृष्टि से यह द्वीप छह भागों में बंटा है। उत्तरी भाग सारातानाना पर्वत द्वारा शेष द्वीप से अलग हो गया है। इस में मुख्यतया डिएगोसुरेज प्रान्त है। ज्वालामुखी के लावा के कारण यहाँ की धरती काफी उर्वर है। यहाँ गन्ना, कॉफी, मसाले व काली मिर्च उगायी जाती है। उत्तर पश्चिमी भाग में कई घाटियाँ हैं। कृषि उपज की दृष्टि से यही भाग सर्वाधिक समृद्ध है। इस भाग का मुख्य नगर मजुंगा है। पश्चिमी भाग में मजुंगा प्रान्त का दक्षिणी हिस्सा और तुलेर प्रांत का उत्तरी हिस्सा है। इस भाग की मुख्य नदियाँ मनामबोलो, सिरिविहिना तथा मंगोकी हैं। यहाँ धान, तम्बाकू मटर व अनाज उगाया जाता है। दक्षिणी भाग तुलेर प्रांत है। यह शुष्क भाग है और मुख्यतया पशु चराने का काम होता है। यहाँ कोयला अभ्रक, लोहा व मैंगनीज की खानें हैं, जिन का पूर्ण उपयोग होने पर यहाँ काफी कारखाने खुल जाने की आशा है। मध्य पठार में तनानारीव तथा फिआनारानत्सोवा प्रांत हैं। राजधानी तनानारीव यहीं स्थित है। पूर्वी भाग में समुद्र तट के तंग मैदान हैं। यह भाग करीबन 750 मील लम्बा है। कॉफी, चावल और गन्ना इस भाग की मुख्य पैदावार हैं।

मेडागास्कर का एक किशोर

जन-जीवन—मेडागास्कर की कुल जनसंख्या 56 लाख है। इस द्वीप की विशेषता यह है कि वहाँ के लोग अफ्रीका महाद्वीप के लोगों से नहीं, वरन् मलाया और इण्डोनेशिया के लोगों से मिलते हैं। यहाँ रहने वालों के पूर्वज मलाया व इंडोनेशिया द्वीपों से आये थे। कुछ विद्वानों का यह भी मत है कि मेडागास्कर द्वीप एक समय एशिया महाद्वीप का ही अंग रहा होगा।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

यहाँ रहने वाली सबसे बड़ी जाति का नाम है—होवा। इसे मेरिना भी कहते हैं। इन की कुल संख्या लगभग 12 लाख है। ये लोग मुख्यतया मध्यवर्ती प्रांत तनानारीव में रहते हैं। इन्हें प्रशासनिक कार्य में अधिक रुचि है। दूसरी जाति है वेत्सीमिसार। इन की संख्या कोई साढ़े सात लाख है। पूर्वी प्रांत तमातेव में रहने वाले ये लोग कुशल बुनकर हैं। वेत्सिलिओ जाति के लोग किसान व कारीगर हैं। ये मुख्यतया फिआनारानत्सोवा प्रांत में रहते हैं। मजुंगा प्रांत में रहने वाली मुख्य जाति का नाम सिमिहिती है। ये सब लोग इण्डोनेशियाई मूल की ही भाषा बोलते हैं। इन के धार्मिक रीति-रिवाज भी एक समान हैं। यहाँ 10 प्रतिशत मज़दूर हैं।

गाँवों में मकान अक्सर चिकनी मिट्टी के बनाये जाते हैं और उन पर घास-फूंस का छप्पर होता है। जंगलों और तटवर्ती भागों के लोग अपने मकान बांस के भी बनाते हैं। ये मकान अन्दर से बहुत साफ-सुथरे और सुव्यवस्थित होते हैं। यहाँ बहुपत्नीत्व की प्रथा प्रचलित है पर नारी का समाज में काफी ऊँचा स्थान है। 1828 और 1897 के बीच अधिकांश राजप्रमुख रानियाँ ही हुई हैं। यहाँ के लोग साहसी और निष्ठापूर्ण हैं और आगन्तुकों के साथ प्रेम का व्यवहार करते हैं। ये लोग पूर्वजों और प्रेतात्मा में विश्वास करते हैं। वेदी अथवा पवित्र शिलाओं के सम्मुख भेड़ व मुर्गों की बलि चढ़ाते हैं। होवा जाति में मृत्यु के अवसर पर दावतें होती हैं और बैल काटे जाते हैं। इस जाति का एक बड़ा जातीय त्यौहार बड़ी धूम-धाम से जुलाई के महीने में मनाया जाता है।

मेडागास्कर की एक ग्रामीण युवती

अतीत—मेडागास्कर का इतिहास काफी पुराना है और सदियों पूर्व से यहाँ के लोगों ने ही अपना शासन चलाया है। 7वीं सदी के आरम्भ में यहाँ फारस की खाड़ी व अरब देश से अरब लोग आये थे। वे तटवर्ती भागों पर बस गए और धीरे-धीरे यहाँ की आबादी में घुल-मिल गए। 16 वीं शताब्दी में यहाँ सकालवा लोगों ने अपना राज्य जमाया। उन्होंने मजुंगा नगर की नींव डाली थी पर उनका राज्य अधिक समय टिक न सका। 17वीं शताब्दी के आरम्भ से ही पूर्वी भाग में यूरोपीयों का आना शुरू हो गया था। सर्वप्रथम पुर्तगाली आये, फिर डच और बाद में अंग्रेज़। 1642 तक फ्रांसीसी भी यहाँ आ बसे थे। यूरोपीयों के आने से यहाँ की विभिन्न जातियों में परस्पर संघर्ष और वैमनस्य भड़क उठा।

1687 और 1810 के बीच यहाँ के मध्यवर्ती भाग में मेरिना जाति के नरेश आंद्रिआम्पोनिमेरिना का शासन था। उन का शासन सुसंगठित और काफी शक्तिशाली था। उन्हीं दिनों अंग्रेज और फ्रांसीसी मध्यवर्ती भाग में आ गए। 1810 में रदम प्रथम नरेश बने। इन का शासन 1828 तक रहा। इन्होंने गुलामों के व्यापार पर प्रतिबन्ध लगा दिया और आर्थिक वस्तुओं के व्यापार को प्रोत्साहन दिया। रदम प्रथम के पश्चात् रानी राना वोलोना प्रथम गद्दी पर आसीन हुईं। वह यूरोपीयों के बहुत विरुद्ध थीं अतः उन्होंने अंग्रेजों और फ्रांसीसियों दोनों को ही अपने राज्य से निकल जाने का हुक्म दिया। 1861 में इस रानी का पुत्र रदम द्वितीय सिंहासनारूढ़ हुआ। इस के समय फ्रांसीसियों को अपना प्रभाव बढ़ाने का मौका मिला। अंग्रेजों को यह सहन नहीं हुआ। अतः राजा को मरवा दिया गया। 1863 में पुनः एक रानी सर्वेसर्वा बनी। इस का नाम था रोसोहेरिना। 1885 में फ्रांस ने मेडागास्कर पर हमला कर के उस पर एक संधि जबरदस्ती थोप दी और वैदेशिक अधिकार अपने हाथ में ले

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

लिये। फ्रांसीसियों ने जब आन्तरिक मामलों में भी हस्तक्षेप करना शुरू किया तो यहाँ के लोगों ने विद्रोह कर दिया पर 1894 में एक फौजी टुकड़ी भेज कर विद्रोह कुचल दिया गया। उस समय रानी बोलेना सिंहासन पर थीं। रानी को निर्वासित कर दिया गया और मेडागास्कर के पैरों में पराधीनता की बेड़ियाँ पड़ गईं।

स्वतंत्रता का आन्दोलन—1946 में फ्रांस के चतुर्थ गणराज्य के संविधान के अंतर्गत इसे सागर-पारीय प्रान्त का दर्जा मिला पर मेडागास्कर के निवासियों को उस से कहाँ संतोष था। 1947 में यहाँ एक भयंकर राष्ट्रीय विद्रोह हुआ जिसमें फ्रांसीसी सूचना के आधार पर भी कम से कम 10, 505 व्यक्तियों ने जीवन की आहुति चढ़ाई। यह एक बड़े पैमाने पर विद्रोह था जिसे फ्रांसीसियों ने बड़ी निर्ममता से कुचल दिया पर आज़ादी की आग कब तक दबी रह सकती थी। फ्रांस में डिगाल के सत्तारूढ़ होने पर इस ने नया फ्रांसीसी संविधान तो स्वीकार कर लिया पर अपने आप को 14 अक्तूबर, 1958 को 'मालागाशी गणराज्य' घोषित कर दिया तथा फ्रांसीसी राष्ट्रमण्डल का सदस्य बन गया। 26 जून, 1960 को यहाँ पूर्ण स्वतंत्रता की घोषणा की गई।

शासन-व्यवस्था—मालागाशी गणराज्य का राष्ट्रप्रमुख और कार्यकारी प्रमुख प्रेसीडेंट होता है। प्रेसीडेंट, संसद सदस्यों, प्रांतों की जनरल कौंसिलों तथा म्यूनिसिपल और ग्रामीण परिषदों के प्रतिनिधियों द्वारा निर्वाचित होता है। श्री फिलबर्ट सिरानाना मई, 1959 से राष्ट्रपति हैं। यहाँ की संसद में दो सदन हैं। नेशनल असेम्बली या लोक सभा में 107 सदस्य होते हैं जो वयस्क मताधिकार से चुने जाते हैं। सीनेट या राज्यसभा में 54 सदस्य होते हैं जिनमें 2/3 सदस्य प्रांतों तथा स्थानीय प्रादेशिक इकाइयों द्वारा चुने जाते हैं तथा 1/3 सदस्य सरकार द्वारा आर्थिक, सामाजिक व सांस्कृतिक समूहों में से मनोनीत किये जाते हैं।

मेडागास्कर की भूमि पठारी व ऊबड़-खाबड़ है। इसलिए यहाँ परिवहन साधनों का अच्छा विकास नहीं हुआ है। आवागमन व परिवहन के लिए विमानों का काफी प्रयोग होता है। कोई 532 मील लंबी रेलवे लाइनें हैं, मुख्य लाइन राजधानी तनानारीव से पूर्वी तट पर स्थित तमातेव तक की है। लगभग 2,000 मील लम्बी सड़कें भी हैं पर केवल इसकी एक चतुर्थ ही सब मौसम में काम आ सकती है। कुछ नदियों में नौ-परिवहन भी होता है। मेडागास्कर की मुख्य उपज चावल, कैसावा, कॉफी व गन्ना है। लोगों का भोजन चावल व मछली है।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

35. रीयूनियन

(REUNION)

क्षेत्रफल : 969 वर्गमील **जनसंख्या : 3,35,000**

मेडागास्कर द्वीप से 420 मील पूर्व में स्थित है—रीयूनियन द्वीप। इसका कुल क्षेत्रफल 969 वर्गमील है और इसकी अधिकतम चौड़ाई 28 मील व अधिकतम लम्बाई 44 मील है। इसकी भूमि पथरीली व ज्वालामुखी के लावा से निर्मित है। यहाँ अनेक नद-नाले हैं। यहाँ की जलवायु शीतोष्ण है।

रीयूनियन द्वीप की जनसंख्या 3,35,000 (1960 का अनुमान) है। ज्यादातर लोग तटवर्ती भागों और अन्दर के मैदानों में रहते हैं। इसकी राजधानी रेंट डेनिस है जिसकी आबादी कोई 50,000 है।

इस द्वीप की खोज 1528 में एक पुर्तगाली नाविक ने की थी। उस समय यहाँ कोई नहीं रहता था। फिर यहाँ फ्रेंच प्रवासी आये और उन्होंने यहाँ कुछ बागान लगाये। बागानों में काम करने यहाँ नीग्रो, मलाया, मलाबारी भारतीय आदि आये। 1665 से यह फ्रांस के अधीन है।

1946 से रीयूनियन फ्रांस का सागरपारीय प्रदेश है। यह फ्रांस की संसद् में अपने प्रतिनिधि भेजता है, प्रशासन प्रमुख 'प्रिफेक्ट' है जिसकी नियुक्ति फ्रांस के स्वराष्ट्र मंत्री द्वारा की जाती है। फ्रांस में लागू क़ानून यहाँ भी लागू होते हैं। यहाँ की एक प्रतिनिधि सभा है जिसे केवल अंदरूनी मामलों के अधिकार हैं। 1958 में फ्रांस के पंचम गणराज्य का संविधान लागू होने के समय यहाँ के लोगों ने भी फ्रांस के साथ अपना वर्तमान सम्बन्ध भी बनाये रखना स्वीकार किया था।

रीयूनियन की अर्थ-व्यवस्था कृषि प्रधान है। मुख्यतः यहाँ गन्ने की खेती होती है। कोई 86,500 एकड़ भाग में गन्ने की फसल उगाई जाती है।

इस द्वीप में जिरेनियम की भी काफी खेती होती है। यह सुगंधि वाला पौधा है, जिसमें लाल रंग का फूल आता है। इसमें से तेल निकाला जाता है। खसखस भी होती है, उसका तेल निकाला जाता है। इस कारण इस द्वीप को सुगंधित टापू भी कहते हैं। आलू व तम्बाकू की फसलें भी होती हैं पर यह टापू चावल मेडागास्कर से मंगाता है।

रीयूनियन में एक हवाई अड्डा भी है, जहाँ एयर फ्रांस की सर्विस आती है। इसका मारीशस व मेडागास्कर से टेलीफोन व तार संपर्क है।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

36. कोमोरो द्वीप-समूह

(COMORO ISLANDS)

क्षेत्रफल : 863 वर्गमील **जनसंख्या : 1,83,000**

कोमोरो द्वीप-समूह मेडागास्कर से 310 मील उत्तर-पश्चिम में है। ये टापू अफ्रीका महाद्वीप और मेडागास्कर के बीच में हैं।

इस समूह में ये चार द्वीप हैं—(1) मोयट्टे, (2) अंजुआन, (3) मोहेली और (4) बड़ा कोमोर।

कोमोरो द्वीप सबसे उत्तर में है और इनमें सबसे बड़ा टापू है। कोमोरो की भूमि ज्वालामुखी के लावे से बनी है। दक्षिणी भाग में एक ज्वालामुखी है जिसका मुख सबसे बड़ा है।

ये द्वीप काफी पुराने हैं और यहाँ प्राचीन काल से ही अरब, पुर्तगाली और फ्रांसीसी नाविक आते रहे हैं। 16वीं सदी में ये मेडागास्कर के अधीन हो गए थे। उन दिनों यहाँ के शासक सुलतान होते थे। इन सुलतानों में परस्पर वैमनस्य होने के कारण इन्होंने फ्रांसीसी अधिपत्य स्वीकार कर लिया। 1843 में मोयट्टे तथा 1886 में मोहेली, बड़ा कोमोरो तथा अंजुआन टापू फ्रांस के संरक्षण में आ गए।

1912 में ये टापू मेडागास्कर से शासित होते थे पर द्वितीय विश्व युद्ध के बाद 1946 में इन्हें स्वायत्त करार दे कर सागरपारीय प्रदेश बना दिये गए। फ्रांस का पंचम गणराज्य बनने पर जनमत संग्रह हुआ और यहाँ के लोगों ने सागरपारीय प्रदेश के रूप में रहना मंजूर किया।

कोमोरो द्वीप-समूह में एक निर्वाचित असेम्बली है जिसमें 31 सदस्य हैं। प्रशासन के लिए एक शासन परिषद् है जिसका अध्यक्ष असेम्बली में बहुमत से चुना जाता है। फ्रांस का हाई कमिश्नर जो फ्रांस के राष्ट्रपति का प्रतिनिधि होता है सामान्य देख-रेख करता है तथा परराष्ट्र विषयों तथा प्रतिरक्षा के लिए ज़िम्मेदार होता है।

कोमोरो द्वीप समूह की जनसंख्या 1,83,000 है। यहाँ के लोग एशिया, अफ्रीका व मेडागास्कर की जातियों से मिल-जुल कर बने हैं। अधिकांशतः लोग इस्लाम के अनुयायी हैं। चारों टापुओं पर कम से कम 700 मस्जिदें हैं।

यहाँ की मिट्टी ज्वालामुखी के लावे से बनी है और बड़ी उर्वरा है अतः यहाँ शीतोष्ण जलवायु की फसलें खूब उगाई जाती हैं। धान, कसावा, जई, शकरकंद, टमाटर, केले, नारंगी, नींबू, आम, अनानास यहाँ खूब पैदा होता है। काली मिर्च, लौंग और सुगंध का विशेष पौधा भी यहाँ काफी होता। नारियल भी यहाँ बहुत होता है और इसका निर्यात भी किया जाता है। जयोद्जी यहाँ का प्रमुख नगर है।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

37. मारीशस

(MAURITIUS)

क्षेत्रफल : 720 वर्गमील **जनसंख्या :** 7,00,000

मालागाशी के पूर्व में लगभग 500 मील दूर मारीशस द्वीप है। हिन्द महासागर में स्थित यह द्वीप बम्बई से 2400 मील तथा मुख्य अफ्रीका से 1400 मील दूर है। इसमें मुख्य द्वीप के अलावा आठ अन्य छोटे द्वीप भी शामिल हैं—रौंरिज, पैरोबनहो, सोलोमन, अगालिगा, संत ब्रांडन, ट्रोय फैरीर, चागोस और डियागो गार्शिया।

मारीशस का कुल क्षेत्रफल 720 वर्गमील है। इसका उत्तरी भाग समतल मैदान है। यह भूमि क्रमशः ऊँची होती हुई मध्य भाग में पठार बन जाती है। मध्यवर्ती पठार के आस-पास कुछ पहाड़ियाँ भी हैं। सबसे ऊँची पहाड़ी 2711 फुट है। कुछ छोटी पर तेज बहती हुई नदियाँ हैं जिनके पानी से बिजली तैयार की जाती है।

ऐतिहासिक झलक—मध्य युग में अरब और 16वीं सदी में यहाँ पुर्तगाली नाविक आया करते थे पर 1598 में डचों में इसका नाम अपने नसाऊ के राजकुमार मारिश के नाम पर मारीशस रखा। फिर यहाँ डच लोग बस गए। 1710 तक डच यहाँ से चले गए और फ्रांसीसी आये जो इसे 'इले द फ्रांस' के नाम से पुकारने लगे। 1722 से यहाँ फ्रांसीसियों ने अपने बागान लगा लिये और 1767 में फ्रांस ने इसका शासन चलाने के लिए अपने अधिकारी भेजने शुरू कर दिये। 1810 में ब्रिटेन ने इस पर कब्जा कर लिया। पेरिस संधि के अनुसार 1810 में फ्रांस ने इसे विधिवत् ब्रिटेन को सौंप दिया और इसका नाम पुनः मारीशस रख दिया गया। 1958 तक ब्रिटेन से इसका सीधा शासन चलता रहा। जनता ने अधिकारों की माँग की तो यहाँ 1959 में पहले आम चुनाव कराये गए।

1961 में लन्दन में मारीशस के बारे में एक सम्मेलन हुआ जिसमें इसे स्वशासन की ओर बढ़ाने के लिए दो चरण तय हुए। पहले चरण में विधान सभा में बहुमत प्राप्त करनेवाले दल के नेता को मुख्य मंत्री बनाना था। दूसरे चरण में उसे अधिक जिम्मेदारियाँ सौंप कर प्रधान मंत्री का नाम देना था। 1965 में मारीशस को पूर्ण स्वशासन दे दिया गया। आशा है, 1966 में यह आज़ाद हो जायेगा। ब्रिटेन इसके एक द्वीप डिएगोगार्शियो को मारीशस से अलग करके वहाँ सैनिक अड्डा बनाना चाहता है।

आजकल मारीशस की लेबर पार्टी का विधान सभा में बहुमत है और उसके नेता डा० रामगुलाम प्रधान मंत्री हैं।

जन-जीवन—पिछली सदी में ब्रिटिश शासकों ने मारीशस में बड़े पैमाने पर गन्ने की खेती शुरू की थी। इन खेतों में काम करने के लिए बड़ी संख्या में भारतीय मजदूर ले जाए गए। लगभग सभी भारतीय वहीं बस गए। आज मारीशस की कुल आबादी कोई सात लाख है। इसमें 64 प्रतिशत भारत मूलक लोग हैं। इस वजह से मारीशस को भारतीय संस्कृति का द्वीप भी कहते हैं।

अन्य लोगों में यूरोपीय, अफ्रीकी और मिश्रित रक्त के लोग हैं। ये कुल जनसंख्या का 25 प्रतिशत हैं। कुछ प्रतिशत चीनी भी हैं।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

भारतीयों की भाषा हिंदुस्तानी है ।.यूरोपीय फ्रांसीसी और क्रोल भाषा बोलते हैं । चीनियों की भाषा चीनी है । सरकारी भाषाएँ अंग्रेजी व फ्रांसीसी हैं ।

अर्थ-व्यवस्था—मारीशस की मुख्य पैदावार गन्ना है । यहाँ दो लाख एकड़ से भी अधिक भूमि पर गन्ने की खेती होती है और चीनी के 23 कारखाने हैं । यहाँ का प्रमुख निर्यात भी चीनी है । चाय भी यहाँ पैदा होती है और निर्यात की जाती है । मकई, आलू, सब्जियाँ व फल भी उगाये जाते हैं । यहाँ का सिक्का रुपया है, जो भारतीय रुपये के बराबर है । पोर्ट लुई यहाँ की राजधानी है ।

यहाँ कोई 750 मील लम्बी सड़कें और 82 मील लम्बी रेल लाइन है । पोर्ट लुई ही एकमात्र बन्दरगाह है ।

प्रधान मंत्री डा० रामगुलाम 1965 के शुरू में भारत आये थे । दोनों देशों के बीच घनिष्ठ सम्बन्ध हैं, जो मारीशस की आज़ादी के बाद और भी मज़बूत होंगे ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पूर्वी अफ्रीका

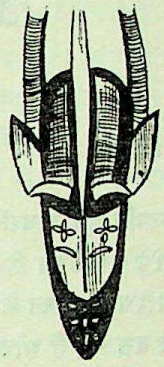

38. टांज़ानिया (TANZANIA)

39. उगाण्डा (UGANDA)

40. कीनिया (KENYA)

41. सोमालिया (SOMALIA)

42. फ्रांसीसी सोमालीलैंड (FRENCH SOMALILAND)

43. इथियोपिया (ETHIOPIA)

44. सूडान (SUDAN)

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

38. टांज़ानिया
(TANZANIA)

क्षेत्रफल : 3,63,708 **वर्गमील** **जनसंख्या** : 98,13,000

पूर्वी अफ्रीका के अन्तर्गत हम टांज़ानिया, कीनिया, उगाण्डा, सोमालिया, फ्रांसीसी सोमाली लैंड, इथियोपिआ और सूडान की चर्चा करेंगे। अफ्रीका के इस भू-भाग का प्राचीन काल से ही भारत के साथ बहुत सम्पर्क रहा है। पूर्वी अफ्रीका तथा पश्चिमी भारत के तटों के बीच समुद्री जहाजों का आवागमन होता रहा है। काफी भारतीय इन देशों में जाकर बस गए हैं और इन अफ्रीकी देशों के आर्थिक विकास और व्यापार में काफी हिस्सा लिया है।

टांज़ानिया में टांगानिका और जंजीबार सम्मिलित हैं। टांगानिका 9 दिसम्बर, 1961 को ब्रिटेन की अधीनता से स्वतन्त्र हुआ था। जंजीबार ने 10 दिसम्बर, 1963 को ब्रिटेन से स्वाधीनता प्राप्त की थी। अप्रैल, 64 में दोनों देशों के नेताओं ने टांगानिका और जंजीबार को मिलाकर एक देश बनाने का निश्चय किया। 27 अप्रैल, 1964 को टांगानिका-जंजीबार गणराज्य की स्थापना की गई। बाद में इसका नाम टांज़ानिया रख लिया गया।

टांज़ानिया का कुल क्षेत्रफल 3,63,708 वर्गमील है जो हमारे मध्य प्रदेश, राजस्थान तथा बिहार के सम्मिलित क्षेत्रफल के लगभग बराबर है। यहाँ की जनसंख्या 98,13,000 है।

संविधान के अन्तर्गत एक संसद है जिसमें टांगानिका और जंजीबार के प्रतिनिधि बैठते हैं। राजाध्यक्ष राष्ट्रपति होता है। दो उपराष्ट्रपति होते हैं जिनमें एक जंजीबार का होता है। जंजीबार वाला राष्ट्रपति वहाँ की कार्यपालिका का प्रधान होता है। जंजीबार में एक क्षेत्रीय असेम्बली भी है जो विदेशी मामले, रक्षा, पुलिस, अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार आदि को छोड़कर अन्य विषयों पर कानून बना सकती है। ये विषय केंद्रीय संसद के अधिकार क्षेत्र में आते हैं। केंद्रीय संसद जंजीबार के लिए तो उपरोक्त विषयों के लिए और टांगानिका क्षेत्र के लिए सभी विषयों के लिए क़ानून बना सकती है।

डा० जूलियस न्येरेरे टांज़ानिया के राष्ट्रपति हैं जो 1965 में इस पद पर दुबारा चुने गए हैं। श्री करुमे दूसरे वरिष्ठ उपराष्ट्रपति हैं जो जंजीबार क्षेत्र से हैं।

टांगानिका—यहाँ सागर-तट के पास ही 10 से 40 मील चौड़े मैदान हैं। मध्य भाग में कोई 4,000 फुट ऊँचे पठार हैं। ये पठार पूर्वी व पश्चिमी सीमा पर तीखे व कटे-फटे ढालों के रूप में बन गए है। पश्चिमी सीमा पर टाँगानिका झील है जिसका विश्व में गहराई के लिहाज से दूसरा स्थान है (गहराई 2534 फुट)। उत्तर में विक्टोरिया झील है, जिसका कुछ अंश, टांगानिका में कुछ उगाण्डा में और कुछ कांगो में गिना जाता है। नैट्रोन, मन्यारा, ईयासी तथा रुकवा आदि कई छोटी-छोटी अन्य झीलों को मिलाकर यहाँ का जलीय क्षेत्रफल लगभग 20,000 वर्ग मील है। पूर्वी तटवर्ती भाग में दक्षिण के उत्तर की ओर जाते समय खुआ, एम्बेनकुरू, मातण्डू, करुफिजी, रुवू, वामी तथा पंगानी नामक नदियाँ हैं। इस के पूर्वोत्तर सीमांत पर किलिमंजरो पर्वत है जिस की ऊँचाई 19,340 फुट है। यह भूमध्य रेखा के पास है फिर भी इस पर्वत का शिखर बारह महीनों

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

हिमाच्छादित रहता है। अफ्रीका महाद्वीप के इस सर्वोच्च शिखर का दृश्य भी अत्यन्त रोमाँचकारी है।

अतीत की झलक—राजधानी और प्रसिद्ध बन्दरगाह दर-ए सलाम तथा इस के कुछ उत्तर में स्थित तांगा यहाँ की बहुत प्राचीन नागरियों में से हैं। यहाँ अत्यन्त प्राचीन सभ्यता के अवशेष मिले हैं। फारस की कुछ वस्तुएँ और चीनी सिक्के भी प्राप्त हुए हैं जिन से पता चलता है कि इस भू-भाग का उस काल में दूर-दूर के देशों से सम्पर्क था। यहाँ 8वीं शताब्दी के आस-पास ओमान के अरब लोग आये। 16वीं व 17वीं शताब्दियों में तुर्क और पुर्तगालियों ने यहाँ पैर जमाने की कोशिश की। 1884–85 के बीच यहाँ जर्मनी का प्रभाव बढ़ाने में एक जर्मन नागरिक कार्ल पीटर्स ने बहुत योग दिया। उसने यहाँ के सरदारों से कई संधियाँ कर के और थोड़ी-बहुत रकमें दे कर यहाँ भूमि खरीदी थी। पीटर्स ने फिर यह भाग जर्मन सरकार को बेच दिया। टांगानिका के तटवर्ती भाग पर जंजीबार के सुल्तान का अधिकार था। जर्मनी ने यह क्षेत्र 2 लाख पौण्ड में सुल्तान से खरीद लिया। इस के बाद जर्मन लोग भीतर की ओर बढ़ने लगे पर 1910 तक भी वे सब क्षेत्र को पूरी तरह वश में नहीं कर पाये थे। क्वावा नामक एक अफ्रीकी सरदार ने तो जर्मनों के हाथों आत्म-समर्पण करने की अपेक्षा अपने आप को गोली मार लेना अधिक श्रेयस्कर समझा। जर्मन लोग इस सरदार की खोपड़ी को विजय-चिह्न के रूप में जर्मनी ले गए। 1903-1905 में यहाँ जर्मनों के विरुद्ध भयंकर विद्रोह हुआ। यह विद्रोह 'माजी माजी' के नाम से इतिहास में प्रसिद्ध है। इस में मुख्यतया दक्षिणी भाग की अंगोनी जाति ने जर्मनों के छक्के छुड़ा दिये। जर्मनी ने बड़ी निर्ममता से इस विद्रोह को कुचल दिया। प्रत्येक विद्रोही को गोली से मारने की अपेक्षा जर्मन सिपाहियों ने गाँव के गाँव तथा फसल की फसल जला कर राख कर दी। इसके अंतर्गत कम से कम सवा लाख अफ्रीकियों को मौत के घाट उतार दिया गया।

प्रथम विश्वयुद्ध में यहाँ ब्रिटिश फौजें आ गईं। उन्होंने 1917 तक जर्मन सेनाओं को पूरी तरह खदेड़ दिया। 1919 में ब्रिटेन को टाँगानिका 'लीग ऑफ नेशन्स' के रक्षित प्रदेश के रूप में मिल गया। 1919 तक इस में रूआण्डा-उरण्डी क्षेत्र भी सम्मिलित था। इस के बाद 'लीग ऑफ नेशन्स' ने रूआण्डा-उरण्डी बेलजियम को रक्षित प्रदेश के रूप में सौंप दिया था। 1946 में टांगानिका संयुक्त राष्ट्र के संरक्षित प्रदेश के रूप में ब्रिटेन द्वारा शासित होने लगा।

टांगानिका में राष्ट्रीय जागरण का मुख्य श्रेय टांगानिका अफ्रीकी नेशनल यूनियन और उसके दूरदर्शी नेता जूलियस न्येरेरे को है। इस दल की लोकप्रियता का अनुमान इसी से लग सकता है कि अगस्त, 1960 में हुए आम चुनावों में 71 स्थानों में से 70 स्थान इस दल के सदस्यों अथवा दल द्वारा समर्थित सदस्यों को प्राप्त हुए थे। इस दल की नीति सभी जातियों को साथ लेकर स्वतंत्रता की ओर आगे बढ़ने को थी। आखिर 9 दिसम्बर, 1961 का वह स्वर्णिम दिवस भी आया जब यहाँ स्वतंत्रता की घोषणा हुई और कलिमंजरों के हिमाच्छादित शिखर पर भी राष्ट्रीय झण्डा लहराया गया। यह 9 दिसम्बर, 1962 से गणराज्य बन गया। अप्रैल, 1964 में टांगानिका और जंजीबार मिलकर एक हो गए।

जन-जीवन—कुल मिला कर टांगानिका में कोई 120 अफ्रीकी जातियाँ रहती हैं। इनमें सबसे बड़ी जाति है—सुकुमा। विक्टोरिया झील के दक्षिणवर्त्ती (झील प्रांत) में रहने वाले ये लोग पुरानी रूढ़ियाँ तोड़ कर आधुनिक जीवन की ओर अग्रसर हो रहे हैं। सुकुमा लोगों ने अपनी कई सहकारी समितियाँ भी बनायी हैं। इन्होंने अपने छोटे-छोटे रजवाड़ों (सरदारों के अधीनस्थ इलाकों) को मिलाकर सुकमालैण्ड बना लिया है। इस कबीले के स्त्री-पुरुष दोनों ही खेती के काम में हाथ बंटाते है। कलिमंजरो पर्वत के ढाल पर रहने वली 'छागा'

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

जाति भी एक जागरूक और प्रगतिशील जाति है। ये लोग व्यापारिक काम में लगे हैं। कृषक लोग पहाड़ी ढालों पर कॉफी उगाते हैं। मध्य प्रांत की बड़ी जाति गोगो है। ये शारीरिक रूप से गठीले और बुद्धिमान हैं। इस जाति के योद्धा सदैव तीर-कमान बर्छा और ढालों से लैस घूमते हैं। इनकी ढालें काले व सफेद रंग से सुचित्रित रहती हैं। मध्य प्रांत में ही न्यावुरू नामक अन्य बड़ी जाति जिसके लोग मुख्यतया चरवाहे हैं। पश्चिमी प्रांत में रहने वाली न्यामवेजी जाति का संख्या की दृष्टि से टांगानिका में दूसरा स्थान है। ये लोग अपनी साज-संवार में खूब रुचि लेते हैं। पुरुष दिन में कई बार नहाते हैं और बाल संवारते हैं। तरुणियाँ भी इस काम में पीछे नहीं हैं। पर न्यामवेजी तरुणी को सोने और चांदी से अधिक तावे के आभूषण प्रिय लगते हैं। स्त्रियाँ पैरों में अधिक जेवर पहनती हैं। पश्चिमी प्रांत में ही एक अन्य जाति है 'हा' जो अत्यंत प्राचीन जाति है तथा जादू-टोनों में बेहद विश्वास करती है। दक्षिण उच्च भूमि प्रांत में सबसे बड़ी जाति 'हेहे' है। ये लोग मुख्यतया पशु चराने का काम करते हैं। झील के तट पर रहने वाली 'किसी' जाति कुम्हारी कला में बड़ी दक्ष है। हर हफ्ते पास के प्रमुख कस्बे मतेमा में जब हाट जुड़ती है तब हजारों की संख्या में मिट्टी के पात्र बिकते हैं और लोग उन्हें बड़े चाव से खरीदते हैं। न्यासा झील के पश्चिमोत्तर सीमा पर न्याक्यूसा जाति रहती है। ये लोग दलदलीय मैदान और पहाड़ी ढालों पर रहते हैं। धरती उर्वरा है अतः खेती खूब होती है। इस जाति की अनोखी प्रथा यह है कि 11 से 13 वर्ष के किशोर अपने परिवारों से पृथक् हो जाते हैं तथा जिले भर के किशोर अपना एक नया गाँव बसाते हैं। जब तक इनका विवाह नहीं होता तब तक ये अपने माता-पिता के पास खाना खाने और खेती के काम में मदद करने आते हैं। धीरे-धीरे आगे चलकर इनका विवाह हो जाता है और फिर नया गाँव ठीक तरह बस जाता है। वे फिर स्वावलम्बी हो जाते हैं। दक्षिणी प्रांत में म्वेरा, मकोंडे, मताम्वे, याओ तथा मक्षुआ जातियाँ बसती हैं। मकोंडे जाति संख्या की दृष्टि से समूचे टांगानिका में चौथा स्थान रखती है। ये लोग लाठियों पर चढ़ कर नटों की तरह का सुन्दर नृत्य करने में माहिर हैं। कई स्त्रियाँ ओंठों में लकड़ी का छल्ला-सा लगाती हैं। ये पठारी क्षेत्र में रहते हैं पर हैं बहुत परिश्रमी। यहाँ पानी की कमी है फिर भी खेती की जाती है। चावल, काजू तथा कसावा उगाते हैं। तांगा प्रांत में डिगो सेगेजू, सम्बा तथा बोडेई मुख्य जातियाँ रहती हैं।

मसाई जाति की एक युवती

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पर इन सब जातियों से भिन्न और प्रसिद्ध जाति है—**मसाई**। ये लोग उत्तरी प्रांत में रहते हैं और ये बाँतू वर्ग से भिन्न हैं। इनका मुख्य धंधा पशु पालन तथा शिकार है। कुछ मसाई लोग कीनिया में हैं और अब यह माँग कर रहे हैं कि टांगानिका और कीनिया के मसाई प्रदेशों को मिलाकर एक देश बनाया जाए। मसाई लोग हट्टे-कट्टे और गठीले होते हैं तथा इनकी औसत ऊँचाई छह फुट है। ये लोग राइफल और तीर-कमान से शिकार करने वालों को कायर समझते हैं और स्वयं सोते शेर को ललकार कर आमने-सामने खड़े हो कर बर्छे से शिकार करते हैं। मसाई योद्धाओं को मोरान कहा जाता है। मोरान को देख एक बार तो शेर भी झिझक जाता है। मसाई युवक जब तक शेर के शिकार में भाग नहीं लेता उसे पुरुषों का दर्जा प्राप्त नहीं होता। मसाई लोगों का मुख्य भोजन पशुओं से निकाला हुआ रक्त और दूध है। जीवित पशुओं में से ही ये लोग तीर द्वारा रक्त निकाल लेते हैं। स्त्रियाँ कानों में बड़े छेद कराकर धातु के ज़ेवर पहनती हैं। कानों में पहने जाने वाली किसी-किसी बाली का व्यास तो एक फुट तक होता है। गले के हार में भी ये रुपये की आकृति के धातु के गोल टुकड़े डाले रहती हैं। मसाई स्त्री एक समय में सामान्यता दस-पन्द्रह सेर वज़न के ज़ेवर पहने रहती हैं।

राजधानी दर-ए-सलाम हिन्द महासागर के तट पर बसी है। यह महत्त्वपूर्ण बन्दरगाह है। दर-ए-सलाम का अर्थ 'शान्ति धाम' होता है। यह एक हवाई अड्डा भी है। ताड़ के वृक्षों से सजा इसका सागर-तट बड़ा मनोरम लगता है। यहाँ से जंजीबार केवल 48 मील दूर है। विक्टोरिया झील के दक्षिणी तट पर अवस्थित मवान्जा नगर कपास उद्योग का केन्द्र है। यह रेल से अन्य भागों से जुड़ा है। मोशी और अरुशा उत्तर के दो प्रसिद्ध नगर हैं। मोशी कॉफी-उद्योग का केन्द्र है और कीनिया की सीमा के पास होने के कारण व्यापारिक केन्द्र भी है। यहाँ कॉफी-उत्पादकों की एक सहकारी समिति भी है। मोशी के पास ही मेरु पर्वत के ढाल पर अवस्थित है—अरूशा। यहाँ से किलिमंजरों का दृश्य बड़ा भव्य लगता है। टांगा नामक एक और नगरी भी समुद्री बन्दरगाह है। यह दर-ए-सलाम से कुछ उत्तर की ओर है।

टांगानिका की अर्थ-व्यवस्था मुख्यतया, सीसल (सन की तरह रेशे वाली उपज), कपास और कॉफी पर आधारित है। इन तीनों चीजों के अलावा यहाँ से सोना, हीरे और हड्डियाँ व चमड़ा भी बाहर भेजा जाता है। खाने योग्य पदार्थों में मकई, ज्वार, शंकरकद, गेहूँ, चावल, गन्ना, खोपरा, केले व कैसावा भी काफी उगाये जाते हैं।

टांगानिका की एक प्रमुख समस्या सेसे (Tse-Tse) मक्खी है जो बड़ी खतरनाक है। वैसे इसका प्रकोप पूर्वी अफ्रीका भर में है पर टांगानिका का तो लगभग दो-तिहाई क्षेत्र इससे आक्रान्त है। कोई आधे इंच लम्बी यह मक्खी पशुओं व मनुष्यों में भयंकर रोगाणु पहुँचा देती है। मनुष्य का रोग तो फिर भी ठीक हो जाता है पर यह मक्खी अनगिनत पशुओं की निरन्तर बलि लेती रही है।

टाँगानिका के प्रांतों के विभिन्न नगर रेलों द्वारा जुड़े हैं। यह हवाई सेवा द्वारा कीनिया व उगाण्डा से जुड़ा हुआ है। कीनिया, उगाण्डा, कांगो, रुआण्डा, बुरुण्डी, जैम्बिया से स्टीमर भी आते-जाते हैं।

× × ×

जंजीबार—टांगानिका के तट से कोई 22½ मील दूर जंजीबार द्वीप है। जंजीबार का कुल क्षेत्रफल 640 वर्गमील है इसके 25 मील पूर्वोत्तर में पेम्बा द्वीप है जिसका क्षेत्रफल 380 वर्गमील है।

जंजीबार अपनी विशेष भौगोलिक स्थिति के कारण काफी प्राचीनकाल से जाना-पहचाना रहा है। उस समय जबकि आन्तरिक अफ्रीका के बारे में लोगों को जानकारी नहीं थी जंजीबार लोग आते-जाते रहते थे। ईसा-पूर्व

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

की सातवीं शताब्दी से ही भारत और जंजीबार के बीच मस्तूली जहाज आते-जाते रहे हैं।

भारत आने वाला प्रथम पुर्तगाली यात्री वास्कोडिगामा पुर्तगाल की राजधानी लिस्बन से 18 जुलाई, 1497 को रवाना हुआ था। पूर्वी अफ्रीका में मोजाम्बीक के तट पर जब वास्कोडिगामा पहुँचा तो उसने यहाँ कई भारतीय व्यापारियों को व्यापार करते पाया। यहीं उसे मालूम हुआ कि कालीकट और मोजाम्बीक के बीच जहाज नियमित रूप से आते-जाते हैं। वास्कोडिगामा के लोग मोम्बासा में (कीनिया का एक तटवर्ती प्रसिद्ध नगर) पहुँचे तो वहाँ भी उन्होंने कई भारतीय वस्तुएँ बिकती देखीं। वास्कोडिगामा के साथ एक भारतीय (गुजरात का निवासी) भारत आया था। उसने ही वास्कोडिगामा के जहाज का मार्गदर्शन किया था। सन् 1512 में डार्टे बारबोसा नामक पुर्तगाली ने पूर्वी अफ्रीका तट तथा मालाबार का वर्णन किया है। जंजीबार और पेम्बा के सम्बन्ध में उसने लिखा है—'इन द्वीपों के निवासी बड़े सुख व आराम से रहते हैं और हर तरह से सम्पन्न हैं—ये लोग बहुत बढ़िया सूती अथवा रेशमी कपड़े पहनते हैं, जो ये मोम्बासा स्थित खंभात (गुजरात) के व्यापारियों से खरीदते हैं।' उसने स्त्रियों के उन परिधानों का और सोने व चांदी के आभूषणों का भी जिक्र किया जो भारत के बने होते थे। जंजीबार में आने वाला प्रथम अंग्रेज 'एडवर्ड बोन एडवन्चर' था जो 1591 में यहाँ आया था। उसने अपनी रिपोर्ट में लिखा है कि उसने 'जंजीबार नगर में भारतीय व्यापारियों और अरब धनाढ्यों के पत्थर से निर्मित मकान हैं'।

16वीं शताब्दी के प्रथम दशक में यहाँ और पूर्वी अफ्रीका तट पर पुर्तगालियों का प्रभुत्व हो गया था। उसके पूर्व यह इलाका फारस के अधीन था। पुर्तगालियों और अरबों में यहाँ के लिए स्पर्धा होती रही पर 1698 में ओमन के अरबों ने मोम्बासा स्थित पुर्तगाली दुर्ग पर अधिकार कर लिया। इसके बाद जंजीबार, पेम्बा और पूर्वी अफ्रीका के क्षेत्र अरबों के अधीन हो गए। 1747 में अहमद बिन सैयद-एल-बुसैदी ओमन के शासक बने। 1828 में, सईद सैयद ओमन के शासक बने। उन्होंने जंजीबार व पेम्बा को संगठित कर एक इकाई बनाया। उन्होंने ही मस्कट के स्थान पर जंजीबार को राजधानी बनाया। 1840 में सुल्तान ने एक गुजराती व्यापारी माधवजी तोपान को सीमा शुल्क इकट्ठा करने का काम सौंपा था। उस समय सुल्तान का प्रभाव केवल जंजीबार और पेम्बा तक ही सीमित नहीं था अपितु पूर्वी अफ्रीका में भी फैला था। मालिन्दी, किल्वा, मोम्बासा, तांगा तथा अन्य बन्दरगाह सुलतान के अधिकार क्षेत्र में थे और उनकी ओर से माधवजी तोपान के आदमी यहाँ सीमा शुल्क वसूल करते थे। 1856 में सईद मजीद यहाँ के शासक बने थे। उन्होंने भी सीमा शुल्क संग्रहण का काम लाढादमजी नामक भारतीय को सौंपा था। लाढादमजी सुल्तान की नजर में अत्यंत विश्वसनीय और प्रभावशाली व्यक्ति थे। 1890 में जंजीबार के सुल्तान सय्यद अलीबिन सईद ने ब्रिटेन का संरक्षण स्वीकार कर लिया और तभी से इसकी पराधीनता का युग शुरू हुआ। 1911 में सय्यद सर खलीफा बिनहरूब यहाँ के सुलतान बने और उनकी मृत्यु हो जाने पर सय्यद जमशेद बिन अब्दुल्ला 2 जुलाई, 1963 को सिंहासनारूढ़ हुए थे।

अफ्रीका महाद्वीप में फैली आजादी की लहर से जंजीबार भी अछूता नहीं रह सकता था अतः ब्रिटेन ने 1957 में यहाँ पहले चुनाव कराये। 1961 के विधान के अनुसार यहाँ विधान सभा में निर्वाचित सदस्यों का बहुमत हुआ। जून, 1963 में यह आन्तरिक रूप में स्वशासित हो गया और 10 दिसम्बर, 1963 को आखिर वह दिन भी आया जब जंजीबार पूर्णतया स्वाधीन हो गया। शेख मोहम्मद शम्ते हमादी प्रधानमंत्री बने, क्योंकि विधान सभा में जंजीबार नेशनलिस्ट पार्टी और जंजीबार पेम्बा पोपुल्स पार्टी को मिलकर बहुमत दिया था। स्वतन्त्रता के लगभग एक महीने बाद ही 12 जनवरी, 1964 को यहाँ क्रान्ति हुई। हमादी शासन का तख्ता पलट

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

दिया गया। सुल्तान निर्वासित कर दिये गए। जंजीबार को लोकतांत्रिक गणराज्य बनाने का ऐलान किया गया और श्री करुमे यहाँ के राष्ट्रपति बने। श्री करुमे ने 22 अप्रैल, 1964 को टांगानिका के राष्ट्रपति श्री न्येरेरे के साथ एक करार पर हस्ताक्षर किये जिसके 5 दिन बाद टांजानिया संयुक्त गणराज्य की स्थापना हुई।

जंजीबार और पेम्बा द्वीपों में कोई 3 लाख लोग बसते हैं। सच तो यह है कि यह द्वीप अफ्रीकी, अरब और भारतीयों का संगम-स्थल रहा है। यहाँ के पुराने अफ्रीकी अपने को 'शिराजी' कहते हैं और इन्हीं के नाम पर यहाँ का अफ्रीकी प्रधान दल अफ्रो-शिराजी बना। अफ्रीकी लोग ज्यादातर लौंग और नारियल के बागानों में काम करते हैं। जनवरी, 1964 की क्रांति के पूर्व अरब अमीरों की स्थिति में थे। वे बड़े बागानों के स्वामी थे पर अब नयी सरकार राष्ट्रीयकरण कर रही है। भारतीय खुदरा व्यापारी हैं। बहुत-से भारतीय नयी सरकार की उपेक्षा के कारण भारत लौट रहे हैं।

द्वीप के पश्चिमी तट पर बसे हुए नगर का नाम भी जंजीबार है। यह प्रादेशिक राजधानी और एक अच्छा बन्दरगाह है। जंजीबार द्वीप की कुल आबादी का एक तिहाई भाग इसी शहर में रहता है।

लौंगों का द्वीप—जंजीबार द्वीप लौंग की विपुल उपज के कारण संसार भर में लौंगों के द्वीप के रूप में प्रसिद्ध है। यहाँ लौंग के कोई 40 लाख पेड़ हैं। विश्व भर की लौंग सम्बन्धी जरूरत का तीन-चौथाई भाग जंजीबार पूरा करता है। लौंग 10 से 50 तक के गुच्छ में पौधों में लगती है। इन्हें तोड़ कर 4-5 दिन धूप में सुखाया जाता है। फिर इन्हें छाँट कर निर्यात के लिए रखा जाता है। लौंग से तेल भी निकाला जाता है। जंजीबार की दूसरी प्रमुख पैदावार नारियल है। लौंग व नारियल या इनके पदार्थ जंजीबार के निर्यात का 98 प्रतिशत हैं। इसके अलावा मकई, शकरकन्द, तम्बाकू, काजू, संतरे, अंगूर, नीबू भी उगाये जाते हैं।

जंजीबार में रेलें नहीं हैं, सड़क हैं, और एक हवाई अड्डा है।

जंजीबार की एक किसान युवती

अफ्रीकियों और भारतीयों का परस्पर सहयोग मुझे प्रयाग में गंगा-यमुना के सङ्गम जैसा लगता है—
—काका साहेब कालेलकर

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

39. उगाण्डा

(UGANDA)

क्षेत्रफल : 93,981 **वर्गमील** जन-संख्या : 6,90,000

टांज़ानिया के उत्तर में और कीनिया के पश्चिम में उगाण्डा अवस्थित है। इसके उत्तर में सूडान और पश्चिम में कांगो हैं।

इसका कुल क्षेत्रफल 93,981 वर्गमील है जो हमारे राजस्थान के बराबर भी नहीं है। पूर्व से पश्चिम में अधिकतम दूरी 350 मील है और उत्तर-दक्षिण में 400 मील। इस क्षेत्रफल का एक तिहाई भाग पानी, दलदल और आरक्षित वनों के कारण खेती योग्य नहीं है। यहाँ कई झीलें हैं। विक्टोरिया, किओगा, अलबर्ट, एडवर्ड, जार्ज व कत्वे आदि। विक्टोरिया झील श्वेत नील नदी का स्रोत है। यह नदी सूडान और मिस्र में जाती है। विक्टोरिया झील का नाम भारतीय पुराणों में 'अमृत सरोवर' है। उगाण्डा की पश्चिमी सीमा पर जो पहाड़ हैं, उन्हें आजकल रुवेन्जी कहा जाता है पर इसे चंद्रगिरि भी कहते हैं। इस पर्वत का भी भारतीय प्राचीन ग्रंथों में उल्लेख है और इससे व्यक्त होता है कि यूरोपीयनों से काफी समय पहले भारतीयों को अफ्रीका के इन स्थानों का ज्ञान था और दोनों में परस्पर सम्पर्क था।

उगाण्डा अफ्रीका का विशिष्ट देश है। विंस्टन चर्चिल के शब्दों में : "उगाण्डा परी-लोक की तरह है। ज्यों ही आप रेल में सवार होकर उत्तर की ओर ऊँचाई पर चढ़ेंगे, आपको एक अनोखी दुनियाँ नज़र आएगी। यहाँ के दृश्य, निराले हैं, जलवायु निराली और सबसे बड़ी बात यह कि यहाँ के निवासी भी निराले हैं।" भू-मध्यरेखा के पास होने के बावजूद, ऊँचाई के कारण यहाँ की जलवायु सुहावनी है और औसतन यहाँ 50 इंच वर्षा प्रतिवर्ष होती है।

अतीत की झांकी——उन्नीसवीं शताब्दी के मध्य में यहाँ दो प्रकार की शासन-व्यवस्था चल रही थी। उस समय यह एक संगठित देश नहीं था। उत्तरी व पूर्वी भाग में छोटे-छोटे गाँव थे, वे एक प्रकार से स्वशासित थे। दक्षिण व पश्चिमी भाग में कई रजवाड़े थे। इनमें से बड़ा था बुगाण्डा। 1850 तक बुगाण्डा में अरब और स्वाहिली व्यापारियों का आगमन हो चुका था। बुगाण्डा की धरती पर 1862 में पैर रखने वाले प्रथम यूरोपीय यात्री स्पेक ने लिखा है :

'कबाका के महल और दरवाजों की विशालता तथा उनकी स्वच्छता देखकर मैं दंग रह गया···जिस पहाड़ी पर हम खड़े थे उसके दोनों तरफ घास के बड़े-बड़े झोंपड़े थे जिनके छप्पर बड़ी सफाई से बनाये गए थे···महल के दरबारियों ने बड़े शान से आगे कदम बढ़ाकर मेरा स्वागत किया···वे साफ-सुथरे और बढ़िया परिधान पहने थे।···मुझसे रुकने को कहा गया और चिलचिलाती धूप में मैं बैठ गया···वहाँ एक ऐसा नाटकीय दृश्य दिखा जो मैंने पहले कदाचित ही देखा हो···25 वर्ष के युवा सुन्दर व सजीले नरेश एक चौकोर चबूतरे पर बिछे लाल-कालीन पर विराजमान थे। उनके गले में कई आभूषण थे। वक्ष पर रंग-बिरंगे मानकों से बनी एक माला

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

सुशोभित हो रही थी···एक भुजा पर मानकोंसे बना बाजूबंद सोह रहा था तथा दूसरी भुजा पर सर्प की कांचली में लिपटी रस्सी से बंधा ताबीज था। सम्राट के 'पैर और हाथों की सभी अंगुलियों में पीतल और ताम्बे के छल्ले थे···हर चीज साफ-सुथरी और सुन्दर थी तथा उसमें दोष निकालना मुश्किल था।"

स्पेक ने तात्कालीन बुगाण्डा नरेश मुतेसा के राजदरबार में जो कुछ देखा और लिखा, उससे यह बात स्पष्ट हो जाती है कि उगाण्डा में बहुत पहले से लोग अनुशासनात्मक और सभ्य ढंग से रहते आये थे और विशेष बात यह कि उनकी शासन-व्यवस्था सुचारु थी। बुगाण्डा नरेश को वहाँ की भाषा में कबाका कहते हैं और वहाँ की स्थानीय संसद को लुकीको। हालांकि लुकीको में उस समय कबाका द्वारा मनोनीत ही सदस्य होते थे पर फिर भी हर प्रस्ताव पर वहाँ बहस होती थी और कबाका को जनता की भावना का पता लगता रहता था। बुगाण्डा के प्रधानमंत्री को कती किरो कहते थे। शासन व्यवस्था ही क्यों उस समय न्याय-व्यवस्था भी थी। दरबार होते थे। शूरवीरों के लिए विशेष नियम थे। निष्कर्ष यह कि उस समय भी बुगाण्डा के निवासी शांतिपूर्ण और व्यवस्थित ढंग से रह रहे थे।"

स्पेक ने ही यहाँ नील के उद्गम का पता लगाया था और अपनी यात्रा का वृतान्त एक पुस्तक में लिखा है।

नील का उद्गम जिंजा के पास है। विक्टोरिया झील में से निकलकर प्रपात बनाती हुई जलधारा निकलती है वही नील का उद्गम है। इस प्रपात का नाम रिपन फाल्स है पर अब ओवन बांध के बन जाने से वहाँ खाड़ी की पानी की सतह ऊँची उठ गई है जिससे रिपन प्रपात विलीन हो गया है। यहीं नील की धारा बड़े वेग से आगे बढ़ती है और जल की फुहारों से अनोखा दृश्य उत्पन्न हो जाता है। स्पेक ने भारतीय पुराणों के आधार पर बनाये गए नक्शों की सहायता से 28 जुलाई, 1962 को नील के उद्गम का पता लगाया था। गांधी जी की भस्मी विश्व की जिन नदियों में प्रवाहित की गई थी, उसमें से एक नील नदी भी है। जिंजा नगर के पास गांधी जी का एक स्मारक बना है जिसकी नींव काका कालेलकर ने अपनी यात्रा के दौरान 2 जुलाई, 1950 को रखी थी।

बुगाण्डा के अलावा उन दिनों इसके पश्चिम में बुनयोरो, तारों व अंकोलो राज्य भी थे। तथा उत्तर में थीं — संगठित ग्राम इकाइयाँ। स्पेक के कोई 13 वर्ष बाद यूरोपीय यात्री स्टेनले यहाँ आया था। उस समय भी बुगाण्डा में मुतेसा प्रथम शासक थे। स्टेनले का भी यहाँ अच्छा स्वागत हुआ और उसने नरेश को ईसाई धर्म के रंग में रंगना शुरू कर दिया। 1877 से यहाँ ईसाई मिशनरी आना शुरू हो गए और लोगों को ईसाई बनाना शुरू कर दिया गया। 1884 में मुतेसा की मृत्यु के बाद जब मवांगा सिंहासनारूढ़ हुए तो उन्होंने ईसाई मिशनरियों के खिलाफ बड़ी सख्त कार्रवाई की। कई पादरियों की हत्या कर दी गई। ईसाई पादरियों के चीखने चिल्लाने पर 1890 में इम्पीरियल ईस्ट अफ्रीकी कम्पनी ने लुगाई के नेतृत्व में यहाँ अपनी सैनिक टुकड़ी भेज दी पर बुगाण्डा को पराधीन बनाना और ईसाइयों के हितों की रक्षा करना इसकी सामर्थ्य के बाहर था। दो वर्ष बाद ही इस कम्पनी ने कह दिया कि यहाँ रहना हमारे सामर्थ्य के भीतर नहीं है और हम बुगाण्डा से चले जाएँगे। अतः फिर ब्रिटिश सरकार खुलकर सामने आयी और 1893 में ब्रिटेन ने कम्पनी का दायित्व सम्भाल लिया और 1894 में इसने बुगाण्डा को अपना 'रक्षित' प्रदेश घोषित कर दिया। दो वर्ष बाद ही बुगाण्डा के पश्चिमवर्ती राज्य और उत्तरवर्ती भाग भी ब्रिटेन की अधीनता में आ गए।

1900 में कबाका (बुगाण्डा नरेश) और ब्रिटिश सरकार के बीच एक करार हुआ था। पर 1953 में कबाका और ब्रिटिश सरकार के बीच गंभीर मतभेद हो गए और ब्रिटिश सरकार ने कबाका की मान्यता ही रद्द कर दी

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

और उन्हें निर्वासित कर दिया। इससे बुगाण्डा में व्यवस्था के स्थान पर और भी अशांति भड़क उठी। आखिर दो वर्ष बाद ब्रिटिश सरकार को नया करार करना पड़ा। कबाका को बुगाण्डा वापस लाया गया तथा उन्हें वैधानिक शासक स्वीकार किया गया। तब से वैधानिक सुधारों का क्रम चलता रहा। एक विकट समस्या यह थी उगाण्डा और बुगाण्डा में परस्पर किस तरह सम्बन्ध रहे क्योंकि बुगाण्डा अपने कबाका तथा लुकीको का महत्त्व कम करने को बिलकुल राजी न था।

सितम्बर, 1961 में लन्दन में उगाण्डा के बारे में एक संवैधानिक सम्मेलन हुआ था। उसमें ही उगाण्डा की स्वतन्त्रता की तारीख निश्चित की गई थी और उगाण्डा के लिए एक संविधान का मसौदा स्वीकृत हुआ था। इसके अनुसार अब उगाण्डा की केन्द्रीय संसद में 82 निर्वाचित और 9 विशेष रूप ले चुने गए प्रतिनिधि हैं। इन 82 स्थानों में से 21 स्थान बुगाण्डा के प्रतिनिधियों के लिए हैं। उगाण्डा की केन्द्रीय संसद में बहुमत का विश्वास रखने वाला व्यक्ति उगाण्डा का प्रधानमन्त्री बनता है।

इसी सम्मेलन में यह फैसला हुआ था कि बुगाण्डा उगाण्डा की एक संघीय इकाई के रूप में रहेगा। बुगाण्डा की स्थिति को स्पष्टतया स्वीकार कर लिया है। बुगाण्डा के नरेश कबाका और वहाँ की परम्परागत संसद का महत्त्व बना रहेगा। हाँ, लुकीकों को अब अधिक लोकतान्त्रिक बना दिया गया है। इसमें अब अधिकतम 100 सदस्य हो सकते हैं जिनमें 68 सदस्य प्रत्यक्ष रूप से निर्वाचित होंगे। बुगाण्डा की लुकीको उगाण्डा की केन्द्रीय संसद में 21 सदस्य भेजती है।

इस प्रकार अब उगाण्डा में बुगाण्डा, अंकोले, बुनयोरा तथा तोरों व बुसोगो राज्यों की स्थिति संघीय इकाई की है। बुकेडी, करामोजा, किगेजी, लंगो, मादी, तेशो, पश्चिमी नील नामक जिले हैं।

अप्रैल, 1962 में यहाँ आम चुनाव हुए। 91 सदस्यों की संसद में 43 स्थान श्री मिल्टन ओबोट के दल उगाण्डा पीपुल्स कांग्रेस को मिले पर सरकार बनाने के लिए यह पर्याप्त नहीं था अतः बुगाण्डा के कबाका यक्का पार्टी' के साथ मिलकर सरकार बनाई गई और श्री मिल्टन ओबेटे प्रधान मन्त्री बने।

9 अक्तूबर, 1962 को उगाण्डा स्वतन्त्र हो गया। शुरू में यहाँ ब्रिटेन की महारानी के प्रतिनिधि के रूप में गवर्नर जनरल नियुक्त हुआ। वह नाम मात्र का प्रमुख होता था क्योंकि कार्यकारी प्रमुख तो प्रधानमन्त्री था। 9 अक्तूबर, 1963 से गवर्नर जनरल के स्थान पर राजाध्यक्ष का पद बनाया गया और उस पर बुगाण्डा के वर्तमान कबाका फ्रेड्रिक मुतैसा द्वितीय नियुक्त हुए। मार्च, 1966 में नया संविधान लागू हुआ और श्री ओबोटे प्रथम राष्ट्रपति बने।

उगाण्डा राष्ट्रध्वज में हरे, नीले तथा हरे रंग की खड़ी पट्टियाँ हैं। हरे नीले रंग के बीच दोनों तरफ दो कड़ी सुनहरी पट्टियाँ हैं तथा नीले रंग के मध्य कलंगी वाला सुनहरे रंग का सारस है।

उगाण्डा की कुल आबादी साढ़े छह लाख से अधिक है। अफ्रीकियों के अलावा यहाँ 69 हजार एशियाई और 10 हजार यूरोपीय भी हैं। अफ्रीकी जातियों में बगाण्डा जाति सबसे बड़ी है। उगाण्डा से मिलते-जुलते शब्दों को अच्छी तरह समझ लेना जरूरी है। बगाण्डा यहाँ की जाति का नाम है। मुगाण्डा बगाण्डा का एकवचन है यानी बगाण्डा जाति का व्यक्ति मुगाण्डा कहलाता है। लुगाण्डा यहाँ की प्रमुख भाषा है और बुगाण्डा उस राज्य का नाम है जो उगाण्डा का एक अंग है। उगाण्डा पूरे देश

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

का नाम है। अफ्रीकी जातियों में बगाण्डा के अलावा बनियोरो, बतोरो, बनियाकोले, बसांगा, बचीगा और बगीशू नामक बांतू वर्ग की जातियाँ मध्य और पश्चिमी भाग में रहती हैं। उत्तर और पश्चिम में नीलोटिक वर्ग की जातियाँ हैं इनमें प्रमुख हैं :—लंगो, अचोली, अलूर, लुगबारा और मादी। अर्द्धहामी जातियों में इतोसो प्रमुख है। संख्या की दृष्टि से बगाण्डा के बाद इतोसो और बसोगा जाति के नाम आते हैं। पश्चिमवर्ती वनों में बहुत नाटे कद के लोग भी रहते हैं। यहाँ की स्त्रियाँ बहुत परिश्रमी हैं। खेती-बाड़ी भी वही करती हैं।

यहाँ ईसाई मिशनरी पिछले साठ वर्षों से काम कर रहे हैं। इसका नतीजा यह है कि यहाँ ईसाइयों की संख्या 20 लाख से भी अधिक हो गई है। कुछ मुसलमान भी हैं। शेष लोग मूर्तिपूजक हैं।

उगाण्डा का एक गडरिया

उगाण्डा में कोई 60,000 भारत मूलक लोग हैं। वैसे भारत के पश्चिमी तट से व्यापारियों का आना-जाना यूरोपियों के आने के पहले से चल रहा है पर 1895 में जब कीनिया उगाण्डा रेलवे-लाइन बनी थी तो भारत से बड़ी तादाद में मजदूर पूर्वी अफ्रीका ले जाए गए। एक तरह रेलवे का निर्माण भारतीयों की मेहनत के बल पर हुआ है। वैसे भारतीय व्यापारियों ने हर कस्बे में और हर गाँव जाकर दुकानें खोलीं और आर्थिक उन्नति में योग दिया है। अधिकतर भारतवंशी गुजरात व पंजाब के हैं।

उगाण्डा में रहने वाले भारत मूलक लोगों और अफ्रीकियों में परस्पर सम्बन्ध बहुत मीठे हैं।

अर्थ-व्यवस्था—आर्थिक दृष्टि से उगाण्डा की स्थिति काफी अच्छी है। यहाँ की प्रमुख फसलें कॉफी और कपास हैं। तम्बाकू, गन्ना, चाय और मूंगफली भी उगायी जाती हैं। मुख्य खाद्य फसल मकई है जो मुख्यतया बुगाण्डा और पूर्वी प्रान्त में उपजायी जाती है। इससे आंतरिक खपत ही पूरी हो पाती है।

उगाण्डा रेल द्वारा कीनिया के मोम्बासा बन्दरगाह से जुड़ा है। इस रेल की एक शाखा पश्चिमवर्ती प्रान्त में रुवेन्जी पहाड़ की तलहटी तक चली गई है। विक्टोरिया झील में स्टीमर भी आते-जाते हैं। यहाँ अच्छी सड़कें भी हैं जो उगाण्डा की राजधानी कम्पाला को जिलों के प्रमुख नगरों में मिलाती हैं।

कम्पाला रोम की तरह सात पहाड़ियों पर बसी हुई एक सुन्दर सुहावनी और रमणीय नगरी है। यहाँ कई अच्छे होटल भी हैं। यह बुगाण्डा राज्य की मैंगो राजधानी से जुड़ा है। लेकिन बुगाण्डा नरेश (कबाका) का राजमहल यहीं है। यहाँ से एक अंग्रेजी का अखबार 'उगाण्डा आर्गस' निकलता है। देशी भाषा लुगाण्डा में कई पत्र-पत्रिकाएँ निकलती हैं। इसके उत्तर पश्चिम में ही प्रमुख शिक्षा केन्द्र मकरेरे है। जहाँ पूर्वी अफ्रीका विश्वविद्यालय बना है। एण्टेबे भी प्रमुख नगर है जो कम्पाला से 21 मील लम्बी अच्छी सड़क से जुड़ा है।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

एम्बाले, गुलू मासींदी, एम्बारारा और कबाले यहाँ के अन्य प्रसिद्ध शहर हैं। लुंगांजी और जिंजा में बहुत से कारखाने हैं।

भारत और उगाण्डा—1965 में डा० मिल्टन ओबोटे भारत-यात्रा पर आए थे और भारत के स्वर्गीय प्रधानमंत्री श्री लालबहादुर शास्त्री के साथ दोनों देशों में परस्पर सहयोग बढ़ाने पर चर्चा की थी। 1965 में भारत ने उगाण्डा में चीनी कारखानों की स्थापना के लिए एक संयुक्त कम्पनी बनाई है जो मशीनों आदि से सहायता करेगी।

'गांधी जी ने दासता की बेड़ियाँ तोड़ने के आतुर अफ्रीका को नया प्रकाश दिखाया था।

मिल्टन ओबोटे

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

40. कीनिया

(KENYA)

क्षेत्रफल : 22,40,960 वर्गमील **जनसंख्या** : 86,00,000

कीनिया का नाम भारत में अपरिचित नहीं है। भारत का इस देश से व्यापारिक सम्पर्क काफी पुराना है। इसके उत्तर में इथिओपिया व सूडान, पश्चिम में उगाण्डा व विक्टोरिया झील तथा दक्षिण में टांगानिका है। इसकी पूर्वोत्तर सीमा पर सोमालिया है तथा पूर्व में है हिन्द महासागर की लहरें। इसका कुल क्षेत्रफल 22,24,960 वर्ग मील है जिसका 5,000 वर्गमील से अधिक निरा जलीय क्षेत्र है। आकार की दृष्टि से कीनिया हमारे मध्यप्रदेश व मद्रास के सम्मिलित क्षेत्रफल से कुछ ही अधिक है।

कीनिया को चार प्राकृतिक भागों में बांटा जा सकता है। उत्तरपूर्व के शुष्क मैदान जहाँ कुछ खानाबदोश लोग रहते हैं; उत्तर-पश्चिम का निचला और कुछ क्षेत्र, दक्षिण-पूर्व की सूखी व उजाड़ भूमि तथा दक्षिण पश्चिम का वह भाग जहाँ कीनिया की 85 प्रतिशत जनता रहती है। भूमध्य रेखा के पास ही सुप्रसिद्ध पर्वत माउण्ट कीनिया है जिसका स्थानीय भाषा में अर्थ है जगमगाता हुआ पर्वत। जोमो केन्याटा की प्रसिद्ध पुस्तक का नाम 'फेसिंग दि माउण्ट कीनिया' (कीनिया पर्वत के सामने) है। इस पर्वत की किंवदन्तियों में बार-बार चर्चा आती है और यहाँ के निवासी इसे बड़ी श्रद्धा से देखते हैं। यह हिमाच्छादित पर्वत 17,040 फुट ऊँचा है। इस के दो शिखर हैं—बतियाँ और नेलियाँ। साफ मौसम में माउण्ट कीनिया नैरोबी से भी दिखाई देता है पर नानयूकी स्थान से देखे जाने पर यह अत्यन्त रोमांचकारी लगता है। इसके ढाल घने वनों से ढके हैं। दूसरा पर्वत एल्गोन है जो उगाण्डा की सीमा पर है। अर्बडियर, होमा और किजावे अन्य पहाड़ हैं। अर्बडियर पर्वतमाला को एक गहरी घाटी—जिसे ग्रेटरिफ्ट वैली कहते हैं—काटती है। 30-40 मील चौड़ी यह घाटी आस-पास की भूमि से 2 000 से 3,900 फुट तक गहरी है। इस घाटी के पूर्व में ही दो नदियाँ हैं ताना व ओथी। ये हिन्द महासागर की ओर बहती हैं। विक्टोरिया झील का कुछ भाग कीनिया की सीमा में है। एक और झील है रुडोल्फ जो उत्तरी भाग में अवस्थित है।

अतीत—कीनिया काफी प्राचीन भूभाग है। अरबों का तो इस भाग से सम्पर्क कोई 3,000 वर्ष पुराना है। वास्को डि गामा 1498 में यहाँ के तटवर्ती नगर मलिन्दी तक पहुँचा था। पर अधिकांश यात्री उन दिनों तटवर्ती नगरों तक ही पहुँच पाये थे। हाँ, जर्मन यात्रियों ने भीतरी क्षेत्रों में प्रवेश करने का साहस किया था। अंग्रेजों ने शुरू में जंजीबार के सुल्तान से पूर्वी अफ्रीका के तट पर कुछ जमीन लेकर पैर जमाए थे। यह 1887 की घटना है। कुछ ही वर्षों बाद यहाँ इम्पीरियल ब्रिटिश ईस्ट अफ्रीका कम्पनी बनी जिसने उस क्षेत्र पर अधिकार कर लिया जो आजकल कीनिया व उगाण्डा के नाम से पुकारा जाता है। 1895 में इस भाग को विधिवत् ब्रिटिश साम्राज्य का अंग बना लिया गया। 1920 में इनके तटवर्ती भाग को संरक्षित प्रदेश तथा शेष को उपनिवेश घोषित किया गया था। 1920 से ही यहाँ राष्ट्रीयता की चिनगारियाँ सुलगने लगीं। क्योंकि यहाँ की

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

विधान सभा के लिए केवल यूरोपियों को मताधिकार दिया गया। 8 वर्ष बाद यहाँ पहली अफ्रीकी संस्था किकयु-सेंट्रल एसोसियेशन की स्थापना हुई। इसके नेता श्री केन्याटा थे। इस दल ने विधान सभा में अफ्रीकी प्रतिनिधित्व की मांग की पर द्वितीय विश्व युद्ध के कारण कोई सुनवाई नहीं हुई।

1950 में कीनिया में एक भयानक हिंसात्मक विद्रोह फूट पड़ा था जिसे माओ-माओ आन्दोलन कहते हैं। इसमें मुख्यतया किकयु, मेरु तथा एम्बी जातियाँ शामिल थीं। इस विद्रोह का मूल कारण भूमि की ऐसी व्यवस्था थी जिसमें यूरोपीय तो बड़े-बड़े जमीदार बन गए और अफ्रीकी रह गए केवल मज़दूर। अफ्रीकी जातियों के लिए जो धरती नियत की गई वह निम्नकोटि की और कई विषैले कीड़ों से आक्रांत थी। अफ्रीकी जनता यह आर्थिक शोषण बर्दाश्त न कर सकी और उसने यूरोपीयों को वहाँ से भगाने की एक ज़ोरदार, सशस्त्र व शक्तिशाली कोशिश की, पर वे सफल न हो पाए। अक्तूबर, 1952 में ब्रिटिश सरकार ने आपातकालीन स्थिति की घोषणा की और बाद में तात्कालीन राष्ट्रीय संस्था 'कीनिया अफ्रीकी यूनियन' पर प्रतिबन्ध लगा दिया। ब्रिटिश अधिकारियों को माओ-माओ आन्दोलन कुचलने में सात वर्ष लगे और जनवरी, 1961 में जाकर संकटकालीन स्थिति की समाप्ति की घोषणा की गई। सुप्रसिद्ध राष्ट्रवादी नेता जोमो केन्याटा और कई अन्य नेताओं को भी 'माओ-माओ' आन्दोलन के सिलसिले में गिरफ्तार कर लिया गया और 1953 में उन्हें सात वर्ष कैद की सजा सुनायी गई। जोमो केन्याटा को अगस्त, 1961 में छोड़ दिया गया। इस रिहाई पर कीनिया ही नहीं समस्त अफ्रीका में खुशी मनायी गई। अन्य नेता भी छोड़ दिये गए। जोमो केन्याटा पहले तो यहाँ के प्रमुख दल काडू और कानू दल में समझौता कराने का प्रयत्न करते रहे पर वे सफल नहीं हुए तो कानू में शामिल हो गए। और इसका अध्यक्ष पद सम्हाल लिया।

शासन-व्यवस्था—1860 में यहाँ एक नया संविधान लागू किया गया जिसके अनुसार विधान परिषद् में 65 स्थान रखे गए। 1962 में स्वतन्त्रता-पूर्व का नया संविधान बना इसके अन्तर्गत मई, 1963 में पहले आम चुनाव हुए जिसमें कानू दल विजयी रहा। 1 जून, 1963 को कीनिया स्वशासित हो गया और जोमो केन्याटा पहले प्रधान मंत्री बने। 12 दिसम्बर, 1963 को यह ब्रिटेन की परीधीनता से पूर्णतया स्वतंत्र हो गया। एक वर्ष बाद 12 दिसम्बर, 1964 को गणराज्य बन गया। जोमो केन्याटा यहाँ के राष्ट्रपति हैं।

कानून बनाने के लिए यहाँ एक केन्द्रीय संसद् (नेशनल असेम्बली) है जिसके दो सदन होते हैं : सीनेट जिसमें 41 स्थान है उच्च सदन है। निम्न सदन प्रतिनिधि सभा है जिसमें 117 सीधे निर्वाचित और 12 विशेष रूप से निर्वाचित सदस्य होते हैं। कीनिया 7 प्रदेशों में बटा है और हर प्रदेश में प्रादेशिक असेम्बली की व्यवस्था है। केंद्र अधिक शक्तिशाली है। कीनिया अफ्रीकी नेशनल यूनियन (कानू) ही प्रमुख राजनैतिक दल है। गणराज्य बनने के बाद दूसरा राजनीतिक दल कीनिया अफ्रीकी डेमोक्रेटिक यूनियन (काडू) अपने आप भंग हो गया है।

कीनिया के राष्ट्रध्वज में काले, लाल, हरे रंग की आड़ी पट्टियाँ हैं। काले को लाल से वलाल को हरे से संकड़ी सफेद पट्टी अलग करती है। कीनिया का आदर्श वाक्य 'हरम्बी' है।

जन-जीवन—कीनिया की कुल जनसंख्या 86,00,000 है। इसमें से 80,00,000 अफ्रीकी हैं शेष एशियाई व यूरोपीय हैं। अफ्रीकियों की सबसे बड़ी जाति है किकयु। किकयु जाति को ही जोमो केन्याटा जैसे महान और प्रतिभाशाली नेता को जन्म देने का गौरव प्राप्त है। कुल अफ्रीकी जनसंख्या का 20 प्रतिशत किकयु लोग

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

हैं। किकयु जाति के उद्गम के सम्बन्ध में इनमें एक रोचक किंवदन्ती प्रचलित है। कहते हैं कि बहुत-बहुत वर्ष पहले गिकयु नामक एक व्यक्ति कीनिया पर्वत के उच्च शिखर पर 'प्रकाश के देवता' की आराधना के लिए गया। देवता ने प्रसन्न होकर वरदान दिया कि इस पर्वत के आस-पास की भूमि तुम्हारी है और तुम वहाँ घर बसा कर रहो। गिकयु महोदय ज्यों ही पर्वत से नीचे आये तो मुम्बी नामक सुन्दरी से उनकी भेंट हो गई। प्रेमालाप की परिणति विवाह में और विवाह की परिणति 9 कन्याओं के जन्म में हुई। ये कन्याएँ जब बड़ी हो गईं तो 'प्रकाश देवता' की कृपा से वहीं 9 नवयुवक आ गए और गिकयु की कन्याओं का उनसे विवाह हो गया। इन 9 विवाहों के फलस्वरूप किकयु जाति के 9 कबीलों का उद्गम हुआ।

इतिहासकारों का कहना है कि किकयु लोग 16वीं-17वीं शताब्दी में मिस्र के दक्षिणी भाग से इधर आये थे। यह भी कहा जाता है कि इनके पूर्व यहाँ शिकार पर अवलम्बित जाति बण्डेरोबो रहती थी। किकयु लोगों ने यहाँ आकर खेती और पशु-पालन का सिलसिला शुरू किया, परस्पर विवाह हुए और अन्त में किकयु जाति प्राचीन जाति को आत्मसात कर गई।

किकयु जाति का मुख्य आवास नैरोबी के उत्तरी भाग में है पर अब थोड़ी बहुत सर्वत्र फैली है। यूरोपीयों के आगमन के पूर्व इस जाति में स्वशासन की एक अच्छी व्यवस्था प्रचलित थी। लगभग हर 30 वर्ष के बाद एक परिवर्तन समारोह होता था जिसमें मध्यम आयु के लोग बूढ़े लोगों के हाथ से शासन सूत्र सम्हाल लेते थे। इसका अर्थ यह होता था कि हर गाँव का मुखिया नया चुना जाता और संयुक्त परिषद् के सदस्य भी नये-निर्वाचित होते। शासन का पद पैतृक नहीं होता था बल्कि योग्यता और काम के आधार पर मिलता था। इस शासन-परिवर्तन के समारोह को 'इत्वीका' के नाम से पुकारा जाता है पर अंग्रेजों के बाद यह बन्द हो गया है। अन्तिम 'इत्वीका' 1896 में हुआ था।

किकुयु जाति में लड़के और लड़कियों को मिलने-जुलने की स्वतंत्रता है। वे स्वयं अपना जीवन-साथी चुन लेते हैं। जब किसी लड़के को लड़की से प्रेम हो जाता है तो वह अपने एक मित्र के साथ लड़की के घर जाता है और मित्र के माध्यम से प्रणय निवेदन करता है। यदि लड़की सहमत होती है तो वह कहती है कि मेरे माँ-बाप से पूछ लीजिए और वह असहमत होती है तो कह देती है कि अभी संभव नहीं है। लड़की की सहमति के बाद लड़का अपने माँ-बाप से अपनी इच्छा व्यक्त करता है। लड़के वाले शहद और गन्ने की शराब लेकर जाते हैं। लड़की वाले के यहाँ अतिथियों की आवभगत होती है। लड़की की सहमति मालूम की जाती है। यदि लड़की सींग में शराब भरकर अतिथियों को देने के पहले स्वयं उसमें से चख लेती है तो उसे सहमति माना जाता है। इसके बाद लड़के वाले भेड़, बकरियों और अन्य पशुओं के रूपमें उपहार ले जाते हैं, इस बार लड़की वाले के सगे-सम्बन्धी इकट्ठे होते हैं, एक भेड़ काटी जाती है उसके रक्त से माउण्ट कीनिया पर्वत की ओर तथा दरवाजे पर छींटे दिये जाते हैं। सबकी दावत होती है और सम्बन्ध पक्के होने की घोषणा की जाती है। फिर वर अपनी हम उम्र के लड़कों को साथ ले तथा उपहार लेकर लड़की के यहाँ जाता है। वहाँ नृत्य गान होते हैं और लड़की को, कबीले के बड़े-बूढ़ों और सम्बन्धियों के सामने वर पक्ष का मान लिया जाता है। वधू को वर के घर ले जाने का कार्य वर-पक्ष की स्त्रियाँ सम्पन्न करती हैं। वधू को वे कन्धे पर बिठला कर हँसती-किलकती ले आती हैं जबकि वधू रोती-चीखती यह कहती है कि मुझे जाना मंजूर नहीं है। वर पक्ष के यहाँ वधू को ले जाकर उसे नई बनाई गई झोंपड़ी में रखा जाता है। खूब नाच-गान और दावतें होती हैं। किकुयू जाति में पुरुष सामर्थ्य के अनुसार चाहे जितनी पत्नी रख सकता है। बहुधा जब पहली पत्नी गर्भवती हो जाती है तो वह स्वयं ही अपने पति से

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

कहती है कि मैं कुछ दिनों तक घर का काम काज नहीं कर पाऊँगी, और आपकी देखभाल भी नहीं हो सकेगी इसलिए आप एक और विवाह कर लीजिए। घर के बाड़े में प्रत्येक पत्नी के लिए पृथक् झोंपड़ी होती है। और हरेक पत्नी के लिए अलग जमीन नियत होती है। जमीन पर खेती मिलकर की जाती है पर उस जमीन की पैदावार पर उस पत्नी का अधिकार समझा जाता है। इस पर उगाई गई चीजों को बेचकर पत्नी अपनी इच्छानुसार चीजें खरीद सकती है। किकुयू समाज पितृवंशीय है और कुटुम्ब में पिता का सर्वोच्च स्थान होता है। बच्चों को घर में खूब लाड़-प्यार मिलता है। बच्चे पिता को 'बाबा' और माँ को मैतो शब्दों से सम्बोधित करते हैं। दादा 'गुंका' और दादी 'कोको' कही जाती है। मामा को 'माम' और बूआ को 'टोटो कहते हैं। किकुयू स्त्रियाँ अपना सिर घुटाये रखती है और कानों में धातु की बड़ी-बड़ी बालियाँ पहनती हैं।

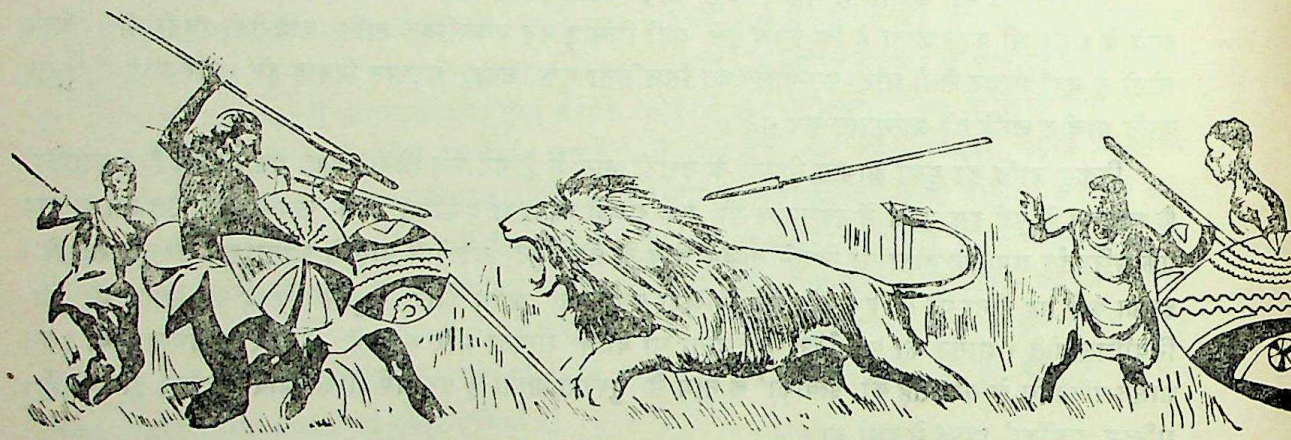

कीनिया में मसाई युवकों द्वारा शेर का शिकार

युवावस्था में प्रवेश करने के समय यहाँ लड़के और लड़कियों के लिंगोच्छेदन की क्रिया को जो मुसलमानों और यहूदियों में भी प्रचलित है, बड़ा महत्त्व दिया जाता है। इस अवसर पर कई दिनों तक कर्मकाण्ड और समारोह होते हैं। इसके बिना किकुयू समाज में लड़के और लड़कियों को युवक-युवतियों के रूप में स्थान प्राप्त नहीं होता।

किकुयू से मिलती-जुलती अन्य जातियाँ हैं—एम्बू मेरू, वकम्बा और तैता। एल्गर पर्वत के आस-पास अबालुहया तथा दक्षिण में उच्चभूमि में किसी जाति रहती है जो पत्थर की मूर्तियाँ बनाने में निपुण है।

दूसरी बड़ी जाति है लुओ। कहते हैं कि इसका उद्गम स्रोत दक्षिणी सूडान है। अब ये मुख्यतया न्यांजा प्रांत में बसते हैं। जहाँ भी कठोर परिश्रम की आवश्यकता होती है वहीं लुओ लोग आगे बढ़ते हुए दिखाई देते हैं। रेलवे, गोदी, कारखाने और खेतों में बहुत-से लुओ लोग काम करते हैं। इन्हें भी प्राचीन परम्पराओं से स्नेह है पर इनमें आधुनिक शिक्षा भी खूब फैल रही है। हर दिसम्बर के महीने में न्यांजा प्रांत के किसुमु नगर में एक बड़ा नृत्य समारोह आयोजित होता है, इसमें लुओ जाति के विभिन्न नृत्य प्रस्तुत किये जाते हैं।

इन नृत्यों में पुरुष बकरे की खाल पहनते हैं, शुतुर मुर्ग के पंखों से अपना सिर सजाते हैं तथा शरीर व मुख पर सफेद रंग से चित्रकारी करते हैं। कमर पर घण्टियाँ बाँधते हैं। स्त्रियाँ सिर पर मनकों की मालाएँ बाँधती तथा रंग-बिरंगे वस्त्र और सीसल के रेशे से शरीर ढकती हैं व हाथ में चंवर लिए हुए नृत्य करती हैं। लुओ जाति के प्रमुख नृत्य हैं—ढोल-नृत्य, न्यांगोर नृत्य, पेय नृत्य आदि। विक्टोरिया झील के किनारे ही एक अन्य जाति रहती है मारगोली। इनमें लड़के लड़कियों को शिक्षा में बड़ी रुचि है। ये लोग हिंसा से घृणा करते है ये व्यापार में बड़ी

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

रुचि लेते हैं। फुटबाल इनका प्रिय खेल है।

उत्तरी भाग में रूडोल्फ झील के पूर्व में गाबरा, रेडिल सकुये तथा मेरिले जातियाँ हैं, जो हामी नस्ल की हैं। सोमाली जाति भी इसी भाग में है। रुडोल्फ झील तथा कीनिया पर्वत के उत्तर पश्चिमी भाग के बीच सम्बरू जाति रहती है। ये लोग खानाबदोश हैं। उत्तर पश्चिमी भाग में सुक जाति रहती है। ये लोग अपने केशों को मिट्टी लगा कर सजाते हैं तथा नाक में धातु का टुकड़ा लटकाए रहते हैं। धनी लोग अपनी हैसियत जताने के लिए बाजुओं में हाथी दांत का कड़ा डाले रहते हैं। रूडोल्फ झील के पश्चिम में तुरकाना जाति रहती है जिसके पुरुष सिर पर जिराफ के बालों से बने आभूषण अनोखे ढंग से पहनते हैं और ओठों पर हाथी दांत से बना गोल टुकड़ा लगाये रहते हैं। कीनिया के दक्षिण-पश्चिमी भाग में टांगानिका की सीमा के पास मसाई जाति रहती है जिसकी चर्चा हम टांज़ानिया में कर चुके हैं। नदी, किपसिजी, एजेंम्र, तुगेन इस प्रकार की अन्य जातियाँ है।

कीनिया में कोई 90 हज़ार भारत मूल के व्यक्ति भी रहते हैं जो मुख्यतया व्यापारिक कार्य में लगे हैं और कुछ कारीगर और सरकारी कर्मचारी हैं। शुरू में भारतीय यहाँ व्यापार के लिए आए थे। 1900 में जब मोम्बासा में रेलवे लाइन का निर्माण शुरू हुआ तो यहाँ काफी भारतीय मजदूर लाये गए।

अर्थ-व्यवस्था—कीनिया की अर्थ-व्यवस्था मुख्यतः कृषि पर आधारित है। यहाँ कॉफी इतनी उगाई जाती है कि उसका कई देशों को निर्यात किया जाता है। चाय भी बाहर भेजी जाती है। रस्सी व चटाई आदि बनाने के काम में आने वाली सीसल भी एक महत्त्वपूर्ण पैदावार है। प्रिथेरम का भी निर्यात होता है। मकई, तम्बाकू आदि भी उगाई जाती हैं।

कुछ उद्योग भी यहाँ बने हैं। सीमेंट, सिगरेट, साबुन, मौजे-बनियान, बिस्किट, रंगरोगन, काच के बर्तन आदि बनाने के कारखाने हैं। मोम्बासा में तेल शोधक कारखाना है।

किसुमू के दक्षिण में ताम्बा तथा कुछ मात्रा में सोना व चाँदी भी यहाँ निकलती है।

कीनिया की राजधानी नैरोबी है जिसका यहाँ की भाषा में अर्थ है मीठे पानी की नगरी। लगभग साढ़े पाँच हजार फुट की ऊँचाई पर बसी इस नगरी की आबादी कोई तीन लाख है जिसमें लगभग एक तिहाई भारतमूलक हैं। नैरोबी का बड़ी तेजी से विकास हुआ है और हो रहा है। संसद् भवन भव्य इमारत है। कोरोनेशन एवेन्यू पर स्थित निर्माण मंत्रालय का 13 मंजिला भवन शायद यहाँ की सबसे ऊँची इमारत है। यहाँ पूर्व अफ्रीकी रेल व बन्दरगाह संगठन और पूर्वी अफ्रीकी एयरवेज़ के प्रधान कार्यालय हैं। यह व्यापार का भी प्रमुख केन्द्र है। नैरोबी से कुछ दूर ही एक विशाल नेशनल पार्क है जहाँ शेर, हाथी, जेब्रा, ज़िराफ आदि अफ्रीकी वन्य प्राणी स्वतंत्रता से विचरण करते हुए देखे जा सकते हैं।

मोम्बासा यहाँ का दूसरा प्रमुख नगर है जो पूर्वी अफ्रीका का प्रवेश-द्वार कहलाता है। यह टापू पर बसा सुन्दर बन्दरगाह है। अरब और भारतीयों के जहाज यहाँ सदियों से आते-जाते रहे हैं। यहाँ काफी संख्या में भारतीय रहते हैं। नकारू, किसूमू, नानयूकी, मेरू, मारालाल यहाँ के अन्य प्रसिद्ध शहर हैं।

परिवहन व संचार—मोम्बासा को छोड़कर शेष प्रमुख शहर सड़कों से जुड़े हुए हैं। यहाँ कोई 620 मील लम्बी रेल लाइनें हैं। मोम्बासा से कंपाला (उगाण्डा), नैरोबी से नानयूकी तथा नकारू से किसूमू की प्रमुख लाइनें हैं। विश्व की प्रमुख विमान सेवाएँ नैरोबी होकर आती-जाती हैं। भारत के एयर इण्डिया

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

की सेवा भी यहाँ आती है। यहाँ रेडियो प्रसारण व्यवस्था वॉयस आफ कीनिया है। 1962 से यहाँ टेलीविजन शुरू हो गया है। नैरोबी से डेढ़ सौ मील की परिधि में टेलीविजन के कार्यक्रम देखे जा सकते हैं।

कीनिया व भारत—कीनिया व भारत के सम्बन्ध प्राचीन काल से हैं और कीनिया की स्वाधीनता के बाद ये सम्बन्ध और सुदृढ़ हो रहे हैं। कीनिया के स्वतंत्रता आन्दोलन में भी वहाँ रहने वाले भारतीयों और भारत के नेताओं ने सहयोग दिया है। स्वतन्त्रता आन्दोलन के दौरान अंग्रेज भारतीयों को सन्देह की निगाहों से देखते थे क्योंकि उन्हें शक था कि वे कीनिया के राष्ट्रवादियों की मदद कर रहे हैं। 1954 तक यहाँ अप्पा साहेब पन्त भारतीय हाई कमिश्नर थे। उन्होंने अपने सेवा-भाव से यहाँ के अफ्रीकियों और भारतमूलक लोगों दोनों का हृदय जीत लिया था। कीनिया की स्वाधीनता के अवसर पर भारत की ओर से शुभ कामनाएँ लेकर श्रीमती इंदिरा गांधी और श्री दिनेशसिंह गए थे। कीनिया के कई नेता, मंत्री, पत्रकार, कलाकार और विद्यार्थी भारत आते रहे हैं। कीनिया के महत्त्व को देखते हुए सरकार ने भारत के वरिष्ठ पत्रकार श्री प्रेम भाटिया को कीनिया में भारत का हाई कमिश्नर नियुक्त किया है। भारत की खटाऊ कम्पनी किसूमू नगर में एक सूती मिल बना रही है। 1965 में दोनों देशों के बीच व्यापार बढ़ाने के बारे में एक समझौता हुआ है।

दो हाथियों की लड़ाई में मुसीबत बेचारी घास की आती है।

—एक किकुयू कहावत

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

41. सोमालिया

(SOMALIA)

क्षेत्रफल : 2,58,000 वर्गमील **जनसंख्या :** 20,35,000

आइए अब अफ्रीका महाद्वीप के 'सींग' में चलें। मानचित्र में आप ने देखा होगा कि अफ्रीका का दाहिना कोना सींग की तरह निकला हुआ है। इस सींग में इथियोपिया और सोमालिया देश गिने जाते हैं।

सोमालिया गणराज्य में दो हिस्से शामिल हैं—एक तो इटालवी सोमालिया जो पहले इटली के अधीन था और दूसरा ब्रिटिश सोमालीलैण्ड जो पहले अंग्रेजों के अधीन था। ब्रिटिश सोमालीलैण्ड 26 जून, 1960 को आज़ाद हो गया था और इटालवी सोमालिया 1 जुलाई, 1960 को और उसी दिन से दोनों भाग मिल कर एक हो गए। इसका एक अन्य भाग है—फ्रैंच सोमाली लैण्ड जो अभी तक फ्रांस के ही अधीन है।

सोमालिया, कीनिया और इथियोपिया के पूर्व में तटवर्ती भाग में अवस्थित है। इस देश की सर्वाधिक चौड़ाई कीनिया की सीमा पर है और फिर यह उत्तर-पूर्व की ओर संकरा होता चला गया है। इस के बाद अदन की खाड़ी के किनारे-किनारे वह भाग है जो पहले ब्रिटिश सोमालीलैण्ड कहलाता था। भूतपूर्व इटालवी सोमालिया और भूतपूर्व ब्रिटिश सोमाली लैण्ड की सीमा पर इसके सबसे अधिक ऊँचाई वाले पठार हैं। इस की अधिकांश भूमि पठारी है। इस के पूर्वी भाग में कुछ मैदान हैं जिन की अधिकतम चौड़ाई 200 मील है। दक्षिणी भाग में जबा और शेबेले नामक दो नदियाँ हैं। इनकी घाटी में खेती होती है। अन्यथा लोगों का मुख्य धंधा पशु-पालन ही है।

सोमाली गणराज्य का क्षेत्रफल 2 लाख 58 हजार वर्ग मील है जो हमारे उत्तर प्रदेश, राजस्थान तथा हिमाचल प्रदेश के क्षेत्रफल के बराबर है। कुल जनसंख्या 20 लाख 35 हजार है।

इतिहास की झलक—सोमाली भूमि काफी प्राचीन है जिस का जिक्र मिस्र और भारत के प्राचीन ग्रंथों में मिलता है। यहाँ की राजधानी तथा प्रमुख बन्दरगाह मोगाडिशू है। कुछ विद्वानों का कहना है कि यह नाम मगध का अपभ्रंश है। कम से कम इतना तो सच है ही कि यह भाग काफी प्राचीन है। 13 वीं से 14 वीं शताब्दी के बीच शुरू में अरब प्रायद्वीप से यहाँ गाला लोग आये थे। 1827 में ब्रिटिश ईस्ट इण्डिया कम्पनी के साथ सोमाली लोगों की एक संधि हुई थी जिसके अनुसार ब्रिटिश जहाजों को बन्दरगाह के इस्तेमाल की सुविधा दी गई। 1875 में मिस्र के खेदीव ने सोमालिया पर अपना अधिकार जताया तथा कई नगरों में अपनी सेनाएँ भेज दीं। 1884 में जब सूडान में विद्रोह हो गया तो उसे दबाने सेनाएँ वहाँ चली गईं और ब्रिटेन को अपना प्रभाव फैलाने का अवसर मिल गया। 1884-87 के बीच ब्रिटेन ने कई तटवर्ती नगरों पर अधिकार कर लिया तथा अनेक कबीलों से संधियाँ कर उन्हें अपने संरक्षण में ले लिया। काफी समय तक यह क्षेत्र ब्रिटिश सरकार द्वारा भारत से शासित होता रहा। 1898 में यह ब्रिटेन के विदेश-विभाग की देख-रेख में चला गया। 1901-20 के बीच यहाँ कई विद्रोह मुल्ला मुहम्मद बिन अब्दुल्ला हसन के नेतृत्व में हुए। द्वितीय महायुद्ध के दौरान इटालवी सेनाओं के अंतरिम आधिपत्य के बाद 1948 में इस का शासन ब्रिटेन के उपनिवेश विभाग ने सम्हाल लिया। 1957 में यहाँ पहली

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

विधान सभा बनी पर यह नाम-मात्र की थी, क्योंकि सारे अधिकार गवर्नर के हाथ में होते थे। 1960 की फरवरी में यहाँ चुनाव हुए थे जिसमें 33 में से 20 स्थान सोमाली नेशनल लीग ने जीते थे। इस विधान सभा में यह प्रस्ताव पारित किया गया था कि ब्रिटिश सोमालीलैण्ड को स्वतंत्रता दी जाए और बाद में यह सोमालिया में विलीन हो जाए। ब्रिटिश सोमालीलैण्ड 26 जून, 1960 को स्वतंत्र हुआ और इस के बाद 1 जुलाई, 1960 को वह सोमालिया में मिल गया।

इटालवी सोमालिया में इटली के आधिपत्य का क्रम 1839 में शुरू हुआ जब कि इटली ने स्थानीय अरब शासकों से समझौता कर के अदन की खाड़ी के सामने की कुछ धरती पर कब्जा कर लिया था। फिर इथियोपिया, ब्रिटेन आदि से समझौता करके सीमाएँ निर्धारित की गईं। द्वितीय विश्वयुद्ध के दौरान सोमालिया पर ब्रिटिश तथा राष्ट्र-मण्डल की सेनाओं का अधिपत्य रहा। 1941 से 1949 तक सोमालिया पर ब्रिटिश नियंत्रण बना रहा। 1950 में यह इटली को ही ट्रस्टी शिप क्षेत्र के रूप में शासनार्थ मिल गया। ट्रस्टी शिप के अंतर्गत 10 वर्ष अवधि रखी गई थी। उसके अनुसार 1960 में यह स्वतंत्र हो गया। इस भाग में प्रमुख राष्ट्रीय संस्था—सोमाली युवक लीग है। इस के अलावा भी यहाँ कई राजनैतिक दल हैं जिन्होंने जनता को जागृत करने में बड़ा काम किया था।

शासन-व्यवस्था—सोमालिया एक इस्लामी गणराज्य है। यहाँ का राजधर्म इस्लाम है और यह आवश्यक है कि सभी कानून इस्लाम के सिद्धान्तों के अनुरूप हों। राजाध्यक्ष राष्ट्रपति होता है और कार्यकारी प्रमुख प्रधान मंत्री जो मंत्रियों के सहयोग से शासन चलाता है। यहाँ की राष्ट्रीय असेम्बली का गठन भी वैसे ही हुआ है जैसे कि यह राष्ट्र बना है। राष्ट्रीय असेम्बली में 90 स्थान भूतपूर्व इटालवी सोमालिया की असेम्बली के तथा 33 स्थान भूतपूर्व ब्रिटिश सोमालीलैण्ड की असेम्बली के यानी कुल 123 स्थान रखे गए हैं। राष्ट्र भाषा सोमाली है पर इसकी अपनी लिपि नहीं है। राजभाषाएँ अंग्रेजी और इटालवी हैं। शहरों में अरबी अधिक प्रचलित है। सोमालिया का राष्ट्रध्वज नीले रंग का है जिसमें एक पंच कोना सितारा है।

जन-जीवन—यहाँ की मुख्य जाति सोमाली ही है। यह जाति मुख्यता हामी नस्ल की है पर इसमें कुछ सामी रक्त का मिश्रण भी है। यह कुल मिलाकर लगभग 130 कबीलों में बटी है। सब लोग सोमाली भाषा ही बोलते हैं। राजनैतिक कारण वश पूरी सोमाली जाति अभी एक राजनैतिक इकाई के अंतर्गत नहीं आई है। कुछ सोमाली लोग कीनिया के उत्तरी भाग में हैं। वे कीनिया के स्वतंत्र होने पर सोमालिया में मिलना चाहते थे, पर ऐसा नहीं हुआ। कुछ सोमाली लोग इथियोपिया में भी हैं। पर इथियोपिया के सम्राट् उस भाग की एक इंच भूमि भी छोड़ने के लिए तैयार नहीं हैं। औसतन हर सोमाली व्यक्ति के पास एक ऊँट, एक गाय तथा 4 बकरियाँ होती हैं। ज्यादातर लोग खानाबदोश हैं। सोमाली लोग इस्लाम धर्म के अनुयायी हैं। मूल सोमाली लोग मांस, मछली वगैरा नहीं खाते। गाला जाति के लोग जीवित पशुओं का रक्त भी पी जाते हैं। घोड़े यहाँ कम हैं पर उन पर पुरुष ही सवारी कर सकते हैं। स्त्रियाँ केवल गधों पर चढ़ सकती हैं। सवारी का अन्य साधन ऊँट है। खेती करने वाले लोग तो एक जगह टिक कर रहते हैं, पर पशु चराने वाले इधर-उधर घूमते रहते हैं। ये लोग अर्द्ध-गोलाकार रूप में अपने तम्बू लगाते हैं। तम्बुओं में घास-पात से बनायी गई चटाइयाँ बिछी होती हैं। गाँवों में घास-फूंस की

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

झोंपड़ियाँ होती हैं। विवाह के समय वधू पक्ष को वर पक्ष द्वारा दहेज देने की प्रथा प्रचलित है। वधू के पिता को पशुओं या गुलामों के रूप में कीमत चुकानी होती है। हरेक जाति में बहुपत्नी प्रथा प्रचलित है। इस्लाम के अनुसार एक व्यक्ति चार पत्नियाँ रख सकता है, यह नियम यहाँ माना जाता है। हरेक पत्नी को रहने के लिए अलग घर देना पड़ता है और पति बारी-बारी से हरेक के पास एक निश्चित समय बिताता है।

अन्न कूटती हुई सोमाली स्त्रियाँ

अर्थ-व्यवस्था—सोमालिया की आर्थिक स्थिति अच्छी नहीं है। चिलचिलाती धूप में तपी और आंधियों के थपेड़े सहने वाली इस धरती का अधिकांश भाग कृषि योग्य नहीं है क्योंकि पानी की यहाँ बहुत कमी है। समुद्र भी ऐसा खराब है कि जिसमें वर्ष के 4 महीनों में मछलियाँ तक नहीं पकड़ी जा सकतीं। कुल दो नदियाँ ऐसी हैं जो वर्ष भर बहती हैं और उन पर भी बाँध बनाने की कहीं गुंजाइश नहीं है। यहाँ की मुख्य उपज केले हैं जो कुल निर्यात का तीन चौथाई भाग हैं। कुछ गन्ना, जई, जौ, अनाज यहाँ उगाया जाता है पर यह स्थानीय खपत के लिए ही मुश्किल से पूरा होता है। खजूर, कॉफी, चाय, बाहर से मंगाना पड़ती है। कपास की उपज बढ़ाने के प्रयत्न चल रहे हैं। यहाँ कपडे बुनने के कुछ कारखाने हैं। सोमालिया में कोई 12 लाख पशु तथा 40 लाख भेड़-बकरियाँ हैं। पशुधन भी निर्बल है। यहाँ की गाएँ हमारे यहाँ के गधों से भी छोटी होती हैं।

सोमालिया की राजधानी मोगाडिशू एक सामान्य नगर है। सँकरी सड़कों वाले इस नगर की दुकानें दोपहर में बिलकुल बंद रहती हैं और सूरज के ढल जाने के बाद खुलती हैं। आज़ाद हो जाने के बाद भी कुछ हजार इटालवी यहाँ रह रहे हैं। सागर तट के पास सुन्दर खुदाई वाली कुछ प्राचीन इमारतें भी विद्यमान हैं। भूतपूर्व ब्रिटिश क्षेत्र की राजधानी हरगेसिया भी एक साधारण नगर है। अन्य कस्बे हैं—बरबेरा, गैब्बैन तथा ओब्बिया।

भारत व सोमालिया—सोमालिया की स्वतंत्रता के बाद से उसके भारत के साथ सम्बन्ध घनिष्ठ हुए हैं। सोमालिया के तत्कालीन प्रधान मंत्री श्री शेरमार्के अगस्त, 1963 में भारत आये थे। उन्होंने भारत सरकार से सोमालिया के लिए कुछ डाक्टर भेजने और वहाँ के प्रशिक्षार्थियों को भारत में तकनीकी प्रशिक्षण की सुविधाएँ देने का अनुरोध किया था जो भारत ने मान लिया।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

42. फ्रांसीसी सोमालीलैण्ड

(FRENCH SOMALILAND)

क्षेत्रफल : 8,880 **वर्गमील**

जनसंख्या : 81,000

फ्रांसीसी सोमालीलैण्ड, सोमालिया के पश्चिमोत्तर भाग में एक छोटा-सा तटवर्ती प्रदेश है। इसके पश्चिम में इथियोपिया है। जैसाकि नाम से स्पष्ट है यह फ्रांस के अधीन है। इसका 8,880 वर्गमील क्षेत्र अधिकांशत: रेगिस्तानी है। इसकी जमीन ऊबड़-खाबड़ पठारों के रूप में है। उत्तर में कोई 12 मील चौड़े मैदान हैं। उत्तर में ही 185 मील लम्बी तट-रेखा है। जलवायु गर्म है। इसकी राजधानी व महत्त्वपूर्ण बन्दरगाह जिबूती है।

यहाँ की जनसंख्या लगभग 81,000 है जो 1948 की बनिस्पत अब दुगुनी है। इसमें से लगभग आधी जनसंख्या राजधानी जिबूती में ही रहती है। कोई 43,000 व्यक्ति ओबक, तजूरा, अम्बूली, अलीसाबा और दिखिल नामक कस्बों में रहते हैं। बाकी आबादी खानाबदोश है। यहाँ रहने वाली लगभग पूरी आबादी इस्लाम की अनुयायी है। हामी नस्ल के दानाकिल लोग लगभग तीन-चौथाई क्षेत्र में फैले हुए हैं। ईसा जाति के लोग अधिकांशत: दक्षिणी भाग में हैं। जिबूती और अम्बूली में ज्यादातर अरब हैं।

4 मार्च, 1862 को इस इलाके के एक दानाकिल सरदार से फ्रांस ने करार किया था। 1884 व 1885 में दानकिल और ईसा के सरदारों के साथ और संधियाँ हुईं और 1896 में, इसे फ्रेंच सोमालीलैण्ड की संज्ञा दी गई। 1946 के संविधान के अंतर्गत यह फ्रांस का सागरपारीय प्रदेश था। फ्रांस में डिगाल के आविर्भाव के बाद 28 सितम्बर, 1958 को यहाँ हुए जनमत संग्रह द्वारा इसने फ्रांस में रहना स्वीकार किया था और स्वतन्त्रता का अवसर खो दिया। अब यह फ्रांस का सागरपारीय प्रदेश है। इसके निकट भविष्य में स्वतन्त्र होने की कोई आशा नहीं है।

शासन-व्यवस्था—यह फ्रांस के अधीन है। फ्रांस के राष्ट्रपति का प्रतिनिधि यहाँ प्रदेश-प्रमुख होता है। वयस्क मताधिकार से निर्वाचित 32 सदस्यों की यहाँ एक प्रदेश असेम्बली है। इसे आन्तरिक विषयों पर कानून बनाने का अधिकार है।

यह प्रदेश फ्रांस की संसद् में अपना प्रतिनिधि भेजता है।

जिबूती का बन्दरगाह जो लाल सागर के तट पर होने के कारण बड़ा सामरिक महत्त्व रखती है, यहाँ की प्रमुख तथा आर्थिक गतिविधियों का शहर है। 1917 में अदिस अबाबा से लेकर जिबूती तक एक रेल मार्ग बनाया गया है। इससे इथियोपिया का माल विदेशों को भिजवाने में सुविधा होती है।

वर्षा की कमी के कारण खेती बहुत कम इलाके में होती है। आबादी के आस-पास के क्षेत्रों में टमाटर आदि शाक-सब्जी उगाई जाती है।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

43. इथियोपिया

(ETHIOPIA)

क्षेत्रफल : 4,57,150 वर्गमील **जनसंख्या** : 2,18,00,000

लाल सागर के दक्षिणी-पश्चिमी किनारे पर स्थित इथियोपिया एक दुर्गम और पहाड़ी प्रदेश है। इसे अफ्रीका का तिब्बत भी कहा जाता है। केवल कुछ वर्षों तक इटली के आधिपत्य को छोड़ इथियोपिया हजारों वर्षों से अबतक अपनी स्वतंत्रता कायम रखे हुए है। इसका मुख्य कारण यही है कि यह बहुत ऊँचाई पर है तथा विकट पहाड़ियों से घिरा है। प्रकृति ही इसकी प्रमुख प्रहरी है। यहाँ की धरती मुख्यतया पठारी है। कई पर्वत श्रेणियाँ इधर से उधर फैली हुई हैं। अतबारा और तकाजी दो प्रमुख नदियाँ हैं। कुछ छोटी नदियाँ दक्षिणी भाग में भी हैं जो सोमालिया में चली जाती हैं। इस देश में कई झीलें हैं। इनमें से महत्त्वपूर्ण ताना है जो नीली नील नदी का स्रोत है। नीली नील और श्वेत नील से मिलकर ही मिस्र की प्रमुख नदी नील बनती है। इथियोपिया का कुल क्षेत्रफल 4,57,150 वर्गमील है। इसमें तटवर्ती प्रदेश इरीट्रिया का क्षेत्रफल भी शामिल है जो इससे संघबद्ध है। ईथियोपिया का क्षेत्रफल हमारे राजस्थान, उत्तरप्रदेश, मध्य प्रदेश और पंजाब के सम्मिलित क्षेत्रफल के लगभग बराबर है।

अतीत—कई कारणों से ईथियोपिया अन्य अफ्रीकी देशों से भिन्न लगता है। इसका इतिहास तीन हजार वर्ष से भी अधिक प्राचीन है। इथियोपिया के वर्तमान सम्राट् हाइले सेलासी प्रथम, सुलेमान और रानी शेबा के वंशज हैं। दंत-कथा के अनुसार शेबा इथियोपिया की प्राचीन नगरी एक्सम की रानी थी। सुलेमान की कीर्ति और विद्वत्ता से वह बहुत प्रभावित हुई और उससे मिलने यरुशलम पहुँची। इसी सम्पर्क का नतीजा यह हुआ कि दोनों का विवाह हो गया। इनका पुत्र मेनेलिक इथियोपिया का प्रथम शासक बना।

ईथियोपिया के आधुनिक इतिहास का आरम्भ मेनेलिक द्वितीय के (1889-1913) शासनकाल से मानना चाहिए। इन्होंने इथियोपिया के बिखरे टुकड़ों को एकत्र करके संगठित व शक्तिशाली राज्य बनाया। 1885 में इटली की इधर नियत बिगड़ी। वे तटवर्ती प्रदेश इरीट्रिया तक तो आने में सफल हो गए पर इथियोपिया पर जब 1896 में आक्रमण किया तो अडोवा की लड़ाई में उन्हें भारी पराजय का मुँह देखना पड़ा। अडोवा की विजय से मेनेलिक की यूरोप भर में धाक जम गई। मेनेलिक द्वितीय के शासनकाल में अदिस अबाबा से लेकर फ्रांसीसी सोमालीलैण्ड की राजधानी जिबूती तक की रेल-लाइन का निर्माण शुरू हुआ। 1913 में मेनेलिक द्वितीय की मृत्यु के बाद 3 वर्ष तक लेज यासू रीजेंट रहा पर सामंतवर्ग उससे बड़ा खिन्न था। अतः 1916 में मेनेलिक की लड़की जाउदितू को महारानी बनाया गया और मेनेलिक का भतीजा तफारी माकोनेन रीजेंट बना। 1930 में जाउदितू की मृत्यु के बाद तफारी माकोनेन ही हाइले सेलासी प्रथम के रूप में सम्राट् घोषित हुए। हाइले सेलासी इथियोपिया के 255वें नरेश हैं। इटली के तानाशाह मुसोलिनी की सेना ने 1935 में यहाँ फिर हमला किया। इथियोपिया की सेना ने डटकर मुकाबला किया और 'लीग आफ नेशन्स' की सहायता भी माँगी, पर

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

1936 में इटली इसे अधीन बनाने में सफल हो गया और सम्राट हाइले सेलासी, इंगलैंड चले गए। पाँच वर्ष बाद ही 1941 में अंग्रेजों की सेनाओं की मदद से इटली को खदेड़ दिया गया इथियोपिया फिर आज़ाद हो गया और सम्राट् स्वदेश लौटे। इस प्रकार इन पाँच वर्षों के इटली-शासन को छोड़ यह पिछले हजारों वर्षों से पूर्ण स्वतन्त्र है।

शासन-व्यवस्था—ईथियोपिया में राजतंत्रीय शासन पद्धति है। सम्राट ही सर्वेसर्वा हैं, पर कुछ लोकतांत्रिक सुधार किये गए हैं। अब प्रधानमन्त्री के पद की व्यवस्था की गई है वह सम्राट् व संसद् के प्रति जिम्मेदार होता है। एक संसद् भी है जिसके उच्च सदन—सीनेट के सारे सदस्य सम्राट द्वारा मनोनीत होते हैं पर निचले सदन चेम्बर आफ डिपुटीज के कुछ सदस्य निर्वाचित होते हैं। सम्राट हाइले सेलासी का जो नाटे कद के हैं, किन्तु जिनका व्यक्तित्व अत्यंत प्रभावशाली है, चारों ओर दबदबा है। जब भी वह किसी मार्ग से गुजरते हैं तो सन्नाटा छा जाता है और सभी लोग साष्टांग दण्डवत-प्रणाम करते हैं। इनके विरुद्ध अब तक कई विद्रोह हुए हैं पर सब असफल हो गए। 1960 में एक राजकुमार के नेतृत्व में विद्रोह हुआ था, वह भी असफल हो गया और लोगों ने सम्राट् के प्रति वफादारी प्रदर्शित करने में बड़ी तत्परता दिखायी। सम्राट हाइले सेलासी वैसे आजकल नवोदित अफ्रीकी एकता की गति-विधियों में बड़ी रुचि ले रहे हैं। 1963 में इन्होंने अदिस अबाबा में सभी अफ्रीकी देशों का सम्मेलन बुलाया जिसमें अफ्रीकी एकता संगठन की स्थापना हुई।

इथियोपिया का राष्ट्रीय ध्वज हरे, लाल और पीले रंग की आड़ी पट्टियों वाला है। उगते सूर्य के सम्मुख सिंह की आकृति यहाँ का राष्ट्रीय चिह्न है।

जन-जीवन—अमहारा इथियोपिया की प्रमुख जाति है। यही शासक जाति है तथा मध्यवर्ती पठारों पर रहती है। इनका कद ठिगना, बाल छोटे व घुँघराले तथा रंग भूरा-सा होता है। महिलाएँ बारीक वस्त्र पहनती हैं, पर्दा नहीं करतीं तथा अपने बाल चाव से सजाती हैं। अमहारा अपने को सामन्तवर्ग का मानते हैं और हाथ से परिश्रम करना अपनी शान के खिलाफ समझते हैं पर ये बुद्धिमान और साहसी लोग हैं तथा अतिथि-सत्कार में रुचि लेते हैं। इनकी भाषा अमहारा ही इथियोपिया की प्रमुख भाषा है और अफ्रीका की ऐसी गिनी-चुनी भाषाओं में से है जिसकी अपनी लिपि है।

इथियोपिया के दक्षिणी-पूर्वी भाग में जहाँ इसकी सीमा सोमालिया से मिलती है, वहाँ गाला जाति रहती है। अधिकांश लोग पशु-पालन से ही अपनी जीविका चलाते हैं। मध्य इथियोपिया के लोग अधिकांशतया कृषि पर निर्भर हैं। गाला लोगों की एक विशेषता है कि वे मछली, मुर्गी या मांस से परहेज करते हैं। अतः वे शिकार भी नहीं करते। चरवाहे और खानाबदोश लोग अस्थायी मकानों में रहते हैं जिन्हें उखाड़ कर अन्य स्थान पर ले जाया जा सकता है।

अधिकांश लोग गाँवों में रहते हैं और गाँव की झोंपड़ियाँ गोलाकार तथा शंकु आकृति के छप्पर वाली होती हैं। पर अमहारा, हरारी और तिग्रिनिया जाति के लोग चौरस छतों के मकानों में भी रहते हैं। गुरेज जाति के लोग अपने मकान पास-पास बनाकर नहीं रहते। हमारे केरल की तरह इनके झोंपड़े या मकान एक-दूसरे से काफी दूर होते हैं। तिग्रिनिया जाति में विवाह के अवसर पर दहेज की प्रथा है। गुरेज जाति में वर को वधू की कीमत चुकानी पड़ती है। इस्लाम धर्म के मानने वालों और मूर्ति-पूजकों में बहुपत्नी प्रथा है। हाँ, ईसाई लोग अधिकृत तौर पर एक ही पत्नी रखते हैं।

इथियोपिया पठार के दक्षिण-पश्चिमी भाग में सिदामो जाति के लोग बसते हैं जो सांस्कृतिक दृष्टि से अन्य

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

लोगों से भिन्न हैं। इनमें काकेशियन और नीग्रो दोनों नस्लों का मिश्रण लगता है। इनकी उपजातियाँ हैं—बाको, गिबे, गिमिरा, जंजेरो, काफा, माजी तथा ओमेतो। ये लोग भी मध्यवर्ती इथियोपिया के लोगों की तरह एक स्थान पर मकान बनाकर नहीं रहते। इनके मकान अपने-अपने खेतों के बीच में होते हैं। इनमें भी बहुपत्नी प्रथा है और एक ही अहाते में सभी पत्नियों के लिए अलग-अलग झोंपड़ियाँ होती हैं। विवाह में लड़की वाले को कीमत चुकाने की प्रथा भी है।

वैसे अभी यह एक पिछड़ा हुआ प्रदेश है। हजारों वर्ष से स्वतन्त्र रहने के उपरांत भी इस देश में आधुनिक सभ्यता का प्रकाश बहुत कम पहुँचा है। कहीं-कहीं तो अब भी बड़ी अजीब प्रथाएँ प्रचलित हैं। युद्ध में पकड़े बन्दी का अंग-भंग करना तो साधारण खेल है। कई स्थानों पर प्रेयसी के सम्मुख अपना पौरुष सिद्ध करने के लिए प्रेमी को मानव की हत्या करके उसका एक अंग पेश करना पड़ता है। कहीं-कहीं औरतें अपने मृत बच्चों को गाढ़ने की बजाय पेड़ों पर लटका देती हैं। कुछ स्त्रियाँ अपने केश-शृङ्गार में बैल की अंतड़ियों का उपयोग करती हैं।

एक इथियोपिया निवासी अपने बालक के साथ

अर्थ-व्यवस्था—इथियोपिया एक कृषि प्रधान देश है। यहाँ के लोगों की जीविका कृषि और पशु-पालन पर अवलम्बित है। पशुओं में सामान्य पशुओं के अलावा, गधे, कुत्ते, बिल्लियाँ और मधुमक्खियाँ पालने का भी रिवाज है। कॉफी यहाँ की प्रमुख फसल है। कहते हैं कॉफी का नामकरण ही यहाँ के काफा नगर पर हुआ है जिसके आस-पास कॉफी की बेहद काश्त होती है। अन्य फसलों में मकई, मटर, काली मिर्च तथा तम्बाकू प्रमुख हैं। यहाँ फल वगैरह नहीं होते। खनिज पदार्थ की दृष्टि से यह काफी समृद्ध है। यहाँ सोना, लोहा, मैंगनीज तथा प्लेटीनम के भण्डार हैं पर इनका अच्छी तरह विकास और उपयोग नहीं हुआ है।

इथियोपिया की राजधानी अदिस अबाबा हरे-भरे वृक्षों से ढकी पहाड़ियों की घाटी में अवस्थित है। सागर तल से 7,800 फुट की ऊँचाई पर स्थित इस नगरी को इथियोपिया के महान सम्राट मेनेलिक द्वितीय ने बसाया था। इन्हीं सम्राट् ने कहा था कि अदिस अबाबा का हरेक निवासी इकिलिप्टस का एक पेड़ अवश्य लगाए। नतीजा यह है कि यह नगरी अब भीनी-भीनी महक से सुवासित रहती है। कुछ आधुनिक सरकारी इमारतों के साथ ही छप्पर वाले कच्चे मकान भी दिखाई देते हैं। अदिस अबाबा का हृदय है हाइले सेलासी चौक जिसके चारों ओर बड़ी दुकानें हैं। यहीं हाइले सेलासी विश्वविद्यालय भी है जो

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

यहाँ एक सुन्दर महल में अवस्थित है। इसमें अफ्रीका के कई देशों के विद्यार्थी पढ़ने आते हैं। सेंट जार्ज कैथेड्रल ट्रिनिटी तथा सेंट जान गिरजे भी देखने योग्य हैं। प्रथम अफ्रीकी शिखर सम्मेलन के अवसर पर बना 'अफ्रीका-हाल' भी स्थापत्य का सुन्दर नमूना है।

इरीट्रिया

अब इथियोपिया के साथ संघबद्ध है पर फिर भी इसका अपना व्यक्तित्व है। ईथियोपिया के उत्तर में लाल सागर के तट पर स्थित इरीट्रिया एक छोटा-सा प्रदेश है। इसका कुल क्षेत्रफल 47,875 वर्गमील है। 1898 तक यह इटली का उपनिवेश रहा था। द्वितीय विश्वयुद्ध के दौरान ब्रिटेन ने इस पर अपना अधिपत्य जमा लिया और 1952 तक वह शासन चलाता रहा। 1952 में संयुक्तराष्ट्र संघ के निर्णयानुसार इसे ईथियोपिया के साथ मिला दिया गया। इसके पहाड़ों, घाटियों और हर-भरे खेतों की सुषमा देखने योग्य है। इसका प्राकृतिक सौन्दर्य अनूठा है।

इरीट्रिया की आबादी कोई 11 लाख है। इनमें लगभग आधे कोप्ट ईसाई हैं और आधे मुसलमान हैं। इनकी प्रमुख भाषाएँ त्रिगिनिया व तिग हैं जो ईथियोपियाई भाषा से काफी पृथक् है। राष्ट्र-संघ द्वारा बनाए गए संविधान के अनुसार इरीट्रिया में एक निर्वाचित असेम्बली भी है जिसके आधे सदस्य कोप्ट और आधे मुसलमान होते हैं। इरीट्रिया को ईथियोपिया के साथ सम्बन्ध करने का सबसे बड़ा लाभ ईथियोपिया को यह हुआ कि उसके अधिकार में दो बन्दरगाह आ गए और उसे लाल सागर के जरिए समुद्री मार्ग मिल गया। इरीट्रिया में 190 मील रेलवे लाइन भी है।

7765 फुट की ऊँचाई पर अवस्थित असमारा इरीट्रिया की राजधानी है और अदिस अबाबा से कहीं अधिक सुन्दर है। इसमें इटालवी स्थापत्य कला के दर्शन होते हैं। शहर का मुख्य केन्द्र हाइले सेलासी एवेन्यू है। शहर मकानों की कला भी अत्यन्त सुन्दर है। इतालवी शासन समाप्त हुए एक अर्सा हो गया पर अब भी बहुत-से इतालवी यहीं रहते हैं। कोई 200-300 भारतीय भी हैं।

भारत और इथियोपिया—इथियोपिया और भारत के सम्बन्ध बड़े निकट के हैं। भारत का इथियोपिया के प्रति प्राचीन काल से ही मित्रता का रवैया रहा है। अक्तूबर, 1935 में जब इटली के तानाशाह ने इथियोपिया पर हमला किया था तब भारत में मुसोलिनी के खिलाफ प्रदर्शन हुए थे। गांधी जी तथा भारतीय राष्ट्रीय काँग्रेस ने इथियोपियाई जनता के प्रति सहानुभूति प्रकट की थी। गुरुदेव रवीन्द्रनाथ ठाकुर ने भी इथियोपिया पर आक्रमण के समय सुन्दर कविता लिखकर वहाँ की जनभावना को आवाज दी। 1956 मे जब इथियोपिया के सम्राट भारत आए थे तो उन्होंने भारत के समर्थन के प्रति कृतज्ञता प्रकट की थी। 1956 में यहाँ हरार में भारत के सहयोग पे हाइले सेलासी सैनिक अकादेमी की स्थापना की गई जहाँ इथियोपिया के सैनिक अफसर ट्रेनिंग पा रहे हैं। राजधानी से कोई 20 किलोमीटर दूर अकाकी नामक स्थान पर इस देश का सबसे बड़ा कारखाना भारत-इथियोपिया कपड़ा मिल है। इसे बिड़ला बन्धुओं ने कोई साढ़े चार करोड़ की लागत से बनाया है। 1965 में राष्ट्रपति डा० राधाकृष्णन ईथियोपिया गए थे जब कि सम्राट हाइले सेलासी ने कश्मीर तथा चीन के साथ सीमा विवाद पर भारत के पक्ष का समर्थन किया था।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

44. सूडान

(SUDAN)

क्षेत्रफल : 9,67,500 वर्गमील **जनसंख्या** : 1,23,00,000

सूडान क्षेत्रफल की दृष्टि से अफ्रीका का विशालतम देश है। यहाँ न केवल सफेद और नीली नील नदियों का संगम है बल्कि अरब और नीग्रो संस्कृतियों का मिलन भी होता है। इस देश के कई भूभाग विश्व के सबसे गर्म स्थलों में से हैं। इसके कई भूभाग सागर से काफी दूर पड़ते हैं पर पूर्वोतर सीमा पर लाल सागर के सम्मुख 500 मील लम्बी इसकी तटरेखा है। ईथियोपिया के पश्चिम में अवस्थित सूडान के उत्तर में मिश्र, पश्चिमोत्तर में लीबिया, पश्चिम में चाड, दक्षिण पश्चिम में केन्द्रीय अफ्रीका गणराज्य तथा दक्षिण में काँगो, उगाण्डा तथा कीनिया हैं। इसका कुल क्षेत्रफल 9,67,500 वर्गमील है जिसमें लगभग एक चौथाई यूरोप समा सकता है, किंतु यह भारत के क्षेत्रफल का लगभग तीन चौथाई ही है।

भौगोलिक दृष्टि से सूडान एक मैदानी इलाका है। यह 3 भागों में विभक्त है—उत्तरी भाग में चट्टानी भूमि है, बीच में ऊबड़-खाबड़ बालुई धरती है और फिर दक्षिण की ओर मैदान है। पश्चिम में कुछ पठार हैं और पूर्व में कुछ ऊँची पर्वत श्रेणियाँ इसे तटवर्ती संकरे मैदानों से अलग करती हैं। यहाँ की मुख्य नदियाँ नील और उसकी सहायक नदियाँ हैं। श्वेत नील का स्रोत उगाण्डा की विक्टोरिया झील है तथा नीली नील इथियोपिया की ताना झील से निकलती है। इनके संगम पर बसी है; सूडान की राजधानी—खारतूम।

ऐतिहासिक झलक—सूडान के शानदार वर्तमान की तरह इसका अतीत भी काफी प्राचीन है। कुछ खण्डहरों से पता चलता है कि पाषाण-युग में भी यहाँ लोग रहते थे। ईसा से 4,000-5,000 वर्ष पूर्व भी यहाँ कई बस्तियाँ होने के प्रमाण मिले हैं। ईसा से कोई 2,000 वर्ष पूर्व यहाँ मिस्र का आक्रमण हुआ और यह उसके अधीन हो गया। यह अधीनता 1,200 वर्षों तक चलती रही। ईसा पूर्व की ४वीं शताब्दी में लीबिया के बादशाह ने अधिकार कर लिया और रोमन काल तक बादशाही शासन चलता रहा। लगभग छठी शताब्दी में यहाँ डोंगोल और अलीवा-नामक देशी राज्यों का उदय हुआ। इसके कोई 800 वर्ष बाद अरब लोग इस भूभाग में आये और उन्होंने यहाँ इस्लाम का झंडा फहरा दिया। तब से उत्तरी सूडान लगभग पूर्णतया अरब देश बन गया। मुख्य धर्म इस्लाम और मुख्य भाषा अरबी हो गई। पर उस समय वह मिस्र के अधीन नहीं था। दोनों के बीच व्यापारिक सम्पर्क था। सूडान शुतुरमुर्ग के पंख, हाथीदांत, गोंद तथा स्वर्ण-धूलि भेजता तथा मिस्र तैयार माल सूडान को देता। यही नहीं सूडान के हजारों नर-नारी गुलाम बनाकर मिस्र और अन्यत्र ले जाये जाने लगे। 1820 में इस अभागे देश पर मिस्र से तुर्की पाशा मोहम्मदअली की सेनाएँ आ धमकीं और इसे पूर्णतया जीत लिया गया तथा यहाँ बड़ा कठोर शासन चलने लगा। मिस्र के खेदीव का स्वप्न अपने साम्राज्य का विस्तार था। अतः वह दक्षिण भाग को भी मिलाकर अपना साम्राज्य बढ़ाने लगा। इसी बीच लगभग 1882 में यहाँ अंग्रेज आ गए और वे इसमें दिलचस्पी लेने लगे। मिस्र के खेदीव ने अपने साम्राज्य को जमाने में अंग्रेजों से भी

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

सहायता ली थी। सूडान में अन्दर ही अन्दर धधकते रहने वाला असंतोष 1881 में यहाँ के धार्मिक नेता मेहदी के विद्रोह के रूप में फूट पड़ा। उसने अपनी सेनाएँ लेकर हमला किया और 1885 तक खारतूम को अपने अधिकार में ले लिया। तत्कालीन ब्रिटिश प्रशासक गोरडन की हत्या कर दी गई। अंग्रेजों की सलाह पर मिस्र की सेनाएँ हट गईं और 1898 में सूडान खलीफा अब्द अलाही के शासन में स्वतंत्र बना रहा। फिर अंग्रेजों और मिस्र की सेना ने मिलकर सूडान पर हमला किया। इसका नेतृत्व किचनर ने किया। 1896 से 1898 के बीच लड़ाई चली और ओमडुरमन युद्ध के बाद सूडान पूरी तरह पराजित हो गया और किचनर पहला गवर्नर-जनरल बना। मुख्य पदों पर भी अंग्रेज अफसर आसीन हो गए। 1899 में एक करार हुआ, जिसके अनुसार सूडान पर ब्रिटेन और मिस्र का संयुक्त आधिपत्य माना जाने लगा। द्वितीय विश्वयुद्ध तक यहाँ कई विद्रोह हुए जो कुचल दिये गए।

राष्ट्रीय आन्दोलन—द्वितीय युद्ध के पश्चात् वहाँ राष्ट्रीयता की जड़ें मजबूत हो गईं। कुछ प्रोत्साहन अंग्रेजों ने भी दिया ताकि मिस्र का प्रभाव वहाँ से नष्ट हो जाए। इसी नीति के अनुसार 1948 में अंग्रेजों ने एक मुख्यतया निर्वाचित विधान सभा बनायी और कार्यकारी परिषद में भी निर्वाचित सदस्य लिए तथापि गवर्नर-जनरल ही सर्वेसर्वा बना रहा। मिस्र ने इसका विरोध किया। 1951 में मिस्र के बादशाह फारूख ने स्वयं को सूडान का सम्राट भी घोषित कर दिया। उधर शिक्षित वर्ग ने 'ग्रेजुएट जनरल काँग्रेस' नामक संस्था बनायी। इसके फिर दो भाग हो गए। एक भाग मिस्र और सूडान को मिलाकर रखने के पक्ष में था, दूसरा बिलकुल स्वतंत्र सूडान चाहता था। आखिर 1953 में मिस्र और ब्रिटिश सरकार ने सूडान को स्वशासन देना मान लिया।

नवम्बर-दिसम्बर, 1953 में यहाँ संसद के चुनाव हुए और 2 वर्ष की अन्तरिम अवधि के बाद 1 जनवरी, 1956 को सूडान एक स्वतन्त्र गणराज्य घोषित हो गया। 17 नवम्बर, 1958 को यहाँ सेना ने शासन हाथ में ले लिया। संसद और मन्त्रिमण्डल तथा राजनैतिक दल भंग कर दिये गए। जनरल इब्राहीम अयूब यहाँ राष्ट्र-पति बने। 1964 के अन्त में यहाँ सैनिक शासक के प्रति विद्रोह हुआ, फिर आम चुनाव हुए और असैनिक शासन स्थापित हो गया।

सूडान का राष्ट्रीय ध्वज तिरंगा है जिसमें नीले, पीले और हरे रंग की आड़ी पट्टियाँ हैं। सूडान में खारतूम सहित 9 प्रांत हैं। उगाण्डा व कीनिया के उत्तर में है इक्वेटोरिया। इक्वेटोरिया से आगे पश्चिमी भाग है बहर-ए-गजल तथा पूर्वी भाग अपर नील। बहर-ए-गजल से ऊपर छाद की सीमा से सटा हुआ है दरफुर प्रांत। ऊपर नील के उत्तर में है ब्ल्यू नील प्रांत। ब्ल्यू नील के उत्तर से लेकर लाल सागर के तट तक फैला है कसाला प्रांत। कसाला के पश्चिम तथा कोरडोफोन के उत्तर में है—उत्तरी प्रांत। खारतूम के आस-पड़ौस का इलाका खारतूम प्रांत है।

जन-जीवन—सूडान की आबादी 1 करोड़ 23 लाख है। ये लोग हामी और नीग्रो नस्ल का मिश्रण हैं। उत्तरी भाग के लोग मुख्यतया अरब हैं। उत्तरी भाग में न्यूबिया कबीले (उत्तरी नील घाटी) में रहते हैं। मध्य भाग में कबाबिश, कवाहला, जालोन तथा पशुपालक जाति बगारा है। उत्तर की मुख्य भाषा अरबी है। उत्तर के लोग घुटनों से नीचे तक का सफेद चोगा पहनते हैं और सिर पर साफा बाँधते हैं। महिलाएँ घाघरा और ओढ़नी का प्रयोग करती हैं।

दक्षिणी भाग में नीग्रो जातियाँ हैं। इसमें दिन का, नुएर, मोरी मादी, अजान्दे बारी तथा लतूका

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

मुख्य हैं। उत्तर के लोग मुख्यतया मुसलमान (सुन्नी) हैं तथा दक्षिण की नीग्रो जातियाँ मूर्तिपूजक हैं।

सूडानी लोगों का नृत्य और गीत के प्रति पारम्परिक प्रेम है। वर्षा, फसल कटाई, विवाह, युद्ध, शांति जैसे अवसरों पर नृत्य और गीत-समारोह होते हैं। सभी कबीलों की लोक-कलाओं में अत्यन्त रुचि है। यहाँ अरब, नीग्रो और न्यूबी संस्कृति का मिश्रण झलकता है। न्यूबा महिलाएँ ताली बजाती हुई कई नृत्य करती हैं। न्यूबा के वाद्य यन्त्र बैल के सींगों के समान होते हैं। बैल यहाँ पौरुष का प्रतीक माना जाता है। यहाँ के एक प्रसिद्ध नृत्य कम्बारा में लोग सिर पर बैलों के सींग लगा कर नाचते हैं। वे अपने पैरों का संचालन भी बैलों की तरह ही करते हैं। इसी तरह बगारा कबीले का एक नृत्य नौगारा है जिसमें स्त्री-पुरुष दोनों शामिल होते हैं।

बरामका जाति के युवक चाय गोष्ठियाँ आयोजित करते हैं। चाय गोष्ठी का रिवाज अब इस जाति में ही सीमित नहीं रहा अन्यत्र भी फैल गया है। इस गोष्ठी में चाय की प्रशंसा में नहीं, शक्कर की प्रशंसा में गीत गाए जाते हैं।

यहाँ कई दस्तकारियाँ भी खूब फल फूल रही हैं। ओमरडम में एक खास बाजार है जहाँ दस्तकारियों की ही बिक्री होती है। हाथी दाँत तथा लकड़ी पर खुदाई करके स्त्री पुरुषों तथा जानवरों की आकृतियाँ बनाने में सूडानी कलाकार सिद्धहस्त हैं। सोने-चाँदी के आभूषण भी बहुत सुन्दर बनते हैं।

अर्थ-व्यवस्था—सूडान मुख्यतया कृषि-प्रधान देश है। कृषि की उन्नति के लिए कई योजनाएँ चल रही हैं। इनमें से प्रमुख हैं—जजीरा परियोजना। श्वेत और नीली नील के बीच त्रिभुजाकार क्षेत्र में यहाँ कोई 10 लाख एकड़ धरती पर उन्नत कृषि की यह योजना 1925 से चल रही है। यहाँ लम्बे रेशे की रुई और अन्य फसलें नए तरीकों से उगाई जाती हैं। 1925 में ही यहाँ 025 मीटर लम्बा सेनार बाँध बनाया गया था तब से यहाँ सिंचाई की उत्तम व्यवस्था संभव हो गई है। इस क्षेत्र में खेती करने वाले किसान 40 प्रतिशत लाभ खुद लेते हैं, 40 प्रतिशत सरकार लेती है 20 प्रतिशत जज़ीरा बोर्ड लेता है। सिंचाई की अन्य योजनाए भी चल रही हैं जिनसे अधिक भूमि पर खेती संभव हो सकेगी। चावल, कॉफी, कपास, तम्बाकू, यहाँ की मुख्य फसलें हैं। अरण्ड और गन्ने की उपज बढ़ाने के लिए कोशिश की जा रही है।

सूडान की राजधानी है नीली नील और श्वेत नील के संगम पर स्थित 'हाथी की सूँड' अथवा खारतूम। खारतूम वास्तव में 3 नगरों का समूह है। मुख्य खारतूम 1821 में बसाया गया था। बाद में महदी दरवेशों से इसे भग्न कर दिया गर अंग्रेजों के शासनकाल में लार्ड किचनर ने इसे पुनः विकसित किया। खारूतम राजनैतिक ही नहीं व्यापारिक केन्द्र भी है। मुख्य खारतूम उत्तर में ही उत्तरी खारतूम उपनगर है जहाँ अब नए-नए कारखाने खड़े हो रहे हैं। खारतूम के समीप ही ओमदुरमान जो मुख्य नील के पश्चिमी किनारे पर है। लाल ईंटों के छोटे-छोटे मकान भारतीय से ही लगते हैं। इसे महदी दरवेशों ने कोई 70 वर्ष पूर्व राजधानी बनाया था। दस्त-कारियों का बाजार भी यहीं है। यहाँ अधिकांश दुकानें भारतीयों की हैं। खारतूम और ओमदुरमान में कोई 700-800 भारतीय हैं। रेडियो स्टेशन भी यहीं है। यहाँ खलीफा का भवन और मेहदी का मकबरा देखने योग्य है। खारतूम के यह दोनों उपनगर पुलों द्वारा जुड़े हैं। यहाँ का गणराज्य भवन (रिपब्लिकन पैलेस) दर्शनीय है। खारतूम में कई संग्रहालय भी हैं। खारतूम में ही शिक्षा का प्रमुख केन्द्र खारतूम विश्वविद्यालय है। खारतूम से 4 अरबी और 3 अंग्रेजी दैनिक प्रकाशित होते हैं। सूडान का सूचना विभाग अंग्रेजी का एक दैनिक पत्र 'डेली सूडान' निकालता है। अरबी और अंग्रेजी की कई सामयिक पत्र-पत्रिकाएँ भी निकलती हैं।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

खारतूम के अलावा लाल सागर के तट पर स्थित पोर्ट सूडान भी प्रसिद्ध नगर है। आवागमन के लिए रेल, सड़कों व नील में नौकाओं की अच्छी व्यवस्था है।

भारत व सूडान—भारत और सूडान के बीच परस्पर सम्बन्ध बड़े अच्छे हैं। कई सूडानी विद्यार्थी भारत में शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं। कई भारतीय शिक्षक सूडान में काम कर रहे हैं। दोनों देशों में व्यापारिक सम्बन्ध भी बढ़े हैं। भारत सूडान की लम्बे रेशे वाली रुई खरीदता है और भारत का अफ्रीका में सबसे ज्यादा माल सूडान खरीदता है। अन्य चीजों के अलावा भारत रेल की पटरियाँ सूडान भेजता है। भूतपूर्व राष्ट्रपति श्री अबूद की मई 1964 में भारत यात्रा के बाद भारत ने सूडान को 5 करोड़ रुपए का ऋण दिया तथा वहाँ नए उद्योग स्थापित करने में तकनीकी सहायता देने का प्रस्ताव किया है। उपराष्ट्रपति डा० ज़ाकिर हुसैन 1963 में सूडान की सद्भावना यात्रा पर गए थे। परस्पर आदान-प्रदान से दोनों देश एक-दूसरे के और निकट आ गए हैं।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

उत्तरी अफ्रीका

45. संयुक्त अरब गणराज्य (U.A.R.)
46. लीबिया (LIBYA)
47. ट्यूनीशिया (TUNISIA)
48. अल्जीरिया (ALGERIA)
49. मोराको (MOROCCO)
50. स्पेनिश सहारा (SPANISH SAHARA)
51. मारीटेनिया (MAURITANIA)

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

45. संयुक्त अरब गणराज्य

(UNITED ARAB RFPUBLIC)

क्षेत्रफल : 3,86,110 वर्गमील **जनसंख्या :** 2,70, 00,000

सूडान के बाद अब उत्तरी अफ्रीका चलते हैं। अक्सर अफ्रीका के नाम से लोग यह अन्दाज लगाते हैं कि सब अफ्रीकी काले हैं। यह सही नहीं है। उत्तरी अफ्रीका के लोग गौर वर्ण के हैं—काले नहीं हैं। दूसरी बात यह है कि अधिकांशतया ये लोग इस्लाम धर्म के अनुयायी हैं तथा यहाँ की भाषा अरबी है। अतः लोग इस भाग को अरबी अफ्रीका या मुस्लिम अफ्रीका भी कहते हैं। उत्तरी अफ्रीका में हम मिस्र, लीबिया, ट्यूनीसिया, अल्जीरिया, मोराको, स्पेनिश सहारा तथा मारीटेनिया को सम्मिलित करते हैं। अक्सर मारीटेनिया को पश्चिमी अफ्रीका में गिना जाता है पर हमारे विचार से उसे उत्तरी अफ्रीका के साथ गिनना अधिक तर्क संगत है क्योंकि जातीय, धार्मिक तथा भाषाई दृष्टि से वह उत्तरी अफ्रीका के अन्य देशों के ज्यादा नज़दीक है।

संयुक्त अरब गणराज्य या मिस्र का नाम भारतीयों के लिए अपरिचित नहीं है। संभवतया मिस्र ही अफ्रीका का एक ऐसा देश है जिसके बारे में भारतीयों को सबसे अधिक जानकारी है। मिस्र अपनी प्राचीन गौरवमयी संस्कृति के लिए विश्व-भर में विख्यात है। इसके पिरामिड दुनिया के सात आश्चर्यों में गिने जाते हैं।

मिस्र अतीत में एशियाई और अफ्रीकी संस्कृतियों का संगमस्थल रहा है और आज भी यह अफ्रेशिया के जागृत और गतिशील देशों में महत्त्वपूर्ण स्थान रखता है। मिस्र का आधुनिक नाम संयुक्त अरब गणराज्य है। अफ्रीका महाद्वीप के पूर्वोत्तरीय कोने में स्थित यह देश लगभग वर्गाकार है। इसका कुल क्षेत्रफल 3,86, 110 वर्गमील है जो राजस्थान, उत्तर प्रदेश, बिहार तथा पश्चिमी बंगाल के सम्मिलित क्षेत्रफल के लगभग बराबर है। परन्तु कृषि योग्य और आबाद इलाका कुल क्षेत्रफल का 1/12 वाँ हिस्सा भी नहीं है। आबादी मुख्यतया नील नदी के आस-पास के उर्वर इलाके में है और इसीलिए इसे नील का वरदान कहते हैं। नील नदी सूडान से यहाँ आती है और दक्षिण से उत्तर की ओर बहती है। नील के दोनों ओर विस्तृत मरूभूमि है, जहाँ ऊँटों के काफिले आते-जाते देखे जा सकते हैं।

अतीत—भारत की तरह मिस्र का इतिहास बहुत प्राचीन है। यह ईसा से 4,000 वर्ष पूर्व भी एक स्वतन्त्र राज्य था पर बाद में कई विदेशी शक्तियों ने इसे पराधीन बना लिया और इसका मनमाने ढंग से शोषण किया। 525 ई० पू० में फारस ने इसे अपना गुलाम बनाया। पर 405 ई० पू० में विद्रोह के बाद यह पुनः आज़ाद हो गया। 332 ई० पू० में सिकन्दर ने इसे विजित किया था और सिकन्द्रिया की—जो आज भी भूमध्यसागर के तट पर एक महत्त्वपूर्ण बन्दरगाह है, नींव डाली थी। इसके बाद 32 ई० पू० तक यह रोमन साम्राज्य का प्रांत बन गया और यह स्थिति 640 ई० तक बनी रही। 641 ई० में इस पर अरबों का आक्रमण हुआ और यह एक अरबी कालिफ के शासन में आ गया। अरबों ने इसे पूरी तरह अरबी रंग में रंग दिया। इस्लाम का व्यापक प्रचार हुआ, अरबी

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

यहाँ की मुख्य भाषा बन गई। इसके बाद 1597 ई० में यहाँ तुर्की शासन स्थापित हुआ। तुर्की से आए सेनापति मोहम्मद अली मिस्र के शासक बन बैठे पर वह नाम भर के लिए तुर्की की अधीनता मानते रहे। मोहम्मद अली के वंशज मिस्र के पैतृक शासक बन गए। यद्यपि उस समय उनकी स्थिति तुर्की द्वारा नियुक्त गवर्नर जैसी ही थी।

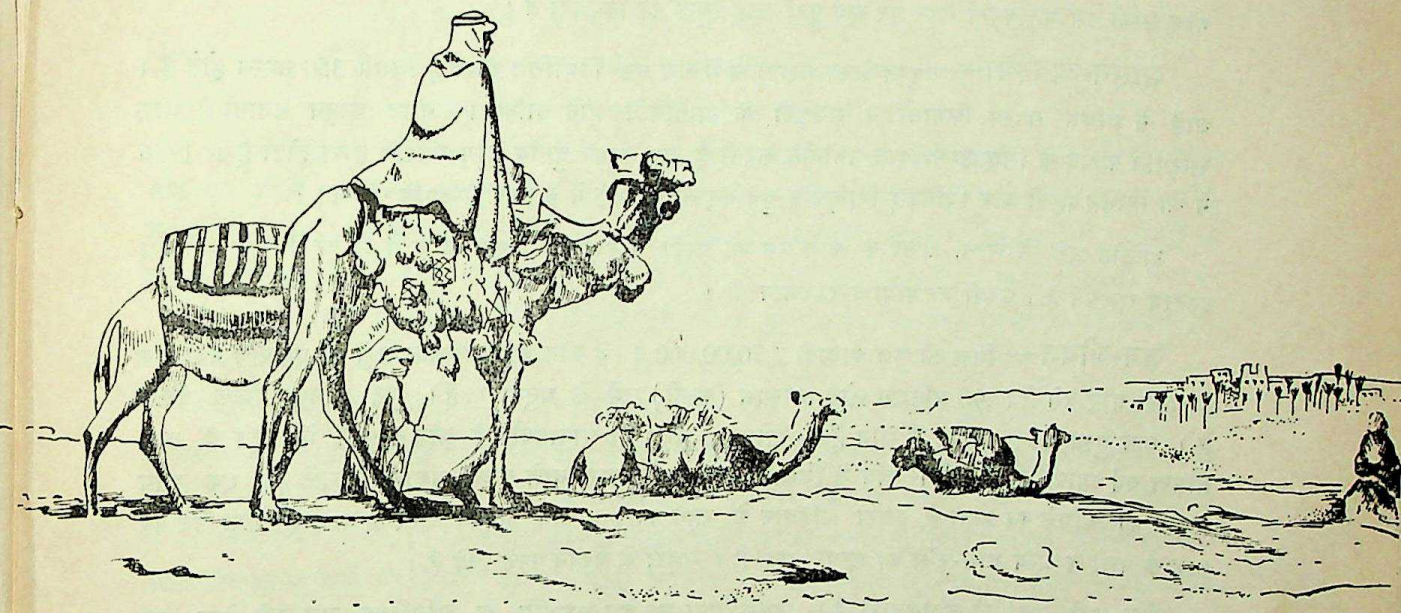

उत्तरी अफ्रीका के रेगिस्तान में ऊँटों के काफिले

1882 में मिस्र में एक भयानक विद्रोह हुआ। ब्रिटिश सैनिकों ने तत्कालीन शासक की सहायता की और विद्रोह कुचल दिया गया पर इसके बाद ब्रिटेन का प्रभुत्व बढ़ता गया। यहाँ एक ब्रिटिश रेजीडेंट रहने लगा जो धीरे-धीरे वास्तविक कर्ता-धर्ता बन गया। प्रथम विश्वयुद्ध के दौरान दिसम्बर, 1914 में इसे ब्रिटिश रक्षित प्रदेश घोषित कर दिया गया, पर वफ्द पार्टी और अन्य राष्ट्रीय तत्वों ने 1922 तक अंग्रेजों को विवश कर दिया कि वे इसे मुक्त कर दें। 1922 में मिस्र मुक्त कर दिया गया और तत्कालीन सुल्तान फाउद (प्रथम) विधिवत मिस्र के बादशाह घोषित किये गए। फाउद के बाद 1936 में फारूख सिंहासनारूढ़ हुए और ब्रिटेन के साथ एक संधि हुई जिसके अनुसार ब्रिटिश फौजें मिस्र से हट गईं। पर द्वितीय विश्व-युद्ध में शत्रु-राष्ट्रों को खदेड़ने के बहाने पुनः ब्रिटिश सेनाएँ यहाँ आ धमकीं। मिस्र के लोगों ने इसे पसन्द नहीं किया और भीतर-ही-भीतर आग सुलगती रही।

सैनिक क्रान्ति—23 जुलाई, 1952 को यहाँ सैनिक क्रान्ति हुई। तत्कालीन बादशाह फारूख को हटा दिया गया और सारी सत्ता सेना की क्रान्तिकारी परिषद ने सम्हाल ली। जून, 1953 में यह गणराज्य बन गया। कुछ समय तक जनरल नजीब राष्ट्रपति रहे और बाद में अब्दुल नासिर राष्ट्रपति बन गए और उन्होंने आर्थिक व सामाजिक क्रान्ति के नए उपाय शुरू किए।

इसी सिलसिले में नील पर अस्वान के पास एक बड़ा बाँध बनाने की योजना बनाई गई। जब पश्चिमी देशों ने इस योजना के लिए विदेशी सहायता देने से इन्कार कर दिया तो जुलाई, 1956 में नासिर में स्वेज के राष्ट्रीयकरण का एलान कर दिया और कहा कि स्वेज नहर की आमदनी से हम अपना बाँध बनाएँगे। इससे संसार

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

में तहलका मच गया। अक्टूबर, 1956 में ब्रिटेन, फ्रांस और इज़राइल ने स्वेज़ नहर क्षेत्र पर हमला किया जो सफल नहीं हो पाया और रूस तथा संयुक्त राष्ट्र के दबाव के कारण हमला करने वाली फौज़ों को हटना पड़ा। भू-मध्य सागर और लाल सागर को जोड़ने वाली तथा अफ्रीका और एशिया महाद्वीप को अलग करने वाली 101 मील लम्बी इस महत्त्वपूर्ण नहर पर अब पूरी तरह मिस्र का नियंत्रण है।

शासन-व्यवस्था—संयुक्त अरब गणराज्य में अब एक निर्वाचित संसद है जिसमें 350 सदस्य होते हैं। आधे से अधिक सदस्य किसानों व मज़दूरों के प्रतिनिधि होने चाहिए। ससद कानून बनाती है और राष्ट्रपति के पद के लिए उम्मीदवार मनोनीत करती है, पर उसका चुनाव आम मतदान द्वारा होता है। 1956 में श्री नासिर पहली बार विधिवत् रिाष्ट्रपति चुने गए तथा 1965 में वे फिर राष्ट्रपति चुने गए।

राष्ट्रीय झंडे में लाल, सफेद व काले रंग की आड़ी पट्टियाँ हैं जिसके बीच में दो हरे सितारे होते हैं। इस्लाम राजधर्म है। अरबी जनभाषा व राजभाषा है।

जन-जीवन—मिस्र की कुल आबादी 2,70,00,000 है। ये लोग अधिकांशतया यहाँ की एकमात्र नदी नील के दोनों ओर बसे हैं। 90 प्रतिशत लोग इस्लाम (सुन्नी) धर्म के अनुयायी हैं। कुछ लोग कोप्टिक ईसाई हैं। यहाँ मुख्यतया 3 प्रकार के लोग हैं—खेतीहर, बेदून जो खानाबदोश हैं और तम्बुओं में रहते हैं, तथा तीसरा वर्ग व्यापारियों का है। गाँव में किसान अक्सर दो कमरों वाले कच्चे मकानों में रहते हैं। एक भाग पशुओं को बाँधने का होता है, दूसरा परिवार के रहने का। मकान अक्सर ईंटों के बनते हैं तथा उन पर ताड़ के पत्तों व अन्य घास-फूँस का छप्पर होता है। शहरों के मकान पक्के होते हैं।

नील नदी यहाँ की जीवनधारा है। उसके बिना यह देश मरूभूमि के अतिरिक्त कुछ नहीं होता। जब भी नील में बाढ़ आती है तो यहाँ के लोग हर्षातिरेक से पर्व मनाते हैं क्योंकि बाढ़ की बदौलत ही नील का पानी आस-पास के इलाकों में पहुँचता और उसे उर्वर बनाता है। अतः यहाँ नील रूपी वरुण देवता की पूजा-अर्चना करते हैं और उसे प्रसन्न रखने के लिए मनौती मनाते हैं।

मिस्र के लोक जीवन पर इस्लाम और अरब संस्कृति की गहरी छाप है। गाँवों में सरल जीवन की झाँकी मिलती है। लोग आगन्तुकों की बड़ी आवभगत करते हैं। बात-बात पर किसी कविता की पंक्तियाँ दोहरा देना अथवा सदियों से चली आ रही, फबती कहावत कहना उनकी आम आदत है। अन्य देशों की भांति प्रेमालाप, विवाह, मृत्यु, फसल कटाई या बुवाई के विभिन्न अवसरों के लिए यहाँ अनेक लोक गीत और लोक नृत्य हैं।

एक लड़की का किसी से प्रेम हो जाता है तो उसकी एक सखी गाती है :

मैंने दूध भरा मर्तबान
उसे पीने को दिया,
न तो मर्तबान छुआ
और न उसने दूध ही पिया
मैं सच कहती हूँ मेरी सखी
उसका तेरे लिए तड़पता है जिया

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

शिकवा-शिकायत के बात जब दोनों विवाह के सूत्र में बंध जाते हैं तब भी वे गाते हैं। पति-पत्नी के सौन्दर्य की प्रशंसा के पुल बाँध देता है पर कुछ दिनों बाद पत्नी पति पर क्रुद्ध हो जाती है तो उस अवसर का भी एक गीत है :

खुदा कसम मैं तुमसे बात तक नहीं करूँगी—
जब तक कि तुम अपने चाचा-चाचियों को न बेच दो
और अपनी माँ का सिर ही न फोड़ दो।

पर गुस्सा हमेशा नहीं रहता, परिवार भर में फिर हँसी-खुशी का आलम छा जाता है। इसी प्रकार विभिन्न लोक नृत्य भी हैं। कई नृत्य मंडलियाँ लोक नृत्यों का प्रदर्शन करती हैं। ऐसा ही एक ग्रामीण नृत्य 'जार' है जिसमें स्त्रियाँ मिट्टी का जार लेकर नाचती हैं। 'पोर्ट सईद' एक ओजस्वी नृत्य है। सिकन्द्रिया के नाविकों का नृत्य भी ओजपूर्ण है। 'टोकरी', 'पाँच किसान', 'रोटी के टुकड़े' आदि नृत्य किसानों की जिन्दगी के बारे में हैं।

मिस्र में चित्रकला का विकास लगभग पिछली एक सदी से हो रहा है। आधुनिक चित्रकारों की कृतियों पर फ्रांस और यूरोप का प्रभाव झलकता है।

आर्थिक प्रगति—1952 में क्रान्ति के बाद यहाँ सभी क्षेत्रों में बहुत तरक्की हुई है। किसानों के जीवन में नया मोड़ भूमि सुधारों की बदौलत आया। नासिर सरकार ने एक कानून बनाकर यह निश्चय कर दिया कि कोई भी व्यक्ति 200 फेदान (207 एकड़) से अधिक भूमि अपने पास नहीं रख सकता। बाद में यह सीमा 1961 में 100 फेदान कर दी गई। इस प्रकार बड़े-बड़े जमींदारों की फालतू जमीन भूमिहीन किसानों में बांट दी गई। इसके अलावा बहुत-सी पड़ती और बेकार भूमि को खेती योग्य बनाया गया है। मिस्र की लम्बे रेशे की कपास दुनिया भर में प्रसिद्ध है। संसार भर की लम्बे रेशे की कपास का 44 प्रतिशत मिस्र से प्राप्त होता है।

अस्वान के पास बनाये जाने वाला उच्च बाँध (हाई डैम) भी मिस्र की प्रगति के मार्ग में दिशाबोधक चिह्न है। इसका पहला चरण मई, 1964 में पूरा हो गया। इससे नील नदी के प्रवाह को मोड़ दिया गया है। इस बाँध से 20 लाख अतिरिक्त एकड़ भूमि की सिंचाई होगी तथा 10 अरब किलोवाट बिजली पैदा होगी जो ट्रांस-मिशन लाइनों से दूर-दूर तक भेजी जाएगी।

मिस्र में औद्योगिक प्रगति भी बड़ी तेजी से हो रही है। हेल्वान के पास लोहे और इस्पात का बड़ा कारखाना बनाया गया है। इसके अलावा चीनी व कपड़े की मिलें, सीमेंट, मोटरकार, ट्रैक्टर, रेल के डिब्बे, रेफ्रीजेरेटर, टेलीविजन सैट आदि बनाने के कारखाने भी हैं। जहाज बनाने का एक कारखाना भी नील के पास बनाया गया है। आवाज़ की गति से तेज़ उड़ने वाले विमान भी यहाँ बनाये जाने लगे हैं।

मिस्र में शिक्षा का भी तेज़ी से बिस्तार हो रहा है। सभी स्तरों पर शिक्षा मुफ्त है।

आज मिस्र में जहाँ नव-निर्माण के कई कार्य चल रहे हैं, वहाँ दीर्घाकार पिरामिड, स्फिक्स तथा लुक्सर के खण्डहर इसके गौरवशाली अतीत की कहानी सुनाते हैं। विशालतम पिरामिड राजधानी काहिरा के कोई 10 मील दक्षिण पश्चिम में है। यह कोई 500 फुट ऊँचा है तथा इसका आधार 13 एकड़ क्षेत्र में है। इतिहासकारों का अनुमान है कि इसे बनाने में 48 लाख 83 हजार टन पत्थर तथा कोई 1 लाख लोगों की 20 वर्ष तक अनवरत श्रम-साधना लगी थी। लगभग 2690 ईसा-पूर्व में बने इस पिरामिड की विशालता को देखकर आँखें पथरा जाती हैं और यह समझ नहीं आता कि उस युग में जब गाड़ियाँ या क्रेनें नहीं थीं, इतना पत्थर कैसे ढोया गया होगा। पिरामिड के अन्दर के 'कक्ष बड़े सुन्दर ढंग से सजे हैं तथा दीवारों पर प्राचीन भाषा में फेराओ राजाओं के

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

शासन काल की बातें खुदी हैं। मिस्र में छोटे-बड़े कुल 80 पिरामिड हैं। नरसिंह की विशाल आकृतियाँ जिन्हें स्फिक्स कहते हैं, भी दर्शनीय हैं।

लुक्सर और कर्नाक के पास प्राचीन स्मारक व स्तंभों के खण्डहर फेराओं राजाओं की कलाप्रियता तथा तत्कालीन वास्तुशिल्पियों की सुघड़ता के स्मृति-चिह्न हैं।

पिरामिड और खण्डहर इस बात के प्रमाण हैं कि आज से हजारों वर्ष पूर्व का मिस्र एक सुसंस्कृत देश था। 365 दिन का कलेण्डर, अक्षर तथा लिखने योग्य कागज बनाने का श्रेय मिस्र को ही प्राप्त है। नक्षत्र विज्ञान, रसायनशास्त्र तथा वास्तुशिल्प के क्षेत्र में भी प्राचीन मिस्र ने महत्त्वपूर्ण योग दिया था।

काहिरा—नील के तट पर बसी मिस्र की राजधानी काहिरा नगरी प्राचीन और नवीन मिस्र के अद्भुत समन्वय की प्रतीक है। यहाँ लम्बी-लम्बी मीनारें और पुराने मकान भी मिलेंगे तथा आधुनिक ढंग की इमारतें, चौड़ी सड़कें तथा सुरम्य उद्यान भी। यहाँ लम्बा चोगा तथा लाल फैज टोपी पहने लोग भी दिखाई देंगे तो पाश्चात्य वेषभूषा पहने सड़कों पर घूमते नर-नारी भी। काहिरा में ही प्राचीन विश्वविद्यालय 'अल अजहर' तथा नवीन काहिरा यूनिवर्सिटी है।

नील के वक्ष पर इठलाती नौकाएँ बड़ी सुन्दर लगती हैं और उनमें भ्रमण का आनन्द अवर्णनीय है। भूमध्य सागर के तट पर स्थित सिकन्द्रिया भी एक आधुनिक रमणीय नगरी है। यहाँ एक अच्छा बन्दरगाह भी है। पोर्ट सईद, स्वेज और तोता अन्य प्रमुख नगर हैं।

भारत के साथ सम्बन्ध—संयुक्त अरब गणराज्य और भारत के बीच बहुत ही अच्छे सम्बन्ध हैं। 1955 में बांडुग जाते हुए राष्ट्रपति नासिर पहली बार भारत आए थे। इसके बाद श्री नेहरू और श्री नासिर घनिष्ठ मित्र बन गए। दोनों ही नेता तटस्थ जगत के सुदृढ़ स्तंभ के रूप में माने जाते रहे हैं। स्वर्गीय प्रधानमंत्री श्री लालबहादुर शास्त्री भी जून, 1965 में श्री नासिर से बातचीत करने के लिए काहिरा गए थे। दोनों देशों में व्यापार भी खूब हो रहा है। सांस्कृतिक आदान-प्रदान भी बढ़ रहा है। आवाज की गति से तेज हवाई जहाज बनाने के क्षेत्र में भी दोनों देश सहयोग कर रहे हैं तथा दोनों देशों के बीच जहाजरानी सेवा शुरू हो चुकी है।

'श्री नेहरू मेरे बड़े भाई और मार्गदर्शक के समान थे'

—नासिर

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

46. लीबिया

(LIBYA)

क्षेत्रफल : 6,79,383 वर्गमील

जनसंख्या : 13,40,000

मिस्र से पश्चिम की ओर चलने पर हम सर्वप्रथम लीबिया में प्रवेश करते हैं। लीबिया को जो आज अफ्रीका का एक पूर्ण स्वतंत्र देश है, जन्म देने का मुख्य श्रेय संयुक्त राष्ट्रसंघ को है और यह राष्ट्रसंघ के सद्प्रयत्नों का सुन्दर प्रतीक है।

मिस्र के पश्चिम में अवस्थित लीबिया का कुल क्षेत्रफल 6,79,383 वर्ग मील है। लीबिया के उत्तरी तट पर भूमध्य सागर की लहरें टकराती रहती हैं। इसके पश्चिम में अल्जीरिया व पश्चिमोत्तर सीमा पर ट्यूनीसिय हैं। दक्षिण में इसके नीजेर, चाड और सूडान की सीमाएँ मिलती हैं। उत्तरी अफ्रीका में इस देश की स्थिति सामरिक दृष्टि से अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। इसीलिए अतीत में कई विदेशियों ने इसे पैरों तले रौंदा है तो वर्तमान में कई देश इसे आर्थिक सहायता देने में पहल कर रहे हैं।

केवल तटवर्ती उत्तरी भाग को छोड़ कर सारा लीबिया निरा रेगिस्तान है। ऊपरी दृष्टि से भले ही लीबिया अब एक देश हो पर वास्तव में यह 3 स्वायत्त प्रदेशों का समूह है—1. त्रिपोलीतानिया, 2. सिरेनिसा और 3. फैजाँ। त्रिपोलीतानिया इस देश का पश्चिमोत्तर भाग है। यह अपेक्षाकृत प्रगतिशील है और अन्य भागों की तुलना में यहाँ यूरोपीय प्रभाव अधिक है।

अतीत—लीबिया की धरती ने कई विदेशी शासकों के दिन देखे हैं। वैसे लीबिया का जन्म नया ही है पर इसका नाम प्राचीन है। मिस्र के ग्रन्थों में पश्चिमवर्ती भाग को लीबिया लिखा गया है। भूमध्य सागर के उस पार यूरोप है और पूर्वी ओर एशिया। अतः अधिकतर आक्रमण यूरोप के दक्षिणवर्ती देशों अथवा तुर्की से हुए हैं। सबसे पहले यहाँ फीनेशियन आये। वे कोई ईसा पूर्व 1000वें वर्ष में आए और उन्होंने यहाँ कई नगर और बस्तियाँ बसायीं। इनके बाद रोमनों ने अपना साम्राज्य फैलाया। रोमन काल में ही यहाँ कई भव्य इमारतें बनाई गईं। सब्रथा और लेप्टिस मग्न नामक दो स्थानों के खण्डहर अब भी रोमनकालीन प्रगति की कथा सुनाने के लिए खड़े हैं। ये खण्डहर विश्व भर में प्रसिद्ध हैं।

1911-12 में यहाँ इटली ने आक्रमण किया और इस भाग पर कब्जा कर लिया। इटली का आधिपत्य द्वितीय विश्वयुद्ध तक चलता रहा और 1943 में नाजी जर्मनी और फासिस्ट इटली के पतन के बाद यहाँ ब्रिटिश और फ्रांसीसी सेनाएँ आ गईं। फैजाँ फ्रेंच सेना के कब्जे में आ गया तथा त्रिपोलीतानिया एवं सिरेनिसा ब्रिटिश फौज के आधिपत्य में। बाद में ब्रिटिश और फ्रांसीसी सेनाएँ यहाँ से हट गईं और ये तीनों प्रान्त राष्ट्रसंघ की देख-रेख में आ गए। विजेता राष्ट्र इस बात पर सहमत नहीं हो सके कि लीबिया किसके अधिकार में रहे, अतः उसे स्वतन्त्र कर देने का निश्चय किया गया। 21 नवम्बर, 1949 को संयुक्त राष्ट्रसंघ महासभा ने प्रस्ताव पास किया कि 1 जनवरी, 1952 के पूर्व लीबिया स्वतन्त्र कर दिया जाना चाहिए। राष्ट्रसंघ ने वहाँ तुरन्त अंतरिम व्यवस्था की और लीबिया के लोगों को स्वशासन का कुछ प्रशिक्षण दिया। 24 दिसम्बर,

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

1951 को लीबिया पूर्ण स्वतन्त्र देश घोषित कर दिया गया।

शासन-व्यवस्था—लीबिया को एक राष्ट्र के रूप में संगठित करने का यह एक नया प्रयोग था क्योंकि इसके पूर्व त्रिपोलीतानिया, सिरेनिसा और फैजाँ कभी एक शासन के अंतर्गत नहीं रहे थे। अतः लोगों में एक राष्ट्र की भावना जागृत करना एक मुश्किल काम था। लीबिया के लिए राजतांत्रिक व्यवस्था उचित समझी गई। सिरेनिसा के एक अमीर मोहम्मद इद्रिस को, जिन्होंने इटली को हराने में प्रमुख भाग लिया था, बादशाह बनाया गया। तीनों प्रदेशों को मिलाकर पहले तो संघीय शासन व्यवस्था रखी गई। पर 27 अप्रैल, 1963 से, सविधान में संशोधन करके इसे एकात्मक राज्य बना दिया गया। संसद में दो सदन हैं। सीनेट के 24 सदस्य बादशाह द्वारा मनोनीत होते हैं। निम्न सदन प्रतिनिधि सभा में 55 सदस्य हैं जो जनता द्वारा 4 वर्ष के लिए निर्वाचित होते हैं। मंत्रिमण्डल का मुखिया प्रधान मंत्री होता है जो संसद के प्रति उत्तरदायी होता है। इस प्रकार यहाँ राजतन्त्र होते हुए भी लोकतान्त्रिक व्यवस्था है। पर विशेष बात यह है कि यहाँ कोई राजनीतिक पार्टी नहीं है। लीबिया का राष्ट्रध्वज हरे, काले एवं लाल रंग की आड़ी पट्टियों का झण्डा है जिसके बीच में अर्धचन्द्र और सितारा है।

लीबिया का आकार भारत से कोई आधा है। पर इतने विस्तृत देश में केवल 13 लाख 40 हजार लोग रहते हैं। हमारे हिमाचल प्रदेश की आबादी लगभग इतनी है। सिरेनिसा प्रदेश में अरब नस्ल की सिनूसी जाति रहती है। त्रिपोलीतानिया में बर्बर तथा दक्षिण में तुआरेग रहते हैं। आधी आबादी खानाबदोशों जैसा जीवन व्यतीत करती है। 95 प्रतिशत लोग इस्लाम धर्म के मानने वाले हैं। उत्तर में कुछ यूरोपीय भी हैं जो ईसाई हैं। यहाँ की भाषा अरबी है। स्वयं बादशाह को अरबी का अच्छा ज्ञान है। लीबिया का बादशाह केवल राजनैतिक प्रमुख ही नहीं है वह धार्मिक नेता भी है। यहाँ के दस्तकार कालीनों की बुनाई, कशीदाकारी, धातु तथा चमड़े की सुन्दर वस्तुएँ बनाने में माहिर हैं। लोगों का मुख्य धन्धा खेती और पशुपालन है। 1959 में यहाँ तेल का पता लगा था। अब सरकार को तेल कंपनियों से काफी आमदनी प्राप्त होती है।

कुल मिलाकर लीबिया एक निर्धन देश है पर सागर तट पर बसी हुई त्रिपोली नगरी यह आभास नहीं होने देती। त्रिपोली का अर्थ है 3 नगरियाँ। रोमन काल में सब्रथा और लेप्टिस मग्न जहाँ अब खण्डहर ही दर्शनीय हैं, भी अन्य दो नगरियाँ थीं। त्रिपोली अफ्रीका की साफ-सुथरी और अच्छे ढंग से बसी नगरियों में से एक है। इटालवियों ने इसे बड़े प्यार से संवारा है। यहाँ के वास्तुशिल्प में रोमन, तुर्की तथा अरब प्रभाव का मिश्रण झलकता है। त्रिपोली के अलावा बेनगाज़ी और बीदा प्रमुख नगर हैं और इन्हें भी राजधानी का दर्जा प्राप्त है।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

47. ट्यूनीसिया

(TUNISIA)

क्षेत्रफल : 48,312 वर्गमील

जनसंख्या : 42,00,000

लीबिया की पश्चिमोत्तर सीमा पर स्थित ट्यूनीसिया एक छोटा पर महत्त्वपूर्ण देश है। ट्यूनीसिया, अल्जीरिया और मोराको—उत्तरी अफ्रीका के ये तीन देश सांस्कृतिक और सामाजिक दृष्टि से काफी समान हैं। ट्यूनीसिया के उत्तर में तथा पूर्व की आधी सीमा पर भूमध्य सागर की लहरें टकराती रहती हैं। पश्चिम में अल्जीरिया की मरुभूमि है।

ट्यूनीसिया का कुल क्षेत्रफल 48,312 वर्ग मील है जो हमारे मद्रास राज्य से कुछ कम है। इसके उत्तरी भाग में कई पहाड़ियाँ हैं जो अटलास पर्वत की आखिरी शृंखलाएँ हैं। ऐसी ही दो पहाड़ियों के बीच मदजर्दा नदी की घाटी है जो यहाँ का सबसे अधिक उर्वर प्रदेश है। उत्तर में पहाड़ियों से सागर तट तक संकड़े मैदान हैं। मध्यवर्ती भाग में उच्च भूमि है और दक्षिण में हैं शुष्क मैदान। दक्षिणी भाग आखिर में रेगिस्तान के रूप में बदल जाता है। ट्यूनीसिया में भूमध्यसागरीय जलवायु है। सर्दियों में बरसात होती है तथा गर्मियाँ शुष्क होती हैं।

अतीत—ट्यूनीसिया का इतिहास भी काफी पुराना है। ईसा पूर्व की 9वीं शताब्दी में यहाँ दक्षिणी यूरोप के फीनेशियनों का साम्राज्य था। उनमे साम्राज्ञी दीदो का नाम काफी प्रसिद्ध है। इस रानी ने अपने समय में जो भव्य महल, स्नानागार, नाट्यशालाएँ और मंदिर आदि बनवाए उनके कुछ खण्डहर अब भी ट्यूनिस नगर के समीप विद्यमान हैं। फीनेशियनों के बाद में यह देश क्रमशः रोमन, वाण्डाल और बैजनटीन लोगों के आधिपत्य में रहा। पर 7वीं शताब्दी में यहाँ भी अरब लोगों ने धावा बोल दिया और इसे अच्छी तरह अरबी रंग में रंग दिया। अरब काल में भी यहाँ काफी प्रगति हुई। इन्हीं दिनों में कैरोआँ नामक प्रसिद्ध नगर और जेनोता विश्व-विद्यालय की जो इस्लाम के अध्ययन का अच्छा केन्द्र है, स्थापना हुई। ट्यूनीसिया उस समय पूर्व व पश्चिम में कला, संस्कृति और ज्ञान के केन्द्र के रूप में विख्यात था। 1575 में यहाँ तुर्की का हमला हो गया और वह तुर्की के विशाल साम्राज्य का अंग बन गया पर धीरे-धीरे इसका अपना अस्तित्व बनने लगा। 1705 में ट्यूनीसिया के 'बे' (नरेश) की घोषणा की गई। ये नाममात्र के लिए तुर्की के अधीन थे, अन्यथा इन्हें सर्वाधिकार प्राप्त नरेश थे। ट्यूनीसिया नरेश ने विदेशों के साथ कुल मिलाकर 36 संधियाँ और व्यापारिक समझौते किए। 1837 में तत्कालीन बे (नरेश) ने जो प्रगतिशील कार्य किए उन्हें देखकर अब भी अचरज में पड़ जाते हैं। उपर्युक्त वर्ष में यहाँ कई बड़े-बड़े सुधार हुए थे, उनमें से कुछ थे—सेना को आधुनिक हथियारों से सुसज्जित करना, सैनिक अकादमी की स्थापना तथा जहाज निर्माण का काम शुरू करवाना। 1861 में जो नरेश थे उन्होंने एक विधान परिषद की स्थापना की थी और शासन संचालन के लिए एक नियमावली बनाई थी। विधान सभा को एक अधिकार यह भी था कि यदि बे' नियम विरुद्ध काम करे तो वह उसे राजगद्दी से हटा

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

सकेगी । विधानांग, कार्यांग और न्यायांग के अलग-अलग अधिकार और कर्तव्य निर्धारित किये गए। इन्हीं दिनों सिद्दीकी कालेज स्थापित किया गया जहाँ आधुनिक विज्ञान और विदेशी भाषाएँ पढ़ाई जाती थीं । तभी ट्यूनीसिया का अरबी में पहला अखबार भी निकलना शुरू हुआ।

पर साम्राज्यवादी देशों की नजर ट्यूनीसिया पर गढ़ी थी । 1800 से फ्रांस और इटली दोनों ही इसे अपने पंजे में लेने को आतुर थे । पर 1831 में फ्रांस द्वारा अल्जीरिया जीत लेने के बाद ट्यूनीसिया में घुसना उनके लिए आसान हो गया और 1881 में एक अल्जीरिया-ट्यूनीसिया के सीमावर्ती झगड़े का बहाना लेकर फ्रांसीसी सेना ट्यूनीसिया में घुस पड़ी और इसे जीत लिया । 'बे' को मजबूर किया गया कि वह फ्रांस की अधीनता स्वीकार कर ले । इसे दिखावे के लिए 'रक्षित प्रदेश' का दर्जा दिया गया पर वास्तव में फ्रांस इसकी रक्षा नहीं करता था, वह इसका सर्वेसर्वा भी बन गया और 'बे' कठपुतलीमात्र रह गए । इस प्रकार 1883 से ट्यूनीसिया पराधीन बन गया ।

राष्ट्रीय आन्दोलन—प्रथम विश्वयुद्ध के बाद वहाँ राष्ट्रीयता के अंकुर फूट निकले और लोगों में अपना संगठन करने तथा अपना राज कायम करने की भावना बल पकड़ने लगी । 1934 में यहाँ दस्तूर पार्टी नामक दल संगठित किया गया था, बाद में हबीब बुरगीबा के नेतृत्व में यहाँ नव दस्तूर नामक नया दल बना और क्रांति का बिगुल बज उठा । फ्रांस ने दमनकारी उपाय अपनाये, अत्याचार ढाये, बुरगीबा को कई बार निर्वासित किया और जेल भेजा पर राष्ट्रीयता का तूफान नहीं रुका । 1955 में इसे फ्रांस ने स्वशासन दिया तथा 1956 में यह पूर्ण स्वतन्त्र हो गया ।

मई, 1957 में जहाँ पहले आम चुनाव हुए । इतिहास में पहली बार महिलाओं ने वोट डाले और नई विधान सभा बनी । इसने फैसला किया कि ट्यूनीसिया गणराज्य बनेगा । तदनुसार जुलाई, 1957 में ट्यूनीसिया में 250 वर्ष पुराना राजतन्त्र खत्म हो गया और गणराज्य की स्थापना की गई । नए संविधान के अनुसार अब वैधानिक-कार्य के लिए वयस्क मताधिकार से निर्वाचित 90 सदस्यों की राष्ट्रीय सभा है । राष्ट्र प्रमुख तथा कार्यकारी प्रमुख राष्ट्रपति होता है । आजकल हबीब बुरगीबा यहाँ के राष्ट्रपति हैं । ट्यूनीसिया के राष्ट्र ध्वज का रंग लाल है । उसमें एक सफेद गोले के बीच लाल रंग का सितारा तथा चाँद है ।

जन-जीवन—ट्यूनीसिया की कुल आबादी करीबन 42 लाख है । मुख्यतया लोग अरब हैं । उनकी भाषा अरबी है तथा उनका धर्म इस्लाम है । अरबी के अलावा कुछ बर्बर लोग भी हैं । ट्यूनीसिया के भी कई लोकनृत्य हैं जो यहाँ के जीवन के विभिन्न पहलू दर्शाते हैं । भूमध्य सागर के किनारे मछुवों का नृत्य प्रचलित है । इसमें कठिनाइयों का बहादुरी से सामना करने वाले मछुवों का चित्रण है । मटका नृत्य नखलिस्तान की जिन्दगी बताता है जहाँ जीवन के दो मुख्य आधार पानी और प्रेम हैं । गाँवों में एक अन्य लोकप्रिय नृत्य है जिसमें लड़कियाँ नाचती हैं और लड़के पास में खड़े रहते हैं । हर अविवाहित लड़का अपने हाथ में एक सेब लिए होता है जो नृत्य के बाद अपनी पसंद की लड़की की ओर उछालता है जिसे लड़की ग्रहण करके उचित प्रत्युत्तर देती है । सैबार नृत्य में वीरांगनाओं का स्वतन्त्रता संग्राम में योगदान दर्शाया गया है ।

अर्थ-व्यवस्था—ट्यूनीसिया की अर्थ-व्यवस्था मुख्यतया खेती पर ही निर्भर है । उत्तर के अधिकांश लोग खेती करते हैं । दक्षिण में पशुपालन का धंधा है, दक्षिण काफी निर्धन है पर उत्तरी भाग अपेक्षाकृत समृद्ध । ट्यूनीसिया की मुख्य उपज गेहूँ, जौ तथा जैतून का तेल हैं ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

ट्यूनीसिया की राजधानी ट्यूनिस है जो उत्तर में एक खाड़ी के किनारे बसा साधारण-सा शहर है। पूर्वी तट पर बसा स्फैक्स प्राचीन नगर है जो परकोटे से घिरा है। उत्तर में स्थित बिजर्टा बन्दरगाह भी सामरिक महत्त्व के कारण प्रसिद्ध है। पहले यहाँ फ्रांस की फौजें तैनात थीं वे हट गईं और यह ट्यूनीसिया के नियंत्रण में है।

भारत के साथ सम्बन्ध—ट्यूनीसिया और भारत में भी बड़े अच्छे सम्बन्ध हैं। जून, 1965 में भारत और ट्यूनीसिया के बीच एक समझौता हुआ जिसके अनुसार भारत ट्यूनीसिया की चार वर्षीय योजनाओं के लिए वहाँ के कर्मचारियों को तकनीकी प्रशिक्षण देगा। भारत ट्यूनीसियों को चाय, जूट का सामान, तम्बाकू, कालीमिर्च, बिजली मोटर, पम्प, कपड़े, सूती धागे का निर्यात करेगा और वह ट्यूनीसिया से फास्फेट, पारा आदि मंगायेगा।

वर्षा सबसे बड़ी नियामक है।
—एक ट्यूनिसाई कहावत

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

48. अल्जीरिया

(ALGERIA)

क्षेत्रफल : 8,55,077 वर्गमील **जनसंख्या : 1,00,00,000**

छोटे से देश ट्यूनीसिया के पश्चिम में है—विशाल अल्जीरिया जो इससे कोई 18 गुना बड़ा है। नवम्बर, 1954 से यहाँ स्वाधीनता संग्राम चला और फ्रांस ने 4 जुलाई, 1962 में इसे स्वतन्त्र किया। इन सात वर्षों के अर्से में अल्जीरिया की धरती शहीदों के रक्त से लाल हो गई। कुल जनसंख्या के लगभग आठवें भाग ने आजादी की वेदी पर अपना रक्त चढ़ाया। औसतन हरेक परिवार के कम से कम एक व्यक्ति ने स्वतन्त्रता के यज्ञ में आहुति दी है। इस प्रकार अल्जीरिया ने अपनी आज़ादी लेने के पहले उसकी पूरी कीमत चुकाई है।

इसके 8,55,077 वर्गमील क्षेत्र में कई विरोधाभास देखने को मिलेंगे। उत्तर में यहाँ सोना उगलने वाली उर्वरा भूमि है तो दक्षिण में है—सहारा की वह मरुभूमि जहाँ खिसकते हुए बालुई टीलों के अलावा कुछ नहीं है। अल्जीरिया जो आकार में भारत का एक तिहाई है मुख्यत: 3 प्राकृतिक भागों में बंटा है। इसकी 620 मील लम्बी तट रेखा के उस पार भूमध्य सागर की नीली लहरें उमड़ती रहती हैं। तट से लेकर 90 मील दक्षिण की ओर उर्वर मैदान हैं। ये ही मैदान अल्जीरिया का समृद्धतम प्रदेश है। यहाँ खूब खेती होती है और अंगूर सहित अन्य फल भी उगाये जाते हैं। इस मैदान के दक्षिण में अटलास की दो पर्वत मालाएँ हैं जो लगभग समानांतर फैली हैं। ये मोराको की ओर से आ रही हैं और ट्यूनीसिया तक चली गई हैं। इन्हीं पर्वत मालाओं के बीच पठारी भूमि है जहाँ आम तौर पर पशु चराने वाले लोग रहते हैं क्योंकि यहाँ घास काफी होती है। अल्फा नामक एक घास भी यहाँ काफी है जो कागज बनाने के काम में ली जाती है। इस पठारीय भूमि के नीचे से सहारा शुरू हो जाता है। सहारा का अरबी भाषा में अर्थ है—शून्य, रीता। वास्तव में सहारा निरा शून्य है। जहाँ तक आप नज़र डालेंगे आपको रेत ही रेत दिखाई देगी—कहीं-कहीं आपको कुछ हरे झुरमुट भी दिखाई पड़ जाएँगे। ये नखलिस्तान हैं। जहाँ थोड़ा-बहुत पानी उपलब्ध हो जाता है—सहारा में ऐसे नखलिस्तान बन जाते हैं। ताड़ व खजूर के पेड़ उग जाते हैं तथा एक छोटा-सा बस्ती बस जाती है। यहाँ भीषण गर्मी पड़ती है और पानी का बिलकुल अभाव है। यदि आदमी रास्ता भटक जाए तो वह 24 घण्टे के अन्दर-अन्दर दम तोड़ दे। उधर उत्तर के मैदानों में अंगूर इतने उगाये जाते हैं कि उनका फ्रांस को निर्यात करना पड़ता है।

अतीत—उत्तरी अफ्रीका में काफी प्राचीनकाल से बर्बर जाति रह रही थी। ईसा पूर्व के लगभग 1200वें वर्ष में यहाँ दक्षिण यूरोप की एक जाति फीनेशियन ने आक्रमण किया और कई नगर बसाये। इनमें से कारथेज सबसे समृद्ध और प्रसिद्ध उपनिवेश था। कारथेज के नष्ट हो जाने के बाद इधर रोमनों ने अपना प्रभाव बढ़ाना शुरू किया। तटवर्ती भाग जीतने के बाद वे देश के आंतरिक भाग की ओर भी बढ़े। रोमन शासन की पहली शताब्दी में यहाँ काफी प्रगति भी हुई। जमीला, विपासा और चरचल नामक प्राचीन नगरियों के पुल, सड़कों और इमारतों के खण्डहर यह बताते हैं कि उन दिनों यह भाग काफी समृद्ध था। पर चतुर्थ शताब्दी के बाद रोमन शक्ति क्षीण होने लगी और आन्तरिक विग्रह शुरू हो गया। फिर वांडाल तथा उनके बाद बोजन टाइन

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

जाति का आधिपत्य हो गया। पर यहाँ असुरक्षा और अव्यवस्था की स्थिति सुधरी नहीं। सातवीं शताब्दी के आरम्भ में यहाँ अरब जाति का आक्रमण हुआ जिसका मुख्य उद्देश्य इस्लाम का प्रसार था। बर्बर जाति के लोगों ने काफी प्रतिरोध किया पर अरबी प्रभाव रुक न सका। अरब शासन के पश्चात् यहाँ पुनः तरक्की होने लगी पर आक्रमणों का दौर रुका नहीं। 11वी शताब्दी में यहाँ मिस्र की एक नीग्रो जाति ने हमला किया। 16वीं शताब्दी में यह तुर्की साम्राज्य का अंग बन गया। तुर्की साम्राज्य के अंतर्गत धीरे-धीरे इसे स्वायत्तता प्राप्त हो गई और उन्नीसवीं शताब्दी तक यह लगभग पूर्ण स्वतन्त्र हो गया। तब अल्जीरिया का 'डे' सर्वाधिकार सम्पन्न शासक होता था। इसके दूर देशों के साथ भी कूटनीतिक सम्बन्ध थे। 1619 और 1830 के बीच फ्रांस ने तत्कालीन अल्जीरियाई शासक के साथ कुल मिलाकर 57 संधियाँ की थीं। यानी 57 बार अल्जीरिया की सार्वभौमता स्वीकार की थी। फ्रांस के नरेश हेनरी चतुर्थ ने मर्सलीज को स्पेन वालों से मुक्त कराने के लिए 1753 में अल्जीरिया सेना की सहायता ली थी। इस प्रकार स्पष्ट है कि फ्रांसीसी आक्रमण के पूर्व अल्जीरिया एक महत्त्वपूर्ण और स्वाधीन देश था।

फ्रांसीसी आक्रमण—1827 में अल्जीरिया तथा फ्रांस के बीच एक वित्तीय मामले में गहरा मत-भेद हो गया। अल्जीरिया स्थित फ्रांसीसी दूत को अल्जीरियाई नरेश (डे) ने अपमानित कर दिया था। अपने दूत के अपमान का बदला लेने का बहाना लेकर फ्रांसीसी सेनाओं ने अल्जीरिया पर हमला कर दिया। 14 जून, 1830 को सर्वप्रथम यहाँ फ्रांसीसी सेना उतरी थी और 5 जुलाई, 1830 को अल्जीरिया ने हार स्वीकार कर ली। इस प्रकार फ्रांसीसी पराधीनता का युग शुरू हुआ।

1840 से यहाँ फ्रांसीसी प्रवासी आना शुरू हो गए थे। कुछ और यूरोपीय भी आए। फ्रांसीसी कानूनों की सहायता से इन लोगों ने उत्तरी भाग की उर्वरा धरती पर क्रमशः अधिकार जमा लिया और यहाँ के मूल निवासियों को पीछे की ओर धकेल दिया। यूरोपीय प्रवासी अमीर होते चले गए और मूल निवासी निर्धन। पर फ्रांस ने अपना आधिपत्य जमाये रखने के लिए सभी प्रकार के हथकण्डे अपनाये, कुछ पढ़े-लिखे और सम्पत्ति वाले मुसलमान अल्जीरियाइयों को मताधिकार भी दिया। फ्रांसीसी संसद में प्रतिनिधि भेजने की छूट दी। पर यहाँ के राष्ट्रवादी तत्त्व झुके नहीं। वे अल्जीरिया को फ्रांस का अंग नहीं, बल्कि पूर्ण स्वतन्त्र करना चाहते थे।

द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद यहाँ आज़ादी की लड़ाई तेज हो गई। हालांकि इसके पूर्व भी राष्ट्रीयता के तत्त्व पनपने लग गए थे। 1945 की 8 मई को जबकि यूरोप में मित्र राष्ट्रों की विजय का समारोह मनाया जा रहा था, अल्जीरिया में फ्रांसीसी सेनाएँ निहत्थे अल्जीरियाइयों पर जो स्वतन्त्रता के लिए प्रदर्शन कर रहे थे, गोली चला रही थीं। विद्रोह को कुचलने के सिलसिले में फ्रांसीसी सेनाओं ने लगभग 45,000 व्यक्तियों को मार डाला था। बाद में फ्रांसीसी संसद में अल्जीरियाइयों को प्रतिनिधि भेजने का अधिकार दिया गया, पर राष्ट्रवादी तत्त्व तुष्ट नहीं हुए। फ्रांस स्वतन्त्रता देने के लिए कतई तैयार नहीं था। अतः अल्जीरिया के राष्ट्रीय दलों ने एक संयुक्त मोर्चा बनाया जिसका नाम था, राष्ट्रीय मुक्ति मोर्चा (एफ० एल० एन०)। फ्रांस के विरुद्ध सशस्त्र संग्राम का श्रीगणेश 1 नवम्बर, 1954 को हुआ था तथा डिगाल सरकार और राष्ट्रवादियों के बीच हुए समझौते के पश्चात् 18 मार्च, 1962 को युद्ध-विराम की घोषणा हुई। इस बीच फ्रांस ने अल्जीरिया में अपनी भारी सेनाएं तैनात कर रखी थीं और उन्होंने राष्ट्रवादी संग्राम को कुचल डालने के लिए निर्दयता, कठोरता, क्रूरता के साथ सम्पूर्ण शक्ति लगा दी थी पर वह सफल नहीं हुई। राष्ट्रवादियों ने फरहत अब्बास के नेतृत्व में अस्थायी सरकार बनाई और आन्दोलन चलता रहा। 4 जुलाई, 1962 को अल्जीरिया आज़ाद हो गया। बाद में यह गणराज्य

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

बन गया और अहमद बिनबिल्ला यहाँ के प्रथम राष्ट्रपति बने। जून, 65 में वहाँ सैनिक क्रांति हुई। बिनबिल्ला को अपदस्थ कर दिया गया और भूतपूर्व सेनाध्यक्ष कर्नल बूमदिएन ने सत्ता सम्हाल ली।

जन-जीवन—अल्जीरिया की कुल आबादी लगभग 1 करोड़ है। इसमें कोई 20 लाख यूरोपीय प्रवासी हैं और 90 लाख यहाँ के मूल निवासी। हर बड़े शहर अल्जीयर्स, ओरान, कन्सटेनटाइन आदि के दो भाग हैं। एक आधुनिक भाग—यहाँ पहले यूरोपीय रहते थे और अब आधुनिक लोग। इसमें ऊँची-नीची बहुमंज़िली इमारतें हैं, चौड़ी सड़कें व खुले पार्क हैं। अरब भाग में पुराने ढंग के मकान और संकड़ी गलियाँ हैं। अधिकांश यूरोपीय व्यापारी, सरकारी कर्मचारी अथवा उद्योगपति हैं।

मूल निवासियों को यहाँ मुख्यतया दो जातियों में विभक्त किया जा सकता है अरब और बर्बर। अरब उत्तरी भाग में हैं। दक्षिणी भाग में अधिकतर बर्बर और उनकी उपजातियाँ हैं। इनका धर्म इस्लाम है। मुसलमान अधिकतर चोगा पहनते हैं जो टखनों तक नीचा होता है तथा साफा बांधते हैं। स्त्रियाँ बुर्का ओढ़े रहती हैं जिसमें उनकी आँखों के अलावा शरीर का सारा भाग छिपा रहता है। अल्जीरिया के बड़े-बड़े शहरों की सड़कों पर, आधुनिक दुकानों में और सार्वजनिक स्थानों पर भी हिमधवल बुर्का पहने ही स्त्रियाँ आती-जाती दिखाई पड़ती हैं। अरब और बर्बर लोग अधिकतर देहातों में रहते हैं। पठारों और पहाड़ों पर रहने वाले लोग खेती अथवा पशुपालन का धंधा करते हैं। गाँव के मकान ईंटों और चिकनी मिट्टी के बने होते हैं। अक्सर उनमें खिड़कियाँ नहीं होतीं क्योंकि उन्हें हवा की सुविधा से अधिक चिन्ता प्रचण्ड गर्मी से बचने की होती है।

नीली नकाब वाले लोग—सहारा मरुभूमि के दक्षिणी छोर पर बर्बर जाति की एक शाखा तुआरेग रहती है। तुआरेग लोगों की विचित्र बात यह है कि इनमें स्त्री नहीं बल्कि पुरुष अपना चेहरा ढके रहते हैं। तुआरेग चेहरा छिपाने के लिए नीले रंग के नकाब पहनते हैं तथा सिर पर ये सफेद वस्त्र बाँधे रहते हैं। शायद ही कोई परदेशी तुआरेग पुरुष का चेहरा देख पाए। भोजन करते समय भी ये नकाब नहीं उतारते जब कि स्त्रियाँ खुले मुँह रहती हैं। पुरुषों में यह नकाब प्रथा क्यों चली इसका ठीक-ठीक रहस्य तो किसी को भी ज्ञात नहीं है, पर अनुमान यह है कि शुरू में सहारा की प्रचण्ड गर्मी और धूल भरी आँधियों से बचने के लिए वे अपना मुँह ढके रहते होंगे। भौगोलिक परिस्थितियों के कारण ऐसा हुआ होगा पर अब यह सामाजिक प्रथा ही बन गई है। यह एक खाना-बदोश जाति है और तम्बुओं में रहती है। इनकी सवारी ऊंट है। ऊंटनी के दूध का चाय अथवा पेय में प्रयोग करते हैं। ऊंट पर जो काठी चढ़ाते हैं वह भी कलात्मक होती हैं। तुआरेग क्षेत्र का प्रमुख कस्बा

नीली नकाब पहने एक तुआरेग

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

तामनरासेत है। लगभग 2,000 लोगों की आबादी वाले इस नगर में पुराने ढंग की दुकानें और बिना खिड़की के मकान हैं। यह नगर चारों ओर से अहगार पहाड़ों से घिरा है। इसका तापमान गर्मियों के दिनों में 140° तक पहुँच जाता है। इधर आवागमन बहुत ही कठिन है।

अर्थ-व्यवस्था—उत्तरी भाग में अब फल काफी होते हैं। संतरे व अंगूर तो बाहर भी भेजे जाते हैं। फास्फेट और लोहा के खनिज भण्डारों का पता लगा है। सहारा में पेट्रोल और गैस भी काफी मात्रा में उपलब्ध है। ये सब अल्जीरिया के आर्थिक निर्माण में सहायक होंगे।

उत्तरी तट पर राजधानी अल्जीयर्स एक प्रमुख नगर, हवाई अड्डा तथा बन्दरगाह है। यहाँ के ऊँचे-ऊँचे भवन, चौड़ी सड़कें, पार्क वगैरह इसे यूरोपीय नगरी का सा रूप प्रदान करते हैं। अल्जीयर्स में एक बड़ा विश्वविद्यालय भी है। ओरान, और बोन अन्य बन्दरगाह हैं, कंसटेनटाइन भी बड़ा नगर है। यहाँ उत्तरी भाग में रेल लाइनें बिछी हैं। यहाँ अच्छी सड़कें भी हैं।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

49. मोराको

(MOROCCO)

क्षेत्रफल : 1,71,599 वर्गमील **जनसंख्या : 1,16,25,000**

मगरब अल अस्क—अरबी भाषा के इस वाक्यांश का अर्थ है—धुर पश्चिम और अब हम आपको उत्तरी अफ्रीका के धुर पश्चिम में ले आए हैं। मोराको का अरबी नाम यही मगरब अल अस्क ही है। उत्तरी अफ्रीका का धुर पश्चिम होने के साथ ही मोराको की एक विशिष्ट बात यह है कि यह भौगोलिक रूप से यूरोप के निकटतम है। मोराको के उत्तरी कोने से स्पेन प्रायद्वीप के तट के बीच केवल 9 मील का फासला है। सागर का यह भाग जिब्राल्टर का जलमडरूमध्य कहलाता है। मोराको का उत्तरी तट भूमध्य सागर की लहरें पखारती हैं और पश्चिमी तट पर अटलाँटिक महासागर की लहरें टकराती हैं। इस प्रकार दोनों सागरों ने इसे प्रभावित किया है। सागरों के समान ही इसके महान पर्वत अटलास का भी इसके आर्थिक, सामाजिक और राजनैतिक विकास में काफी योगदान रहा है। अटलास की मुख्य पर्वत माला दक्षिण पश्चिम से उत्तर पूर्व की ओर फैली हुई है। इसके उत्तर में इसी की एक शाखा और चली गई है जिसे मध्यवर्ती अटलास कहते हैं। दक्षिण में निकली इसकी शाखा को एंटी-अटलास के नाम से पुकारते हैं। मुख्य पर्वतमाला का जिसे महान अटलास कहते हैं, सर्वोत्तम शिखर 13,664 फुट ऊँचा है और वह हिमाच्छादित होने के कारण मनोरम दृश्य प्रस्तुत करता है। इसके अलावा उत्तरी भाग में अटलास से स्वतंत्र एक पर्वतश्रेणी भी है जिसे रिफ कहते हैं। इन पहाड़ों से तुवुस, सेबू, वूरेग्रेग, आर-अरेबिया, तथा तिसिफ नदियाँ निकलती हैं जो सब अटलाँटिक महासागर में गिरती हैं पर उत्तर की मुलुया नदी जो मोराको की सबसे लम्बी नदी है, भूमध्य सागर में गिरती है। पहाड़ों और तट के मध्य इन नदियों से सिंचित हरे-भरे मैदान बहुत ही उर्वर इलाके हैं और वहाँ खूब फसल होती है पर जो नज़ारा अटलास के उत्तरी व पश्चिमी भाग में है उसके ठीक विपरीत दूसरी तरफ मिलता है जो शुष्क पठार तथा सहारा रेगिस्तान का भाग है। इसका कुल क्षेत्रफल 1,71,599 वर्गमील है जो हमारे मध्यप्रदेश के बराबर है।

अतीत—ट्यूनीसिया और अल्जीरिया की भाँति मोराको के भी प्राचीन निवासी बर्बर लोग ही थे और उपर्युक्त दोनों देशों की तरह यहाँ भी पहले विदेशी फीनेशियन और फिर रोमन आये। रोमन काल की इमारतों के खण्डहर आज भी बोलूबिलिस और शेला में देखे जा सकते हैं। 682 ईस्वी में यहाँ अरब लोग आए थे और उन्होंने इस्लाम का इतना गहरा प्रचार किया कि उसका प्रभाव आज भी अक्षुण्ण है। 709 ई० में अरब और बर्बर लोगों ने मूर साम्राज्य बनाया और एक बादशाह नियुक्त किया। दो ही वर्षों में यह साम्राज्य इतना शक्तिशाली हो गया था कि उन्होने स्पेन पर धावा बोल कर स्पेन के बन्दरगाह पर अधिकार कर लिया। 732 ई० तक फ्राँस के एक नगर तौर्स का इलाका अपने कब्जे में ले लिया। विचित्र संयोग है कि अफ्रीका में मोराको ही एक ऐसा देश है जो बीसवीं सदी में उसे पराधीन बनाने वाले दोनों राष्ट्र स्पेन और फ्राँस के कुछ भागों को 8वीं शताब्दी में अपने अधीन रख चुका है।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

मोराको में कई राजवंशों का शासन रहा है। शुरू में इद्रिस वंश का शासन था। यह 788 से 794 तक रहा। इसी काल में ऐतिहासिक नगरी फैज तथा करवेयन विश्वविद्यालय की स्थापना हुई। अरब संस्कृति का भी इन दिनों खूब प्रसार हुआ। दूसरा प्रमुख राजवंश अलमोरा विदों का था। इसने कोई 1053 से 1147 तक राज्य किया तथा मोराको को धार्मिक एकसूत्रता में बाँधा। इस वंश के प्रथम शासक यूसफ इब्न ताशफिन ने मरक्केश नगरी की स्थापना की। इन्हीं दिनों स्थापत्यकला का भी विकास हुआ तथा सिंचाई की नहरें व जलमार्ग भी बनाए गए। इस काल में मोराको समृद्धि के शिखर पर जा पहुँचा था। 1119 में मोरक्को नरेश स्पेन के राजा भी बन गए थे। 1125 से 1248 तक यहाँ अल मोहद वंश का राज्य रहा। इसी काल में महान नरेश अब्दुल मुमीन हुए जिन्होंने पूर्व में भी राज्य का विस्तार किया। इन्हीं के समय एक कर-व्यवस्था बनायी गई थी। इनके पौत्र याकूब अल मन्सूर ने 1195 में स्पेन वालों पर शानदार विजय प्राप्त की। इस काल में संस्कृति और कला भी बहुत उन्नत हुई। विशेषकर संगीत और स्थापत्य तो खूब फले-फूले। जहाज निर्माण का काम करने के लिए कारखाना भी बना। रबात की प्रसिद्ध दीवार, दरवाजे तथा हसन मीनार का निर्माण इन्हीं दिनों हुआ। 1269 से 1465 तक मेरिनिदों का शासन रहा तथा मरक्केश एक व्यापारिक केन्द्र के रूप में विकसित हुआ। 1549 से 1654 तक सैयद वंश का राज रहा। इस वंश में अहमद अल मंसूर सबसे प्रसिद्ध बादशाह हुआ तथा मोराको का यूरोप से सम्पर्क बढ़ा। वर्तमान राजवंश अलावित का शासन 1660 से शुरू हुआ।

लगभग 1100 वर्ष की स्वाधीनता के पश्चात् 1912 में यह देश पराधीन हो गया। कुछ भाग स्पेन को मिला और अधिक भाग फ्रांस को। द्वितीय विश्वयुद्ध के पश्चात् यहाँ भी राष्ट्रीयता की लहर फैलने लगी। यहाँ का प्रमुख राष्ट्रीय दल इस्तकाल पार्टी था। वर्तमान नरेश के पिता मोहम्मद पंचम का जो 1927 में शासनारूढ़ हुए थे, झुकाव राष्ट्रवादियों की ओर था। फ्राँस ने राष्ट्रवादी आन्दोलन कुचलने की पूरी कोशिश की। अतः 1953 में उसने मोहम्मद पंचम को गद्दी से हटा कर उन्हें निर्वासित कर दिया था और मेडागास्कर द्वीप में रखा। पर आखिर फ्रांस झुक गया। नवम्बर, 1955 में मोहम्मद पंचम वापस मोराको लाए गए और उन्हें गद्दी लौटा दी। 2 मार्च, 1956 को फ्रांस ने मोराको को स्वतंत्रता दे दी। 7 अप्रैल, 1956 को स्पेन ने भी अपने अधीनस्थ इलाका को स्वतंत्र कर दिया था। 1961 में मोहम्मद पंचम की मृत्यु के बाद शाह हसन पदासीन हुए।

शासन-व्यवस्था—मोराको एक संवैधानिक राजतंत्र है। 1963 में यहाँ दुसदनी संसद बनाई गई। प्रतिनिधि सभा में 144 निर्वाचित सदस्य रखे गए। उच्च सदन के सदस्य परोक्ष रूप से चुने जाते हैं पर इन्हें वैधानिक अधिकार प्राप्त है हालाँकि नरेश के पास निषेधाधिकार है। मोराको एक अरब व मुस्लिम राज्य है। इस्लाम राजधर्म है। अरबी राजभाषा और राष्ट्रभाषा है। सभी मोराकोवासी कानून के अनुसार समान हैं। उनके एक से अधिकार और एक से कर्तव्य हैं। मोराको का राष्ट्रध्वज लाल रंग का है जिसमें हरा सितारा है।

जन-जीवन—यहाँ की कुल आबादी 1,16,25,000 है। इसमें 95 प्रतिशत लोग मुसलमान हैं। कोई डेढ़ लाख यहूदी भी यहाँ रहते हैं। तटवर्ती नगरों और उत्तरी व पूर्वी भाग में अरब रहते हैं तथा दक्षिण की ओर व पठारों पर बर्बर। बर्बर लोग घुड़सवारी के शौकीन होते हैं तथा वे घोड़ों पर सवार होकर तरह

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

तरह के करतब दिखाने में आनन्द लेते हैं। अधिकांश बर्बर पुरुष पशुओं के चराने का काम करते हैं। स्त्रियाँ घर की व्यवस्था तक ही सीमित हैं। किसान लोग गोलाकार झोंपड़ियों में रहते हैं। मोराको के लोग चोगा पहनते हैं जो घुटनों से नीचे तक का होता है, कमरबंद बाँधते हैं तथा सिर पर साफा भी। स्त्रियाँ पर्दे में रहती हैं और बाहर निकलते समय बुर्के का प्रयोग करती हैं। शहरों में बहुत-सी स्त्रियाँ आधुनिक वेशभूषा में घूमा करती हैं।

मोराको विविधताओं और आकर्षणों से परिपूर्ण देश है। प्राचीन संस्कृति, शिक्षा और धर्म की केन्द्रस्थली फैजनगरी पर मोराको को नाज होना सर्वथा उचित है। इसकी स्थापना इद्रिस द्वितीय ने आठवीं शताब्दी में की थी। परकोटे के भीतर अवस्थित इस नगरी ने हजारों वर्ष का इतिहास देखा है। इसके कलापूर्ण महल, मनोहर उद्यान तथा फव्वारों की छटा अपना अनूठा ही सौन्दर्य रखती हैं। इसमें कोई 120 मस्जिदें हैं जिनकी मीनारें बड़ी सुन्दर हैं। फैज के हृदय में ही वह कारवेयन विश्वविद्यालय अवस्थित है, जो इस्लाम संस्कृति के महत्त्वपूर्ण केन्द्र के रूप में सारे अरब जगत में ही नहीं, यूरोप में भी सदियों से विख्यात है।

दक्षिणी भाग का प्रमुख नगर मरक्केश का भी अपना निराला ही सौन्दर्य है। अटलास पर्वत के हिमाच्छादित शिखरों की पृष्ठभूमि में इस नगर की कुतुबिया मीनार अत्यन्त प्रिय लगती है। मरक्केश की सड़कों पर कहानी सुनाने वाले तथा साँपों के खेल दिखाने वाले सपेरे भी काफी दिखाई पड़ते हैं। सागर तट पर बसी रबात नगरी 12वीं सदी में बनायी गई थी। परकोटे से घिरी इस नगरी के दरवाजों का शिल्प-कौशल देखने योग्य है। रबात की हसन मीनार दर्शनीय है। यह नगरी मोराको की राजधानी है। पर आर्थिक राजधानी तट पर ही बसी नगरी आधुनिक कैसेब्लांका है। जहां जनवरी, 61 में कुछ स्वतंत्र अफ्रीकी देशों का सम्मेलन भी हुआ था। यह एक अच्छा बन्दरगाह भी है। यदि फैज, मरक्केश और रबात प्राचीन मोराको के प्रतीक हैं तो कैसेब्लांका नवीन मोराको का प्रतिबिम्ब है। नयी-नयी और ऊँची-ऊँची भव्य इमारतों के कारण यह यूरोप का सा नगर लगता है।

यहाँ के 75% लोग खेती-बाड़ी करते हैं। जौ, गेहूँ, सिट्रस, जैतून यहाँ की प्रमुख उपज हैं। फास्फेट, अभ्रक, जस्ता यहाँ के प्रमुख खनिज पदार्थ हैं।

मोराको में बड़े-बड़े शहरों और ऐतिहासिक स्थानों के बीच अच्छी सड़कें हैं। मैदानी इलाकों और बन्दरगाहों तक रेल लाइनें हैं। रबात, तंजियर, मरक्केश, अगमीर, कैसाब्लांका तथा फैज में हवाई अड्डे भी हैं।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

50. स्पेनिश सहारा

(SPANISH SAHARA)

क्षेत्रफल : 1,25,000 वर्गमील **जनसंख्या : 37,000**

मोराको के दक्षिणी सीमान्त से सटा हुआ अटलांटिक महासागर के किनारे पर स्पेनिश सहारा है। इसमें दो स्पेनिश उपनिवेश शामिल हैं रिग्रो डि ओरो और मोराको के दक्षिणी छोर पर जो आयताकार भूखण्ड है उसे 'सागिया अल हामरा' कहते हैं। इसका कुल क्षेत्रफल 31,500 वर्गमील है और इसमें केवल 13,000 लोग रहते हैं। सागिया अल हामरा के दक्षिण में है— रिग्रो डि ओरो। इसका क्षेत्रफल 73,000 वर्ग मील है और इस में भी 24,000 से अधिक लोग नहीं बसते। दोनों ही भाग बहुत कुछ वीरान और शून्य से हैं। तटवर्ती भाग में इक्के-दुक्के बन्दरगाह हैं। उनकी भी हालत खराब है। आंतरिक भाग में केवल भेड़ों और ऊँटों के झुंड देखे जा सकते हैं, जिन्हें चरवाहे इधर-उधर चराते फिरते हैं। यहाँ के अधिकांश लोग खनाबदोश हैं और मुसलमान हैं।

यह इलाके बहुत ही दुर्गम हैं। वनस्पति के नाम पर कहीं-कहीं झाड़ी-झंखाड़ नज़र आते हैं वह भी सूखी नदियों की तलहटी में। वर्षा का वार्षिक औसत 4 इंच से अधिक नहीं है।

स्पेन ने 15वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में इधर पैर बढ़ाना शुरू किया था। पर 19वीं शताब्दी तक ही उसने इस इलाके को विधिवत् अपने कब्जे में लिया था। 1884 में रिग्रो डि ओरो पर स्पेन का अधिकार जताया गया था और उसी वर्ष विला-सिसनेरोस नगर की नींव रखी गई थी।

स्पेन सहारा को अपना एक प्रांत कहता है और उस पर अपने गवर्नर जनरल की मारफत शासन चलाता है। 14 सदस्यों की एक परिषद है जिसे शिक्षा, लोक स्वास्थ्य, लोक निर्माण, नगर आयोजन तथा कल्याणकारी कार्यों के बारे में सीमित अधिकार हैं।

स्पेनिश सहारा का मुख्य शहर अल आयन है। यहीं स्पेन का गवर्नर जनरल रहता है। इसके अलावा प्रसिद्ध नगर हैं—विला सिसनेरोस तथा काबो बोजादोर जो तट पर स्थित हैं तथा अन्दरूनी भाग में है स्मारा और अग्राचा। अग्राचा के पास फास्फेट के भण्डार मिले हैं।

स्पेनिश सहारा के अलावा एक छोटा इलाका जो मोराको की भौगोलिक सीमा में है, अभी स्पेन का उपनिवेश है। यह इफनी हैं। इसका क्षेत्रफल लगभग 740 वर्गमील है और इसकी आबादी करीब 50,000 है। यहाँ के लोग भी ज्यादातर खानाबदोश हैं जिनकी गिनती करना भी बड़ा मुश्किल है। इफनी का मुख्य शहर सीदी इफनी है। यहाँ भी फ्रांस का गवर्नर जनरल रहता है।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

51. मारीटेनिया

(MAURI TANIA)

क्षेत्रफल : 4,18,800 वर्गमील **जनसंख्या :** 6,50,000

स्पेनिश सहारा के बाद अब हम मारीटेनिया में चलते हैं। इसका अधिकृत नाम मारीटेनिया इस्लामी गणराज्य है। इसके पूर्व में माली गणराज्य तथा उत्तरपूर्व में अल्जीरिया का सहारा क्षेत्र है। दक्षिण में सेनेगाल नदी इसे सेनेगाल देश से पृथक् करती है। इसका क्षेत्रफल 4,18,800 वर्गमील है जो राजस्थान, उत्तर प्रदेश व मध्य प्रदेश के सम्मिलित क्षेत्रफल के बराबर बैठता है। दक्षिण में सेनेगाल के पास जो घाटी है, इसे चेमामा कहते हैं। नदी में आने वाली बाढ़ तथा बरसात के पानी से वह काफी उर्वरा बन गई है। यहाँ खेती की जाती है। इसके उत्तर में रहेली मैदान हैं जो राजधानी नोआकोट से पूर्व में नेमा तक फैला है। यहाँ गोंद के काफी पेड़ हैं तथा घास भी खूब है। इसलिए यहाँ चरते हुए पशुओं के झुंड दिखाई पड़ते हैं। इस भाग के और उत्तर में अद्रार पहाड़ के आस-पास का इलाका है जहाँ काफी वर्षा होती है। यहाँ कई नगर हैं और काफी आबादी रहती है और उत्तर में सहारा का रेगिस्तान दिखाई पड़ता है जहाँ बालू के टीले ही टीले हैं। इस देश का तट भी अच्छा नहीं है। उत्तरी भाग में केवल एक बन्दरगाह एटिने है जिसे विकसित किया जा रहा है। सम्पूर्ण मारीटेनिया का जलवायु शुष्क और गर्म है।

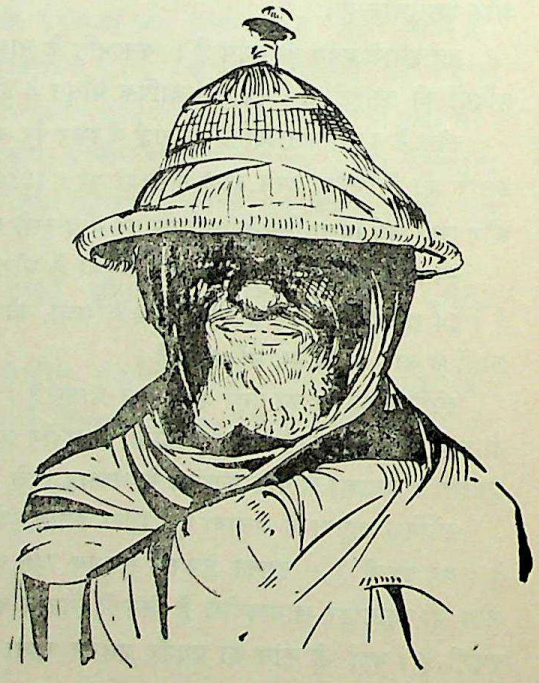

एक मूर किसान

मारीटेनिया एक पिछड़ा और अविकसित देश है। इतना पिछड़ा कि 1957 तक इसकी राजधानी भी अपनी सीमा में नहीं थी। सेनेगाल के सेंट लुइस में इसके कार्यालय थे। 1958 में नोआकोट में राजधानी बनाने का फैसला हुआ। मारीटेनिया की इस रेगिस्तानी भूमि में मूल निवासी उत्तर की ओर से ही आए थे। पहले यहाँ बर्बर लोग रहते थे, फिर मोराको में अरबों का आधिपत्य हो जाने के पश्चात् वे इधर बढ़े। जब मोराको में अलमोरो-बिन्द वंश का शासन था, तब यह भाग विजित किया गया और यहाँ के लोगों को भी इस्लाम के रंग में रंग दिया गया। 14वीं शताब्दी में यहाँ यूरोपीयों का आगमन हुआ। पुर्तगाली, डच, ब्रिटिश और फ्रांसीसी लोगों ने सेनेगाल नदी के किनारे पर आकर गोंद का व्यापार हथियाने की चेष्टा की। पहले तो फ्रांस यहाँ अधिकार जमाने में सफल नहीं हुआ पर एक फ्रांसीसी कूटनीतिज्ञ कोपोवानी की चतुराई से सारे क्षेत्र पर फ्रांसीसी झण्डा लहरने लगा। कोपोलानी ने एक कबीले को दूसरे कबीले

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

के आक्रमण के समय रक्षा करने का आश्वासन दिया। यह चक्र ऐसा सफल हुआ कि सारे कबीले फ्राँसीसी सरंक्षण में आ गए और एक बार भी गोली दागे बिना यहाँ फ्राँस का झंडा गढ़ गया।

1903 तक केवल ब्रारजा ही फ्रांस के कब्जे में था पर बाद में धीरे-धीरे क्षेत्र बढ़ता गया। 1905 में कोपोलानी एक और सैनिक हमले की तैयारी कर रहा था कि किसी स्थानीय व्यक्ति ने उसकी हत्या कर दी। फ्राँस को सेना भेजने का अवसर मिल गया। 1909 तक समस्त वर्तमान मारीटेनिया फ्रांस के अधीन हो गया था।

दूसरे विश्वयुद्ध के बाद अन्य फ्रांसीसी क्षेत्रों की तरह यहाँ भी परिवर्तन का क्रम शुरू हुआ। शेख-सरदारों का प्रभाव कम हो रहा था तथा लोगों में एक स्थान पर टिक कर रहने की भावना घर कर रही थी। उन्हीं दिनों समाजवादी विचारधारा के एक दल 'एण्टेण्ट मारीटेनिया' की शुरूआत हुई है। इधर शेख-सरदारों ने ऐसे प्रगतिशील दल का विरोध करने के लिए 'यूनियन प्रोग्रेसिव मारीटेनिया पार्टी' बनायी। 1947 में यहाँ पहली विधान सभा कायम हुई।

1958 में जनरल डिगाल के नए संविधान पर यहाँ के लोगों ने 'हाँ' का मत देकर स्वायत्त दर्जा प्राप्त कर लिया और फ्रांसीसी राष्ट्रमण्डल की सदस्यता स्वीकार कर ली। बाद में जब अन्य देश भी पूर्ण तथा आज़ाद होने लगे तो मारीटेनिया भी 28 नवम्बर, 1960 को पूर्ण स्वतंत्र हो गया।

शासन-व्यवस्था—मारीटेनिया एक लोकतांत्रिक इस्लामी गणराज्य है। कानून के समक्ष सब लोग समान हैं। यहाँ के लोगों का धर्म इस्लाम है पर अन्य धर्मावलम्बियों को अपने धार्मिक आचरण की स्वतंत्रता है। अरबी यहाँ की राष्ट्रभाषा है पर राजभाषा का पद फ्रेंच को प्राप्त है। वैधानिक कार्य के लिए यहाँ एक विधान सभा है जिसका चुनाव वयस्क मताधिकार से होता है। विधान सभा द्वारा निर्वाचित व्यक्ति प्रधान मंत्री होता है और वही शासन संचालन के लिए ज़िम्मेदार है। न्याय-पालिका कार्यपालिका से स्वतंत्र है। मारीटेनिया का राष्ट्रध्वज हरा है जिसके मध्य में पीले रंग का अर्धचन्द्र व सितारा है।

जन-जीवन—मारीटेनिया की आबादी कोई 6 लाख 50 हजार है जो हमारे केवल त्रिपुरा प्रदेश की जनसंख्या के लगभग बराबर है। क्षेत्रफल को देखते हुए आबादी बहुत कम है। यहाँ भेड़-बकरियों की संख्या जनसंख्या से कोई आठ गुना है और केवल ऊँटों की संख्या (2,90,000) भी पुरुषों से अधिक है। सेनेगाल नदी की घाटी में रहने वाले लोग कृषि करते हैं शेष सभी पशु चराने का धंधा करते हैं। ये लोग खानाबदोश हैं। पशुओं का रेवड़ लिए एक स्थान से दूसरे स्थान पर घूमा करते है। ये लोग सपरिवार तम्बुओं में ही रहते हैं तथा मोटा अनाज, दूध तथा खजूर खाते हैं और इनका रंग गोरा होता है। मूर स्त्रियाँ राजस्थानी स्त्रियों की तरह सिर पर बोड़ला (आभूषण) बाँधती हैं। यहाँ के लोगों में थकावट और रोग रोकने की अद्‌भुत क्षमता होती है। खजूर यहाँ के लोगों का प्रिय भोजन है। जुलाई-अगस्त के महीनों में रेगिस्तान के बीच बने कतिपय नख-लिस्तानों में जब खजूर पक जाता है तो एक अनूठा नजारा देखने को मिलता है। यही वह अवसर होता है जब खानाबदोश मूर इन स्थानों पर कोई महीने भर के लिए इकट्ठे होते हैं, नाचते हैं, गाते हैं और खुशियाँ मनाते हैं। ऊँट या पशुओं का सौदा करने का अथवा व्याह लायक बेटी के निकाह करने का यही उपयुक्त अवसर होता है। खजूर की बहार खत्म होते ही फिर इनका घुमक्कड़ जीवन शुरू हो जाता है।

मारीटेनिया में शिक्षा का क्रम शुरू करने में बड़ी कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। ज्यादातर लोग ऐसे थे जो एक स्थान पर टिक कर नहीं रहते थे। अतः उनके बच्चे न स्कूल जाते और न माता-पिता ही

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

उन्हें अपने से दूर रखना पसन्द करते। छोटी उम्र में बच्चा माँ-बाप से दूर नहीं रह सकता था, पर बच्चों को शिक्षा भी देनी जरूरी थी। अतः ऐसा इंतजाम किया गया कि स्वयं अध्यापक और स्कूल खानाबदोशों के काफिले के साथ-साथ घूमे। जहाँ काफिला रुका, वहीं स्कूल लग जाता, जब काफिला चला तो स्कूल भी साथ ही चल दिया। इस तरीके के अनुसार एक स्कूल औसतन 600 मील की यात्रा करता है। 1924 में शुरू किए गए इस तरीके का श्रेय फ्रांसीसी शिक्षाविद् श्री लेनोबल को है।

अर्थ-व्यवस्था—आर्थिक रूप से मारीटेनिया एक गरीब व अविकसित देश है। उत्तर और मध्य भाग में मुख्य धंधा पशुपालन है। दक्षिण में नदी किनारे खेती की जाती है। यहाँ का मुख्य फल खजूर है। मारीटेनिया में कोई 8 लाख खजूर के पेड़ हैं, जिनसे हर साल 15 हजार टन खजूर प्राप्त होता है। अन्य प्रमुख चीज गोंद है। यहाँ से प्रतिवर्ष लगभग 3,000 टन गोंद का निर्यात होता है। मारीटेनिया प्रति वर्ष अपने पड़ौसी देशों को 6,000 ऊँट, 95,000 पशु तथा 20,00,000 भेड़-बकरियाँ बेचता है।

एटिने बन्दरगाह से कोई 400 मील उत्तरपूर्व की ओर यहाँ जो पहाड़ हैं, उनमें खनिज लौह के भण्डार हैं। लोहा निकालने का काम जो कम्पनी कर रही है, उसमें 25 प्रतिशत शेयर मारीटेनिया सरकार के हैं। राजधानी नोआकोट से कोई 180 मील उत्तरपूर्व में ताम्बे की खानें हैं। वहाँ पेट्रोल की खोज भी हो रही है। यहाँ की खनिज सम्पदा इसे समृद्ध बनाने में महत्त्वपूर्ण योग देगी।

मारीटेनिया में पहली रेल लाइन का निर्माण हो रहा है। यह लाइन एटिने बन्दरगाह को रिओडिओरा की पूर्वी सीमा के पास स्थित फोर्ट गोरद से मिलाएगी। एक बड़ी सड़क नोआकोट, अकजोत, अतार, फोर्ट-गोरद जैसे प्रमुख नगरों को परस्पर जोड़ती है। कुछ प्रमुख नगरों में हवाई अड्डे भी हैं।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

भारत-अफ्रीका सम्बन्ध

आमतौर पर यूरोप के इतिहासकारों ने यह बताने की चेष्टा की है कि अफ्रीका महाद्वीप को पहले कोई नहीं जानता था और वह एक अन्धकारपूर्ण महाद्वीप था तथा अफ्रीका को ढूंढ निकालने का श्रेय उन्हीं को है। यह सच नहीं है। भारतीयों को प्राचीन काल से ही अफ्रीका के बारे में अच्छा ज्ञान था तथा पूर्वी अफ्रीका और पश्चिमी भारत के बीच परस्पर व्यापारिक और सांस्कृतिक संपर्क था।

वायुपुराण के इस श्लोक को ही लीजिए :

तथैक राज्यं विज्ञेयं शंखद्वीप समास्थितं।
शतयोजन विस्तीर्णं नानामलेच्छगणालयम्॥
तत्र शंखगिरिर्नाम धौतशंख दलप्रभः।
नाना रत्नाकरः पुण्यः पुण्यकृद्भिर्निषेवितः॥

(शंख द्वीप सौ योजन क्षेत्र में फैला हुआ क्षेत्र है और अनेक म्लेच्छ लोग रहते हैं। वहाँ शंखगिरि नामक पर्वत है जो धुले हुए सफेद शंख की तरह चमकता है और वहाँ अनेक बहुमूल्य रत्न उपलब्ध हैं और वहाँ पुण्य करने वाले लोग बसते हैं।)

भारतीय अफ्रीका को शंखद्वीप कहते थे। यदि शंख की नोक नीचे की ओर रख कर हम शंख की आकृति और अफ्रीका महाद्वीप की तुलना करें तो यह बात बिलकुल स्पष्ट हो जाएगी कि भारतीयों का नामकरण सर्वथा उचित था। भारतीय विद्या के सुप्रसिद्ध विद्वान विलफोर्ड ने भी यह स्वीकार किया है कि प्राचीन भारतीय ग्रंथों में वर्णित शंखद्वीप यह अफ्रीका ही है। वे तो 'अफ्रीका' नाम की उत्पत्ति भी संस्कृत से मानते हैं।

विल्फोर्ड ने हिन्दुओं के विभिन्न पुराणों के आधार पर नील के स्रोत अमर सरोवर (जो आज-कल विक्टोरिया झील कहलाती है) तथा चंद्रगिरि (जो आजकल रुवेंजी पर्वत कहलाता है) का नक्शा बनाया था। इसी नक्शे के आधार पर जान हैनिंग स्पेक ने नील के स्रोत का पता लगाया था। स्पेक ने अपने 'जर्नल आफ दि डिस्कवरी आफ दि सोर्स आफ नाइल' में स्वीकार किया है—

'कर्नल रिगबी ने मुझे एक बड़ा दिलचस्प कागज दिया जिसके साथ नील व चंद्रगिरि के बारे में एक नक्शा नत्थी था। यह प्राचीन हिन्दुओं के पुराणों के आधार पर तैयार किया गया था···यह एक विलक्षण बात है कि हिन्दुओं ने नील के स्रोत का नाम 'अमर' रखा था जो विक्टोरिया (न्याजां) के उत्तरपूर्वी कोण में स्थित देश का नाम है। 'मैं समझता हूँ, इससे यह स्पष्ट है कि प्राचीन हिन्दुओं का विक्टोरिया न्याजां के उत्तरी व दक्षिणी छोरों के साथ किसी न किसी प्रकार का सम्पर्क अवश्य रहा होगा।'

अफ्रीका और भारत के बीच व्यापारिक सम्पर्क भी युगों पुराना है। ईसा-पूर्व की चौथी शताब्दी में मिस्र के तटवर्ती नगर सिकंद्रिया से भारत मूंगे मँगाता था। इसका उल्लेख कौटिल्य के अर्थशास्त्र में भी है। मोजम्बीक के एक नगर सोफाला से भारत के तट तक बहुत आदान-प्रदान होता था। ईसा की पहली शताब्दी में इटली के लेखक प्लिनी की 'नेचरल ज्योग्राफी' से भी यह स्पष्ट है कि भारत और मिस्र के बीच खूब व्यापारिक सम्पर्क

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

चल रहा था। प्रथम शताब्दी की 'पेरीप्लस' नामक यूनानी पुस्तक में यह स्पष्ट उल्लेख है कि भारत और अफ्रीका के बीच खूब व्यापार होता था। भड़ौच और कोंकण से अफ्रीका के पूर्वी तट पर भारतीय जहाज गेहूँ, चावल, घी, सीसम का तेल, सूती कपड़े, आदि लेकर आते थे। तीसरी शताब्दी के लेखक कासमस ने भी भारत और इथियोपिया के बीच व्यापारिक सम्पर्क का जिक्र किया है। इसने लिखा है कि इथियोपिआई लोग भारत को पन्ना निर्यात करते थे। बारहवीं सदी के अरब लेखक ने सोफाला और भारत के बीच व्यापारिक सम्बन्धों की पुष्टि की है। सुप्रसिद्ध खोज-यात्री मार्कोपोलो ने भारत तथा अफ्रीका व मैडागास्कर के बीच व्यापारिक जहाजों के आने-जाने का उल्लेख किया। उसने लिखा है कि मालाबार तट से मैडागास्कर तक आने में एक जहाज को 20-25 दिन का समय लगता पर वापस लौटने में विपरीत हवा के कारण 2 महीने तक संघर्ष करना होता।

वास्को-डि-गामा का मार्गदर्शक—1410 से पुर्तगाली लोग भारत का मार्ग खोजने का प्रयत्न कर रहे थे, पर सफलता नहीं मिली। आखिर वास्कोडिगामा को यात्रा के लिए चुना गया। वास्कोडिगामा को अन्य साधन-सामग्री के अलावा एक नक्शा भी दिया गया जो एक भारतीय जहाज में भ्रमण करके इटालवी लेखक फ्रामारो ने तैयार किया था। इस नक्शे की सहायता से वास्को-डि-गामा पहले मोजम्बीक के पूर्वी तट पर आया और फिर मिलिन्दी में उतरा। जहाँ उसने बहुत-से भारतीय जहाज देखे। मोम्बासा में भी उन दिनों भारतीय माल खूब बिकता था। नक्शा होने के बावजूद वास्को-डि-गामा मलिन्दी से एक भारतीय मार्ग-दर्शक लेकर ही 24 अप्रैल 1497, ई० को चला। अतः वास्को-डि-गामा के भारत तक पहुँच सकने का आंशिक श्रेय उस भारतीय मार्ग-दर्शक को है।

जंजीबार में पहला ब्रिटिश जहाज 'लेपर्ड' 1591 में पहुँचा था। लेपर्ड के कप्तान बिसेल ने अपनी रिपोर्ट में लिखा है कि उन दिनों जंजीबार में भारतीय व्यापारियों और अमीरों के बहुत से पक्के मकान बने हुए थे। 1860 में जंजीबार में रह रहे एकमात्र ब्रिटिश कप्तान रिगबी ने अपनी रिपोर्ट में लिखा था 'जंजीबार में सभी दुकानें भारतीयों की हैं।' प्रोफेसर कूपलैड ने लिखा कि 'अरबों की तरह ही जंजीबार तट पर भारतीय भी रहते हैं, कदाचित वे अरबों से अधिक महत्त्वपूर्ण हैं क्योंकि सभी व्यापारिक और वित्तीय कार्य जिस पर कि अरब व पूर्वी अफ्रीका की समृद्धि निर्भर करती है, भारतीयों के हाथ में हैं। लिखित इतिहास के प्रारम्भ होने के पहले से ही उत्तर-पश्चिमी भारत के व्यापारी समुद्र पार करके अफ्रीका के तट तक पहुँचते रहे हैं।'

स्वयं जंजीबार के सुल्तान के खजांची और शुल्क संग्राहक भारतीय व्यापारी थे। रिचार्ड बर्टन ने अपन पुस्तक 'जंजीबार सिटी' में लिखा है कि 'पूर्वी तट के लगभग प्रत्येक बन्दरगाह पर सरकारी शुल्क संग्रहकर्ता भारतीय ही नियत थे।'

इस प्रकार यह स्पष्ट है कि भारत और अफ्रीका के बीच व्यापारिक आदान-प्रदान सदियों से होता रहा है।

जिम्बाबवे के खंडहर—अफ्रीका और भारतीयों के बीच सम्पर्क केवल व्यापारिक नहीं, सांस्कृतिक और सामाजिक भी था। पूर्वी अफ्रीका में भारतीय संस्कृति की छाप अब भी विद्यमान है। जिम्बाबवे के खण्डहर इसका एक प्रमाण हैं। पूर्वी तट से कोई 250 मील दूर दक्षिणी रोडेशिया में जो जिम्बाबवे नामक स्थान पर बड़ी-बड़ी इमारतों के खण्डहर हैं ये यहाँ की प्राचीन सभ्यता के ध्वंसावशेष हैं। 1931 में कुमारी कैटोन थाम्पसन ने लिखा था कि भारतीय प्रभाव से ही जिम्बाबवे की देशी संस्कृति का विकास हुआ था। उनके ही कथनानुसार 14वीं शताब्दी में जिम्बाबवे के पास की खानों का सोना दक्षिण भारत के सुप्रसिद्ध साम्राज्य विजयनगर में जाता था। जर्मनी के प्रोफेसर लिप्रो प्रोवेनियस ने जिन्होंने जिम्बाबवे के खण्डहरों की खुदाई करवाई थी, दक्षिण भारत

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

की यात्रा के पश्चात् यह विचार व्यक्त किए थे कि जिम्बाबवे की संस्कृति पर दक्षिण भारत की हम्पी संस्कृति की छाप है।

यहाँ से प्राप्त गरुड़ के आकार के पक्षियों की आकृतियों, भारतीय मनकों, सूर्य की स्वर्ण मूर्तियों, शिवलिंगों से भारतीय संस्कृति की छाप स्पष्ट झलकती है। इथियोपिआ में भी शिवलिंग के तरह की पत्थर की आकृतियाँ मिलती हैं। इनसे भी यही बात पुष्ट होती है।

पेड़-पौधों के क्षेत्र में भी भारत ने योगदान दिया है। जंजीबार में ब्रिटिश रेजीडेंट मेजर पीयर्स और बर्टन के लिखित वृत्तांत से यह ज्ञात होता है कि जंजीबार में नारियल, नारंगी व आम के वृक्ष भारत से ले जाए गए पौधों से लगाए गए। बर्टन ने कहा है कि फनास, सीताफल, जामफल, केवड़ा, भारत से ले जाए गए थे। मकई आजकल का अफ्रीका में मुख्य खाद्यान्न है। मकई के लिए स्वाहिली भाषा में शब्द है 'महिन्दी' जिसका अर्थ है भारतीय। इससे पता लगता है कि मकई भी भारत से गई थी, इस आम धारणा का कि मकई अफ्रीका में पुर्तगालियों ने शुरू की थी, खण्डन करते हुए पीयर्स ने लिखा है कि 'यह संभव है कि नारियल और नारंगी की तरह मकई भी पुर्तगालियों द्वारा हिन्द महासागर में घुसने की चेष्टा किए जाने के बहुत पहले ही वहाँ अरब या भारतीय ले आये थे।'

अफ्रीका में भारतवंशी—भारत और अफ्रीका का न केवल व्यापक सम्बन्ध रहा है, बल्कि बहुत से भारतवंशियों ने तो अफ्रीका जाकर उसे अपना घर बना लिया। नीचे की तालिका में यहाँ रहने वाले विभिन्न भारतवंशियों की संख्या दर्शाई गई है :

अफ्रीका में भारतवंशियों की संख्या

कीनिया	1,78,000	रुआण्डा व बुरुण्डी	1,900
उगाण्डा	80,000	दक्षिण अफ्रीका	4,41,000
जंजीबार } टांजानिया	19,000	सेनेगाल	100
टांगानिका }	87,300	कांगो (लिओपोल्डविल)	2,000
जैम्बिया, दक्षिणी रोडेशिया		सिएरालिओन	150
व मलावी	22,000	घाना	500
इथियोपिया	2,000	लाइबेरिया	100
मालागाशी	13,000	संयुक्त अरब गणराज्य	266
मॉरीशस	4,17,000	मोराको	235
मोजाम्बीक	200		
सूडान	2,600		12, 88, 551

भारतवंशियों ने अफ्रीकी देशों की आर्थिक विकास में बड़ी सहायता की है। आज पूर्वी अफ्रीका के छोटे से छोटे गाँव में भी भारत वंशियों की दुकानें मिल जाएँगी। ज्यादातर भारतीय खुदरा व्यापारी हैं। ईस्ट अफ्रीका रायल कमीशन (1953-55) ने यह स्वीकार किया है कि सचमुच भारतीय व्यापारियों की लगन तथा साहस की बदौलत ही आज व्यापार इतना विकसित हुआ है और उन्होंने ही दुर्गम से दुर्गम स्थान पर दुकानें

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

खोली हैं और थोड़े से थोड़ा भी बिक्री योग्य अतिरिक्त माल संग्रहीत करने की व्यवस्था की है। उगाण्डा की रेलवे लाइन के निर्माण में भारतीयों का योगदान सर्वविदित है। बड़ी जोखिम उठाकर कोई 32,000 भारतीय मजदूरों के रूप में काम करने उगाण्डा गये थे। उगाण्डा रेलवे कमेटी (1903) की रिपोर्ट के अनुसार 32,000 में से 9,000 व्यक्ति वहीं मर गए या अपंग हो गए। अफ्रीका के आर्थिक विकास में भारतीयों का यह बलिदान कम नहीं है।

इसके अलावा भारतवंशियों ने अफ्रीकी देशों से स्वाधीनता संघर्ष में भी कन्धे से कन्धा मिलाकर काम किया है और वित्तीय ही नहीं, सक्रिय योग भी दिया है। इन देशों के स्वाधीन हो जाने पर वे आर्थिक विकास में भी इसी प्रकार सहयोग दे रहे हैं। यह सर्वथा उचित ही है कि भारतीय जिस देश में रहे, उसके प्रति निष्ठा रखें।

गांधी जी और अफ्रीका—अफ्रीका की उन्नति से भारतीयों का प्रसन्न होना स्वाभाविक ही है। भारत के राष्ट्रपिता गांधी ने भी अपने अनोखे अस्त्र सत्याग्रह का प्रथम प्रयोग अफ्रीका में किया था।

19वीं सदी के अंतिम दिनों यानी 1893 में गांधी जी बैरिस्टर के रूप में दक्षिण अफ्रीका गए और कोई 21 वर्ष वहाँ रहे। इसी प्रवास के दौरान उन्होंने भारतीयों के प्रति यूरोपीयों का अपमानजनक व्यवहार देखा। स्वयं गांधी जी को रेल के द्वितीय श्रेणी के डिब्बे से निकाल कर बाहर कर दिया गया क्योंकि उनकी चमड़ी गोरी नहीं थी। इसके अलावा दक्षिण अफ्रीका की गोरी सरकार द्वारा बनाये गए कई अनुचित नियम व कानून थे। इस सब के लिए गांधी जी ने अपनी प्रेरक शक्ति से भारतीयों को तैयार किया और अहिंसक आन्दोलन शुरू किया। सत्याग्रह का वह पहला परीक्षण था। अतः भारतीयों को सच्चा अर्थ समझाकर तथा मानसिक रूप से तैयार करके ही आन्दोलन शुरू किया गया। खूब गिरफ्तारियाँ हुईं और दक्षिण अफ्रीका की जेलें भरने लगीं पर आन्दोलन चलता ही रहा। स्वयं गांधी जी भी यहीं पहली बार गिरफ्तार हुए और उन्हें दो वर्ष की जेल हुई। आखिर सत्याग्रह के आगे गोरों की नृशंस सरकार को झुकना पड़ा। जनरल स्मट्स ने गांधी जी को बुलाया, बातचीत की और भारतीयों की बहुत-सी कठिनाइयाँ हल हो गईं। अहिंसा की हिंसा पर वह पहली जीत थी।

गांधी जी के इस नये अस्त्र सत्याग्रह की सफलता से पराधीन अफ्रीकियों के तन-बदन में बिजली-सी दौड़ गई। गांधी जी के विचारों की अफ्रीकियों पर जबर्दस्त छाप पड़ी। उनकी मृत्यु के कई साल बाद जैम्बिया के राष्ट्रपति कीनिथ कौंडा कहते हैं 'महात्मा जीवित हैं। हमारा नेतृत्व करते हैं, हमें उनका अनुसरण करना है।' जोमो केन्याटा कहते हैं कि 'हम अफ्रीका में रहने वालों के दिलों में महात्मा गांधी के लिए विशेष स्थान है उन्होंने अपना सम्पूर्ण जीवन मानवता की स्वतन्त्रता तथा राष्ट्रों में शान्ति बनाये रखने के लिए अर्पित कर दिया।' श्री गोपालकृष्ण गोखले भी 1912 में दक्षिण अफ्रीका गए थे और वहीं के लोगों की कठिनाइयाँ दूर करने के लिए गोरी सरकार से बात-चीत की थी। 1936 में इथियोपिया पर इटली ने आक्रमण किया, उन दिनों गुरुदेव रवीन्द्रनाथ ठाकुर ने एक कविता लिखकर रोष व्यक्त किया था। वह कविता अफ्रीका के प्रति भारत की भावना का सुन्दर प्रतीक है।

1947 में भारत के स्वाधीन हो जाने से अफ्रीकी देशों के स्वातंत्र्य आन्दोलनों को बल मिला। भारत ने संयुक्त राष्ट्रसंघ में समय-समय पर अफ्रीकी देशों की आजादी के लिए आवाज बुलन्द की। स्वाधीन अफ्रीकी देशों के लिए आर्थिक, शैक्षणिक, सांस्कृतिक क्षेत्रों में भी भारत काफी सहायक सिद्ध हुआ। आर्थिक क्षेत्र में वह अपनी 3 पंचवर्षीय योजनाओं के अनुभवों के आधार पर विकास योजनाएँ बनाने और उन पर अमल करने में राय दे सकता है।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

आर्थिक सहयोग—भारत व अफ्रीका के बीच आर्थिक सहयोग पिछले कुछ वर्षों में लगातार बढ़ रहा है। अफ्रीका में भारत के सहयोग से शुरू किया गया सबसे पहला उद्योग इंडो-इथियोपिअन टैक्सटाइल कम्पनी है। यह बिड़ला बन्धुओं ने कुछ इथियोपिआई नागरिकों के साथ मिलकर बनाई है। इसने 1960 में उत्पादन शुरू कर दिया। खटाऊ कम्पनी ने कीनिया के कुसुमू नगर में कपड़े की मिल खोली है जो जुलाई 1965 से चालू हो गई। घाना में भी एक सूती मिल भारत के सहयोग से बन रही है। उगाण्डा में चीनी के कारखाने बनाने में भारतीय के 1965 में एक समझौता हुआ है। इसके अंतर्गत उगाण्डा की चीनी उत्पादन क्षमता 10 टन प्रतिवर्ष हो जाएगी। नाइजीरिया में भी भारत चीनी का कारखाना बनायेगा। बिड़ला बन्धु नाइजीरिया, लीबिया, इथियोपिया सूडान उगाण्डा में भी कई कारखाने बनाने जा रहे हैं। महेंन्द्र एण्ड महेन्द्र कम्पनी कीनिया में जीपें तैयार करने तथा बंगाल एनमल वर्क्स जैम्बिया में एनमल का कारखाना लगा रहे हैं।

1965 तक भारत का अफ्रीकी देशों के साथ व्यापार 1960 के मुकाबले चार गुना से अधिक बढ़ गया है। हमारा ज्यादा व्यापार संयुक्त अरब गणराज्य, सूडान, इथियोपिया, नाइजीरिया, जैम्बिया, टांज़ानिया, कीनिया व उगाण्डा से है। सूडान, कीनिया और उगाण्डा से व्यापार और बढ़ाने के लिए उन्हें कर्ज देने के वास्ते 1965 में और समझौते हुए हैं। भारत अफ्रीका को वस्त्र, जूट, चाय, साइकिलें, सिलाई की मशीनें, बिजली के पंखे, डीजल इंजन, होजियरी की चीजें, रसायनिक पदार्थ व दवाएं भेजता है तथा अफ्रीकी देशों से मुख्यतः कपास, फास्फेट जस्ता, ताम्बा, सीसा, लौंग आदि मंगाता है। 1963-64 में भारत ने अफ्रीका को 35 लाख रुपये का निर्यात किया। 1965 से भारत अफ्रीका को रेल डिब्बे भी भेजने लगा है।

शैक्षणिक क्षेत्र—शिक्षा के क्षेत्र में भारत अफ्रीका के लिए मददगार सिद्ध हो रहा है। में भारत में कीनिया, उगाण्डा, टांगानिका, जंजीबार इथियोपिआ, घाना मारीशस, मालागाशी, नाइजीरिया, मलावी, कैमरून, जैम्बिया, रोडेशिया, सूडान, सिएरालिओन, दक्षिण अफ्रीका और संयुक्त अरब गणराज्य के अनेकों विद्यार्थी पढ़ रहे हैं। आगामी वर्षों में यह संख्या और भी बढ़ती जाएगी। 1963 में यूनेस्को कार्यक्रम के अंतर्गत भारत ने अफ्रीकी देशों के लिए 33 फैलोशिपें दी थीं। लाइबेरिया और उगाण्डा की शिक्षा व्यवस्था को सुचारु रूप देने के लिए भारत ने इन देशों को यूनेस्को की मारफत कई शिक्षा-विशेषज्ञ भेजे हैं। इनके अलावा इथियोपिआ में 600, नाइजीरिया में 200 तथा सूडान व घाना में भी कुछ भारतीय अध्यापक अज्ञान का अन्धकार हटाने के महायज्ञ में जुटे हुए हैं।

तकनीकी क्षेत्र—टैक्नीकल और अन्य क्षेत्रों में भी भारतीय सहयोग दे रहे हैं। नाइजीरिया की पनबिजली योजनाओं, रेलवे और हवाई-सेवाओं, इंजीनियरी कार्यों में बहुत से भारतीय जुटे हुए हैं। घाना में भी बहुत से भारतीय काम रहे हैं। सोमालिया में भारतीय ऋतु वैज्ञानिक और टिड्डी निरोधक विशेषज्ञ काम कर रहे हैं। वहाँ के प्रधान मन्त्री ने 1963 की अपनी भारत यात्रा के दौरान तकनीकी विशेषज्ञों का सहयोग और माँगा था। सूडान में भी कई भारतीय ऋतु वैज्ञानिक के रूप में काम कर रहे हैं।

सैनिक क्षेत्र—सैनिकक्षेत्र में भारत ने कम योग नहीं दिया। राष्ट्रसंघ के महासचिव की प्रार्थना पर भारत ने 1960 में 5,723 सैनिक व वायु सैनिक कांगो भेजे जो लगभग 30 महीने वहाँ रहे। वहाँ की कार्रवाई में हमारे 36 जवान और अफसर वीरगति को प्राप्त हुए और इस प्रकार उन्होंने कांगो की अखण्डता के लिए अपना रक्त

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

चढ़ाया। जिस बहादुरी और सूझबूझ से भारतीय सैनिकों ने काम किया उसके लिए संयुक्त राष्ट्र महासचिव ने भी भूरि-भूरि प्रशंसा की थी।

इथियोपिया में हरार नामक स्थान पर बनी हुई हेले सिलासी सैनिक अकादेमी भारत-अफ्रीकी सहयोग का अनुपम उदाहरण है। इसकी स्थापना 1957 में भारतीय सैनिक अधिकारियों के सहयोग से हुई थी।

नाइजीरिया ने भी अपने नौ सैनिक प्रशिक्षित करने के लिए भारतीय सेना के अफसरों कौं सेवाएं माँगी हैं।

देहरादून, खड़कवासला और कोचीन के सैनिक प्रशिक्षण केन्द्रों में घाना व नाइजीरिया आदि के सैनिक शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं।

सद्भावना की यात्राएं—स्वतन्त्रता के बाद, अफ्रीकी नेताओं की भारत यात्रा और भारतीय नेताओं की अफ्रीका यात्राएं भी परस्पर सम्बन्ध बढ़ाने में सहायक रही हैं। संयुक्त अरब गणराज्य के अब्दुल नासिर कई बार भारत आ चुके हैं। इथियोपिया के सम्राट हेले सिलासी 1956 में, गिनी के राष्ट्रपति सेकू तूरे 1960 में तथा घाना के तत्कालीन राष्ट्रपति क्वामे एंक्रूमा 1958 में भारत आए थे। सोमालिया के प्रधान मंत्री 1963 में और उगाण्डा के प्रधानमंत्री 1965 में भारत आए थे। इसके अलावा कांगो, नाइजीरिया, मोराको, टांजानिया, मलावी आदि के कई मंत्री भी भारत आ चुके हैं। इधर श्री नेहरू 1957 में संयुक्त अरब गणराज्य तथा सूडान और 1962 में नाइजीरिया की यात्रा पर गए थे। 1965 में राष्ट्रपति डा० राधाकृष्णन इथियोपिया गए थे। उप-राष्ट्रपति डा० ज़ाकिर हुसैन 1963 में उगाण्डा, इथियोपिया, सूडान तथा मिस्र की तथा 1964 में अल्जीरिया, मोराको व ट्यूनीसिया की यात्रा पर गए थे। श्रीमती इन्दिरा गांधी और श्री दिनेशसिंह ने 1963 तथा बाद में भी कई अफ्रीकी देशों की यात्रा की।

आशा है यह परस्पर आदान-प्रदान बढ़ता रहेगा। शिक्षा, संस्कृति, व्यापार, आयोजन, उद्योग आदि के सम्बन्ध में भारत अफ्रीका की बहुत सहायता कर सकता है और कई बातें भारत भी अफ्रीका से सीख सकता है। आज इस बात की आवश्यकता है कि भारत और अफ्रीकी देशों के सम्बन्ध और मजबूत बनें।

अफ्रीका और भारत के बीच समुद्र जरूर है पर जैसे समुद्र अलग करता है वैसे जोड़ता भी है। अफ्रीका के मुल्क हमारे पड़ौसी हैं।

—जवाहरलाल नेहरू

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

परिशिष्ट

[पुस्तक की छपाई शुरू होने के बाद से तथा समाप्त होने तक (अगस्त 1966) हुई घटनाओं और नए परिवर्तन को इस परिशिष्ट में दिया जा रहा है]

गैम्बिया—यह देश फरवरी, 1965 में ब्रिटेन की पराधीनता से मुक्त होकर स्वतन्त्र राष्ट्रों की पंक्ति में सम्मिलित हो गया। गैम्बिया ब्रिटिश राष्ट्रमंडल का सदस्य है।

मई, 1966 में यहाँ स्वतन्त्रता के बाद के पहले आम चुनाव हुए जिनमें जवारा के दल पीपुल्स प्रोग्रेसिव पार्टी को 32 में 24 स्थान मिले।

अपर वोल्टा गणराज्य—1960 में इसके स्वतन्त्र होने के समय से मारिस यमेगो राष्ट्रपति थे। 3 जनवरी 66 को यहाँ सैनिक क्रान्ति हुई तथा सेनाध्यक्ष ले० कर्नल लामिज़ाना ने सत्ता सम्हाल ली और यमेगो अपदस्थ कर दिये गए। यमेगो का कथन है कि मैंने स्वयं ही सेनाध्यक्ष से हस्तक्षेप करने को कहा था और मैं परिवर्तन से प्रसन्न हूँ। सैनिक हस्तक्षेप का कारण संभवतः मजदूरों में यमेगो के प्रति बढ़ता हुआ विरोध तथा हड़तालें आदि था। सैनिक क्रान्ति के बाद शासन चलाने के लिए क्रान्तिकारी परिषद बनाई गई। संसद व संविधान भंग कर दिये गए। लामिज़ाना राष्ट्रपति तथा प्रधानमंत्री दोनों का पदभार सम्हाले हैं।

डहोमे—29 नवम्बर, 1965 को डहोमे के सेनाध्यक्ष जनरल क्राइस्टोफ सोगलो ने तत्कालीन राष्ट्रपति एपिथी और प्रधानमंत्री अहमदेग्बे को इस्तीफा देने के लिए विवश कर दिया और ताहिरा कोंगाकू को राष्ट्रपति बनाया। 22 दिसम्बर, 1965 को सोगलो ने 1964 का संविधान भंग कर दिया, संसद भी खत्म कर दी और स्वयं को राष्ट्रपति घोषित कर दिया। सोगलो का कथन था कि राजनीतिज्ञों के परस्पर झगड़े के कारण हस्तक्षेप करना जरूरी हो गया था आशा है कि सोगलो उचित अवधि में सत्ता फिर असैनिक शासन को सौंप देंगे। इसका पूर्व उदाहरण भी है। 27 अगस्त, 1963 को भी सोगलो ने सत्ता सम्हाल ली थी तथा तत्कालीन राष्ट्रपति ह्यूबर्ट मागा को हटा दिया था। जनवरी, 1964 में वहाँ चुनाव कराए गए थे जिसके बाद एपिथी राष्ट्रपति तथा अहमदेग्बे प्रधानमंत्री बनाए गए थे।

घाना—24 फ़रवरी, 1966 को घाना में सैनिक क्रान्ति हो गई और राष्ट्रपति एंक्रूमा को अपदस्थ कर दिया। डा० एंक्रूमा स्वतन्त्रता (1957) से ही पदारूढ़ थे। सैनिक क्रान्ति के समय एंक्रूमा पीकिंग में थे। वे शांति प्रयत्नों के सिलसिले में उत्तर वियतनाम जा रहे थे। क्रान्ति के बाद वे गिनी की राजधानी कोनाक्री चले गए। घाना में जनरल अंक्रा के नेतृत्व में राष्ट्रीय मुक्ति परिषद ने शासन चलाना शुरू किया। सैनिक नेताओं ने कहा कि डा० एंक्रूमा ने तानाशाह की तरह सारे अधिकार सम्हाल लिए थे और बड़ी-बड़ी योजनाओं तथा विदेशों में अनावश्यक खर्च से देश की अर्थ-व्यवस्था चरमरा गई थी। नई सरकार ने डा० एंक्रूमा के खिलाफ मुकदमा चलाने का निश्चय किया है। सैनिक नेताओं ने कहा है नया संविधान ऐसा बनाया जाएगा जिससे एक ही व्यक्ति के हाथ में सारी सत्ता सिमटने न पाए। जून, 66 में संविधान सुधार समिति की नियुक्ति की गई है। नए संविधान के आधार पर घाना में फिर से असैनिक शासन स्थापित हो सकेगा।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

नाइजीरिया—15 जनवरी, 1966 को नाइजीरिया की संघीय राजधानी लागोस तथा उत्तरी क्षेत्र की राजधानी कदूना और पश्चिमी क्षेत्र की राजधानी इबादान में कुछ सैनिकों ने एक साथ विद्रोह किया। संघीय प्रधान मंत्री सर अलहाजी अबुबकर तफावा बलेवा, उत्तरी नाइजीरिया के मुख्य मंत्री अहमद बेल्लो तथा पश्चिमी नाइजीरिया के मुख्य मंत्री सरदार अकिन्तोलो की हत्या कर दी गई। नेता विहीन संघीय मंत्रिमण्डल ने सेनाध्यक्ष जनरल आगुई-इरोंसी से सत्ता सम्हालने का अनुरोध किया। सेनाध्यक्ष ने फिर अपने आप को राजाध्यक्ष घोषित कर दिया। संविधान संसद तथा प्रदेशविधान सभाएँ भंग कर दी गईं और हर प्रदेश के लिए सैनिक गवर्नर नियुक्त कर दिये गए।

क्रान्ति का कारण संविधान की ऐसी व्यवस्था प्रतीत होता है जिसके कारण उत्तर के लोग जो आबादी में अन्य क्षेत्रों के मुकाबले काफी ज्यादा हैं अन्य क्षेत्रों पर हावी हो गए थे। झगड़े की शुरूआत पश्चिमी प्रदेश में अक्तूबर, 65 में हुए चुनावों के समय हुई थी। मई, 1966 जनरल इरोंसी ने नाइजीरिया के सभी राजनीतिक दलों भंग कर दिया और संघीय व्यवस्था खत्म करने की योजना बनाई। जुलाई 66 में यहाँ फिर क्रांति हुई। जनरल इरोंसी के स्थान पर कर्नल गोवोन शासनाध्यक्ष बने उन्होंने कहा कि संघीय व्यवस्था पूर्ववत: कायम रहेगी।

केन्द्रीय अफ्रीका गणराज्य—1 जनवरी, 1966 को सेनाध्यक्ष बोकासा ने राष्ट्रपति डैविड डैको को अपदस्थ कर सत्ता स्वयं सम्हाल ली। डैविड डैको स्वतन्त्रता के समय (1960) से राष्ट्रपति थे। सैनिक क्रान्ति के बाद संविधान स्थगित कर दिया और संसद भंग कर दी गई। क्रांति का कारण सरकारी कर्मचारियों के वेतन में की गई 20 प्रतिशत कटौती से फैला असंतोष, प्रशासन पर चीनियों का प्रभाव तथा भ्रष्टाचार बताया जाता है। सैनिक क्रान्ति के बाद 10 सदस्यों की क्रान्ति परिषद शासन चलाती है।

कांगो (लिओपोल्डविल)—अक्तूबर, 1965 में राष्ट्रपति जोसेफ कासाबूबू ने प्रधानमंत्री शोम्बे को बर्खास्त कर दिया और अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र में अनजान व्यक्ति श्री किम्बा से सरकार बनाने को कहा पर संसद ने किम्बा की सरकार के प्रति विश्वास प्रकट नहीं किया। शोम्बे कासाबूबू के प्रति खार खाये बैठे थे और राष्ट्रपति के अगले चुनाव में कासाबूबू को हरा देने के लिए जोड़-तोड़ शुरू कर दी थी। इसी बीच 25 नवम्बर, 1965 को सेनाध्यक्ष जनरल मोबूतू ने सत्ता सम्हाल ली। और अपने आप को 5 वर्ष के लिए राष्ट्रपति घोषित कर दिया। और कर्नल मुलाम्बा (बाद में ब्रिगेडियर) को प्रधान मंत्री नियुक्त किया। मोबूतू ने देश की आर्थिक उन्नति के लिए योजना शुरू की। 8 जून, 1966 को कांगो के इतिहास की वीभत्स घटना हुई जबकि कांगो के चार भूतपूर्व मंत्रियों को खुले आम फांसी दे दी गई। इनमें भूतपूर्व प्रधानमंत्री श्री किम्बा भी शामिल थे। इन मंत्रियों पर आरोप था कि इन्होंने मोबूतू सरकार का तख्ता उलटने के लिए षड्यंत्र रचा था। 30 जून 1966 से शहरों के यूरोपीय नाम बदल दिए गए हैं। लिओपोल्डविल का नाम किन्शासा, एलिजाबेथविल का नाम लुमुम्बासी तथा स्टेनलेविल का नाम किशनगानी हो गया है।

बसूतोलैण्ड—बसूतोलैण्ड को ब्रिटिश सरकार ने 4 अक्तूबर 66 को पूरी तरह स्वतंत्र कर दिया स्वतंत्रता के बाद इस देश का नाम लेसोथो हो गया है।

स्वाज़ीलैण्ड—स्वाजीलैण्ड को ब्रिटेन ने 1970 तक आज़ाद कर देने का फैसला किया है। सोबूज़ा नरेश राजाध्यक्ष माने जाएँगे। नए संविधान के अनुसार स्वाज़ीलैण्ड में दुसदनी संसद होगी। निचले सदन में 24

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

निर्वाचित सदस्य और 6 मनोनीत सदस्य होंगे। उच्च सदन में 12 सदस्य होंगे। इनमें से 6 सदस्य निचले सदन द्वारा निर्वाचित होंगे और 6 सदस्य नरेश द्वारा नामज़द किये जाएँगे।

मलावी—मलावी 6 जुलाई, 1966 से गणराज्य बन गया। नए संविधान के अंतर्गत राष्ट्रपति राजाध्यक्ष और शासनाध्यक्ष हैं। उपराष्ट्रपति या प्रधानमन्त्री के पद नहीं है। राष्ट्रपति पहले 5 वर्ष के लिए होगें पर बाद में अगर मतदान में पराजित नहीं हुए तो कार्यकाल बढ़ाया जा सकता है। प्रथम राष्ट्रपति डा० हैस्टिंग्ज बांडा बनाये गए हैं।

संसद में 50 निर्वाचित सदस्य हैं। चूँकि यहाँ अब एकदलीय शासन है इसलिए सभी सदस्य मलावी कांग्रेस के सदस्य होने चाहिएं। यहाँ पृथक् न्यायपालिका की व्यवस्था भी की गई है।

अक्तूबर, 1965 से मलावी का पहला विश्वविद्यालय शुरू हो गया।

रोडेशिया—11 नवम्बर, 1965 को रोडेशिया की गोरी सरकार ने स्वतंत्रता की इकतरफा घोषणा कर दी। ब्रिटेन, अफ्रीकी देश और कई अन्य देशों ने स्मिथ सरकार की कार्यवाही की निन्दा की। ब्रिटेन और कई देशों ने रोडेशिया के खिलाफ आर्थिक प्रतिबन्ध लगाये। रोडेशिया को तेल और पेट्रोल भेजने पर भी रोक लगा दी। भारत ने रोडेशिया के साथ आर्थिक सम्बन्ध तोड़ लिए (राजनीतिक सम्बन्ध इससे पहले ही तोड़ चुका था) पर स्मिथ सरकार को झुकाने में सफलता नहीं मिली। अफ्रीकी एकता संगठन भी मतभेद के कारण कोई कारगर कार्रवाही नहीं कर सका। अफ्रीकी देशों ने ब्रिटेन से रोडेशिया के खिलाफ बल प्रयोग करने की मांग की थी पर ब्रिटेन ने इन्कार कर दिया। स्वतंत्रता की घोषणा से रोडेशिया में रहने वाले अफ्रीकियों की मुसीबतें और बढ़ गईं। भारत की पूरी सहानुभूति वहाँ के बहुसंख्यक अफ्रीकियों की तरफ है।

उगाण्डा—उगाण्डा में 1962 का संविधान खत्म हो गया और डा० मिल्टन ओबोटे द्वारा प्रस्तुत संविधान 15 अप्रैल, 1966 से लागू हो गया है। 1962 के संविधान से पहले यहाँ राष्ट्रपति और प्रधानमंत्री के पद होते थे। अब केवल राष्ट्रपति होगा और वह राजाध्यक्ष होने के साथ कार्यकारी प्रधान भी होगा। संसद सर्वोपरि होगी। प्रदेश-विधान-सभाओं को कुछ अधिकार होंगे पर संसद उन्हें छीन भी सकती है। पहले बुगाण्डा की लुकीको केन्द्रीय संसद के लिए प्रतिनिधि निर्वाचित करती थी अब समस्त उगाण्डा में संसद के लिए प्रत्यक्ष चुनाव होंगे। डा० मिल्टन ओबोटे 15 अप्रैल, 1966 से यहाँ के राष्ट्रपति हैं। स्थायी संविधान बनाने का काम संविधान सभा को सौंपा गया है।

मई, 1966 में बुगाण्डा के कबाका यानी नरेश के महल पर सुरक्षा सेनाओं ने कब्जा कर लिया। बुगाण्डा नरेश एडवर्ड फ्रेडरिक मुतेसा भाग निकले। ओबोटे का कहना था कि कबाका ने विदेशी शक्तियों की मदद से विद्रोह का षड्यंत्र रचा था।

कीनिया—कीनिया के प्रमुख वामपक्षी नेता ओगिंगा ओडिंगा जो उपराष्ट्रपति थे, पद से अलग हो गए और सत्तारूढ़ दल कीनिया अफ्रीकी नेशनल यूनियन से इस्तीफा दे दिया। उनका राष्ट्रपति जोमो केन्याटा से मतभेद था। श्री ओडिंगा ने नयी पार्टी बनाई जिसका नाम है कीनिया पीपुल्स पार्टी।

मई, 1966 से कीनिया के आर्थिक निर्माण के क्षेत्र में नया कदम उठाया गया। कीनिया की संशोधित पंचवर्षीय योजना (1966-70) इस महीने से शुरू हो गई। इसमें किसानों को खेती की पैदावार बढ़ाने के लिए उन्नत तरीके बताने, अधिक कर्ज देने तथा बिक्री बढ़ाने की व्यवस्था की गई। औद्योगिक क्षेत्र के विस्तार के

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

लिए निजी पूंजी लगाने वालों से सहयोग की अपेक्षा की गई है । योजना पर 32 करोड़ 50 लाख पौंड के खर्च की व्यवस्था है । इसमें 18 करोड़ निजी पूंजी से तथा 14 करोड़ 50 लाख पौंड सरकारी तथा अर्ध सरकारी संस्थाओं से प्राप्त होने की आशा है ।

इथियोपिया—अप्रैल, 1966 में सम्राट हइले सिलासी अपने देश की शासन-व्यवस्था के लिए महत्त्व-पूर्ण सुधारों का एलान किया । अब सम्राट प्रधानमंत्री नियुक्त किया करेंगे और प्रधानमंत्री स्वेच्छा से मंत्रि-मंडल का गठन किया करेगा । प्रधानमंत्री और मंत्रिमंडल केवल सम्राट के प्रति नहीं, संसद के प्रति भी उत्तर-दायी होंगे ।

अल्जीरिया—जून, 65 में अल्जीरिया में सैनिक क्रान्ति हुई । राष्ट्रपति बिन बिल्ला का तख्ता पलट दिया गया और सेनाध्यक्ष कर्नल बूमेदिएन ने सत्ता सम्हाल ली । बाद में बूमेदिएन ने शासन चलाने के लिए क्रान्तिकारी परिषद बनाई तथा अपने आप को अल्जीरिया का राष्ट्रपति घोषित कर दिया । बिन बिल्ला पर आरोप था कि वे तानाशाह बन गए थे और सत्ता का दुरुपयोग कर रहे थे ।

मोराको—जून 1965 में शाह हसन ने देश में संकटकालीन स्थिति का एलान कर दिया और कार्य-कारी तथा वैधानिक अधिकार स्वयं सम्हाल लिए । शाह ने यह कार्रवाई तब की जब मोराको के राजनीतिज्ञ, मज़दूर नेता और संसद सदस्य एक मिलाजुला मंत्रिमण्डल बनाने में सफल नहीं हो सके ।

बुरुण्डी—जुलाई 66 में जब बुरुण्डी नरेश म्वामबुत्सा चतुर्थ विदेश में थे, युवराज चार्ल्स ने सारी सत्ता स्वयं सम्हालने का एलान कर दिया । बीहा का मंत्रिमंडल बर्खास्त कर दिया गया और प्रधान सेनापति माइकेल मिकाम्बेरो के प्रधानमंत्रित्व में नया मंत्रिमंडल बना । म्वामबुत्सा ने अपने पुत्र को भेजे एक संदेश में इस कार्रवाई की निन्दा की ।

गैबॉन—लैम्बेरेने में रहनेवाले दार्शनिक और महान समाज सेवी डा० स्विट्जर का 5 सितम्बर 1965 को देहान्त हो गया । वे आजीवन अफ्रीकियों की सेवा करते रहे ।

बेचुआना—बेचुआना 30 सितंबर 1966 को स्वतन्त्र हो गया और इसका नया नाम बोत्सवाना है ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

ग्रन्थ सूची

अंगोला :—हैमर जैक : अंगोला रिप्रेशन एण्ड रिवोल्ट इन पुर्तगीज़ अफ्रीका (न्यूयार्क अमेरिकन कमेटी आफ अफ्रीका) अबटोनिया डिफिगेरेडो : पोर्तगाल्स एम्पायर : दि ट्रुथ (कोलेन्ज, लन्दन)

फिलिप्स मैसन : अंगोला ए सिम्पोजियम (लन्दन आक्सफोर्ड यू० प्रेस फार दि इंस्टीट्यूट आफ रेस रिलेशन्स)

के० एम० पणिक्कर : अंगोला इन फ्लेम्स (एशिया पब्लिशिंग हाउस, बम्बई)

अल्जीरिया :—जी मैन्सेल : ट्रैजेडी इन अल्जीरिया (आक्सफोर्ड यू० प्रेस लन्दन);

टी मैथ्यू—अल्जीरिया ए० बी० सी० (चैपमेन–लन्दन 1961)

जोसेफ कैमर : स्ट्रगल फार अल्जीरिया' (डबल डे गार्डन सिटी)

आइवरी कोस्ट :—रिपब्लिक आफ आइवरी कोस्ट, फ्रांसीसी दूतावास (न्यूयार्क)

इथियोपिया :—डेविड अबनेर तलवेट : 'कटेम्परेरी इथियोपिया' (न्यूयार्क)

लूथर अर्नेस्ट : इथियोपिया टु-डे (कैलिफोर्निया स्टेफोर्ड प्रेस)

वेलेन्डोरेफ : इथियोपिअन्स (आक्सफोर्ड यू० प्रेस 1960)

उगाण्डा :—एच इन्ग्राम्स : 'उगाण्डा–ए क्राइसिस आफ नेशनहुड (लन्दन, सूचना विभाग),

डेविड ई एप्टर : पोलिटिकल किंगडम इन उगाण्डा (प्रिंस्टन यूनीवर्सिटी, न्यूजर्सी)

उत्तरी रोडेशिया :—देखिये जैम्बिया

उबंगीशारी :– देखिये केन्द्रीय अफ्रीका गणराज्य ।

कांगो (ब्राजविल) :—कांगो, अवर आफ इंडिपेण्डेन्स (फ्रांसीसी दूतावास सूचना सेवा, न्यूयार्क)

कांगो (लियोपोल्डविल) :—पैट्रिस लुमुम्बा : कांगो, माई कण्ट्री (पालमाल प्रेस, लन्दन);

डोगलास बिबुटाक : कांगो ट्राइब्ज एण्ड पार्टीज, एम० एन० हैन्नेसे (पालमाल प्रेस, लन्दन);

रुचस्लेड : बेलजियन कांगो (पालमाल, लन्दन)

कीनिया :—जोमो केन्याटा : फेसिंग माउण्ट केनिया (सेकर एण्ड वारबर्ग, लन्दन);

रोबर्ट रूआर्क : उहरू ब्लैक अल्टीमेटम टु ह्वाइट (हैमिश हैमिल्टन, लन्दन);

अक्सविथ : केनियाज़ प्रोग्रेस (ईगल प्रेस, नैरोबी)

केन्द्रीय अफ्रीका गणराज्य :—सेण्ट्रल अफ्रीका रिपब्लिक : (फ्रांसीसी दूतावास न्यूयार्क);

कैमरून :—होडकिन और स्काटक्टट : फ्रेंच स्पीकिंग अफ्रीका इन ट्रांजीशन—(इण्टरनेशन कन्सिलियेशन)

वी थौम्पसन और आर ए एडोल्फ : 'एमर्जिंग स्ट्टेस आफ फ्रेंच इक्वेटोरियल अफ्रीका (फोर्ड यू० प्रेस लन्दन)

जी एम डुटेल : 'जू इन माह लगेज' (ब्रिटिश बुक सर्विस, लन्दन)

गिनी गणराज्य :—कोनार्ड गिल : 'मर्चेण्ट्स एण्ड मैरिनर्स आफ 14th सैंचुअरी, (एडवर्ड अर्नोल्ड)

गैबॉन :—थौम्पसन एण्ड अडोल्फ : फ्रेंच वेस्ट अफ्रीका (एलिन और अर्विन लन्दन);

गैबान रिपब्लिक : अवर आफ इंडिपेण्डेन्स (फ्रांसीसी दूतावास न्यूयार्क)

गैम्बिया :—वेलासिडनी साउथर : गैम्बिया (एलिन एण्ड अर्विन लन्दन)

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

एच आर जेरट: ज्योग्राफी आफ सिएरा लिओन एण्ड गैम्बिया (लांगमैन्स, लन्दन)

घाना :—क्वामे एंक्रूमा : घाना माई आटोबायोग्राफी; एफ एम बुरेट : घाना (आक्सफोर्ड, प्रेस लन्दन);
जे सी अपामो : न्यू घाना (पान बुक्स लन्दन); वार्नर, व डाग्लस : घाना एण्ड दि न्यू अफ्रीका (फ्रेड्रिक मूलर लन्दन)

चाड :—रिपब्लिक आफ चाड : अवर आफ इण्डिपेण्डेन्स (फ्रांसीसी दूतावास अमेरिका, न्यूयार्क)

जैम्बिया :—ए० जान वुड : नादर्न रोडेशिया

टांजानिया : —एफ डी ओमने : आइल्स आफ क्लोव्ज (लोंगमैन्स, लन्दन);
हैण्डबुक आफ टांगानिका (सूचना विभाग दर ए-सलाम); क्लार्क पी० एच० सी० : शार्ट हिस्ट्री आफ टांगानिका
एस० एन० वर्मा और अन्य : टांगानिका ए बैकग्राउण्ड स्टडी (अफ्रीका पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली)

ट्यूनीशिया :—टी हैमरटन : ट्यूनीशिया अनवेल्ड (हेल लन्दन);
लैटमैन : ट्यूनीशिया टु डे (साइटेडल प्रेस न्यूयार्क)

टोगो :—एडमिरल बिग्रोण्ड : तोगो (मैकमिलन, न्यूयार्क)

डहोमे :—जेबिल फ्रांसेस : डहोमिन नैरेटिव (नार्थवेस्टर्न यूनीवर्सिटी प्रेस एवान्सटिव)

दक्षिण अफ्रीका : —गांधी महात्मा : अहिंसा का पहला प्रयोग (नवजीवन प्रकाशन मंदिर, अहमदाबाद);
एन्थोनी, स्मिथ : हाई स्ट्रीट आफ अफ्रीका (एलिड पब्लिशर्स कोवेन)
जैफ : साउथ अफ्रीका अवर लैण्ड अवर पीपुल (बैली एण्ड विन्टन लन्दन);
अलबर्ट लुथुली : लेट माई पीपुल गो (कोलेन्स लन्दन); गोर्डन ए : इयर बुक एण्ड गाइड टु साउथ अफ्रीका (रोबर्ट हाले लि० लन्दन)

रोडेशिया :—नेटिव पालिसी इन सदर्न रोडेशिया (स्टेन्फोर्ड यू० प्रेस, लन्दन)

नाइजीरिया :—साम, ओल्डन : गेटिंग टु नो नाइजीरिया (कोवार्ड मैकन);
डिके ओंकुआ : ट्रेड एण्ड पालिटिक्स इन नाइजीरिया, (डेल्टा आक्सफोर्ड क्लैरिण्डन प्रेस, लन्दन);
वाटसन : ह्यूमन ज्याग्राफी आफ नाइजीरिया (लांगमैन्स प्रेस लन्दन)

नीजेर:—रिपब्लिक आफ नाइजर (फ्रांसीसी दूतावास सूचना सेवा, अमेरिका न्यूयार्क);
स्टेफन ग्वेयन : मंगोपार्क एण्ड नाइजर (डी० बी० तारापोरवाला, बम्बई)

न्यासालैंड : —देखिये मलावी

पुर्तगाली गिनी : —ए डी० फाइगीरेडो : पोर्चूगल एण्ड इट्स इम्पायर, (विक्टर गोलांज, लन्दन)

बसूतोलैण्ड : —ह्यूज अस्टन : बसूतो (आक्सफोर्ड यू० प्रेस, लन्दन); एन. डब्ल्यू. हाउ : माउण्टेन बुसमैन आफ बसूतो (आक्सफोर्ड यू० प्रेस, लन्दन);

बेचुआनालैण्ड :—गैबटस्वाने : शेकेडी खामा आफ बेचुआनालैण्ड;
स्कापेरा: माइग्रेंट लेबर ट्राइबल लाइफ (आक्स फोर्ड यू० प्रेस, लंदन)

बुरुण्डी :—देखिये रवाण्डा उरण्डी

मलावी :—फ्रेन्च डेनेवहम: नयासालैण्ड (एच० एम० आफिस लन्दन)

मारिटेनिया :— इस्लामिक रिपब्लिक आफ मारीटेनिया; अवर आफ इंडिपेंडेंस (फ्रांसीसी दूतावास, न्यूयार्क)

मिस्र :—देखिये संयुक्त अरब गणराज्य।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

मैडागास्कर :—देखिये मालागाशी

मालागाशी :—कैंट रेमण्ड के: फ्रोम मैडागास्कर टु मैलागाशी रिपब्लिक (थेम्स एण्ड हडसन, लन्दन)

मालागाशी रिपब्लिक : अवर आफ इंडिपैंडैंस (फ्राँसीसी दूतावास, सूचना सेवा, न्यूयार्क)

मोजम्बीक : —स्पेंस सी एफ : पुर्तगीज कोलोनी आफ मोजम्बीक (ए० ए० बलकेना, केपटाउन)

मोराको :—अशफोर्ड डोगलस : पोलीटिकल चेंज इन मोरक्को (प्रिन्सटन यूनी० प्रेस, लन्दन); रोम लन्दाऊ : मोराको इंडिपेंडेंट (एलिन एण्ड अन्तिल लन्दन); टौसैव ए : गाइड टु मोरक्को (केसेब्लाँका)

लीबिया :—डलरेम्पल बेलग्रैव सी: 'सिवा' (डी. वी तारापोरवाला, बम्बई); विलार्ड हेनरी एस : लीबिया, न्यू अरब किंगडम आफ नार्थ अफ्रीका, (कारनेल यूनीवर्सिटी प्रेस, न्यूयार्क); एपटन, नीना : ओसिस किंगडम लीबियन स्टोरी, (राय पब्लिकेशन्स, न्यूयार्क)

रुआण्डा-बुरुण्डी :— रुआन्डा-उरुण्डी; सूचना व जन सम्पर्क कार्यालय ब्रेशेल्स (खण्ड 2); जे वे माक्वेत : दि प्रीमाइज आफ इनइक्वैलिटी आफ रुआण्डा (आक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस न्यूयार्क)

वोल्टा :—रिपब्लिक आफ वोल्टा: अवर आफ इंडिपेंडेन्स, (फ्राँसीसी दूतावास सूचना सेवा, अमेरिका)

सिएरा लिओन :—काक्स जार्ज एन. ए. सिएरालिओन एक्सपीरियेंस (डोसन लन्दन); क्रिस्टोफर फाइफ : हिस्ट्री आफ सिएरालिओन (लाँगमैंन्स ग्रीन, लंदन); मेकिंग आफ ए नेशन सिएरालिओन (एच. एम. एस आफिस, लन्दन)

संयुक्त अरब गणराज्य :—रोलेट मेरी—फाउण्डर आफ माडर्न इजिप्ट

एडवर्ड आई० ई० एस० : पिरेमिड आफ इंजिप्ट (न्यू बुक डिपो कनाट प्लेस, नई दिल्ली)

अब्दुल नासिर : फिलासोफी आफ रिवोल्यूशन

बर्जर मोरे : ब्यूरोकेसी एण्ड सोसाइटी इन माडर्न इजिप्ट (प्रिंस्टन यू० प्रेस न्यूजर्सी)

हेरल्ड जे० क्रिस्टोटोफर—बोनापार्ट आफ इजिप्ट (हेमिश हैमिल्टन, लन्दन)

सूडान :—हाट, पी एम : माडर्न हिस्ट्री आफ सूडान (बिलनफेल्ड निकलन, लन्दन)

बार्बर के० एम : रिपब्लिक आफ सूडान (यूनिवर्सिटी आफ लंदन प्रेस लंदन)

सूडान अलमेनक (सूडान सूचना विभाग, खारतूम); आर० ए० ग्रे : ए हिस्ट्री आफ दि सदर्न सूडान (आक्सफोर्ड यू० प्रेस, लन्दन)

सेनेगाल :—माइकल क्राउडर : सेनेगाल (आक्सफोर्ड यू० प्रेस, लन्दन);

अवर आफ इंडिपैंडेंस (फ्रासीसी दूतावास न्यूयार्क)

सोमालिया :—अब्दरशीद अली शेरमार्के,: 'सोमाली पेनिनशुला' (सोमाली सूचना विभाग);

लेविस वाई एम : पेश्चोरल डेमोक्रेसी (आक्सफोर्ड यू० प्रेस लन्दन);

लेस लेविस आई० एम० : पीपुल आफ हार्न आफ अफ्रीका (इण्टरनेशनल अफ्रीकन इंस्ट्रीट्यूट)

अफ्रीका सामान्य :—

काका कालेलकर :—उस पार के पड़ौसी (नवजीवन प्रकाशन मंदिर, अहमदाबाद)

गुन्थर जान :—इनसाइड अफ्रीका— (हैमिश हैमल्टन, लन्दन)

मरडक जार्ज पीटर :—अफ्रीका: इट्स पीपुल एण्ड देअर कल्चरल हिस्ट्री (मैकग्रा-हिल बुक कं० न्यूयार्क)

हैन्से मारिस :—एमर्जेण्ट अफ्रीका फैक्ट्स आफ लाइफ

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

हेम्पस्टन स्मिथ :—अफ्रीका यंग जाइंट (पेगर, न्यूयार्क) तथा न्यू अफ्रीका (फेबर एण्ड फेबर न्यूयार्क)
हेस्टाइन नाइजेल :—रीमेकिंग अफ्रीका (म्यूजियम प्रेस, लन्दन)
होवर्ड डेविड :—शैडोज आफ डान (कोलेन्स, लन्दन)
चर्चिल विनस्टन :—माइ अफ्रीकन जर्नी (होलैण्ड प्रेस)
मदन गोपाल :—अफ्रीका (राजकमल प्रकाशन, दिल्ली)
भाटिया महेन्द्रपाल :—अफ्रीका के जंगलों में (जान हण्टर की कृति का अनुवाद), निशियाम प्रकाशन, नई दिल्ली
के० एम० पणिक्कर :— रिवोल्यूशन इन अफ्रीका (एशिया पब्लिशिंग हाउस, बम्बई)
केन आर० ए :—अफ्रीका ए टू जैड
सिलेरी एन्थोनी :—अफ्रीका ए सोशियल ज्योग्राफी (गेरोल्ड हुकवर्थ कं०, लन्दन)
एस० के० चटर्जी : अफ्रोकनिज्म, द अफ्रीकन पर्सनलिटी : बंगाल पब्लिशर्स, कलकत्ता
सेगाल रोनेल्ड . अफ्रीकन प्रोफाइल्स : पेंगुइन बुक्स
टी० पी० मेलाडीं : प्रोफाइल्स आफ अफ्रीकन लीडर्स : मैकमिलन कम्पनी लन्दन.
माथुर जगमोहन लाल : अफ्रीका के राष्ट्रीय नेता : नवभारती सहकार प्रतिष्ठान, दिल्ली

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अनुक्रमणिका

अ

अकरा 38
अगस्तोनो नेतो 79
अग्राचा (स्पे. सहारा) 165
अग्नि जाति 24
अटलास 2, 162
अदिस अबाबा 140–41
अदुनकुम-नृत्य 36
अपर वोल्टा 32-34, 175
अडोवा 139
अफ्रीका-अतीत 2,3
अफ्रीका-आबादी 4
अफ्रीका-कला व शिल्प 5
अफ्रीका-खनिज सम्पदा 2
अफ्रीका-जातियाँ 4
अफ्रीका-पहाड़ 3
अफ्रीका-भौगोलिक 2
अफ्रीका-नदियाँ 2
अफ्रीका-समाज व्यवस्था 5
अफ्रीका व भारत 169-184
अबाको 68
अबिदजान 25
अबूद, जनरल 144
अमहारा 140
अमेजान 42
अरब 144-150
अरुशा 121
अल आयन (स्पेनिश सहारा) 165
अल्जीरिया 158-161, 178
अल्जीयर्स 161
अस्वान 139,151
असमारा 142
अशान्ति 24,35

आ

आइवरी कोस्ट 23-25
आयवरी कोस्ट 23-25
आशा अंतरीप 2

इ

इंदिरा गांधी 82,134, 174
इक्वेटोरिया (सूडान) 144
इटूरी 70
इद्रिस (लीबियानरेश) 153,154
इथियोपिआ 139-142, 178
इरीट्रिया 142

ई

ईजो जाति 48
ईबादान नगर 47
ईबो जाति 48
ईबो प्रदेश 48
ईबोबिओ 48

उ

उगाण्डा 124-128, 177
उच्च बांध (मिस्र) 151
उत्तरी खंड नाइजीरिया 48-49
उत्तरी रोडेशिया 80-82
उबंगी सारी 59-60

ऊ

ऊगाडिगू 34

ए

एंक्रूमा क्वामे 35-36,175
एंकोमो जोशुआ 86,87
एंटेबे 127

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

एम्बाबोन 105
एनुगू (नाइजी०) 48
एफिक (नाइजी०) 48-51
एटिने (मारीटे०) 168

ऐ

ओ

ओडिवरा समारोह 36
ओबोटे मिल्टन 126-128-177
ओरान 161

औ

औरेंज नदी 95,101
औरेज फ्रीस्टेट 100,102

क

कंसटेन्टाइन 161
क्वामे एंक्रूमा 35-36,175
कदूना 49
कनौरी 49
कबाका, बुगाण्डा 126-177
करीबा बांध व झील 80
कांगो (ब्राजविल) 61–63
कांगो नदी 2, 61
कांगो (लिओपोल्डविल) 67–71, 176
कानो 49
काफुए नेशनल पार्क 82
काहिरा 152
काहिरा यूनीवर्सिटी 151
किकुयु 130, 131, 132
किगाली 74
किन्शासा 71, 178
किलिमंजरो 118
किसुमू 133,34
कीनिथ कौण्डा 81
कीनिया 129–134, 177
कीनिया पर्वत 129
कीन्याटा 130
कुमासी 38
क्रूगर नेशनल पार्क—101
केन्द्रीय अफ्रीका गणराज्य 59–60, 176
केन्याटा जोमो 130
केप 100
केपटाउन 101
केप वर्दे द्वीपसमूह 15
कैमरून 51-53
कैमरून, फ्रेन्च 51-52
कैमरून, ब्रिटिश 52
कोको 2 25,25,37,41,50,52
कोटोनू 42
कोनाक्री 17
कोमोरो द्वीप समूह 113
कौण्डा, कीनिथ 81

ख

खामा तृतीय 90
खामा सेरेत्से 91
खारतूम 145

ग

गमाल अब्दुल नासिर 149,151
गांधी जी 99, 100, 171
गाला 140
गेजो 42
गेलेले 42, 43
ग्रेजुएट जनरल कांग्रेस 144
गैबॉन 64-65
गैबोरीनीज 92
गैम्बिया नदी 12
गैम्बिया देश 12-13, 175
गोल्डकोस्ट 35-38,175
गिनी गणराज्य 16-17
गिनी, पुर्तगाली 14-15

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

गिनी, फ्रांसीसी 16-17
गिनी, फ्रेन्च 16-17
गिनी, स्पेनिश 66

घ

घाना देश 35,38,175
घाना साम्राज्य 3,35

च

चाड 56-58
चाद 56-58
चेवाजाति 84

छ

छागा जाति 119-20

ज

जंजीबार 123-125, 170
जंजीबार नगर 125
जजीरा योजना 145
जम्बेजी 107
जवाहरलाल नेहरू 6, 174
जाकिर हुसैन डा०, 146-174
जिबूती 138
जिब्राल्टर 162
जिम्बाबवे खंडहर 21,85,170,171
जूलू 97-99
जूलूलैण्ड 97-99
जैम्बिया 80-82
जोशुआ एंकोमो 86-87
जोहान्सबर्ग 101

ट

ट्यूनिस 157
ट्यूनीसिया 155-57
टांगानिका
टांगानिका अफ्रीकी नेशनल यूनियन 119
टांगानिका झील 118
टांजानिया 118-123
ट्रांसकी 97
ट्रांसवाल 100,101
टिम्बकटू 27
टोगो 39-41
टोगो, फ्रांसीसी 39-41
टोगो, फ्रेन्च 39,41
टोगो, ब्रिटिश 39
टोंगा 82

ड

डकार नगरी 8-11
डकार विश्वविद्यालय 11
डहोमे 42-44, 175
डिगाल, जनरल 9,16

त

तमानारासेत (अल्जी०) 161
तुआरेग 160-61
तुकुलर 10
तुत्सी 11,76
तेमने 16
तेमा 40
त्रिपोली 154
त्रिपोलीतानिया 153-154

द

दर-ए-सलाम 119
दक्षिण अफ्रीका 93-95-101
दक्षिण पश्चिम अफ्रीका 93-94
दक्षिण रोडेशिया 85-86
दिनेशसिंह 82,134,174

न

न्यासालैण्ड 83-84
न्यामवेजी 120
न्येरेरे, जूलियस 118
नगीब, जनरल 149
नयासालैण्ड 83-84

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

नयासा झील 83
नाइजर देश 29-31
नाइजर 21-29
नाइजीरिया 45-50,176
नासिर, अब्दुल गमाल 149-50
निआमे 31
नीजेर 29-30
नील नदी 2, 143, 148
नील, नीली 143
नील, श्वेत 143
नेतो अगस्तीने 79
नेल्सन मंडेला 100
नेशनल पार्क 31, 82, 101, 133
नैटाल 99, 100, 101
नैरोबी 133
नोआकोट 168
नोवा लिस्बोआ 79

प

पिआरोल 16,57
पिरेमिड 151
पुर्तगाल 4, 14-15, 77-79, 107-108
पुर्तगाली अंगोला 4, 77-79
पुर्तगाली गिनी 14, 15
पुर्तगाली मोज़ाम्बीक 107-8
पेम्बा द्वीप 122-123
प्रेआ 15
पैट्रिस लुमुम्बा 68-69
पोर्टोनोवो 44

फ

फाउद शाह 149
फारुख, शाह 149
फ्री टाउन 20
फुलानी 14,30,48
फ्रेन्च इक्वेटोरियल अफ्रीका 36
फ्रेन्च गिनी 16-17
फ्रेन्च पश्चिमी अफ्रीका 11
फ्रेन्च भूमध्यरेखीय अफ्रीका 36
फ्रेन्च सूडान 26-28
फ्रेन्च सौमालीलैन्ड 138
फेजाँ 153-54
फेज़नगरी 164
फेरनन्दो पो 66
फोर्टलैमी 58
फ्रांस 3, 9, 16, 17, 23,24, 27, 29, 30, 31, 33 39, 40, 43, 51, 52, 56, 57, 59, 61, 65, 810, 111, 112, 113, 138, 156, 158, 159, 163, 166, 167
फ्रांसीसी कैमरुन 51, 53
फ्रांसीसी गिनी 16-17
फ्रांसीसी टोगोलैण्ड 39-41
फ्रांसीसी पश्चिमी अफ्रीका 11
फ्रांसीसी भूमध्यरेखीय अफ्रीका 36
फ्रांसीसी सूडान 26-28
फ्रांसीसी सोमालीलैण्ड 138

ब

ब्ल्यू नील प्रांत 144
बगाण्डा जाति 126, 127
बगिरमी साम्राज्य 56
बम्बूती 70
बमांगवतो 90-91
बरोत्से 81
बसूतो जाति 104
बसूतोलैण्ड 103-101, 176
बहर-ए-गजल 144
बाडई साम्राज्य 56
बांगुई 60
ब्रांडवर्ग कीतरुणी 94
बुगाण्डा 124-125

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

बुर्गीबा, हबीब 156
बुरुण्डी 75-76, 178
बुलवायो 87
बुशमैन 94, 95
बिजर्टा 157
बिसाऊ 15
ब्रिटेन 3, 12, 13, 14, 15, 35, 39, 40, 45, 52, 81, 83, 86, 90, 91, 96, 103, 104, 105, 116, 118, 119, 122, 124, 125, 126, 129, 130, 135, 143, 144, 149
ब्रिटिश टोगोलैण्ड 40
ब्रिटिश कैमरुन 52
बेल्जियम 4, 67, 68, 72, 73, 75
बेल्जियन कांगो 67-71
बैथुर्स्ट 13
बोअर 95
बोत्सवाना 90-92,178
बोमाको 28

भ

भारत-अफ्रीका सम्पर्क 169-174
भारत-इथियोपिआ 142
भारत-उगाण्डा 128
भारत-कीनिया 134
भारत-सूडान 146
भारत-सोमालिया 137
भारतवंशी 99, 114, 123, 127, 133 171, 172,

म

मंगोपार्क 46
मंडिंगो 14-22
मध्य पश्चिमी नाइजी० 48
मनरोविया 22
मरक्केश 164
मलावी 83-84, 177
मशोने 86
मसाई 121
मसेरू 104
माओ माओ आन्दोलन 130
मार्कोपोलो 170
मातावेले 85-86
मातावेलेलैण्ड 85-86
मार्फाकिंग 92
माम्प्रूसी 40-41
मारिटेनिया 166-68
मारीशस 114-115
मालागाशी 109-111
माली गणराज्य 26-28
माली देश 26-28
माली संघ 27
माली साम्राज्य 26-27
मॉसी 32, 33
मिस्र 148-152
मूर 167
मेडागास्कर 109-111
मेहदी विद्रोह 144
मोजाम्बीक 107-108
मोम्बासा 133
मोराको 162-164, 178
मोरोनावा 32
मौहम्मद अली (मिस्र) 149
मौहम्मद इद्रिस (लीबिया) 153-154
मौहम्मद पंचम (मोराको) 163

य

यरुबा 46-47
याउन्दे 53
याओ 84

र

रबात (मोराको) 164
रवीन्द्रनाथ ठाकुर 142, 172

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

रामगुलाम डा० 115
राधाकृष्णन डा० 142, 174
राष्ट्रीय मुक्तिमोर्चा (अल्जीरिया) 159-60
रुआण्डा 72-74
रिओमुनी 66
रिओ डि ओरो 165
री यूनियन 112
रोड सेसिल 81, 85
रोडेशिया 85-87, 176
रोडेशिया, उत्तरी 80-82
रोडेशिया, दक्षिणी 85, 87

ल

लाइबेरिया 21-22
लागोस 50
लिब्रेविल 65
लिम्पोपो नदी 107
लेसोथो 103, 104, 176
लुआण्डा 79
लुओ जाति 132
लुक्सर 152
लुथूली, अलबर्ट 99
लुमुम्बा, पैट्रिस 68-69
लुसाका 80-82
लिओपोल्डविल 71
लिओपोल्डविल-कांगो 67-71
लिओपोल्ड सेंघोर 9
लिविंगस्टन 81-82,90
लीके 2
लीबिया 153-54
लोगोन नदी 56
लोजिथलेजी 105
लोबेनगुला 85
लोमे 41
लोरेंको मारकेश 108

व

वायुपुराण 169
वास्कोडिगामा 3,170
विक्टोरिया प्रपात 80
विन्डोक 94
विल्फोर्ड 169
वेलविस 94
वोल्टा गणराज्य 32-34
वोलोफ 8-10, 12

श

शंखद्वीप 169
शार्पविले 100
शारी नदी 56
शाह हसन 163
शेकेडी 91
शैलचित्र 2

स

संयुक्त अरब गणराज्य 148-152
स्टेनलेविल 71
स्पेक 169
स्पेन 4, 66, 163, 165
स्पेनिश गिनी 66
स्पेनिश सहारा 165
स्वाहिली 5
स्फिक्स 152
स्वेज नहर 149,150
स्वाज़ी 105-106
स्वाज़ीलैण्ड 105-106, 176
स्विट्जर, अलबर्ट डा०, 65-178
सहारा मरुभूमि 2, 158, 160, 162
सहारा स्पेनिश 165
सागिया अलहामरा 165
सारा 57

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

सिएरा लिओन 18-20
सिकन्दर 148
सिकन्द्रिया 152
सिरेनिसा 153,54
सुकुमा 119
सूडान 143-146
सूसू जाति 16
सेकू तूरे 16
सेनार बांध 145
सेनेगाल 8-11
सेरेत्से खामा 91
सेसे मक्खी 121
सेंघोर लिओपोल्ड 9
सेंट लुई 9
सैलिसबरी 87
सोंघाई 28
सोमालिया 135-37

ह

हसन, शाह 163
हा जाति 120
हीरे 94,101
हुतू जाति 72,73,75
हेरेरे जाति 93-94
हेहे जाति 120
होटेंटोट 93,94
होवा जाति 110
हौसा जाति 34,48
हौसा भाषा 49

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

सिन्धु सभ्यता समीक्षा			...0
भारत की सांस्कृतिक परम्परा			3.00
नेपाल की कहानी			8 00
राष्ट्रपति और राष्ट्रपति-भवन	व...	...)	6.00
राष्ट्रपति-भवन की डायरी	वालमी...	...चित्र)	प्रेस में
भारत का सांस्कृतिक इतिहास	हरिदत्त वेदा...	(सचित्र)	8.00
भारत का सांस्कृतिक इतिहास	हरिदत्त वेदालंकार	(प्रश्नोत्तर)	2.00
चम्पारन में महात्मा गांधी	डॉ॰ राजेन्द्र प्रसाद	(सचित्र)	5.00
भारत में ब्रिटिश साम्राज्य का उदय और अस्त	इन्द्र विद्यावाचस्पति	(सचित्र)	7 50
भारत में ब्रिटिश राज्य के अन्तिम दिन	लियोनार्ड मोसले	(सचित्र)	7.50
मुगल साम्राज्य की जीवन-संध्या	राजेश्वरप्रसाद नारायणसिंह	(सचित्र)	6.00
बिहार का गौरव	राजेश्वर प्रसाद नारायणसिंह	(सचित्र)	4.00
दिल्ली में दस वर्ष	राजेन्द्रलाल हाँडा		3.50
वैदिक वाङ्मय का इतिहास--१	भगवद्दत्त		10.00
भारतीय क्रान्तिकारी आन्दोलन का इतिहास	मन्मथनाथ	(सचित्र)	15.00
गदर पार्टी का इतिहास	प्रीतमसिंह पंछी		3.50
बन्दी जीवन	शचीन्द्रनाथ सान्याल		10.00
हमारी आज़ादी की लड़ाई	उर्मिल सब्बरवाल	(सचित्र)	2.00
अमरीकी समाज	कैनेथ एस० लिन		7.50
अमरीकी सभ्यता	मैक्स कर्नल		10.00
हिमालय दर्शन	कृष्ण नारायण गोसामी	(सचित्र)	4.00
अरबों के देश में	गोपालप्रसाद व्यास	(सचित्र)	3.50
पृथ्वी की परिक्रमा	गोविन्द दास	(सचित्र)	12.00
यूरोपा	देवेश दास	(सचित्र)	3 00
रजवाड़ा	देवेश दास		6.00
रूस की साहित्यिक यात्रा	बनारसीदास चतुर्वेदी (पुरस्कृत, सचित्र)		4 00

आत्माराम एण्ड संस, दिल्ली-6